॥ श्रीः ॥

प्रार्थना.

यह ग्रन्थ सदाशिवकरण रामरतन दरक माहेश्वरी मारवाडी मूंडवेवालेने विक्रम सम्वत् १८९८ शाके १७६३ से आजपर्यंत संग्रह कर छंदबंद व वार्तिक बनाया है और आक्ट २५ सन १८६७ के नियमानुसार रजीष्टरी कराके सर्व हक्क यंत्रालयाधिकारीने आधीन रक्खा है इसके शोध करनेमें बहुतही परिश्रम व अधिक द्रव्य व्यय हुआ है इसलिये सर्व भूमंडलके भ्रातृगणोंसे प्रार्थना है कि इसको वा इसमेंसे कोईभी आशय लेकर छापने छपवानेका इरादा न करें जरा सरकारी कायदेका लिहाज रक्खें और सूक्ष्म लोभवश हो अधिक नुकसान न उठावें.

आपका कृपाभिलाषी—

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास
"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना,
कल्याण-मुंबई.

॥ श्रीः ॥

अथ

"वैश्यकुलभूषण

व

इतिहासकल्पद्रुम"

माहेश्वरीकुलशुद्धदर्पण

और

खांपें बाहत्तर व चौरासी न्यातका वर्णन.

जिसको

महाशिवकरण रामरतन दरक माहेश्वरी

मारवाडी मूंडवेवाला इन्दोरनिवासीने बनाया

इसीको

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास-

अध्यक्ष "लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापेखानेमें

मैनेजर पं० शिवदुलारे वाजपेयीने मालिकके लिये

छापकर प्रसिद्ध किया।

चतुर्थावृत्ति।

संवत् १९८०, शके १८४५.

कल्याण-मुंबई.

सारस्वतल्होड़ओझा साखाअनंत

१ गदइया २ चौधरीसोझतमें ३ हींगरड

(४७ गगराणी)

गांगसिंघजीपेठ गहलौत मातापाढाय गौत्रकस्यप (गुरुखंडलवाल नवालजोसी बीकनवाल दमागणका माताडाहरी डोड़्या १ बावरेच्या २) (गुरु सारस्वतल्होड़ओझा) डौड्यामाता बागलेश्वरी गौत्रआग्नांस (बावरेच्या डौड्यांमेंसूंनीकल्या माताबांगलौद गौत्रकपलांस)

१ गगराणी २ गगड़ ३ बावरेच्या ४ डोड्या ५ काला

(४८ खटवड)

खड़गलसिंघजीपेढसांखला मातानौसल्या गौत्रसूंगांस खटवड माता पाढाय गौत्रनिरमलांस गुरदायमाखटौड़ व्यासथांभा ६ (गुरदायमाका कड़ामिसरव्यास) (काल्या गुरदायमा काव्या तिवाड़ीव्यास) (माला णी काहाल्या पहाडका गुरदायमा काकडाव्यास डीडवाण्यां तथा नागौरका थांभांका) (माला चहाडका तथाकाहाल्यागुरदायमाकाकहा नींबडीकाथांभाका) मालासरच्या रायपुरसूं गुरखटवडव्यास कुलधर जीकाथांभाका माता फलौधी गौत्रकालांस (खटवड) मालहाणी माता फलौधीपाढाय गौत्रकच्छस करवांस (माला मातापाडल गौत्र करवांस) (टुवाणी माताफलौधी. गौत्र.———) (काल्या मातानां नण सतीलीकासण गौत्र———) (लौसल्या माताफलौधी गौत्रसूंगांस मौलासरच्या मातापाढाय गौत्रनग्नांस)

१ खटवड	४ तौडा	७ लोथा	१० लोसल्या	१३ नेरसण्या	१६ भूतिया
२ मालाणी	५ मूछाल	८ खड	११ गांधी	१४ सराप	१७ भूरिया
३ मौलासऱ्या	६ टूवाणी	९ काल्या	१२ गहलडा	१५ पहाडका	१८ माला

(४९ लखोटया)

लौकसिंघजीपेढपंवार मातासच्याय सतीलाखेचागौत्रफाफडांस भेरू काडमदेस पित्रबालक्यो गुरसारस्वतबडओझा गौत्र ररांईस १

भाँतके ॥ राजिया ५४ बडेला ५५ माटिया५६ सतवारे ५७ चक्कचाप ५८खंडवस्त ५९ नरसिया ६० भवनगे ६१ हसाथके ॥ २ ॥ कख स्तन ६२ आनंदे ६३ नागौरी ६४ टकचाल ६५ कहूँ॥सरडिया ६६ कमइया ६७ अरु पौसरा ६८ बताइये ॥आकारिया ६९ वदवइया ७० नेमा ७१ अस्तकी७२ कारेगराया ७३ ॥ नराया ७४ मांडलियामौड ७५ जनौरा ७६ जताइये ॥ पाहसया ७७ चकौड़ ७८ बहडा ७९ धवल ८० पवाराछिया ८१ बागरौरा ८२ तारौडा ८३ गींदौडिया८४ चताइये ॥ पितादी ८५ बघेरवाल ८६ बूढेला ८७ कठनेरा ॥ ८८॥ कहूँ सिंगार ८९ नृसिंघपुरा ९० महता ९१ ये भाइये ॥ ३ ॥ इति०

अथमध्यदेसचतुरासी ।

श्रीगुरु सारद सुमरि हरि बंदुँ बडनके चर्ण ॥वरणत चौरासी वइस मध्यदेस शिवकर्ण २

(चक्र नम्बर ४)

१	श्रीमाल	१८	खंडपाल	३५	नागर	५२	वायडा	६९	रागौरा
२	श्रीश्रीमाल	१९	खंडेलवाल	३६	नागेंद्रा	५३	वास	७०	लाड
३	अगरवाल	२०	खंदणउडा	३७	नाउरा	५४	वायेच	७१	लाकमखा
४	अलल	२१	खौभू	३८	पधवता	५५	वालमींक	७२	सलाउ
५	अचतवाल	२२	गजेरा	३९	पघाडा	५६	भल	७३	सत
६	अष्टवाठिती	२३	गोलेचा	४०	पंचम	५७	भटेवरा	७४	सरखरल
७	अलदउदर	२४	चउचख	४१	पांतीवाल	५८	भागउ	७५	सहडेवाल
८	अठचख	२५	चीतौडा	४२	पौकरवाल	५९	भुगत	७६	मुराणी
९	औसवाल	२६	जलहरी	४३	पौरवाल	६०	भ्रगाडी	७७	सान
१०	कथौत्या	२७	जंबूसरा	४४	प्रवरा	६१	मथपर	७८	सौधतवाल
११	करटीवाल	२८	जालोरा	४५	महराय	६२	महेश्वरीडीड	७९	जायलवाल
१२	कपौल	२९	जीगीपारीजी	४६	प्रदभण	६३	मेडतवाल	८०	हलौरा
१३	करहया	३०	तवत्ररा	४७	फढद्य	६४	मौड	८१	हरसोरा
१४	कवौडर	३१	तलनडा	४८	वधेरवाल	६५	मांडारा	८२	होहल
१५	ककौला	३२	धाकड	४९	वभीवाल	६६	मडौहड	८३	हूमड
१६	कुंथतरा	३३	नरसिंगपुरा	५०	वघ्र	६७	मंडौरा	८४	हौहरण
१७	खडायता	३४	नाणीवाल	५१	वसमी	६८	रासीवाल		

॥ श्रीः ॥

प्रार्थना

यह ग्रन्थ सदाशिवकरण रामरतन दरक माहेश्वरी मारवाडी मूंडवेवालेने विक्रम सम्वत् १८९८ शके १७६३ से आजपर्यंत संग्रह कर छंदबंद व वार्तिक बनाया है और आक्ट २५ सन १८६७ के नियमानुसार रजीष्टरी करके सर्व हक्क यंत्रालयाधिकारीने आधीन रक्खा है इसके शोध करनेमें बहुतही परिश्रम व अधिक द्रव्य व्यय हुआ है इसलिये सर्व भूमंडलके भ्रातृगणोंसे प्रार्थना है कि इसको वा इसमेंसे कोईभी आशय लेकर छापने छपवानेका इरादा न करें जरा सरकारी कायदेका लिहाज रक्खें और सूक्ष्म लोभवश हो अधिक नुकसान न उठावें.

आपका कृपाभिलाषी—

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास
" लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर " छापाखाना,
कल्याण-मुंबई.

समयहै इधर राज्यकादबाभी आमआनंदकेवास्तेहैं (पुन्ह) एक और गुरुलोगों ब्राह्मणोंकी महान्‌गलती पाईजातीहै के केईक ब्राह्मण यजमानकों गोत्राचार कानमें सुनातेहैं इसका क्या प्रयोजनहै तो जाना गयाके यह गोत्राचार इनब्राह्मणोंके भाईबंद नहिंसुणले कारन सुनलेगा तब सीखजायगा तो वह वंट दापेमें बंटानाचावेगा तो यहां हजारों प्रश्नहै कि भाईबंध होगा वह गोत्राचारजानें वा नहिं जाने वंटतो बटायही लेगा परंतु आपलोग गोत्राचार कानमें सुनातेहो इस्मेंहमको भ्रमखडाहोताहै सुवाहैके गोत्र आपहीकों यादनहीं और महेश्वरीका लडकाभोला भाला गोत्राचारमें क्या समझे और क्यायादहै आपनें कानमें गोत्राचारकी जगँह फोतराचार कहदिया तो वोभी मंजुरकिया व उस्के भामें वोही सत्यहै और एसेंही गोत्र बढकर सेकडों बल्के ४०० तरहके गोत्र नामहोगये बाकी प्रथमतो राज कुली ३६ के गोत्र ३६ छतीसही होगा पर बहोत्तर उमरावोंके ७२ खांप महेश्वरीहुये तो बहोत्तर गोत्रसमझो पर यह जादानाम बढनेका मकसद केवल यही मूतकहनेसें पाया गया परंतू प्रगट गोत्राचारसुणनेमें दुसरा ब्राह्मण सुनकर भाईबंद जाता होगा एसाकुछहोय जबतो कानमेंभी नहिंसुणाना और मुखसेंभी उच्चारण नहिं करणाँ केवल मननकरके प्राणायाम्यही करलेना उचितहै क्योंके इस गोत्राचार उच्चारणसें भाईबंदखडाहोकरदापामेंबंटलेलेवे यह तो आपके हक्कमें बड़ा नुकसानहै इसहालतमें तो वरके कानमेंभी कहना मुनासबनहिं पर यहगुरुलोगोंकी केवल बौंहै जिस्कों यहाँ क्यालिखे इधर हमारे भाई बंद विचारे भूतकरके आसावंत गोत्राचार सुणनेकों आयेथे उन्होंनें क्यासुना वहाँ बडे बुढे मनुष्य इखट्टेहोना इस्का सबब तो यह थाके गोत्राचार सुणके याद रक्खेंके अमुकगोत्र हमाराहै और अमुकगोत्रवाले हमारे सगेहैं गोत्राचार सुनानेंका प्रथमकारनतो यहीथा के दोनोंके गोत्र एकनहिं मिलजाय इसवास्ते चाहिये कि गोत्राचार

श्रीः ।

विज्ञापन.

विदितहो के यह वैश्यकुल भूषण व श्रीश्रीमाहेश्वरी जाती कुल धर्मरक्षक ग्रंथ (इतिहास कल्पद्रुम माहेश्वरी कुल शुद्ध दर्पण नामक) जिस्का खुलासा विशेष सूचना पत्रमें लिखाहै और सम्वत (१८९८) सें आजपर्यंत जो कुछ संग्रह हुवा उस्मेंसें किंचित् वर्णन किया है. इस्का सोधकरनेसें प्रवलपरिश्रम व आयू द्रव्य व्यय हुवा सोतो हे मित्र-गणोंजब आप इसें पूर्णतासे वाचोगे जब विदित होगा परंतु हमको बडा संदेहहै कि इस मेरे तुच्छबुद्धिके बनाये हुये ग्रंथकों कोनतो वाचेगा और किस्कों ज्ञातीके बंदोवस्तका फिकर व किस्कों अवका शहै इसी सबबसें अतिसूक्ष्म तत्वसारही वर्णनकर छापाहै बाकी १०००० दसहजार ग्रंथ पुन्ह शेप मोजूदहै.

यही तत्वसारदर्पणमेंभी ज्ञातीप्रबंधका सुगममार्ग दर्पणवतही दिखा दिया है और प्रथमावृत्ति विक्रम संवत १९५० भाद्र. शु. ९ को ७५० पुस्तक छाप श्रीश्री १०९ श्रीश्री माहेश्वरी ज्ञातके अर्पणकी पुन्ह सुधारणासह द्वितीयावृत्ति छाप नजरगुदराय सविनय प्रार्थना करताहूं के मुझे अपना अल्पबुद्धि तोतलासा बालक समझ ममकृतग्रंथकों महरवानहो दयालुतासें बाच पठ श्रवण मनन कर वर्तनूकपें लावें जिस्सें हमारा ५० वर्षका किया हुवा प्रबलपरिश्रम सुफलहो और ज्ञातीमें भी भूलकर किसीतरहका उलटा पुलटी सगाई सगपण दत्तपूत्रादि बखेड़ा पड़नेका भ्रम न रहै यह धर्म मर्य्यादा रूपी सड़क व पूल कायम रख स्वीकारकर वर्तनूपकपें लावे. यह आशाहै.

आपका अनुचर चर्णरजवंछिक.

सहा शिवकरण रामरतन दरक माहेश्वरी मारवाडी मूंडवेवाला.

श्रीः ।

विशेष सूचना.

इतिहासकल्पद्रुम माहेश्वरी कुलशुद्धदर्पण व वैश्यकुलभूषण. श्रीमाहेश्वरी प्रियवर महाशय मित्रों अहिंसक (शुद्ध) धर्मधारिक जाती भाइयों जरा इधर चित देकर अर्ज श्रवण करोके भवसमुद्रकी अधर्मिक अथाहधाराको टालनेके लिये प्रबंधरूपी पाल बाँधो. अवलतो अपनी ७२ खाँपे थी और प्रचारभी थोडीसी भूमीके गोलमें था अब ईश्वर कृपासे महेश्वरी कुलकल्पतरुकी शाखा बढकर हजारों कोसोंके फेरमें फैल गये और नौकभी ९८९ बोलने लग गये हैं यहाँ तक भ्रम खडा हो गया कि किसके कौन कौन भाई है और किनसे सगपन करना व किसका पुत्र दत्तक लेना जबके ग्यार साख टालके सगपन किया और खुद अपने भाइयोंके नामकी ; मालूम न होकर आपसमें सगपन हो विवाह होगया तो वो कैसा अधर्म है कि इस अधर्मियोंका बिलकुल मेदनीही भार नहीं सह सके इधर धनवान अपुत्र है और निर्धन बहु पुत्र हैं और आपसमें भाई है पर अपने भाईयोंकी बोलती फलियोंसे ना वाकिफ है तो धनवान अपुत्र ना औलाद जाने तब धन व कुल दोनोंका क्षय होना उधरनिर्धन बहु पुत्र वगैर धन कुँवार रहकर स्वर्गवासी होवे वो ऐसें कुलका नाश होना वा कुँवार रहनेसे विना स्त्रिके कामांध होकर नीच स्त्रियोंसें व्यवहार कर कुल डुबोना ऐसी २ अपनी जातमें कितनी बडी हानियें होतीहैं इस हानीका मिटना इतनाही जाननेसें हो सक्ता है के केवल अपनेमेंसें कौन कौन फलियें फूटकर नाम पृथक् पृथक् बोले जाते हैं और हम कौन कौन भाई हैं तो दत्तपुत्र (खोले लेनेमें) वा सगपनमें सुभीता व समझना आसानीसें हो जायगा ऐसा यह अति अलभ्य चमत्कारिक

ग्रंथ बना है कि इस्में सृष्टिकी रचना सूर्यवंश चंद्रवंशकी पीढियोंसें लगाय कर अपनी आद उत्पत्ती पेढ, वंश माता, गुरु, गोत्र, भैरव, देवी, सती, प्रवर, वेद शाखा, न्यातछुरी ७२ खाँप ९८९ नख व अर तखंडके कुलमाहात्म्न जातीसंख्याका खुलासा व १२ ॥ न्यात व ८४ न्यात व कन्या, पुत्र, शिक्षा, व, दत्तपुत्र ८५ प्रश्न. व. भाई भाइयोंका जुदे होकर हिस्सावंट ९८ प्रश्न व अपुत्रणी विधवा स्त्रियोंका हक्क. ७ प्रश्न व भाई भाई सामिल रहनेका नतीजा प्रश्न व छव न्यातके ब्राह्म-णाकी न्यात छुरी,पुन्ह, महेश्वरी ७२ खाँपमेंसें जुदे होकर जैसे धाकड ३२ गोत्र पोकरा १४ गोत्र अर्धविस्वा १० इत्यादि अनेकबातें वर्णन कियाहुवा इतिहास कल्पद्रुम माहेश्वरी कुलशुद्ध दर्पण व वैश्यकुल भूषण साडीबारह न्यातका कल्पतरु हमने बनाकर छापके प्रथमा-वृत्ति ७५० पुस्तकभी गाँव गाँवमें श्रीमहेश्वरी ज्ञातीके नजराणेमें वगे-रमूल्य भेजीगईहैं और बहोतसे ग्रामोंमें स्वीकारहोकर इस ग्रंथानुसार प्रबंधभी बाँधागया सो शुरूहै अब सुधारणा सहित तृतीयावृत्तिछाप करतैयारहै और यह नयम बाँधा गयाहैकि चहारमहिस्से तो हरआवृती में श्रीमहेश्वरी ज्ञातीकेनजराणार्थ है व तीनहिस्से विक्रियार्थ है मूल्यभी अल्प है.

अब सविनय प्रार्थनाहैकि सर्वमहाशय इस कुलशुद्ध दर्पणको दृष्टि गोचर करके जरा हृदेस्थानमें धारन करहीलेवें आशा है कि जो अगर इस अमूल्य अवशधी को हृदयस्थानमें धारण करलेवोगे तो फिर अधार्मिक प्रमत्त भयकारी धर्म नाशिक रोग दूरही रहेगा परंतु एक अद्भुत दिनोदिन भय उत्पन्न होताहै कि कालिप्रवाहकी प्रबल प्रचंड धारा होकर धर्म कुल जाती नष्ट करने के हितार्थ बढकर धर्म लुप्त किये जातीहै जोअगर ज्ञातीप्रबंद्ध कार्यमें गाफिल रहोगेतो फिर इस असाध्य रोगकी दवा नहींहै ॥ क्योंके जिस राजकुलीसें अपनी उत्प-

त्तिहै उसीमेंसें ३६ वर्णोत्पत्तिहै परंतु वगेरप्रबंद्ध आपसमें कुरीतियों और कुसग नादि चालचलन होकर वह लोग अंतजसमान नीचक्रिया धारिक होगये तो वगेर प्रबंध एसी हानीहोना कुछ असंभव बातनहिं है सो हे मित्रगणों जराप्रथमही चेतकर कुल शुद्ध धर्म धारणरूपी नवका की सवारी जल्दकीजिये फिर कोईभी प्रयत्न नहिं हैं जैसे राजनीतिमें लिखा है कि ।

निर्वाणदीपे किमु तैलदानम् चोरेगते वा किमु सावधानम् ।
वयो गते किम्वनिताविलासः पयोगते किम् खलु सेतुबंधः ॥ १॥

भावार्थ दीपकबुझे बाततेल पूरना चौरी होनेबाद सावधानी आयु पूर्णहो वृद्धाऽवस्थामें स्त्रियोंसें आनंदकी इच्छा नदीपूरआनेपर पुलबांधनेका विचार सर्वथा मिथ्या (अफल) है. फिरकुछप्रयत्न चलतानहीं इसवास्ते भ्रमांधकार निवार्णर्थ दर्पणवत यह अमूल्य पुस्तक एक एक जरूर मंगवालीजिये. कुछ बडी चीज नहिं है केवल कागज पुट्ठेकी कीमतहै यह पुस्तक ५० वर्षमें संग्रहहुवाहै और कुल उम्मर व द्रव्य इसपरीश्रममें व्ययकियाहै सो हमारीमहिनतको आप प्रियमित्रों इसे स्वीकार कर जाती सुधारणा करोगे तबही हमारे प्रबल परिश्रमका साफल्य मानेंगे.

आपका अनुचर चर्णरजवंछिक.

सहा शिकरण रामरतन दरक मूंडवेवाला.

॥ श्री ॥

वैश्यकुलभूषण ।

व

इतिहासकल्पद्रुम माहेश्वरीकुलशुद्धदर्पणकी

अनुक्रमणिका.

(माहेश्वरी ७२ खाँप.)

इति वैश्यकुलभूषण व इतिहासकल्पद्रुममाहेश्वरीकुलशुद्धदर्पणकी अनुक्रमणिका समाप्त ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास
" लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर " छापाखाना,
कल्याण-मुंबई.

ॐ ३

अथ इतिहास कल्पद्रुममाहेश्वरी कुलशुद्धदर्पण सहाशिवकरण रामरतन दरक माहेश्वरी मारवाडीमूंडवेवालाकृत लिख्यते.

प्रथम रचनाका वृत्तांत आदि प्रनालिका वर्णन करताहूं तो विष्मय (आश्चर्य) है कि ग्रंथानुसार अनेक भेदाभेद पाया जाता है. कहीं लिखा है कि पृथ्वि और प्रजा अनादिसिद्ध है. और कहीं लिखा है कि ब्रह्मतेंपूर्ण पूर्णतें प्रकृति प्रकृतितें महतत्त महतत्ततें अहंकार अहंकारते निर्गुण तीनगुणतें पांचतत्व पांचतत्वतें संपूर्ण रचना ऐसे अनंत भेदसे अनेकबातें ग्रंथोंमें पृथक् २ लिखी है. पर इस समयके मान्य क्षत्रियोंकी उत्पत्ति श्रीमद्भागवतके नवमें स्कंधमें सूर्यवंश व चंद्रवंशकी पीढियेंभी लिखी है. और यहां क्षत्रियोंकाही इतिहास बहोत लोगोंके मान्य चाहिये था वो संक्षेपमात्र वर्णन किया है. प्रथम आद आदतें जुगाद जुगादतें अंड अंडतें वैराट वैराटतें नारायण नारायणतें नाभितें कमल कँमलतें ब्रह्मा ब्रह्माके दस पुत्र चक्रमें देखो.

नाम	मरीची १	अत्रीह २	अंगीरा ३	रुचि ४	पुलह ५
नाम	पुलिस्त ६	दक्ष ७	भृगु ८	वासिष्ठ ९	नारद १०

इन दसपुत्रोंकी जुदी २ प्रनालिका चली सो तो ग्रंथोंमें जगह २ लिखा है परंतु यहां केवल सूर्य और चंद्रवंशकी प्रनालिकाका प्रयोजन है सो यही लिखा है.

प्रथम ब्रह्मा ताके पुत्र मरूची १ मरूचीतें कश्यप कश्यपतें सूर्य सूर्यतें सूर्यवंश कहलाये और ब्रह्माके द्वितीयपुत्र अत्रीह २ अत्रीहतें सोम (चन्द्र) ता चन्द्रतें चन्द्रवंश कहलाया.

पुन्हः सूर्यवंशकाविस्तार इसके आगे चक्रमें देखो श्रीब्रह्माजीसे श्रीरामचन्द्रतक ६३ पीढी हुई.

(अथसूर्यवंशपीढियांकोष्टक)

१	ब्रह्मा	१४	शावस्ति	२७	ह्यस्व	४०	वाहुक	५३	अस्मक
२	मरीच	१५	ब्रह्मदस्व	२८	अरुण	४१	सगर	५४	मूलक
३	कश्यप	१६	ढुंढुमार	२९	त्रिवंदन	४२	असमंजस	५५	दशरथ
४	सूर्य	१७	दृढास्व	३०	सत्यवृत	४३	अंसुमान	५६	इडवड
५	वैवस्वतमनू	१८	हयास्व	३१	त्रसंकु	४४	दलीप	५७	विस्वसह
६	इक्ष्वाकू	१९	निकुंभ	३२	हरिश्चन्द्र	४५	भागीरथ	५८	षडवांग
७	विकृती	२०	वर्द्दणास्व	३३	रोहित	४६	श्रुत	५९	दीर्घवाहु
८	कुकुस्थ	२१	कुश्यस्व	३४	हरित	४७	नाभ	६०	रघू
९	अनेन	२२	शैनजित	३५	चंप	४८	सिंधुदीप	६१	अज
१०	मिथू	२३	युवनास्व	३६	देव	४९	अयुतायु	६२	दशरथ
११	विस्वगंधी	२४	मानधाता	३७	विजय	५०	हतुवर्ण	६३	श्रीरामचन्द्र
१२	चन्द्र	२५	पुरुकुत्स	३८	रुरक	५१	सर्वकाम		
१३	युवनाश	२६	अनरण्य	३९	बक	५२	सुदास		

ब्राह्मणक्षत्रियोंकासमग्रतावर्णन ।

देखनाचाहियेके आगू ब्राह्मणोंसे क्षत्रि और क्षत्रियोंसे ब्राह्मण होजातेथे और भोजन विवाहादि परस्पर होता था यह प्रनालिका वहोत दिनोंसें प्रचलितथी पीछे जमदग्न ऋषीके पुत्र परसरामजी अपने पिताकी आज्ञानुसार सहस्रबाहुसे युद्धकर उस्कों निपातकिया और कामधेनु गऊ पीछी लाये और यह प्रतज्ञा धारणकरीके इस पृथ्विपर क्षत्रियोंका अवजिकरदूंगा (वीजनास) और एकसहस्रचक्र फिरके लगाऊंगा यह विचार फरसा उठाय इकीसवेर पृथ्वि निपातकरी माहाघोर युद्ध करतेरहे उनकीधाक (धमकी) सें स्त्रियोंके गर्भ निपात हो जातेथे तापीछे सूर्यवंशमें दशरथी रघुकुलनायक श्रीरामचंद्रजीसें परसरामजी युद्धकरनेलगे प्रथम नेत्रयुद्धकिया तब रामचंद्रजीनें परसरामजीके नेत्रोंका संपूर्णबल हरन कर असक्तकरादिया फिर फरसा धनुषसें भिडाया तो धनुष और फरसा भिडतेही लोहचुंबक वत परसरामजीके संपूर्णअस्त्र शस्त्र शरीरादिका बलहरणकरलिया जब परसरामजी

निर्बलहोके श्रीरामचंद्रजीकों आसिर्वाद देकर तपस्याकरनेकों वनमें चले गये पीछे रामचंद्रजी रावणादिकोंकूं मारकर बहोत वर्षतक निष्कंटक राज्य किया.

अथ श्रीरामचंद्रजीके पुत्र पौत्र वर्णन.

श्रीरामचंद्रते कुस्य कुस्यतें अतिथि० या प्रकारचक्रमेंदेखो.

६३	श्रीरामचंद्र	७५	वज्रनाभ	८७	महस्थान	९९	वीर	१११	वद्री
६४	कुस्य	७६	स्वगण	८८	विस्ववाहव	१००	वृहदस्व	११२	कृतजय
६५	अतिथि	७७	विध्रती	८९	प्रसेनजीत	१०१	भानुमान्य	११३	रणजय
६६	निषध	७८	हिरण्यनाभ	९०	तक्षिक	१०२	प्रतिकास्य	११४	संजय
६७	नभ	७९	ध्रुवसंधि	९१	वहद्वल	१०३	सुप्रतिक	११५	सक्य
६८	पुंडरीक	८०	सुदर्शण	९२	ब्रहद्इण	१०४	मरुदेव	११६	श्रुद्रोद
६९	क्षेमधन्वा	८१	अग्निवर्ण	९३	उपक्रिय	१०५	सुनक्षत्र	११७	लागल
७०	देवानिक	८२	शिघ्र	९४	वत्सवृद्ध	१०६	पुष्कर	११८	प्रसेनजीत
७१	अहनी	८३	मरुक	९५	अलिव्योम	१०७	अंतरिक्ष	११९	क्षुद्रक
७२	पारिपात्र	८४	प्रसुश्रुत	९६	भानुः	१०८	सुतपा	१२०	रुकण
७३	वलस्थल	८५	संधि	९७	द्विवाक	१०९	अमित्रजित	१२१	सुरथ
७४	अर्कसंभव	८६	अमर्षण	९८	महदेव	११०	वृहद्भानु	१२२	सुमित्र

यहांतक सूर्यवंशी सुमित्रतक अयोध्यामें राज्य करतेरहे रघुकुल राजा सूर्यवंशी धर्मनीतिपालक और प्रतापिक हुये इनके राज्यमें अनेक तट सागर कूप नदी पुलगउरक्ष्याप्रतिबंध इत्यादि अनेकधर्म नीतिका चालचलन रहकर संपूर्ण रय्यत आनंदयुत रहती और राजावोकों आसीर्वाद दिये करती.

अथ चंद्रवंसकी पीढिया कौष्टक.

१	ब्रह्मा	५	पुरुषा	९	यदु	१३	शत्राजिन	१७	प्रद्युम्न
२	अत्रीह	६	आयु	१०	कौशठी	१४	सूरसेन	१८	अनिरुद्ध
३	चंद्रमा	७	नहूस	११	बृजनिवान	१५	वसुदेव	१९	वज्रनाभ
४	बुध	८	ययाती	१२	उसेक	१६	श्रीकृष्ण		

. ६१. तक चंद्रवंस द्वारकाराज्य रहा.

इतिहास.

इसीतरह चंद्रबंसियौंनें भी बलप्राक्रमसें अपने २ स्वस्थानौंपें राज्य करते रहे. तदनंतर कोई ऐसा दैवचक्र संपूर्ण प्रथवीपर हुवा. जिस बखत क्षत्रिः मात्र क्षत्रत्वधर्मकौं छोड करके अशास्त्र (शस्त्ररहित) बौधधर्मधारिक (जैनी) होकर वेदोक्तधर्ममें हिंसा मानणें लगे. मख आदिक संपूर्णक्रियाकर्मकांडदानादिक बंधकरके ब्राह्मणोंको दुःखदेनें लगगये तापीछे आबूके पूर्वकौंणकी कोई किन्नरा (गुफा) में बहुत्त ब्राह्मण इखटे होकर रहणें लगे वहाँभी कोईदिनोबादजेनियौंनें हुल्ला मचाया तब वसीष्टऋषीनें वह जो क्षत्रि-बौधहोगयेथे उनमेंसे ४ च्यार क्षत्रिवडे बलवानथे वह पहले वसीष्टकेही सिष्य थे. परंतु बौधहो गये थे जिनकौं पुन्ह आदेसउपदेस देके पीछे वेदोक्तधर्ममें प्रवर्त कीये और अग्निकुंडमेंसे निकालके वेदौपनीषदोंका मंत्र देके, पुनर्संस्कार पुनर्जन्म ऐसा अग्निके कुंडमेंसे निकालके शुद्धकीये और कितेक लोगोंको तप-त्मुद्रा और श्रावणी कर्मकरिके यज्ञोपवित्रदे उनका बौधमत निवार्ण किया पुन्ह क्षत्रियोंकौं अस्त्रशस्त्रविद्या बहुधा प्रकार सिखायके क्षत्र त्वधर्म धारण करवाया और अपनी रक्षाके निमित्त उनकौं वहाँ रक्खे जहाँके परगनेका नाम अबइनादिनौंमें गोढवाडदेस और गांमकानाम नाडौलाई कहतेहैं और आबूके पहाडसें पूर्वउत्तर कौंनपे है और च्यार क्षत्रियोंकौं पुनर्संस्कार दीया जिनका कौष्टकमें देखो.

चतुर ४ क्षत्रिकौष्टक.

प्रथमजाती	पढार १	चालुक २	परमार ३	चहुवान ४
प्रगटनाम	पडिहार १	सौलंखी २	पंवार ३	चहुवान ४

यह च्यार जात ब्राह्मणोंनेंइन ४ क्षत्रियोंकौं देकरच्यारजातकेक्षत्रि ठहरायेतदनंतरभी इस ब्राह्मणक्षात्रियौंके आपसमें रोटीव्यवहारदुतरफा

और बेटीविवहार इक तरफा होतारहा रोटी ब्राह्मणके हाथकी क्षत्रि और क्षत्रिके हातकी ब्राह्मण खाते और बेटी क्षत्रिकी ब्राह्मण लेते परंतू ब्राह्मण बेटी क्षत्रिकूं नहिं देते महाभारतमें जगें जगें लिखाहैके पांडवोंके यहाँ दुर्वासा आदिक ऋषी भोजन किया करतेथे तदनंतर विक्रमांके समयमें कालिदास नाम पंडितराज कन्यासें पाणीग्रहण कीयाथा पीछे इसदेसमें यवनोंका प्रचार होनेसें क्षत्रियोंका आचार और आचरण बराबर नहिं रहणेंसें सामिल भोजन और विवाहादिसवव्यवहार ब्राह्मणोंने अपना जुदा करलिया बस यहाँ इतनाँही लिखेंगे कारन तातपर्य हमकूं वैश्योंका लिखणाहै प्रथम इन ब्राह्मणोंमेंसे इक्ष्वाकु नाम क्षत्रि राजा प्रथिपालक हुवा उस्के प्रतापकातोहूं कहांतक वर्णन करूं कारन ग्रंथवढजावे जिस्सें संक्षेपमात्रही वर्णन किया है इक्ष्वाकूके वंसमें एक पुरुष वैश्य धन्वा बडा विवेकीऔर चतुर संसारव्यवहारमें प्रवीण और राज्यें कार्यमें विचीक्षण स्वामीसेवामें तत्पर महाधर्मग्य एसा प्रगटहुवा जिस पुरुषकों राजाने महाजनपददेके अपने घरका काम सुपरतकर दिया उस पुरुषकी प्रनालिकाके लोग इक्ष्वाकवंसी वैश्य कहलाये गये ता पीछे वैसंपायन और नंद आदनेंभी वैश्यपद पाया पीछे अग्रसेनसें अगरवालेभये पीछे क्षत्रियोंसे वैश्यहोतेही गये जैसेके.

महेश्वरी १ औसवाल २ चित्रवाल ३ श्रीमाल ४ श्रीश्रीमाल ५ पौरवाल ६ बघेरवाले ७ पल्लीवाल ८ पोकरा ९ खटोडा १० टिंटोडा ११ खंडेलवाल १२ इत्यादि ये तो सारीही बारह न्यात महाजन और इससिवाय और भी अनेक महाजन चौरासी जातके कहलाये गये अब म्हें यहाँ संक्षेपमात्र लिखताहूंके इस भरतखंडमें तो अनेक जातीके महाजन होवेंगे परंतू २०० दोसो बीस तरहके माहाजन मेंनें सुनें और मिले जिनजिनजातियोंका नामसमूहछंदबंदवर्णन करताहूं अतिविस्तार वर्णन करनेसें ग्रंथ बढकरबडाहोजाय तो फेरकोन

बाचे इसहेतुसें मुख्यखुलासा महेश्वरीयोंकाही कीयाहै और समूहनाम सर्वजातिके महाजनोंका लिखते हैं.

अथ दिल्लीमंडलके संपूर्ण जातिके महाजनोंकी संख्या।

दोहा ॥ प्रथमवैश्यइख्वाकपुनि वेसंपायनजाँन ॥ फिर प्रजंन्नके नंदनक अउरअनकेप्रवाँन ॥ १ ॥ केइविक्रम पीछे भये, क्षत्रतछाडवईस ॥ सो उआपसमें फूटिके उभयपक्षकरीस ॥२॥ कवित्त ॥ सिरीमाल श्रीखंडा कुरंदवाल कठनेश सिरीश्रिमाल श्रीखंडः करंट बालबानिये ॥ कारेग-राया खत्री आरोडा खँडेलवाल खेमवाल खंडवस्त खेडवालजानिये ॥ कसर वानी लोईवाल कूसरचाकपोलाखरुवा कांकरियाकठाड़ा कोइले सिरिगौड़ ठानिये ॥ गौल वाल गंगर वाल गोगल वाड़ गंगराड़ा गौल-वाला गोलापुरा गींदोड़्या मानिये ॥ ३ ॥ ककस्तान कसारा कोनड़ कोमठी कसूंबीवाल गोनध गोलालटूंसर गो घराल गनिये॥ गूजरसि-घाडे गौल गाहोई चुँडेलवाल श्रीगुरुकथाराडीडू बदनौरे बनिये चोर-ड़िया गौलराड़ गाहोई जेसवाल चौरँडिया चक्कचापभटनेरा भनिये ॥ चक्कड़ कँदोइया कम्माइया तरोड़ा चाल कसंबे खँडेर धाकड बंभर बर-सनिये ॥४॥ हलदिया तनवार उम्मर अवकथवाल अग्रवाल मेड़तवाल मत्तवाल भूँगड़वाल भाखूंहूँ ॥अजमेराभावसार इंदुपुराओसवालभाक-रिया बागरोड़बालमींकबाखूंहूँ ॥ बागोलापितादीमटियामह त्या सोरं-ठवास पोकरा सहेलवाल विदियादादाखूँ ॥ भाटिया पसाया मोड़माँ-डलिया वाल रायक पारख पंवाडा बीजाबरगीबिसाखूहूँ ॥ ५॥ बागड़ि यालबेचू वे हड्या भवनगे रगोलपुरा राजून्याती अष्ट वोर अंडवाल आनूँ हूँ ॥ सेतवाल सौरंडिया उस्तवाल उदेपुरा राजपुरा रुस्तगी राजिया-सुजानंहूँ ॥ अस्तकी अजोधिया अडालिया सोहिलवालसौरामियाँ सो-हीतवाल मेवाड़ियामानूंहूँ ॥ जंबूसरा जोधपुरा रत्नकरा रायकुली अहि-

छत्ते खड़ायत वहोरियाबखानहूँ ॥ ६ ॥ जुईवाल जायस्वाल गुदेला गुरवार दूसर चतुरथ चितौड़ा इख्याकवंसिआदूहै ॥ जालौरा जानौरा डिडवंसर दिल्लीवाल दंसवाल देहीवाल टटौडा सादूहै॥चौसका दसौरा धवलकोसटी नृसिंघ पुरा दीसावाल नाथचल्ला नागर लाड जादूहै ॥ टगचल्ला पंचम टटेरिया भटेरासाढ माथदे मलीनघोर माथुरियामादूहै ॥ ७ ॥ जोधरा बघेरवाल पद्मावति पोरवाल हरसोरा हाकारिया संगमारसाठेहैं ॥ नागिंद्रानराणीवाल नाछेला नेकधर्न नागोरी नराया-नेमा पोकर वालपाठेहै ॥ पल्लीवाल पोहकवाल पौसरा पवारछिया ना-डिया वांगारवैस लिंगायत लाठेहैं ॥ नरसिया रगौलापुरा नौटिया बघ-छेवाल झालराप्रवार हरद हूमड हरहाठे हैं ॥ ८ ॥ डीडूमहेश्वरी सराक गीरुवेदवरगी वदवइया वैसंपायन वडगूजरुकहिये ॥ चातुरवेदीमोढ नारनगेरसा सुनवानी सोनैया सुखंडरा समोधिया सहिये ॥ सेरिया सिंहार सुरले माहुरा सुरान माइया वडेलावरेया भुरला लवाणाँ सुल-हिये ॥ सुरंद्रिया सडोइया सिरोहिया प्रमाका सीपी नवांभरा वेरटिया भुजपुरे भइये ॥ ९ ॥ दोहा ॥ आनंदे अडूसके सोहिल लोहितवाल ॥ भूंगवागडीबानिये खटवाड़ोचित्रवाल ॥ १०॥ इतेवैश्यभरतखंडमें सुन्-हमकीयालख ॥ मालदौयसेबीसकी बाकीरहेवसेख ॥ ११ ॥ मेंश्रवणा सुनकरकह्यौ करनिश्चयनिरधार कहेदरकशिवकरणियों बाकीरहेअ पार ॥ १२ ॥ तुच्छबुद्धिकवलगगिनों माहाजनभेदअनेक ॥ नामऊ जागरलिखलिये लखिशिकवरणबसेख ॥ १३ ॥

अथ दिल्लीमंडलके संपूर्ण जातके माहाजन ।

श्रीमाल	श्रीगुरु	कपौला	कंदोइया	कथार	खंडेलवाल	खतरी
श्रीश्रीमाल	कठाड़ा	कूसरया	कमोइया	कारंटवाल	खेडवाल	खंडवस्त
श्रीखंड	कठनेरा	कुरंदवाल	कारेगराया	कसंबे	खेमवाल	खरुवा
श्रीखंडा	कांकारिया	कोहले	कौमठी	कसुंबीवाल	खंडेर	खड़ायते
श्रीगोड़	करवस्तन	कौनड़	कसारा	कसरखानी	खटौड़ा	गोइलवाल

गोलवाल	चिञवाल	यॅवलकौष्टी	पँवाडा	भाकारिया	रायकवाल	सौरमिया
गोंभवाल	चाल	नरराया	पोकरा	भाटिया	राजून्याती	सींहार
गंगरवाल	जंबूसरा	नरसिया	वधेरवाल	भावसारंगारे	लस्तंगी	हरसौरा
गोधराल	जायलवाल	नरसिंघपुरा	वपरछवाल	भांग	लवेचू	हलादिया
गौलाल	जालौरा	नरार्णीवाल	वरमाका	भूंगडवाल	लवाणा	हरद
गुढेल	जानौरा	नवांभरा	वदवइया	भूंरला	लाड	हाकरिया
गाहोई	जादू	नाडिया	वरैया	भुजपुरे	लिंगायत	हूमड़
गंगराड़ा	जेसवाल	नागर	वदनौरा	भटेरा	लोहिता	अजमेरा
गौलवाड़ा	जोजरा	नारनगेरगा	वडगूजरु	मत्तवाल	सहेलवाल	अवकथवाल
गोलवाड़	जोधपुरा	नागिंद्रा	वहौरिया	मलिनघोर	सडोइया	अगरवाल
गूजरा	जुईवाल	नाथचल्ला	विरमाका	महत्या	संवोधिया	अजोधिया
गिंदोडिया	झालरा	नाछिला	वागौला	माहेश्वरी०	संगमार	अडालिया
गुरवार	टगचाल	नागोरी	वालमींक	माथुरिया	सरावगी	अटूसका
गोगंध्र	टींटोड़ा	नेकधर्ने	वागडिया	माहुरे	साढ	अहिछते
गोलापुरा	टंटेरिया	नेमा	वाराहिया	महागदे	सिरौद्या	अष्टवार
गौलसिंघाड़े	डीडू	नौटिया	वीजावरगी	माइया	सुखंडरा	अस्तकी
गौलापूर्व	डिडउस्मर	पल्लीवाल	विदियाद	माटिया	सुराम	आनंदे
गौरारेजैनी	दूसर	पदमावतिपार	वैस	मूरले	सुनवानी	आरौड़ा
छोंपी	ढूँसर	पोरवार	वैसंपायन	मेरतवाल	सुरंद्रिया	औसवाल
चौरांडिया	तवनाल	पसाया	वेदवरगी	मेवाडिये	सेतवाल	अंडूवाल
चौरडिया	तरौड़ा	पवाराछिया	वेंहडचा	मौड़चातुर्वेद	सेरिया	इंद्रपुरा
चीतौडा	दंसवास	पारख	वैराटिया	मौडमांडल	सौहिले	इख्वाकवशी
चंकाड़	देहीवाल	पितादि	वौगार	रतकरा	सौरठवाल	उस्तवाल
चतुरथ	दसौरा	परवाल	वंभर	राजपुरा	सोहिलवाल	उस्मर
चुडेल्लवाल	दीसावाल	पौहकवाल	वडेला	रागौलापुरा	सौधितवाल	उदेपुरा
चौसथ-	दिल्लीवाल	पौसरा	भटनेरा	राजिया	सारंडिया	
चकचाप	धाकड़	पंचम	भवनगें	राजकुली	सौनेइया	

(सूचना) इसभर्तखंडमें अनेक प्रकारके माहाजनभये तिनका वर्णन सुक्षममात्रहीकीया कारनयहाँइतिहास महेश्वरीयोंकावर्णनकरना मुख्यहै ॥ दोहा ॥ भरतखंडइलऊपरे माहाजन जातिअनेक ॥ नामल खवरणनकिये संख्या गौत वसेक ॥ १ ॥ इनसबहीतेंविनय यह कर जुहार अरदास ॥ कलपब्रक्षवर्णनकरूँ प्रथममहेश्वरिखास ॥ २ ॥

॥ श्रीः ॥

॥ अथ ॥

इतिहासकल्पद्रुममाहेश्वरीकुलशुद्धदर्पण।

ब्रह्म शिवकरण रामरतन दरक माहेश्वरी मारवाडी मूँडवेवाले कृत लिख्यते।

मंगलाचरणकवित्तछप्पय.

श्रीगुरुसारदमाय सदाविद्यागुनदायक ॥ ब्रह्माविष्णुमहेष शेषसुमरूँ गननायक ॥ अनभौकरतावंदुं वहुरिकविबुधके आगर ॥ देहिंअरथइ तिहास सदासुखसंपतिसागर ॥ शिवकरण नमित तनमन बचन बरअक्षर बरदिज्जिय ॥ इतिहास कल्पद्रुमबर्णहूंसुयेहक्रपामोहिकिज्जिये॥१॥ सुगरासुघड सपूत जिकेकुलबंसउजालै ॥ सुगरासुघडसपूत धरममरजादापालै ॥ सुगरासुघडसपूत आदकीरतविसतारै ॥ सुगरासुघडसपूत श्रवणरसनाउरधारै ॥ शिवकरणधन्यजगजसतिलक कलपव्रक्षनितप्रतिगुणें ॥ कुलकेकुठारनरनीचवह इतिहासकाँनदेनासुणें ॥ २ ॥ अबसुनियेंदेकाँन चित्त एकागरकीजें ॥ अबसुनियेंदेकाँन वचन अमृतरसपीजें ॥ अबसुनियेंदेकाँन बडनकीकीरतगाऊं ॥ अबसुनियेंदेकाँन विवद विधि भेद जनाऊँ ॥ शिकरणसभासब है सुचित रुचि करके यहसंभरो ॥ कलव्रक्षमहेश्वरिजातको पुश्वपत्रफलउरधरो ॥ ३ ॥ अथ न्यातमहिमाँ ॥ श्लोक ॥ ज्ञातिर्गंगाप्रयागं भृगुरपिच गया पुष्करं सर्वतिर्थम् ॥ ज्ञातिर्माता पिता वै प्रहरतिदुरितं पावकः पापहारि ॥ ज्ञाति चिंतामणिर्वै सुरतरुसदृशी कामधेनुर्नराणाम् ॥ नास्ति ज्ञाति परः किम् त्रिभुवनभवने ज्ञातिरेका प्रसिद्धा ॥ ४ ॥ कवित्तछप्पय ॥ पतितपावनीगंग सुनतकीरतमनमोहें ॥ पतितपावनीगंग परसपंचनमेंसोहें ॥ पतितपावनीगंग न्हायकेसबजगआवे ॥ पतितपावनीगंग न्यातपरन्यूत

जिमावे ॥ शिवकरणमाहातमअति प्रवल कौउपमासरभरलहैं ॥ कर जोरिमोरितनमनबचन सीसनाथधनधनकहैं ॥ ५ ॥ पतितपावनीगंग-न्हालदरसणअघनासें पतितपावनीगंग न्यातमिलबुद्धिप्रकासें ॥ पतित पावनीगंग नामसुनानिरमलअंगा ॥ पतितपावनीगंगपौतजलछोलत्त रंगा ॥ शिवकरण सकलतीरथसुफल जानन्यातदरसणकरें ॥ सिधहोत सकलमनबांछिफल पापतापदूषणटरें॥६॥ दोहा ॥ श्रवणनेंनमुखमनसु-फल पढतगुनतकलक्रिस ॥ दरसणतेंअघजातहै शुद्धहोतअंत्रीक्ष ॥७॥ अथमाहाजनमहिमाँ कवित ॥ माहाजनमहिमाँअपार बरणतकौपावे पार देसदेसग्रामग्राम धनकौप्रकासहैं ॥ माहाजनजहाँहोतहाँनाँनाँउच्छ रंगरंग माहाजनजहाँहोत तहाँ अबिचलसुखरासहैं ॥ माहाजनजहाँहोत तहाँ पंचपंचातहोत माहाजनजहाँहोततहाँ देवनकौबासहैं ॥ राजनपें रावनपें देसदरियावनपें साहबादस्याहुनपें माहाजनदरखासहैं ॥ ८ ॥ माहाजनजहाँहोततहाँ हट्टीबाजारसार माहाजनजहाँहोत तहाँ नाज-व्याजगल्लाहें ॥ माहाजनजहाँहोततहाँ लेनदेनाबिधिविव्हार माहाजनजहाँ होततहाँ सबहीका भल्लाहें ॥ माहाजनजहाँहोततहाँ लाखनकौफेरफार माहाजनजहाँहोततहाँ हल्लनपेंहल्लाहें ॥ माहाजनजहाँहोततहाँ लक्ष्मी प्रकाशकरे माहाजननहिंहोततहाँ रहवौबिनसल्लाहें ॥ ९ ॥ माहाजन ज-हाँहोततहाँ मिलतहे अनेकचीज माहाजनजहाँहोततहाँ भरेदामगल्लाहे ॥ माहाजनजहाँहोततहाँ देखियेसबायानूर माहाजनजहाँहोत दानपुन्यके हमल्लाहे ॥ माहाजनजहाँहोततहाँ अष्टसिद्ध नउँनिद्ध कीमियाँरसाँण करामातकरेभल्लाहें ॥माहाजनहेंकामधेनु कलपव्रक्ष चिंतामन अमरबेल अमी और पारसके डल्ला हें ॥ १०॥ माहाजनभयोनमंत्रि गयो राजरा-वणको माहाजनकीसलहाबिन सिसूपालन्हास्योहें ॥ भयोथोभिख्या-रीनल हरचँदमोंबिखोपरयो माहाजनबसीटीबिन कैरवकुलनास्यो हें ॥ माहाजनमुसहाबिन केतेराज्यबदलगये माहाजनीकबुद्धिबिन जादवकुल

चास्यो हैं ॥ माहाजनदिवान राजरानामाहारानाजूके उदयभयोभाँण जाँण कमलज्यूँप्रकास्योहै॥ ११ ॥माहाजनअनेक भरतखंडमेंविराजमान तिनकोंजुहार मरीवीनतीवचाऊंहूं ॥कियोचाँहुकलपव्रक्षडीडूमहेश्वरीको पूरवइतिहासलेके पद्धतीरचाऊँहूं॥आद मूल पेढवंस गोत्र वेद शाखाकहूं नाम कर्म देवी देव गोत्र वोंक ल्याऊँहूं॥देसकाल ग्राम ठाम कारनवंसप- भेद दरक शिवकरण सोझ मेलसोंमिलाऊँहूं ॥ १२॥इतिज्ञातिमहिमा ॥

अथ ग्रंथबनानेकापूर्वइतिहास.

दोहा ॥ प्रथमग्रंथप्रारंभको कारनकहूँवनाय ॥ पूर्वसोखऐसेलग्यो सवविधिदेहुँजनाय ॥ १ ॥ समतअठारेठान्वें भरभादूसुदतीज ॥ अति विरखाबादलपवन भलहलचमकीबिज ॥ २ ॥ ताहिसमयदसमेसरी जुडबेठेइकजाग ॥ घरविधकी वाताँकरे आपसमें अनुराग ॥ ३ ॥ इत- नेंइकमेवाडको मिल्योसाहजीआय ॥ जेगोपालकरपरसपर बेठोआदर पाय ॥ ४ ॥ पूछणलागेजातकुल कह्योनोगजागोत ॥ तबसबहसिकहनें लगे यहहमरेनहिंहोत॥ ५ ॥ तबवहपूछनकोंलग्यो यहवोले कछु ओर ॥ वोकहयहहमरेनहीं भईपरसपरझोर ॥ ६ ॥ जबतोअतिचगरोचल्यो लिखबेलागेवोंक ॥ मँडपंचासेकमूँडवे चलीपरसपरचोंक ॥ ७ ॥खाँप वहोतरसुनतहे यहतोबढीअपार॥तबसबही पूछतभये,मोसालससुरार ॥ ॥ ८॥ कछुकनामतामेंबढे सेवगमिल्योमन्होर ॥ यादहुतेजाकेजिते आ नालिखायेओर ॥ ९ ॥ चढयोछंदमोकोंअधिक फिरयोदेसपरग्राम ॥ थोडेदिनके अंतरे लिखेतीनसौनाम ॥ १० ॥ ताहिसमयअनभोखुली कहणलग्योकछुछंद ॥ जबदिलमेऐसीभइ किज्येजातिप्रबंध ॥ ११ ॥ छंदकुंडलिया ॥ मनसोबाकरतोरयो बहुतादिवसमनमाँह कलपव्रक्ष कैसेंबने मित्रमिल्योकोउनाँह ॥ मित्रमिल्योकोउनाँह बरसबीसकयुँहिं बीता ॥ मिलेनपूरेनाम रहीदिलभीतरचिंता ॥ उगणीसैनें ठारवें ब्रक्षभे

दकछुपाँह ॥ मनसौबाकरतोरयो ॥ बहुतदिवसमनमाँह ॥ १२ ॥अति
महिनतबहुकष्टतें कछूकपायौममं ॥ तदपिबहुतबिस्तारकहि मिटचौन
पूरौभमं ॥ मिटचौनपूरौभमं खौजाकितहूनहिंपायौ ॥ देशाटनकेकाज
पुरीइंद्रावतिआयौ ॥ अतिअनंदमंगलमई माहाशुद्ध आसमं ॥ अतिम
हिनतबहुकष्टतें कछूकपायौ भमं ॥ १३ ॥ छापाकोधंधौकियौ इंद्रपु
रीमें आय॥ तदपिकलपतरुनाँबन्यौं हौंसरहीमनमाँय ॥ हौंसरहीमनमा
य मिल्या बलदेवजुराठी ॥ दीन्हींहिमतकरार बाँधकहिकम्मरकाठी
द्यौ अरजी पंचाँमहीं आगे देहुँ सुनाय ॥ छापाकोधंधौकियौ इंद्रपुरीमें
आय ॥ १४ ॥ जुडेमेसरीसहसद्वय इंद्रपुरीमेंजाँन ॥ विनतीकरीबका
रके किनहुनदीन्हींकाँन२अरजबहुभांतसुनाई ॥ सुनसुनकेसबहसे बात
कछुमनानभाई ॥ पंचपांचदसमुख्यथे समुझेचतुरसयान ॥ जुडेमेसरी
सहसद्वय इंद्रपुरीमे जान ॥ १५ ॥ कहौहगीगतआदतें बोले पंचसुजाँन
कहाअरजनीकेकहौ हमसुनिहेंदेकाँन ॥ हमसुनिहेंदेकाँन कियातुम
ज्ञातीकारण ॥ कलपब्रक्षअबरचौं माहामंगलकुलतारण ॥ जागाँकौं
कुलवायकेकरेंमानसनमाँन॥कहौहगीगतआदतेंहमसुनिहेंदेकाँन ॥१६॥
जबउनतेंहमनेंकही यूँकछुसरेनकाँम ॥ कबजागेआवेइहाँ कौखरचेंगे
दाम ॥ कौखरचेंगेदाम खरचजागाँकौभारी ॥ अमलतमाखू भाँग ऊंट
घोडाँअसवारी ॥ पाँचसातदसआदमीं साथमंडलीगाँम ॥ जबउनतेंहम
नेंकही यूँकछुसरेनकाम ॥ १७ ॥ सकरबौलेपंचमिल जागालेंहुँबुलाय
सबाबिधउनकौं पूछल्यै पौथीदेंहखुलाय२ दामलागेसोहिदीजें ॥ करौक
लपतरुत्यार विलमछिनभरनाहिंकीजें॥ यह सुनके जागागुपत बसे अंत
कहुँजाय ॥ हँसकरबौलेपंचमिल जागालेंहुबुलाय ॥ १८ ॥ तबपंचनतें
अरजलिख और सुनाइजाय ॥ जहाँबहुमहाजनमेसरी बैठेजाजमआय ॥
बैठे जाजमआय अरजसुणराजीहूवा॥ कहीख्यात बहुठौर नामसुनजूवा-
जूवा ॥ घाडगाँवएकभादवौ दीन्हीतुरत बताय । तब पंचनतें औरलिख

अरजसुणाईजाय ॥ १९ ॥ एककयोएकर्भांवडी दूजेसेवगपास ॥ लिखे कवितदखेनयन तव कछु बाँदीआस ॥ तवकछुबाँदीआस देखिच्यारूंठा आयो ॥ फिरचौदसचहूँऔर ख्यातएकजूनींपायो ॥ गढनशण गनपत गुरु मिलेआनअनियास ॥ एककयोएकर्भांवडी जूजेसेवगपास ॥२०॥ पंथचलतएकविप्रतें भईअचानकभेट ॥ करतबातकलब्रक्षकी नगरपहूँताठेट ॥ नगरपहूंताठेठ तिन्हेंपोथीएककाढी ॥ न्यातगुरीतामाँहिं छटा अधिकीसीबाढी ॥ दोय प्रहरनिसलौंपढी फेरगयेहमलेट ॥ पंथचलतयेकविप्रतें भईअचानकभेट॥२१॥ करमुकामवानग्रमें राखिबिप्रकूं लीन॥द्विजदछनादेप्रसनकर परतदूसरीकीन २ फेरफिरकेगुरहेरे ॥ कौतु मरेजुजमान आपगुरहोकिनकेरे॥कछुतामेंथेसौकढेकछुमिलगयेनवीन॥ करमुकामतानग्रमें राखिविप्रकूंलीन ॥ २२ ॥ तापीछेजागानको डेरो आयोजान ॥ कपासणकोजोरजी तिनतेंभईपिछाँन ॥ तिनतेंभईपिछाँन मदतपंचनतेंपाई ॥ कलपब्रक्षकेकाज बातएसीफरमाई ॥ पोथीखोलब तायद्यो सुखतेंकरोबखाँन ॥ तापीछेजागाँनको डेरो आयो जाँन॥२३॥ उगणींसत्तावीसमें नवमींकृष्णकुँवार ॥ पुखनखत्रपोथीखुली शुभमहुर तशशिवार ॥ शुभमोहोरतशशिवार आणपोथ्याँपधराई ॥ दिनरहिस त्तावीस रातदिनकलमभराई ॥ कछुकभेदइनतेंलख्यो तोपणपड्योन पार ॥ उगणींसत्तावीसमें नवमींकृष्णकुँवार ॥२४॥ ख्यातपुराणीबहीमें रहीकहीछोगेस ॥ एकमासकौकवलकर गये आपनेंदेस ॥ गये आपनेंदेस फेरपीछेनहिंआये ॥ लिखचिट्ठीगयेभूल पंचनितयादकराये ॥बरसअठा ईतीनलौं परीनहींकछुपेस ॥ ख्यातपुराणींबहींमें रहीकहीछोगेस॥२५॥ पीछेजागोमगनमल इंद्रपुरीमेंआय ॥ पंचनतेंआसिकदई पायोमाँनस वाय॥पायो माँनसवाय सुनीभीलाडामाँहीं ॥चलेसिध्यशिवकरण आँण मिलियाइणठाहीं मँगनाँसूँपंचाँकही दीन्हींबहीदिखाय ॥ पीछेजागोमग

नमल इंद्रपुरीमेंआय ॥२६॥ दोहा ॥ छटामगनछौगातणीं बहीएकअ
नुमान ॥ मुखदरपणअस मानजल इजैविजैदोयजाँन ॥ २७ ॥ पुनिदे-
साटनकरतभौ कलपब्रक्षकेकाम ॥ खानदेसअरु ब्राडफिर देखीदखण
तमास देखीदखणतमाम तहाँकछुभेदनजाने ॥ जातपाँतकी बात करे
तौउलटीताने ॥गौत्रगांवगुरयादनाँ बडपुरषनके नाम॥पुनिदेसाटन कर
तभौकलपब्रक्षकेकाम २८ फिरकरआयो जालणे तहाँके लौगप्रवीण ॥
बहुप्रकार दस दिवसलौं दिनतेंबातेंकीन २ लौकसबहींजुडिआवे पंडि
तजनतहाँबसे रातदिनसभाभरावै ॥ बहुविवेकचातुरकवी वहाँ सेवकथे
तीन ॥ फिरकरआयोजालनें तहाँकेलौगप्रवीन ॥ २९ ॥ विनकहिदेव-
लगाँवमें जुडतजातराएक ॥ बालाजमिहाराजके आवतवैश्यअनेक २
पंचपंचायतभारी ॥ निमटेन्यावनिसाफ मेसरीहैअधिकारी ॥ साढीबार
हन्यातके सुघरत झौडअनेक ॥ विनकहिदेवलगावमें जुडतजातराएक
३०॥मासपांचततेंफिरगये मिलेपंचतेंजाय ॥ रीतभाँतमरजादतें बैठेआ-
दरपाय २ ताँहाँकोइमौहिनजानै करैन्यावततछान दूधपानी नितछानैं॥
पंचनमेंएककाबरौसहादामौद्रसवाय ॥ मासपांचतेंफिरगये मिलेपंचते
जाय ॥ ३१ ॥ यहाँबहुतविस्तारहैतनकबाँनगीलेहुँ ॥ पंचनतेंअरजी
करी तातपिरजालिखिदेहुँ तातपिरजालिखदेहुँ अरजबहुभाँतसुनाई ॥
हिंदीभाषामाँह पंचकेसमझनआई ॥ कहीमरेठीबातमें लिखौअरजतुम
येहु ॥ यहाँबहुतबिस्तारहै तनकबाँनगीलेहुँ ॥३२॥ तबहमदूसरे वर्षमें
तुरततरजुमाँकीन ॥ छापमरेठीबातमें डाकमारफतदीन ॥ डाकमार-
फतदीन सकलबिधिलिखसमुझाई ॥ सुनसबराजीभये पंचकेचितमेंआ
बंदौबस्तबहुभाँतको कियौपंचपरवीन ॥ तबहमदुसरेवर्षमें तुरत तर्जु-
माँकीन॥३३॥बँदौबस्तसुणपंचको जागेगयेपाराहिं ॥ दक्षणदेसबराडमें
कितहूमिलेनआँहिं२पंचबहुचौकसकीन्हि॥खंजनज्यूँदुरगये खबरकित-
हूनहिंचीन्ही ॥ जाहिरातलिखदेसमें हमभेजीसबठाँहिं ॥ बँदौबस्तसुण
पंचको जागेगयेपराहिं ॥ ३४ ॥ दोहा ॥ आजकालभूमंडमें जागेरहेदु-

राय ॥ छप्योंसुनेंगकल्पतरु मिलिहैंफिरअतुराय ॥ २५ ॥ कवित्त ॥
खंजनसेलुकंजनआज भयेहैंअद्रिस्यजागेदुरेभूमंडमाँहिंपंचसेनर पिंगे ॥
छपगईपँयालपोथीरसातलभँडारवैठ छपेंछीपेकल्पवृक्ष वरघरफिरवा-
चेंगे ॥ अवहीकल्वृक्षकाज हूँढेतेनमिलतआज ॥ छपगयोसुनेंगेकान
फेरआनमाचेंगे ॥ आजकाल्हकचरखाय वैठझारपिंछपछि छपेंतेंपरेवा-
लेंकी मौरहोयनाचेंगे २६ ॥ याहीप्रकारप्रश्नउत्तरकेपत्रछापि भेजे
सवठामखातोंजाहरसववातहै ॥ वहुतसेजगोंकेपंच आग्रहकररजादीनी
छापकरप्रसिद्धकरो अद्भुतयहख्यातहै ॥ पंचोंकाहुकमपाय ग्रंथकूं वनाय
पूर्ण धर्महूकीरक्षाकाज सारेजगचातहै ॥ कहै शिवकर्ण रामरत्न दरक
तावेदार ज्ञातीकाग्रंथ छाप कीयाविख्यातहै ॥ २७ ॥

अथ ग्रंथारंभकापूर्वइतिहासवातविंदवर्णनप्रारंभ.

विक्रमसंवत १८९८ शकेशालीवाहन १७६२ के भाद्रपदशुक्ल २
के दिन रात्रिकीवखत मारवाडके गाँव मूडवेमें दसवीस माहेश्वरी महा
जन इकट्ठेहोकर एक वारादरीमें वैठे वातें कररहेथे॥और पाणिकी वृ-
ष्टिभीस्वच्छतासे मधुर २ होरहीथी तासमय एक मेवाडदेसका महे-
श्वरी आके जेगोपाल कीया तव हमलोगोंनें पूछा तुमकौनहो जव उस
नेंकहा मैं महाजन महेश्वरी नौगजाहूँ यह सुन सव लोगोंनेंपूछा नौगजा
भी महेश्वरियोंमें होताहै क्या उसने कहा हाँ होताहै वहाँ एक आगसूड
बोला हमनेतो नौगजा गौत आजहीसुना तववो नौगजासाहजीबोला
आपकाक्यागौतहैउसनेंकहा आगसूडगौतहै तववोकहनेलगा आगसू-
गौतभी हमनें आजहीसुना ऐसे चरचा आपसमें होनेंलगी तव सव
लोग कहनेंलगेकि कुलखाँपेंअपनी कितनी होगी तव एकनेंकहा अप
नी वहोत्तरखाँपहै वहाँमेंभीहाजरथा जवमैंनेंकहा अपनेंगावमें कितनी
गी ।त्र सवगिणनेंलगे तो ४१ खांपके बौलतेनाम मूडवे-

थें जबहमनेंजाना येक्या मुलकमेंतौ बहौतसेनामहौंगे तब वौ मेवाडवा
डा नौगजा बौलाके तुम्हारेयहाँचरखाडांगरागतूरक्या तैलासतूरच्या
भूँरगड़ बिदादा मरौठिया भूत्या भकावा छाछ्या यह गौतकहां है तब
उसकों पूछनेंलगे तौ २९ सेक खाँपें उसनें नवीनभतलादी ॥ तबतौ
बहौतसा चगरा चलगया जब हम आपसमें पूछनेलगेकीं तुम किसके व्या
हे और किसकेभानजेहौ ऐसे पूछते २ बहौतसें नाम फेरभी नूतन पा-
येगये तौखूबही चगराचला इतनेंमें एकमनौरजी सेवग बडा बूडा और
चतुर जूना आदमींथा वौ आनिकला तब हम उनसें पूछनेलगे कि ये
क्याहै खापतो ७२ कहतेहैं और यहतौनाम बहौतसेहौगये तब उन्हौंने
फेरवी आसपासके गांवौंका सुम्मार लगाकर सिकची बसहर कासट
दगड़ा सुरजन खटवड़ ऐसें बहौतसे नाम औरभी बतलादिये वौयाद-
दास्त मैनें लिखली तौ करीब १६० नामहौगये जबतौ मेरेकूं उसदिनसें
येही छंदचढा किये कुलनाममेरेपास इरूकट्ठे हौजायतौअच्छाहै॥यहवि
चारकेजिधरजाउँ उधर यहीतह्लासकीयेकरूँ॥ और रातादिन यहीविचार
करतारहूँ के जौअगर सबगौत्र मेरेपास इरूकटे हौजायतौ इतिहास
कल्पद्रुम माहेश्वरी कुलसुद्ध दर्पण बनाना सरूकरूँ॥ पर जिधर जाउँ
उधर दसपाँच गौत्र जादाही लिखेजाय इस तरह लिखतें २ चंदरौजमें
३८० नाम लिखेगये तब एक बडा भ्रम पेदाहुवा के सब लौग ७२खाप
कहतेहैं और यह इतनीकैसेंहुए क्याकोई दुसरीजातीके इनमें आमिलेके
इनमेंसेंही नाम जुदे बौलेगये कि औरकुछभेदहै जब एक बुजरगनेंकहाके
यह इतनेंनाम इन ७२ खापमेंसेंही केईसबब और धंधेसें बौंक जुदेबो-
लेगयेहैं यहसुनके मेरेकूं एक दुसरा बडाही भ्रमपेदाहुवा के अबम्हें इस
मेंसें ७२ मूलखाँपें कैसेंजानूं और कौनसेखाँपकी कौनकौनसी फलीहै
यह कैसेंपहचानूं इसी फिकरमें वर्ष२० यूँहीं निकलगये फेरदैवइच्छासे
म्हें देशाटननिमंत इंदोर आया जब एक बलदेवजी राठी मेड़तावालेम्हें

हैं उनकों सवमाजरा कहसुनाया वो यह बात सुन बहोत प्रसन्नहो कहनें लगे मेंभी यहीचाहताहूं और बहोतसी बातेंकी मदत भी दूंगा यहइतिहास जरूरबनानेंयोग्यहै इसमें अपनी जातीका बंदोबस्त साथधर्मके रहाक-रेगा पर तुमयहांके पंचोंकों अरजीदेदो हमनें प्रियमित्रकीसलाहसें अर-जीलिख पंचोंकेपासहाजरहुआ एकभंडारेमें २००० केकरीब महेश्वरी जम्याथे वहांम्हेंखड़ाहोकर बडेवेगसें अरजीसुनाई पर उसहल्लेमें पंचोनें कुछनहिंसुनाईकी नेंकोई इसतातपर्यमेंसमझे उलटी मेरीहासीकरनेंल-गे जबमें नृभान्यहोकर चुपहोकेबेठगया परंतू उसीपंचोंमेंसें केईकलोग विवेकी और विचारवानथे उनलोगोंनें मेरेकूं पूछा कि ये क्या अर्ज है जबमेंनेंपिछाडीकी सबहगीगत कहसुनाई जब उनोनेंकहा येतोबहोत अच्छीबातहै बनजायतो यहतो अपनेंकुळकीरक्षा और धर्ममर्यादाके वास्ते बडासा परकोटाहोजावे तबमेंनेंकहा देखो मेरीमहनतकीतरफ तोकिसीनेंभीनहिंदेखा और उलटी हासीकरनेलगगये । तब पंचोनें कहा कुछफिकरनहीं आजसें आठरोजकूं एकबडा हुवताहै. वहां तुम फेरबी एकअरजीसुनावो जब मेंनेंकहाकी कोंनतोसुनताहै और इस्में मेरेकूंक्यालाभहै ॥ नाहकमेरीहासीकराऊं जब वह पंचबोलेकि अबके जोकोई तुमकूंहसेगा सो तुमकूंनहीं हमकोहसेगा तुम अरजीसुनावो ॥ जब फेरभीदूसरेभंडारेमें अरजीसुनाई तो वोहीहासी और वोहीठठे बल-केकेईलोगोंनें तालियें भीपीटी पर वोजोविचीक्षण और चातुरलोगथे उनोनें वो हसनेंवालोंकों बंदकीया और मेरेकूं हकीकतपूछनेंलगेजबमेंनें बडेधीर्यसें सर्वपंचोंकों वहीअरज समझा २ के सुनाई तो सबलोगबोले कि बाततोसच्चहै पर इस्कातुम हमकों क्या पूछतेहो और हमक्यामद-तदेवें जबमेंनेंकहा पंच परमेश्वरतुल्य कहलाते हैं सो आपतो सर्व बातों-सें लायकहो जब पंचबोलेकि कुछपैसेका कामहोयतो हमकोंकहो जब मेंनेंकहा पैसेका मांगनातो जाचकलोगोंका कामहै म्हेंतो अपनीजातकी

बर्तेनूक आच्छि:रहनेकेवास्ते जांती:निबंध बनानाचाहताहूँ इसवास्ते अपनें जागे व कुलगुरु वहीभाट रमइये सेवग भोजक इत्यादि कोईभी अपनी बंसावली कुलावली पूर्वइतिहास व ख्यात जोकोई जानताहो इनलोगोंकोंपूछकर वा आप जूनेलोगोंकों यादहो वा लिखी लिखाई कुछहो वो मेरेकूं मिलकर यह इतिहास कल्पद्रुम संपूर्णहोजावे यहीमदतमाँगताहूँ और पैसा मेराघरका खरचना चाहताहूं । तब एकबोला घाड़ गाँव जिल्लेबूँदीके एकबोला भादवागांव जिलेपाटनके एकबोला भींवडीकोंकनदेसमें एकबोला एक सेवगकेपास इत्यादि ख्यातेंहैं पंच कागदलिखदेंगे तुम, जाकरलिखके संग्रहकर मनोच्छितग्रंथ पूर्णकरो जबमेंहे पंचोंकी मदतयहीके पत्रलेकर सबजगें जोजोभतलाईथी वहाँ जाकर संग्रहकरलिया पर पूराइतिहास कहींमिलानहीं औरभी अनेकप्रकारकीसंका नवीन प्रश्न खडेहोकर हृदय कंपितहुवेकिइतनेवर्ष सोधकरनेमें व्यतीत हुये और ग्रंथ पूर्णहुवानहीं इसशरीरका क्याभरोसाहै अबतो जलदी ग्रंथपूर्णहोतो अच्छाहै यह सोध करके २ दोवर्ष व्यतीतहुवा फेर एकअर्जलिख इंदोरके पंचोंकेनजरकी हेतूयहके ग्रंथ पूर्वसंग्रह हुवा नहीं जब पंचबोले कि यहवातहोनेसेंतो हम बहोतराजीहैं परइनतुमारे प्रश्नोंकी संका निवार्ण कैसेंहो जब हमनें कहा क्या अपनें जागेजी नहीं जानते होंगे जब पंचोंनेंकहाठीकहै उनकों पूछनाचाहिये तब कईदिनोंकेबाद जागाजीकाडेराआया जब पंचोंनें उनसें कहाते शिवकरण दरकके प्रश्नका उत्तरदेनेसें तुमकोंबिदामिलेगी तब वह जागाजी मेरेघरपे आकर कहनेंलगेकि तूँ क्याप्रश्नकरताहै जब मेंनें कहाकि हमारी आदउत्पती व बहत्तरखाँ बहत्तरखाँपकीफालिये किसकिसखाँपकी कौनकौन है वो मेरेकूँ बतलानाचाहिये जबजागाजीनें बडेसेघमंडसें आँखफेरकर मेरेकूँकहाकि कोई एसा कर्म नहींकरनाँकि इसपूछनेमें कोई तेरे दरवज्जेपर जागामर जावे और जँव्हरहोजावे जब मेनें हात जोडके बडी।

निहृतासैंपूछाके हे जागाजी तुम हमारे कुलउच्चारणकरनेवाले आगे वा वहीभाटहौ और म्हैं माहेश्वरीकावेटाहुं तुमकूं हमारी जात उत्पत्ति पूंछनेमें आप मरक्यूँजावौगे इसका तुमसेंकूं अच्छीतरहसें भेदभतलावौजब उन्हौंनेकहाकि इजौंगिरसौंसे नाँतो किसीनें पूछा और नाहमनें भतलाया और नाकिसीकूं भतलावेंगेऔर तूंक्यापूछे व पूछनेंवाला तूंअकेलाकौंनहै॥ जबमेनें कहाकि पंचपूछतेहैं फेर दुसरेरोज एकअंडाथा वहाँ जागाजी अमल पानी चंदी चारा मांगनेंकौंआयेथे उसी वखत मेनें वहीबात जो जागाजीनेंकहीथी वौपंचौंकूं जागाजीकेरूबरू कहसुनाई जबपंचबौले मरनेकाक्याकामहै हम सबपंचामिलकर शिवकरणकूँ पूछनेंका अधिकारदियाहै सौ तुम जागेजी इनके प्रश्नौंकाउत्तर यथोचितलिखवादौ नहींतौ विदागी व अमल पाणी कुछ नाहिं मिलेगा खैर आयेतौ जीमजावौ अमल पानी तुमकौं प्रश्नकाउत्तरदेनेसें बिदागीके संग मिलेगा तब बादउसरोजसें जागेजीतो डेराकूचकरगये सो वर्ष ९ तक इंदोर जिल्हेमेंभीनहिंआये बाद ९ वर्षके एक छौगालाल नाम जागा अचानक इंदौरमें आकर पंचौंसें आशीर्वाददेनेलगा जब पंचौंने कहा तुमारीपोथियें श्रीपंचायतीमंदिर श्रीज्यानकीवल्लभजीकेमैंया शिवकरण दरकके मकानपे लेजाकर सबइतिहास उनकौं लिखवादौ और खाने पीनेका बंदोबस्त तुमारे वास्ते पंचायतीसें होजायगा जब जागाजीबौलेकि म्हें उत्तरदूंगा परमेरेपास छवऊंठ दौघोड़े दस आदमी उनका खर्च चंदी चारारोटी इनासिवाय अमल तमाखू भी दौरुपे रोजकी लगतीहै यहजौबंदोबस्त पंचौंकितरफसे होजायगा तो म्हे सब इतिहास लिखवादूंगा जब पंचौंनें जागेजीके मनसायमुजब खर्चैका बंदोबस्त कर दिया जब जागाजी पांचऊँठपे दसपौथी बडी २ मेरे यहाँ लायरखी और २७ दिनतक पोथियौंसें सिररगडाकिये पर जागाजीनें कुछ लिखा या और कुछ न लिखाया और कहनेंलगेकिंआकीव्यातें मेरेघरपे दुसरीबहि

योंमेंरहगई सो एकमहिनेंबाद ल्याकर सबबातोलिखवादूँगा यहकोल पंचोंसेंकर चिठीलिखगयासो २।३ वर्षतक पीछा नहिं आया परंतु मेरेकूं तो यहीसोकथा कि ग्रंथपूर्णकरूं सूं यहीउद्योग पूछताछकरनेंका शुरूरहा और बहोतसाग्रंथ संग्रहकर छंदबंद भी बनालिया बाद चंदमुद्दतके जागा मंगनीराम..

इंदोरमें आकार पांचोंको आशीर्वाददिया तब पंचोंनेंवहीजात जो जागा छोगालालकूँकहीथी सोकहा उनादिनोंमें म्हें मेवाड़के महेश्वरियोंसें यहीपूछताछ करताहुवा भीलवाडेआया और पंचोंसें अर्जगुजर जाजमबिछकर पंचइखटेहोके जागा परतापजीकों बुलवाया और यह कहाके शिवकरण दरक जोबातपूछे वो लिखवादो जब उसनेंकहा हमारेसबडेरोंमें जागा मंगनीरामरामका डेरातेजहै और वो अभी इंदोरमें हैं इनके प्रश्नोंका उत्तर वहीदेगा जबम्हें यह बात पक्कीसुनकर पीछा इंदोर आय और पंचोंके पासगया वहां जागा मंगनीरामभी आयआशीर्वाददिया और मेरानामपूछ बहोतराजीहोय प्रसन्नतासें बातें करनेंलगा। और यही जागा मंगनीराम बालपनेमें हमारे गाँव मूंडवे आयाथा और मेरेबनायेहुयेकुछकवितभी उसनेंसीखेथे वोबोलनेंलगा औरजूनीपहचाननिकाली वहाँ पंचोंकाभीवोहीकहनाहुवा जोपहलेउनकों कहाथा तब वहबोला मेरेपास जोकुछहोगा सो सबलिखवादूंगा पर तुमनें क्याबनाया है सो कहो ॥ जबमेंने उसके मिष्टबोलणेंसें और जूनीपहचानसें जोकुछ ग्रंथ संग्रहकीयाथा सबकहसुनाया तब जागाजीदेख चकित हो कहनेंलगे हमारेपास इस्सें क्या जादानिकलेगा ओहो तुमनेतोखूबही संग्रहकर लिया और मेरीभी पोथियें यहाँ सबहाजरहै देखलो और जोकुछ कम जादाहोयसो मिलालो जब सबपोथियें देखीतो वोहीबातपाईगईजोकुछ जागा छोगालालकी पोथियोंमेंथी जब जागा मंगनीरामबोलाकि अबम्हें बीइसीकल्पवृक्षको यजमानोकेयहाँ वाच्याँपढ्याँकरूंगा बस यहमेरेकूं

लिखदेौसौएकपरतउनकौंभीबाचनेकोलिखदीपर मेरेदिलमेंतौकईबातौं
का संशयहीरहा जबमें फेर; देशाटनपे कम्मरबाँधी और इसी ग्रंथकी
पूर्णताहेतू सौधकरताहुवा मेवाड खेरवाड़ ढूँढाड हाडौती झालावाड
इनदेशोंमें चौकसकरीतौ बहौतसीबातें हासलहुई पीछे एकनराणगढमें
गुराँराव श्रीगणपतलालजकि पास एक ख्यातमिली वौभीसंग्रहकरली
बाद चंदसुदतके एकरस्तेचलते वृद्धाविप्रमिला: तिनकेपास न्यागुरीकी
ख्यातमिलीतब उनको प्रार्थनाके साथ दक्षिणा देकर उसकी नकल भी
उतारली पुन्ह देशाटनकर बहोत्तरखाँपके गुरूनकौंभी पूछकर खूब
तहकीकसकरी तौ कुछवौ न्यातगुरीमेंथी सौ निश्चयहुई और कुछ नवीन-
भीबातेंसंग्रहहुई फेरतौ कम्मरखूबहीमजबूतबंदी और ग्रंथ पूर्णत
हौनेकीभीनिश्चयहुई फिरम्हें पीछा इंदोर आकर सर्वदेसी पंचौंसें एक
अरज और सम्हूगौत्र नाम कुलके पत्र ६००० छवहजार कागदछापके
देस २ और गांव २ में जहाँतक पहुंचासके वहाँतक हातौहात वै पौष्ट-
द्वारा पहुँचाये और कईदिनतलक इसीबातका हुल्लड मुलक २ और
गाँव २ में हौतारहा पर कहींसें भी जादाबातकी ख्यात नाहिं आई जब
जानागयाके जागौंकेपासभी इस्सें जादा कुछनहीं तौ माहाजनकोई
कहाँसें बतलासकेंगेपर तौही मेनेंतौ वही पूछताछकरनेंका सौखरक्खा
सौ इंदोरसे फेर देशाटनका इरादाकर दक्षणकीतरफचला तौ नीमाड
खानदेस बराड मरेठवाडी कर्नाटक तैलंगदेसके महेश्वरियौंकौ चंदरौज
पूछताफिरा पर वोतौभोले भाले मनुष्यसिवायकमाखानेकेऔरकुछ
नहीं जानें यहाँतककी बापसें दादे प्रदादेके नामकीभी पूरी मालूम नहीं
वौकैसेंजानसकेंगें कि हम अमुकखाँपमेंसें निकलेहैं वा हमारेमेंसें अमुक
गौतनिकलाहै.ईश्वरहीधर्मरक्खें फेर जालणाकेपासबालाजीका देवलगाँ-
वका हालसुनाके एकबडीयात्राभरतीहै और साढीबारहज्ञातमाहाजन

पंच इकखट्ठे होकर ५ दिनन्यावनिसाफ करीदिलकामनोर्थपूर्ण करतें हैं और मेलाभी बडाचमत्कारी धामधूँमसे भरताहै॥कवित्त॥ साढीबारह न्यात देवलगाँवमेंइकट्ठेहोत बालाजीमाहाराजकीप्रतक्षजोतजागे हैं॥
लगतेंहैंबजार जहाँहजारनदुकानखुले जातराआसोजसुदीदसेरासेंलागेहैं॥
जाजमबिछायबैठे पंचपंचायतहोय बडेबडेन्यावबादीखडेरहतआगेहैं॥
करतहैंनबेरा दूधपानीकौंनिकारभिन्न साचझूटछोंट आँठअँतरकीमांगेहैं॥

॥ पाँचपंचौंकानामग्राम ॥

श्रीश्रीश्रीश्री १०८ श्रीबालाजीमाहाराज ॥ १ ॥
जेकिसनजी बिहारीलालजी मूंधड़ा जालणेवाला ॥ २ ॥
गोयंदरामजी दामोदरजी मालपाणी अंबडवाला ॥ ३ ॥
शिवदासजी किसनलालजी गहलड़ा बदनापुरवाला ॥ ४ ॥
गोयंदरामजी दामोदरजी काबरा येवलावाला ॥ ५ ॥

यहजातरा आश्विनशुक्लमें होनेकी सुन इंदोर आय एक अरजी हिंदीभाषामें पंचोंके नाम छाप पीछा मेलापेजाय अर्ज दाखलकी जब पंच व सिरपंच बोलेकि जाजम बिछाईके ११ रुपये हाजरकरोगेतो कल जाजमबिछकर तुमारी अरज सुनी सुनाई जायगी. जब मेनें ११ रुपये उसीबखत पंचोंके साम्हनें रखदिये. और थोडेसे आदमी व सिरपंच वहांबैठेथे. जहाँ मेनें अरजीभी वाचके सुनादी. जब एकपंचबोला क्योंजी इस्में तुमको क्या लाभहै सो घरके रुपे खरचके पंचोको अरजी सुनाते हो. जब मेनें कहाकि इस्का फायदा जब आपलोगजानजावोगे तबमेरे इतनें रुपेतो क्या हैं पर अपना कुलशुद्धरहनेका इतिहास करोडोंरुपये खरचकरनेंसेंभी नहीं बने एसा बनजायगा जिस्सें अपनेंकुलकी वर्तनूक सदावंदशुद्धाचार कुलधर्ममें चलेगी और हजारौंवर्षांतक कोई बातका खटका नहीं उठेगा. कुलधर्मरक्षक ग्रंथहोगा यह बातों होरहीथी इतनेंमें ही एक और [illegible] लगाईके झगडेवाला आकर हाजरहोय ११ रुपये जाजमबिछवाईके पंचोंके समक्षरक्खे॥ तब पंच बोले कि जाजमतो

इननि साफवालेकीविछेहेंगी अव इन शिवकरणजी दरकके रुपे नाहक खरचकरवानाअच्छानहीं कारन येतोकाम अपनी समस्त जातकाहै तब पंचौनें महरबानीकरके मेरेरुपे मेरेकुं जबरदस्ती महुहारकेसाथ पीछे देदिये और जाजम उसी निसाफवालेके लिये बिछाई पर वो न्याव एसा टेढा निकला सो सबरात्रि पंचोंके वेठ निकलकर अरुणोदय होगया और न्यावनहींटूटा आखर इल्कान्याव आवतीसालपे ठहरा इधर मेरी अरजीभी वगेरसुनीरहगई जबमेनें पंचौंको उठतीवखत साढीबारहन्यातकी सौगंददिराई केमेरीअरजी सुने बगेर कोई मतऊठौ तब पंचौंनेमेरेकूं अरजसुनानेंका हुकम दिया उसवखत सर्वपंच साढीबारहन्यातके और छन्न्यातकेब्राह्मण इत्यादि मिलकर करीब सात आठ हजारआदमी जुडेथे वहाँ सेवगौंकी मारफत अर्जसुणनेंकेवास्ते चुपहौकर स्वचित्तवैठनेंका हुकमदिया तब सवलोग श्रवनदे एकागरचित्तकर सुणनेंलगे और मेंनेंबी बडे ऊंचेशब्दसें झपटकर अरजमालूमकरी सो कंईलौगतो सुनकर समझगये. और कईकलोगोंको हिंदीभाषा समझमें नहिं आई क्यूँके वोसिवाय दक्षिणीलिपी और बौलीके दुसरा इल्म वाकिफकार नहीं वौलोग बौले हमकुछबराबरसमझेनहीं तबमेनें मराठीजबानमेंझगीगत मुखसें कही परउनलोगौंको रात्रिभरके निद्राकीतकलीफथी और जातराभी उसीदिन रुखसतहौनेंवालीथी तब सर्वपंचबोले तुम आतेवर्ष फेरआवौ और यहीअर्ज मराठीजबानमें छापकर पंचौंके नजरकर जौ कुछमदतमांगौगे वोही मिलेगी जब मेंनेंअरजकरीके मेरेकूं कुछरुपे पैसेकीतौ गरजनहीं इसकार्यमें बहौतसेरुपेतोखरचे हैं और बहौतसेफेरखरचनाचाहताहूँ पर केवलयहीमदतके जागे वहीभाट कुलगुरू इत्यादि अपनें गौत्रउच्चारणकरनेंवालौंसे फकत निश्चयकरवानाहै तब उनोंनेंकहा होसकेगा जबमैंनें दुसरेवर्ष विक्रमसंवत १९३८ शके १८०३ में वोहिअर्ज गुदस्तांदीथी उसकीनिकलमरेठीभाषामें वा एक और विनयपत्र

इसअर्जकूंसुनकर बंदोवस्तकरनेका छापकर करीव पत्र २०००तैय्या-रकीया परउसादिनोंमें कुछ शरीर अवश्यथा (बीमार) इस्सबबसें मेराजानातो देवलगांवकुं नहीं हुवा और अरजियें सविनयपत्रोंके पोष्ट द्वाराभेजदी पर मेरे नहीं जानेसें बंदोबस्त कुंछपक्कानहींहुवा फेर संवत १९३९शाके १८०४ में वहाँजानेका इरादाकिया और रेलमेंबेठ जाल-नेतक आनाचाहा पर दैवइछ्या अप्रबल रोगाग्निस्थहुवा सो नहिंपहुं-चसके और जलगांवमें ४ मुक्कामाकिये मजबूरन लाचारकि आरामहो-नेकी सूरतनहींपाईगई तब जलगांवके पंचोंकी मारफत अरजियेंपत्रतो देवलगांवभेजदीये औरम्हेंवापिस इंदोर आया परअरजीमेंयहशर्तथी कि जागोंको बुलवाकर अपनेंकुलकी प्रनालिका और बहोत्तरखापके नख बौंक इत्यादि प्रश्नपूछनेका बंदोबस्तहोकर मेरेकोंबुलानेकीआज्ञा मिले जोअगर जागेजी मेरेप्रश्नोंका यथोचित उत्तरदेंगेतो मेरीशक्तिप्र-माण पंचोंकीसल्लासें इनामदेऊंगा और जागाजीका कुलखरचभीदे-ऊंगा यहपत्र सर्वजगें महेश्वरी प्रियमित्रोंके पासभेजे और बंदोवस्तभी हुवा व चंदमुद्दततक मैंनेराहाभीदेखी पर नतोजागाजी आये और न कहींसेंमेरेको बुलानाआया न जानेंक्याहुवा जैसें कूपमें पथ्थरपटका बुदबुदाभीनहिंउठा पर जानागयाकि यह ग्रंथ छपेपीछे बह लोग झूटीह-लावणकर कूकडेसी बाँगदेनेकूँ खडेहोवेंगे पर उनके हक्कमेंअच्छानहीं क्यों के पंचोंसेबेमुखहोनेसें हृदयस्थानसें भ्रष्टहोजाताहै और उधर सें कुछमदत इतिहासख्यातेंकी नहींमिली पर मेरेकोंतोइसीग्रंथके पूर्ण-ताकरनेकीही आवश्यकताथी सोग्रंथबनानाशुरूरहा और बहोतसीबा-तें भी हासलकर छंदबंद व बारत्ताबंद व साढीबारहन्यातकेव चोरासियों-काभी संग्रहकर ग्रंथपूर्णतासेंबनाकर श्रीमान श्रीश्रीमाहेश्वरीपंच इंदोर वालोंसें ग्रंथसुनानेकी अरजकरी तब पंचोंनें यथोचित्तबातसमझकर सेवगोंकेसाथ सर्वज्ञातिके स्वज्ञपुरुषोंको बुलाकर श्रीज्यानकीवल्लभजी

केमंदिर पंचायतीमें स्थितहुये और संवत १९३९ फाल्गुनकृष्ण १ के दिन सुचित्तहोकर कल्यमल्ल सर्वजनौनेंसुन और राजीहोकेवोले के यहतौतुमनें अपनीजातीका साख्यातकार दर्पणही बनादिया अबतुमकूं क्याहौना और क्यामदतमांगनाचाहतेहो सोकहो तबमैंनेंअर्जकीके मेरे कौतो आपकीकृपा और महरवानीहीचाहिये तब पंचौनेंफेरफरमायाके यहतौवनीहीहै पर कुछऔरमदत चाहतेहौसोमाँगो ॥ तबमेनें यहअर्ज स्पष्टकरीके मेरेकोंकुछरुपयेपैसेकीतौचाहनाँ हैनहीं फकत आपलोगसु नके इसग्रंथकों छापनेकीतोआज्ञादिरावें और इस मेरेतुच्छबुद्धिके बना- येहुयेग्रंथकों अंगीकृतकर वर्तनूकफेलावें और प्रथम कुछ सगाईसगपण डोडावाँका होगयाहोय सोतौ भूलकरहुवाकसूर पंचमाफकरावें और अबही इसग्रंथानुसार भाई और व्याहीका खयालरखें कि कौंन कौंन भाई हैं और च्यार साख छोडकर वाकीकेव्याहीहै इत्यादि दत्तपुत्रभीलेनमें अपनेगोतभाईकी निश्चयरहेगा एसे २ अनेक फायदेहौंगे और अपनीं जातिमें कोईभी प्रकारका वाँदा धूँदी कभी नहिं पडेगा यहसुनकर पंचोनेंफरमाया के तुमतौ छापो छापो और छापके सर्वदेसदेशान्तरोंमें प्रसिद्धकरो जिस्सें अपनी जातीकी वर्तनूक अच्छीबनीरहैगी. यहतौ अपना कुलशुद्धरहनेका अच्छा ही खुलासा होगयाहै पर अब इस्कोंछापनेंकी क्यादेरीहै तबमेंने यह अरजकरीके श्रीबालाजीमहाराजके देवलगाँवकेपंचोंसेजरा कौनोंवार औरभी निकालना है सू ग्रंथ अविलोकनकराके उनकी और आपकी आज्ञानुसार जल्दीही छापकर नजरकरूंगा तब पंचवोलेकी जरूरहै उनकीभीआज्ञालेनाचाहिये तब इसप्रकारसें श्रीबालाजीमहाराजके देवलगाँवके कार्तिकमासकी बडीयात्रामें कृष्ण २ द्वितियाकौ श्रवणक- शके छपानेकीआज्ञामाँगी तो वहाँभी यथोचित्त प्रसन्नकेसाथ सर्वपं- चोंने छापके प्रसिद्धकरनेकी आज्ञादी ऐसेंओरभी केईजगोंके यथोचि-

त्तआज्ञामिली अबमेनें बडेमहनतकेसाथ ५० वर्ष परीश्रमकरिके यह जातीनिबंध छंदबंद व वार्ताबंद उदाहरण कोष्टक सहित बनाके छापकरपंचोंके नजरकीयाहै सो सर्वपंच इसग्रंथकों अंगीकृतकरके इसीबरतनूकपर अपनीजातीकी कारगुजारी करतेजावेंगेतो अपनाँकुल बहोतउत्तमबनारहेगा. नहीतोएककासगपण एकसें अपने भाईबंदोंहीमें गुंथमगुंथाहोजावेगा. देखो आगू कलूकालकावखतहे जिसकारनकरके यह इतिहास कलपद्रुम माहेश्वरीकुलशुद्धदर्पण सबकेपासरहनाचाहिये ओर सगपणसगाई दत्तपुत्रखोलेलेनाँभी इसीकेप्रमाँणसें करनाचाहिये इसपरअखतियार पंचोंकाहैमरजादातो पंचरखेंगे म्हेंतो फकतलिखणेंकाताबेदारहूँ. सो मेरीबुद्धिःकेअनुसार संवत १८९८ से आजपर्यंत अतिमाहिनत ओर अधिकद्रव्यखरचकरके ग्रंथसंग्रहकर यथोचित्त ख्याते पंचोंके नजरकर सविनय प्रार्थनाकरताहूंके इसको अंगीकृतकरे पंचोंकोयोग्यहैकियहधर्ममर्यादाकीबात जरूरपालनाचाहियेताकरिके मेरीभी महनत सुफलहो ओर जातिमेंभी प्रबंध स्वच्छतासेबनारहे ॥ यहइतनालिखना केवल मेरी मूर्खताहै क्योंकि अगाडीबडेबडे ऋषी कवी महात्माहोकरअनेकग्रंथ धर्ममारगके बनाकर प्रसिद्धकरगयेओर इतनीप्रार्थनाँकिसीनेनहिंलिखी एसाकोईकहेगातो वोबातठीकहे वह निशप्रिय वार्तावर्णनकर्ताथे ओर समयकालभीअत्युत्तम सत्ययुगत्रेता द्वापुर था अबजरासमझनाँचाहियेइधरतो कलूकालहै ओर धर्मकाभी विच्छेपहोनेकी विवस्तानजरपडने लगी ओर विद्याभी अपनेलोगोंमें शिवायकमाखानेके जादावाचनेपढनेकी नजरनहिंआती ओर इस समयके मनुष्यभी बडेआलसीहोनेलगे जब जातीके धर्ममार्ग शुधारन विषयमें फिकरकिस्को है ओर ग्रंथबढजावेतो कोईबाचेभीनहीं इसहेतूसे बहोतहीसारांसखेंच २ कर लघुकरदिया नहींतो ये ग्रंथ अलबते बीसहजार २०००० श्लोकोंका भरणाहोजातापरइतनाहीवाचकरबते-

हूकपेंलावेंगेतो वही धन्यवादसाहूँमा इसवास्ते स विनय बारंवारयही प्रार्थनाहै कि जराइसकोंवाचकर महरवानीके साथ स्वीकारकरेंगे.

आपका अनुचर.

सदाशिवकरण रामरतन माहेश्वरी मूँडवाका.

अथ मार्तिक मूल कल्पवृक्ष ॥

इतिहास कल्पद्रुम माहेश्वरी कुलशुद्धदर्पणं ।

वार्तावंद प्रारंभ ॥

श्रीयुत श्रीश्रीमान श्रीश्री माहेश्वरी महाजन सकलगुँणनिधाँन धर्म धुरंधर धर्मपालक शुद्धाचार ग्राही अनाचारके त्यागी बढभागी निरहिंसक धर्मकेधारी परोपकारी ताकी आदि प्रनालिका किंचित् २ सूचना वार्तावंद वर्णन ॥सदा शिवकरण रामरतन दरक माहेश्वरी मारवाडी मूँडवेवाला कृत लिख्यते ॥ सूर्यवंसीराजावोंमें चहुवानजातिके खडगलसेंणनामराजा खँडेलानग्रमें राज्यकरे वह राजावडा बरबीर रण धीर प्रजाकेपालक न्याराधीस पृथ्विके भूपण धर्मके धोरी एसेराजा महाराजाधिराजनिष्कंटक राज्यकरतेहुते तिनके राज्यमें सकलसुखपूर दुखदालीद्रदूर ॥ रयतके मुख नूर जहूर और खजानेंभरपूर सब रियासत हजूरके हजूर ॥ हुकममेंहाजररहती तिनके राज्यमें मृघ और मृघराज एक जगह पानीपीतेथे जालम व जुलमी पेट औरही रजवाडोंमें जायके भरतेथे यहाँके गडवडाटेसें आसपासके बडेबडेराजावोंके जीभीडराकरतेथे और दूरदूरकेकित्तेकराजा पेसवाईभराकरतेथे ॥ राजा महाराजाँकेश्रवणअवाजआनंदबधाइयोंकी ही आतीथी व आठपोहोर चौसटघडी खुसीहीमें जातीथी ॥ बडा दयावान और दानीराजाथापर उस्के एकपुत्रनहींथा इसी चिंतामें सब रयत और राजधानीथी एक समय राजामाहाराजाने भौदेन जगतगुरुब्राह्मणोंकूंबडेआदरपूर्वक अपनेंमं

दिरमें बडीहीनिम्रताके साथ अर्घपाद्य सेवनप्रार्थना प्रेमभावप्रीतिकरिके अतिद्रव्य अर्पणकरतेभये तब ब्राह्मणप्रसन्नहोकर बरदेते भये राजानें हातजोडकर बरअंगीकारकीया बर ब्राह्मणवाक्य हे राजन तेरा मन बाँछितासिध्यहो तब राजा बोला हेमहाराजमेरेकूँतो एकपुत्रकीबाँछनाहै तब ब्राह्मणौंनेंकहा हे राजन तेरे पुत्रहोगा तूँ शिवशक्तिकी सेवाकर तेरेचक्रवर्तिक पुत्र शिवजीकेबर औरहमारीआसिर्वादतें बडाबल और बुद्धिः मानहोगा परंतू सोलह वर्षतक उत्तरदिसाकोंतोनहिं जाय, और सूर्यकुंडमें नाहिं न्हाय. और ब्राह्मणौंसे द्वेस नहिंकरेतो चक्रवेराज्य करेगा नहींतो इसीदेहसें पुनर्जन्महोजायगा तब राजाने बचन दियाकेसो लावर्षतक उत्तरादिसाको गमननहिंकरेगा और नैं सूर्यकुंडन्हावेगा तब ब्राह्मणौंनें पुन्याः वाचन पढके आसिर्वाददे अक्षतदियाराजानेंद्रव्यगऊ पृथ्वि दे ब्राह्मणौंकूँ धनपूरितकरबिदा किये तब शिवदेव अतितुष्टवाँनहो के वर दे बिदा भयेराजाप्रार्थनाकरिकेकहाकेआपकावरमेरेकूँसिद्धहोजब तथास्तुकह अपने २ स्थानौंपेगये ॥ राजाके चौवीसराणियाँथी जिस्में चांपावतिराणीके गर्भाधानहोकेराजाकेपूत्रहुवा और खाइयाँ बधाइयाँ बँटनेंलगी सर्वजोतसी लग्नमहूर्तघडीसाधकेराजपुत्रकानाम सुज्जानकवर रक्खा अबतौराजकुमार राईबधता तिलवधे और तिलवधत्ता जववधे दिन २ अधिकतें अधिक जन्मतेही बडेबीर बिचिक्षणभये वर्ष पाँच सातका होतेही घोडे और शस्त्र साधन करनेलगे बारावर्षकी उम्मर में होतेही शत्रूतो धूजणेंलगे और मित्र पगपूजणेलगे चवदेविद्यानि-दान पढकरपरिपूर्णभये ॥ और नित्यप्रति गायन सांगीत नट नाद विद्या समझणेमें बडेप्रवीणहोके ब्राह्मणवजाचकौंकौंनानाप्रकारके दान औरदक्षिणाँमनबाँछितदेतेभये तब तौराजाको बधा आनंदआवताभया ताहिसमयमें एकबौध (जैन) मतवालेनें आयके राजपुत्रकौजैनधर्मो-पदेसदेके शिवमतसें बिरुद्धकरादिया और ब्राह्मणोंके नानाप्रकारसे दोष

वर्णनकरता भया तासमैंकै कुँवरकीबुद्धिः शिवमतसैं विरुद्धहौके जैन-
मतमें प्रवर्तभई और ब्राह्मणौंसें द्वेसकरनेंलगा व अपने सम्पूर्णराज्यमें
शिवमूर्तिका खंडनकरिकें जैनमंद्र स्थापनकरादिये उसदिनौंमें कोईभी
ब्राह्मण शिवालयजाता उनकौं जैनवाली माहादुखितकर यज्ञौपवित्र
तोडडालते और राज्यकुमारकी सहायतासें जैनियौंनें बडाझगडामि-
चादियाथा कहिंवी जग्य जाग्य देवपूजा हवनादिक नहिं होनेंदेते केवल
जैनमतस्थापनहोगयाथा और तीनूँही दिसामें राजपुत्र फिरकर जैनदि-
ग्विजयकीया फगत उत्तरदिसाही वाकीरहीथी वहाँजानेंका राजानेंवर्ज-
रखाथा और ब्राह्मणभी वहां यज्ञकराकरतेथेयहवातराज्यकुमारसुणकर
बडाक्रोधितहौतापरराजामहाराजाकावरज्याहुवा वहाँ जानहिंसकताथा
परंतु प्रारब्धरेपाकोंनमिटावे एतौ पुनर्जन्महौनाँहीथा सू एकसमयमें
प्रारब्धरेपानें जोरकिया तबउमरावौंसहित बुद्धिपलटकर उत्तरदिसामें
चलेगये नहिंजानाथा वहींजाकर सूर्यकुंडपे खडेहुये वहाँ छवरिषेश्वर
पारासुर गौतम आदिलेके जग्यारंभकर कुंड मंडप ध्वजा कलसादि
स्थापनकर वेदध्वनिसहित जग्यकरतेथे तहाँराज्यपुत्र वेदध्वनि
सुनकर और जग्यसाला मंडपदेखकर बडाआचार्यकीया कि देखौ मेरे
कौतौ यहाँआनामन्हाँकीया और राजानें यहाँ छुपकरजग्यारंभकीयाहै
यहचतुराईमेरेकूँ आजमालूमहुई तबतौ अपनेंसंगके सुभटौंकौं कहनें
लगाकि इनब्राह्मणौंकौंपकडौ और मारौ व जग्यसामग्री संपूर्णछिंनकर
नेष्टकरदो यहसुन ब्राह्मणौंनेंजानके राक्षसआनपडे और राज्यकुमारतौ
यादनहिंआया राक्षसजान घोरश्रापदेतेभये केहे अबुद्धियौं तुम जड
पाषाणवतहौजावौ तब वहोत्तरतोउमराव और एकराजपुत्र घोडाँसमेत
जडबुद्धिः पाषाणवतभये जिनकीहलनें चलनें और देखने बोलनेकी
सरधामिटकर मोहनिद्रामें प्राणप्रवेसभये यहवार्ता राजा और नग्रके
लोगौंने सुनके वहाँआकर देखेतौ कुँवर और उमराव सब श्रापितहोके

जडबुद्धिः पाषाणवतखडेहैं तबराजादुःखितहो अपनाँप्रानतजदियाजब इनकेसंग सोलहराणियाँ सतीहुई और बाकीका रावला व राव्हणाँ रहे सोब्राह्मणोंके सरणागतजायभये जब आसपीसके रजवाडेवालोंनें राज्य दबालिया तबराजकुँवरकीकुँवराणीं बहोतरउमरावोंकीं स्त्रियाँकूँ संग लेके रुदनकरतीहुई ब्राह्मणोंके चरणारविंदोंमें आकर परी तब ब्राह्मणोंने धर्मोपदेसदीया और एकगुफा बतलादी जिस्मेंसबकों जोगक्रियाकासा धन और अष्टाक्षरमंत्रदेके अष्टांगजोगसधातेभये पुन्ह वरदियाके तुम्हारेपती महादेवपार्वतीकेवरसें शुद्धबुद्धिहोनावैंगे तबतों सबस्त्रियोंनें बडीहीतपस्यापें कम्मरबांधी और महादेवकासुमरणकरनेलगी तबकोईकालकेपीछे महादेव पार्वतिवहाँआवतेभये तहाँ श्रीपारबती- जीनें महादेवजीकूं पूछाकेहेमहाराज येक्याबिवस्ताहै तबशिवजीनें पूर्वेइतिहासवर्णनकरके पार्वतीजीकों समझानेंलगे ताहिसमय राजाके कुँवरकीराणीं व वहोतरउमरावोंकी ठुकराणीयोंनें जानाके सहीतो शिवपार्वती पधारे ऐसासमझके सबस्त्रियेंआकर पार्वतीजीके पगेलाग तीभई जब पार्वतीजीनें आसीसदी के तुमस्वाग्य भाग्य धन पुत्रवान हुवो और तुमारेपतीनके सुखदेखो और तुम्हारेपाति चिरंजीवरहो ऐसा बरसुनकर राणियें हातजोडके कहणेंलगी के हे महाराज बर समझकर देवो यहाँतोहमारेपतियोंकी यहबिवस्ताहोरहीहै ब्राह्मणोंकेश्रापतें ऐसी दुरदसा और दुरगतीकों प्राप्तभयेहैं जबपार्वतीजी महादेवजीसें प्रार्थनाकर चरणारबिंदोंमें गिरपडी और कहाके महाराज इनकाश्रा- पमोचनकरो जबमहादेवजीनें इनकी मोहानिद्राछुडाकर चैतन्यकीये तब तो वह सुभटजागपडे और माहादेवजीकोंहींघेरलिये जब शिवजीहसकर बरदियाके तुमक्षमाकरोतबतेंक्षमावानहोगयेतहाँ सुज्ञानकँवर पार्वती- जीका स्वरूपकोदेखके लुभायमानभयो जबपार्वतीजीनें श्रापदियाके अरेमंगत माँगखा सोतो जागतेहीजागा होकर मांगनेंलगा और मिश्री।

आढ कारस्य इन्ड्रकान्नदुरस्थात् ढौटवालहुवा ॥ जब बहोत्तरउमराव बोले हे महाराज अवहमक्याकरे हमारेघरमेंराज्यतोरहानहीं तब महादेवजीनेंकहाके तुम क्षत्रत्व व शस्त्रछोडके वैश्यपदधारणकरो जब यह सुनकेउनोनेंअंगीकृतकीया परंतुहातोंसेंखडग नहिं मिटणेंसे हातोंमेंसें शस्त्रनहींछुटे तब महादेवजीनें कहा तुमसूर्यकुंडमेंन्हावो जबसूर्यकुंडमेंन्हानेंसें शस्त्रछुटगये तयतरवारसेंतोलेखणी और भालोंकीडाँडी और ढालेंनकीतराजू बनाके वाणिज्यपद धारणकीया तहाँ ब्राह्मणोंकों खबरलगीके वहश्रापतो महादेवजीनें मोचनकरके उनकों वैश्यबनादिया तबब्राह्मण आकर शिवजीसें प्रार्थनाँकी के हेमाहाराज इन्होंनें हमारा जग्यविध्वंसनकीयाहै सोतोश्राप आपनेंमोचनकर बरादिया अब हमारा जग्य संपूर्णकैसेंहोगातबशिवजीनेंकहा अभीतो इनकेपास देनेंकूंकुछनहींहै परंतुइनकेघरमें मंगलउत्सावहोगा जबतुमकूं सर्धामाफक यथाशक्त द्रव्यदीयेजाँयगे और तुमइनकों स्वधर्ममें चलानेंकीइच्छाकरोएसेंवरदेके संभूतो अपनेंलोककोंसिधारे और ब्राह्मणोंनेंइनकों वैश्यधर्मधारणकरवाया जब वोहीबहोत्तरउमराव छत्रिवेश्वरोके चरणारविंदोंमेंपडे तब एक २ रिषेश्वरके बाराबारासिष्यभये सोही अब यजमाँनकहलायेजातेहैं केईदिनपीछे खंडेलाछोडकर डीडवाणें आबसे वो बहोत्तरखाँपके उमरावथे जिस्के बहोतरखांप डीडूमहेश्वरी कहलानेंलगे अबतो ईश्वरकी कृपा और महादेवपार्वतीके बरदान व ब्राह्मणोंके आशीर्वादसें बहोत्तर खाँपका बढावहोकर देस २ और गाँव २ में महेश्वरियोंकीजय और विजयहोकर बडीफेलावटहोगई है यहमूलकल्पतरु वार्ताबंद किंचितवर्णनकीया अब छंदबंद विस्तारपूर्वकवर्णन करेंगे ॥ इतिवार्तिककल्पवृक्ष ॥

अथ

माहेश्वरी आदिउत्पत्ती प्रनालिका छंदबंद.

दोहा ॥ प्रथममहेश्वरिजातकौ कहूँकलपतरुजाँन॥पुनिचौरासीन्यात कौ कहुँयथाबाखाँन ॥ १ ॥ छंदछप्पय ॥ राजाखडगलसैंन बँसचौहा-नउजागर ॥ रिधूखँडेलेराज बुद्धिबारदगुणआगर ॥ भुजप्रचंडबरवीर धीरधरधरमधुरिंधर ॥ कुलदीपकअसभाँण पहुमिपरतापपुरिंदर ॥ आ-णदाँणचहुँऔर सझेसाँव तसैनावर ॥ रूपसीलगुणरास नराँनरअडिगनृ-मेनर ॥ नीरयंदयेमभोगेइला नहिंपाट पुत्रबिलखोरहें ॥ द्विजजनमुने-ससनमाँनिके फलदेहुप्रसन्नृपयूँकहें ॥१॥ जबबोलेभोंदेव नृपतसंकरव्रृ-तकीजे ॥ अष्टाक्षरतलमंत्र तुरतरसनाँरटलीजें॥मनबाँछितसुतलेहु बरष सौला सुखपावौ ॥ पुनर्जन्मइणदेह जतनविधिकौटकरावो ॥ सूर्यकुंडन-हिन्हाय त्यागउतरदिसराई ॥ षोड़सबर्षनृभाव चक्रजगअमिटफिराई ॥ द्विजदोषमूलकीज्यैनको बहुतभाँतिडरतोरहें ॥ भोश्वररुद्रसमुझायके गूतभेदपरगटकहें ॥ २ ॥ राजोवाच ॥ दोहा—द्विजआसकमोपूत्रह्वैसू-र्यकुंडनहिन्हाय॥षोड़शवर्षनृभायहुँ उत्तरदिशानजाय॥३॥ पुनःवाच-न बिप्रपढ दीआसिकद्विजदेव ॥ पढौमंत्रसुतपायहो शिवशक्तीकरसेव ॥४॥बिवदभाँतकरबीनती। पूजीनृपतिद्विजपाय॥करसनमाँनबिदाकिये निजघरबेठेआय ॥ ५ ॥ रटेमंत्रजजजग्यव्रृत दानधर्मतपकीन ॥ शिव पूजतपरसनभये शीघ्रिपुत्रफलदीन ॥ ६ ॥ छंपदद्धरी ॥ आनंदकरत खंडेलराज ॥ भिड़साथसदानृपसैन्यसाज चांपावतिराणीपाटथान ॥ तिनके सुतजनम्योबंसभान ॥७॥ सुज्जानकुँवरनृपनामदीन्ह॥ जसवा-बहुतभाँतलीन्ह ॥ तिलबधतबधतजोराजबीर ॥ चढअश्वफिरावअति सुधीर ॥ ८ ॥ साझिसाथसखालैआपजोड़ ॥ नाहराँथाहराँकरतदोड़ ॥ सम्रूतरांसंकभागीसुचित्त ॥ काकडाअडबियाँकरतनित्त ॥ ९ ॥

झगडालूदावालेतआप ॥ निष्कंटप्रजापहुमींप्रताप ॥ बरसाँअबद्वादस केप्रवाँण ॥ पढगयौचातुरीअतिसुजाँण ॥ १० ॥ नटनाकलाचाहत सुचित्त ॥ मनबांछिजाचकिनदेतवित्त ॥ एकबौकरीरूपधार ॥ छलयौतुरतभौंपतिकुमार ॥ ११ ॥ द्विजदौषदृढायेअतिप्रसंग ॥ भ्रमभूल फिरयोभ्रमपलटरंग ॥ मनजैनग्रंथसुचिकंठकीन ॥ रुचिबढत पढतादिनदिननवीन ॥१२॥ तजजग्यकर्मश्रुतिधर्मछोड ॥ गुरईष्ट आ-दिमारियादतोड ॥ जपजापदानमखबंधकीन्ह ॥ सिद्धांतएकमतजैनची-न्ह ॥ १३ ॥ आचारनेष्टचरचाचलाय ॥ द्विजजातशिवालयदेपलाय ॥ बेदोक्तधर्मकौकरतखंड ॥ बादाविवादकरदेतदंड ॥ १४ ॥ चूकेतेंपुस्त कछीन लेत॥उपहास्यकरतकरतालदेत ॥ अटकेकोउजैनींकहअनाद ॥ पखछौडलगावतस्यादवाद ॥ १५ ॥ कौसकेजीतकरकुँवरखीच ॥ बक वादकरतबाजारबीच ॥ शिवधर्मछौडकोउबोधथाय ॥ धनदेतकुँवरकर मित्रआय ॥ १६ ॥ साझिबोधमंडलीसाथलेत ॥ गलझूत्रदेखिअतित्रा सदेत ॥ करजैनमंद्रपुरठामठाम ॥ ताकीदहोक्मदरग्रामग्राम ॥१७॥ बाचालफिरतबहुतेकबोध ॥ कहुँहौतजग्ययहकरतसोध ॥ कोउ आनकहैअमुकेसथान ॥ चढिजायतुरतघर धनुषबान ॥ १८ ॥ यहिभाँतअहेडेचढतसूर ॥ स्यामंतसाथपखपाणपूर ॥ भलकं-तसेलढलकंतढाल ॥ खलबलाहिंपिसुनजनदेखिकाल ॥ १९ ॥ दिग्वि-जयबौधमतथापदीन्ह ॥ उत्तरादिसबाकीएकचीन्ह ॥ तहँबसताबिप्र सुनिउठतझाल ॥ परबसअजौरनृपदयौपाल ॥ २० ॥ अबऔरसुनौंअ दभुतप्रसंग ॥ पूरबतेंपश्चिमउलटिगंग ॥ बरज्यौनाहिंमान्यौनृपतकेर ॥ उत्तरादिसचाल्यौअर्णीफेर ॥ २१ ॥ यहहौंनहारकौसकेटार ॥ भवतव्य दइवमायाअपार ॥ सबभूलिगयेप्रकृतासुभाय ॥ वहसूर्यकुंडपैंखडेजाय ॥ २२॥ भामनीरेखप्रारब्दजौग ॥ अटकावतहाँमिलनासैंजौग ॥ जहँज ग्यकरतामिलारिषिसमाज ॥ पराशरगौतमभारद्वाज ॥ २३ ॥ दाधीच

सारस्वतशृंगिवाल ॥ नितकरतवेदध्वानिअतिविसाल ॥ तहाँरच्ये कुंडमंडपअपार ॥ साकल्यहव्यघ्रतश्रवतधार ॥ २४ ॥ दोहा ॥ सुनत रिचानृपसुतनकूँ,भयौक्रोधअतिघोर ॥ करतकवनमखदेसमम,बाँधहुमा रहुचौर ॥ २५ ॥ हमकौंबरजतआतइत, रौपियज्ञनृपराज॥पैंइनकीजा नींपनी, यहचतुराईआज ॥२६॥ हुकमलौपहिंसाकरे दीज्येताकौंदंड ॥ जैनधर्मपालेजरू आनसकलमतखंड ॥२७॥ जिनकौंधरप्यारालगे पहुँ- चौपरबतपार ॥ साथरहोसौसाथियाँ हातगहौहतियार ॥२८॥ धायधा- यकरखड्गले बाहिबाहिमुखभाक ॥ ताम्रकोटद्विजतबरच्यौ अश्वगये सबडाक॥२९॥औश्वरअतिअकुलायके भयेअचानकभीत ॥ आन परे राकसजनूँनृपसुतनायोचीत ॥३०॥ छंदपद्धरी ॥ द्विजदेवदयौअतिघोर श्राप ॥शठहौहुउपलसमसहहुताप ॥ जडबुद्धिभयेअश्वनसमेत॥शरश- स्त्रहाताथिररहेखेत॥ ३१ ॥मनबुद्धिचित्तहंकारलीन॥जियमोहनींदपरबे- सकीन॥जडभयेसकलपथ्थरसमान॥सबभूलिगयेदेहाभिमान ॥ ३२ ॥ तबलिंगदेहमेंबसेप्राँन ॥ जलशस्त्रअग्निकोनाँहिंभाँन ॥ गुरसेवाकोफल लग्योआय । जनुपरमहंसपदलयोपाय ॥ ३३ ॥ परचंडपापयहमदूल- पूर ॥ करजग्यबिध्वंसनकर्मकूर ॥ मंडलीमाँहिंकोउबच्योनाँहिं ॥ उम- रावबहौतरकुँवरमाँहिं ॥ ३४ ॥ दोहा ॥ सुनआयेनृपनग्रनर भयौबहुत संताप ॥ करैंनृधारबिचारिके छुटतनदारुणश्राप ॥ ३५ ॥ देखिकुँवर पाषाणसम मुरछिपरयौनरनाथ ॥ प्राणतज्यौएकपलकमें सतीसोहौला साथ ॥ ३६ ॥ उतजडबुद्धिकुँवरभौ इतनृपतज्ये पिरान ॥ दटेहुतेशत्रु जगे छीनलईधरआन ॥ ३७ ॥ छंदपद्धरी ॥ देहांतभयौखडगलनरेस ॥ तबओरपलटभयोभूपदेस ॥ नृपसंगसतीसौलाप्रसिद्ध ॥ रहिऔरआन रिषिसर्णलीद्ध ॥ ३८ ॥ कुवराणींकरबिनतीअपार ॥ संगलीन्हबहूतर सुभटनार ॥ परपायकरतनाँनाँबिलाप॥ द्विजदयौमंत्रउपदेसजाप॥ ३९॥ एकगुफादईतपकरनजान ॥ स्वज्ञानकरहिंपातिसंमुआन ॥ बरदयौमुनि

नग्रियरसीतवार ॥ तपकरनलगीएकचितअपार॥४०॥पद्मासणथिरकर
श्रगरौय॥जपमंत्रसकलनिजदहसोय ॥ सुखमणाँध्यौंनत्रिकुटीप्रवेश साझि
राजजौग्यश्रमनाँहिंलेस ॥ ४१ ॥ मनइच्छयागढचढितरजाय ॥ नित
करतपतिनकीसेवआय ॥ आरतकरंतरतवारबार ॥ हरहरसंकरसिलक-
रधुकार ॥ ४२ ॥ दोहा ॥ धरतध्यानसववालमिल कंदमूलफल
खाय ॥ करतजौगअभ्यासनित शंकरशक्तिमनाय ॥४३॥ छंदपद्धरी ॥
चिरकालवीतिगयेसंभुनाथ ॥ नरप्रातिमाँदखीशस्त्रहात ॥ भयेशुष्कअंग
विन्हपदेह ॥ करप्राणायामनहिंस्वासलेह ॥ ४४ ॥ करजौरिप्रसनपू-
छतरथंभ ॥ केहिभाँतभयेजडपुरपअंग ॥बिधिपूरवकहियेशिवसुजान ॥
तुमकरहुकृपानिजदासिजान ॥ ४५ ॥ शिवकह्योसकलइतिहास ॥
तांत ॥ बिधिसहितभेदपूरववृतांत ॥ यहकथापरसपरहोतजान ॥
वहसुभटनारढाढीसुआन॥४६॥परपायविनयवहुभाँतकीन्ह॥सुनशक्ति-
विवदआसीसदीन्ह ॥ ह्वौसवाग्यभाग्यधनपूत्रवान ॥ चिरजिवौ नाहतव
बढौसान ॥ ४७ ॥ नृपनारिकैहैंबरससुझिदहु ॥ जडबुद्धिभये पतिदे-
खिलेहु ॥ यहसुनतशिवाअतिचिंतकीन्ह ॥ शिवचरणजायनिज सीस
दीन्ह ॥ ४८ ॥ बहुभाँतिविनयकरहरारिझाय ॥ कहिकरहुसुचेतननाथ
याहि ॥ संकरतबतीक्षणफूँकिनाद ॥ लगिश्रवणद्वारछुटइसम्हाद॥४९॥
नैत्रनपरअमृतछाँटदीन्ह ॥ खौलेकपाटपरकासकीन्ह ॥ इंद्रियाँचेततनभ
यौग्यान॥छुटिगयौसुपौपतस्वप्नध्यान ॥ ५०॥ तजमौहनींदचेतनसुभा-
य ॥ अकुलायकैहैंधरधायधाय ॥ करक्रौधसंभुकौंलयौघेर ॥ ल्यौमारि
जग्यनहिंकरेफेर ॥ ५१ ॥ हसिविश्वनाथवरअखिलदेह ॥ करक्षमाँअ-
तहिआनंदलेह॥ थिरभयेरहेचरणलुभाय ॥ हमकरेंकवणबिधिसौउदाय
॥५२॥ तबसंभुदयौबरबइश्यहोहु॥कलुकाकालकल्पतरुअखिलमोहु॥
शुभटनकेशस्त्रकरछुटतनाँहिं ॥ शरगलेलुहागरकुंडमाँहिं ॥५३॥ किर
पाणत्यागकरकलमलीन्हि॥ तजढालतराजूतुरतकीन ॥ नृपकुंवररूपसब

मतमलीन॥ डमियाँआप्योखामाँगदीन॥५४॥ तबतेंयहमंगनलगेलार॥ जागाकुलबोलतजगपुकार ॥ भइअर्द्धखाँपभिक्षुकीकर्म ॥ रहिखाँपवहु तरवैश्यधर्म ॥५५॥ सुनकेरिषिआयेशिवनकेत ॥ तिनकहीकथाकारन समेत॥इनजग्यबिध्वंसनाकियोभोर॥वहश्रापमोच्यभयोऊपातोर॥५६॥ यहबसेआनकहुँदेसजाय ॥ वहजग्यसपूरणकेमथाय ॥ संकरसुनयहनिर धारकीन्ह ॥ धनलक्षनिनाणूँजोडदीन्ह ॥ ५७ ॥ यहव्याजसहिततवपूत्र लेह ॥ इनकेसुतमंगलमाँहिदेह ॥ पटरिषिनबहूतरलगेपाय ॥ गुरुएकद- वादसासिष्यथाय ॥ ५८ ॥ क्षत्रत्वछाडकरवैश्यकर्म ॥ भयेसमाश्रित्य धरीविष्णुधर्म॥ उपनयनमंत्रउपदेसकीन्ह॥ बहुभाँतआसिकारिषिनदीन्ह ॥ ५९ ॥ वाणिज्यवृद्धिसुरतरुसमान ॥ तवसमपदवीकोउलहनआन ॥ धनपूत्रबुद्धिवरपुरहुतोर॥ शिववचनफुरहुआसीसमोर ॥६०॥ कलुप्रथ- मचरणशकप्रथमजाँन॥ संमतनौकेशुद्धज्येष्ठठान ॥ नौमीबुधउत्तरावृष- कोसूर ॥ ग्रीषमरितुदिनमध्यानपूर ॥६१॥ तासमयमाहेसीश्वरीआन ॥ माहाजनपदवीदीप्रगटजान ॥ खंडेलेनग्रगिरीमालकेत ॥ पुनिबसेडीड पुरउद्यमहेत ॥ ६२ ॥ तबतेंयहडीडूछापलीध ॥ अबफेलगयेसबजग प्रसिद्ध ॥ कहदरकसहाशिवकरणबात ॥ सुनलेहुआदिसाखाबिख्यात॥ ॥ ६३ ॥ दोहा ॥ राजकुलीछत्तीसके सुभटबहूतरजान ॥ एक कुलीकी खाँपदुय पंडितलेहिंपिछान ॥ ६४ ॥ च्यारजातछत्रचक्रवे आदिधराप तिइस ॥ छत्रछोडमाहाजनभये गाजकुलीछतीस ॥ ६५ ॥छंदजातभुजं- गी ॥ प्रथममूलकीविगतऐसेंबखानी ॥ कहूँऔरआगेजिसीभाँतजानी॥ पहलीगुराँकेपगेजायलागो ॥ सुजानेंचुहानं अद्धेखाँपजागो ॥ ६६ ॥ अबेखाँपनीकेबहूतरगनाऊँ ॥ सुनौचित्तदेछंदआछेबनाऊं ॥ सोनी १ और सोमाणीं २ जाखेत्या ३ सोढाणीं ४॥ हुरकट ५ न्याति ६ हेडा ७ करवा ८ काँकाणीं ९ ॥६७॥ मालू १० सारडा ११कहालया१२ गिलड १३ जाजू १४ बाहेती १५ विदादा १६ बिहाणीं १७बजाजू॥

१८ कळंत्री १९ रु कासट २० कचौल्या २१ कल्हाणीं २२ ॥ झँवर २३ कालरा २४ डाड २५ डागा २६ गटाणीं २७ ॥६८॥ राठि२८ बिड़ला २९ दरक ३० तोसणीवल ३१ राजे ॥ अजमेरा ३२ मँडाणी ३३ कपरवाल ३४ छाजे ॥ भटड़ ३५ भूतड़ा ३६ वंग ३७ अहूल ३८ इँदाणीं ३९ ॥ भुराड़्या ४० भन्साली ४१ लढा ४२ मालपाणीं ४३ ॥ ६९ ॥ सिकच्ची ४४ लाहोटी ४५ गदइया ४६ गग-राणीं ४७ ॥ खटवड़ ४८ लखोटचा ४९ असावा ५० चेचाणीं ५१॥ मुणधण्याँ ५२ मूँधड़ा ५३ चौखड़ा ५४ चँडक ५५ राजै ॥ बलदवा ५६ बालदो ५७ बूब ५८ बाँगड़ा ५९ बिराजै॥ ७० ॥ मंडोवरा ६० तोतला ६१ आगिवाल ६२ आगसोड ६३ प्रताणीं ६४ नाहूंधर ६५ नवालं ६६ पलोडं ६७॥तापड्या ६८ मिणियार ६९ धूत ७०धूपड़ ७१ मोदाणीं ७२ ॥ सहा दरक शिवकरण बहुतर बखाणीं ॥ ७१ ॥ दोहा ॥ पोरवार १ पुनि देपुरा २ मांत्रि ३ नवलखा ४ जान ॥ जैनधर्म कुलत्यागकर असतपतमिलियाआन ॥ ७२ ॥ मावेटीमझोंतणीं टाँवर भाटीटोड ॥ जिणसूँवागाटाँवरी चँवरीदीन्होड ॥ ७३ ॥ पुसकरणाँ ॥ बीसागुरू चेलाचावंडकेर ॥ माकरणसगोतरकह्यो मिलियाजेसलमेर ॥ ७४ ॥ अथ बीकानेरवालामहता कवित्त॥महताबखतावरसिंध राठी-सहळाणीबीक फतेसिंगोत ताके उरवसीखवासथी ॥ नाथीनामताकेसुत सहजराम रूपचंद रूपपुत्रहीन सहजरामकेओलादभी ॥ रावतसरबू-लचंदकरवाकी परण्योधीय राजकीहिमायततें ताकेसुतत्रयभये ॥सेरसिं-घ ग्यानसिंघ मेघसिंघ जंगजीत रंगदयोंराजापैंनाथीसुतकहगये ॥ ७५॥ दोहा ॥ सहजरामसगपणकरण कीन्हाँकेई उपाय ॥दैवजोगभटनेरमें मेल मिलायोजाय ॥ ७६ ॥ सहजरामकूँबूलचंद बेटीदेनव्याह ॥ भीरपरी भटनेरमें घेरामाँहिंग्रह्योह ॥ ७७ ॥ मुकरगयोभिरबूलसाः परणावणइत कार॥बीकाणेंसरकारकी हुईमदतातिणवार ॥ ७८ ॥ राजाहिमायतक-

रपरण कीन्हैंजगविवहार॥ताकैसुततृयबुद्धिबर जंगजीतजौधार॥७९॥ मूलखाँपएैसेंभई ताकासुणौविचार ॥ अबआगेविस्तारबहु बौंकनाम निरधार॥ ८०॥रिखिजनकेआसीततें बढयौबहुतपरिवार ॥चढयोसघन धनकलपतरु कावियनपावैपार ॥८१ ॥ छंदजातभुजंगी ॥ जणेपूतपौता फलीबागवाडी ॥ गिनेंबौंकनोसौनियासीअगाड़ी ॥ मिलेहीरपुखराज माणंकपंन्ना ॥ मिलेनीलमौतीप्रवालंरतंन्ना ॥ ८२ ॥ भईवेझडीखीचडी भेलसेलं ॥ लखेनाहिंभाईसगाकोसहेलं ॥ इसीबिद्धदेखीभुजेत्रासआई ॥ जबेपंचसौंएकअरजीसुनाई ॥ ८३ ॥ दोहा ॥ आदिबहौत्तरखापथी बढभयेबौंकअपार ॥ किनंकिनकोभाईकहै किनतेंसगपणसार ॥८४ ॥ किनकासुतगोदीलिहै किनकौबेटीदेहूँ ॥ यहघनमचौलाजातमें पंचअरज सुनलेह॥८५॥पंचबायक ॥ चौपाई ॥ खाँपबहूतरआदिप्रमान ॥ अधि- कनामहमसुनेंनकान ॥ ८६ ॥ बडेबडेरेकही सुनाई ॥ खाँपबहोत्तरअ- धिकनभाई ॥ तबहमछापआठसौदीया ॥ सुनसबलोगअचंभाकीया ॥ सौसबनामखीचड़ीकिंहूं ॥ करछँटणीखाताफिरदेहूं ॥ ८७ ॥

अथ आठसौनामबौंकसमूहवर्णन ॥

छंदमोतीदाम ॥ कहीबिधिआदिबहूतरखाँप ॥ भयेअबफेलिकेवौंक अमाप ॥ गनाहुँ एकत्रसमग्रहनाम ॥ बनावहुँ छंदसुमौतिहिदाम ॥ १॥ मोराणि मीमाणि न्याती नंदवाल॥काकाणि काल्हाणि कसूंबिहिवाल ॥ मालाणि मुसाणि फाग्या आगीवाल ॥ राघाणि बाघाणि धनाणिं नवाल ॥ २ ॥ रूपाणि मेमाणि भया ऊनवाल ॥ कानाणि कोकाणि दमाणि दलाल ॥ दुदाणि डुढाणि मोदाणि मुछाल ॥ ईदाणि ऊंधाणि कटारया कुशाल ॥ ३ ॥ जटाणि जेसाणि छुरया छप्रवाल ॥ लालाणि ललाणि नराणिं हिवाल ॥ तुरक्किया तौंड़ा भाला भुगड़वाल ॥ सीलाणिं सोढाणि डाणी पेड़िवाल ॥ ४ ॥ गटाणि चिया गट्टु गाहलवाल॥सुखाणिं समाणि

केला पड़ूवीवाल ॥ सीह्नाणि हुजाणि रुत्तोसणिवाल ॥ सेसाणि सोभा-
णि वँदू पड्वाल ॥ ५ ॥ चेचाणि टुवाणि दगा फोगिवाल॥धाराणि धि-
राणि धाराणि खुँवाल ॥ बांहोति विदादा भुवनिंह्निवाल ॥ नाथाणि नापा-
णि रूनाणि कयाल ॥ ६ ॥ पीयाणि बिह्नाणि दाखेडा दंताल॥पीपाणि
पनाणि माल्हू मालीवाल ॥ पद्माणि बनाणि धौला धूणवाल ॥ बछाणि
वोराणी काव्या अम्रपाल ॥ ७ ॥ आगाणि पचास्पा रूपा रेणिवाल ॥
वासाणि विठाणि लठा लोइवाल ॥ भौलाणि भिराणि मोदी मुँजिवाल ॥
सराणि भोजाणि खूंच्या खेडिवाल ॥ ८ ॥ मानाणि मोराणि मुँवाणिंहिं
वाल ॥ सूँजाणि मायाणि रावी राइंवाल ॥ भोराणि मोडाणि भिप्याणि
स्यह्रार ॥ साल्हाणि सादाणि सागाणि काहार ॥ ९ ॥ रद्दाणि रथाणि
रीयाणि प्रवार ॥ लखाणि लेखाणि चनाणि चमार ॥ सावूण्या ससाण्यां
माधाण्या सिलार ॥ जालाणि जिंदाणि जेठा पौरवार ॥ १० ॥ उलाणि
कलाणि तेजाणि मिण्यार ॥ होलाणि खेमाणि साहा संगमार ॥ नाटाणि
नेताणि लुलाणि डुसाज ॥ खेताणि खाबाणि वोराणि बजाज॥ ११ ॥चो-
खाणि भोलाणि गग्राणि नरड्ड ॥ चाँच्या चोखडा तोतला रुहिंगडे॥क्रि-
नादि मुलतानि खटौड खरड्ड॥सिकाचि स्यह्राणा सिरच्या लोगडे॥ १२॥
असावा असौफा अठारचा अटल्ल ॥ कोठारि कसेरा खोभा खटमल्ल ॥
कोठ्याका कानूगा कचौल्या कासट ॥ कुलथ्या कलंत्रि लँवू नाडा-
गट्ट ॥ १३ ॥ कलंस्या कसूम काहारा काहोर॥करम्मा करवा किलल्ल
खावौर ॥ जोला तापड्या तुसड्या रूचरख ॥ डागा दादल्या दागड्या
रूदरक्क ॥ १४ ॥ भन्सालि भगूल्या भकावा भकड्ड ॥ मिरच्या मरो-
ठि मिज्याजि मकड्ड ॥ भूत्या भांगड्या भुरियां रु वेकट्ठ॥भकावा भ-
डारिपीनाणी फौफट्ट॥ १५ ॥चिमक्या चरकखा चेनारचा मलक्क॥लटू-
रचा लखौटचा लोईका कलक ॥ दुजारा धारूका रु धीरण डाड ॥
नागोरि राहूरचा लाहोटि अघाड ॥ १६ ॥ सिंगाडचा स्याह्नारा हल्द्या

मीलक्क ॥ छाछ्या भौंगडच नरेडया रु किलक्क ॥ जाजू जेथल्या नोग-
जा रु लोलुण ॥ सराप चांवडया लोगर्ड होलंण ॥ १७॥ काहा गोक-
न्या चोधरी रु चँडक्क ॥ टौडचा डामकी रावत्या रु मँडक्क ॥ बोराणि
गिंदोडचा मोराणि गगड्ड ॥ हेडा पाप्या पुँगल्या रु लोहड्ड ॥ १८ ॥
डँडी डाँगरा पालडचा रायमौर्ड ॥ लेलाणि पसारि पेमाका पलोड ॥
डेढ्या खुंवडचा खिवज्या रु धूपड्ड ॥ केला कौंकरचा नाथड्डा रु ध-
नड्ड ॥ १९ ॥ सेठी सौंभरचा सागरचा रु सागर्र ॥ नागा नोलखा नु-
गरा रु कोकर्र ॥ राहूरचा सतूरचा साहाणि संकर्र ॥ लोईका मेमाणि
साँवड्ड नेवर्र ॥ २० ॥ कुया काकडा कुकडचा घनवाल ॥ किया काब-
रचा तोरण्या टक्कचाल ॥ रौल्या झिंतडचा चमडचा रु राँदर्ड ॥ रूधा
गिगल्या नाँगल्या रु बाँगर्ड॥ २१ ॥ रूडचा घूबडचा खौगटा रु. लद्
ड्डु ॥ मेण्याँ फोफल्या सारडार मल्ड्डु ॥ तेला मोठड़ा माड़म्या रु
मूँगर्ड ॥ कला थेपडच बेहडचा रु हरड्डु ॥२२॥ केरा जुहरी जगरामा
सेवर्र ॥ मेरा सुगरा चपटा रु केवर्र ॥ ढोली दागडचा दगडा रुझवर॥
मोडा भूतडा मूधडा रु मछर्र॥२३॥ जेरामा मूजी माहिया रु नाहर्र॥
केला बावरीबागडी रु पाहर्र ॥ भलीका भुराडचा भटड्डु रु नाग ॥ ब-
टडचा बेजारा कलंक्या रु काग ॥ २४ ॥ बारीका नौसल्या कील्या
निकलंक्क॥ काल्या बंग बंबु भूरा गुलचक्क ॥ मजीया मजीठ्या मुर-
क्या भगत्त ॥ साहा शिवकर्ण सुजाण जगत्त ॥ २५ ॥ कवित्त ॥ अ
जमेरा आगसूड कटसूरा खेडावाल गींगलिया घरडोया देसवाणीं बा-
णिये ॥ कुचकुचिया चिगतोडा झालरिया चापसाणीं चहाडका रुछी-
तरका जाखेठ्या जाणिये ॥ घरडोया सौन साबू गरविया मौनाण हींग्या
नरअमडा परसरामा सूम सौ बखानिये ॥डबकोडचा टोपीवाला दुरढा-
णी द्वारकाणीं देसवाणी दुरगड दास भलीभाँत मानिये ॥ २६ ॥ जज-
नोत्या नगवाड्या परताणीं नानगाणीं मुकनाणीं मथराणीं मालपाणीं

जाहूं हूं ॥ श्रीचंदाणी करमसाणी ठाकुराणी सातलाणी गुहलाणी रतनाणीं लखधाणीं ठाहूं हूँ ॥ साहताणीं सुंदराणी साकराणीं अरजनाणीं तिरथाणीं थिरराणीं सावताणीं आहूँ हूँ ॥ महरा ठाकुराणी सेठ तुलछाणीं भाकराणीं बिसताणीं सावलाणीं राघवाणीं माहूं हूँ ॥ २७ ॥ समवाणीं हरकाणीं देवदत्ताणी सूँघा देवगहूणीं सिंधी लाणीं जगजानेहै ॥ देवराजाणीं बील्याहुरकट काहालाणीं सूथा घोलेसरचा किस्तूरचा मातेसरचा मानेहैं ॥ दीहराजाणी रूप नाहूँधराणीं पाँत्या बालेपोता ध्यानेपोता देसावत ठानेहैं ॥ हरचँदाणी नरसाणीं केसावत रामाणी खेतावत रामावत डाहाल्या प्रमानेहैं ॥ २८ ॥ हुडकुटिया लाठी कूँम्या गुलचट तहनाणींगोन्या टीलावत पूरावत पौसन्या वसेपहै ॥ मौलसन्या हौलसन्या भानावत मानावत कल्लावत परसावत दूदावत देखेहै ॥ श्रीचंदोत मेसराणीमुलतानी ऊजवाल सोभावत मल्लावत लालावत लेखेहै ॥ करमचंदोत लोया वहगटाणीं प्रहलादाणीं नौसन्या नहूँधर ठींगा पावरिया पेखेहै ॥ २९ ॥ झुगदाल्या पूँदपाल्या महरा बापेचा सूँण डोडसूथा राजसूथा सुरहरा सुणिये ॥ रणदोता बापडोता बाजरा भीचरा सौनी धूँजलिया चिगतोड़ा माणुधणाँ सुणिये ॥ देवपुरा सुरजन मंडोवरा कचौल्याराय लेखखिया लालणिया लक्खावत लुणिये ॥ नेतसोत करमसोत साणन्या कचौल्यासोन मणक्या मुलतानी मल्ल गोकलानि गुणिये ॥ ३० ॥ महलाणा महदाणा माणुधण्याँ मरचून्याँ बृजवासी आकरोद्या भीचलानी भाखे हैं ॥ मेड़िया मरोक्या मात्या मालण्याँ कचौल्याफूल सांवलका पटवारी दम्मलका दाखेहैं ॥ पाडका बाहडका बलडिया माणकिया चातुरभुजाणी भूत सकरेण्या साखेहैं ॥ मडदा पावेचा भूक्या सूहणदासोत डामाँ नागणेच्या नरवरिया बसहर कविआखेहैं ॥ ३१ ॥ हरीदासोत धूत निकलंक खरनाल्या जंज बसदेवाणीं बापला बडहका बखानूँहूँ ॥ भागचंदोत डोडालचंदोत माडा अखेसिंगोत कोव्या अठास-

णिया आणूंहूं ॥ मंतरी अटेरण्या नरेसण्याँ अखेसिंगौत कीकासण्याँ जुजेसरच्या मदसुनौतु मानूं हूं॥साखइया दरवरिया नैणसर प्रतिसिंगौत तुलावत्या फतेसिंगौत एते गौत जानूंहूं ॥३२॥ छंदइन्द्रवज्र ॥ रामचँदौत कपूरचँदौत रु मान सिंगौत ए गौत कहेहैं॥ बौतप्रकारसुमाराकियो तब नामसमग्रह भेलेभयेहैं ॥ बौंकअमापअपारअपंपर भौमिठठेरविकेसें गहेहैं ॥ यादकिये शिवकर्ण समस्तपैं केतेक भूलमें बाकिरहेहैं ॥ ३३ ॥ दोहा ॥ यहवेझडकीचडी अधिकआठसौनाम ॥ अवखातादेबहूतर कहूँ ठामकेठाम ॥ ३४ ॥ बार्ता ॥ इसबहोत्तर खाँपके डीडूमहेश्वरीनकी ७२ खाँपतो प्रथमही वर्णनकीहै उन मूलखांपेंमेंसें फलियेंफूट २ कर अनेकनाम बौलेगये किसी २ खांपमें तो यहां लकनामबढेकि १६० नामबौलतेहैं इसीतरहसे बहोतर खाँपके आठसोनामतो हमने सौधलगायकर इखट्ठे करके समूहवर्णनकीये वो छंदबंदलिखेहैं पुन्ह वहीनाम चक्रकोष्टकमें खुलासें लिखेंगे पुन्ह वहीनाम अपनी २ खाँपमें खतावणीकरके माता गुरु गोत्र वेद साखा परवर समेत वर्णन करेंगे प्रथम समूहनामचक्रमें लिखेहैं सोतोकुल बौंक व खांपसामल लिखेहैं अब इन्हींबौंक व खाँपकों अनुक्रमसें अकारादि कोष्टककरके खुलासा लिखाजायगा जिस्के देखनेसें मूलखांपें और उनमें सिखले हुये बौंक पृथक २ मालूमहोजायगा जैसेंके कौठारी सोनी कौठारीदरक कौठारीसारड़ा कौठारमूंधडा इत्यादि येसेंमूलखाँप और बौलतीफलिये अमुकमेंसे अमुक निकले और अमुक २ आपसमेंभाईहैं यह खुलासा तादृश्याकार मालूमहोगा फलीकोष्टकनंबर१ मूलखांपकोष्टकनंबर २ याप्रकारसें चक्रमें देखनासूं खुलासा दर्पणमुखवतमालूमहोगा ।

प्रथमसमूह नामचक्रमें देखो.

स्वस्तिश्री डीडूमहेश्वरी बहोत्तर खाँप अमर वेलके गुथेहुयेतंतू आठसौनाम समग्र संग्रहावली चक्र लिख्यते.

श्री.	कटारया	काला	केवर	खाडावाल	गींदोडया	घूबरया
श्रीचंदाणी	कसेरा	काला	केसावत	खींवज्या	गींगल	च
श्रीचंदोदत	कचौल्या	काहा	केरा	खींवज्या	गिलडा	चरखा
अ.	कचौल्या	कासट	कौठारी	खुंवाल	गिलगिलिया	चहाडका
अजमेरा	कटसूग	काकड़ा	कौठारी	खूंच्या	गुलचक	चमडया
अठासएया	कलक	काग	कौठारी	खूंभडा	गुलचट	चतुरभुजाणी
अटेरएया	करनाणी	काकरया	कौठारी	खेमाणी	गूजरका	चतुरभुजौत
अखेसिंगौ	करमचंदौत	कान्हाणी	कौठारी	खेताणी	गेनाणी	चमार
अघाड	कपूरचंदौत	काल्या	कौठारी	खेतावत	गौठणीवाल	चापका
अठारया	कलाणी	काहाल्या	कौठारी	खेडीवाल	गौग्या	चावंडया
अम्रपाल	कलाणी	काहालाणी	कौठारी	खोगटा	गौराणी	चापसाणी
अर्जनाणी	कलंकिया	कालाणी	कौकर	खोडावाला	गौधा	चांच्या
अटल	कलंत्री	कावरा	कौकाणी	खौभा	गौकन्या	चिगतौड़ा
अठाणी	कलक्या	काहैार	कौडयाका	ग	गौदावत	चिमक्या
असौफा	कसूम	काग्या	कौडया	गगराणी	गौकलाणी	चितलंगी
आगसूड	कलक	किस्तूरया	क्रमसाणी	गरबिया	गौवरया	चेचाणी
आगीवाल	कर्मसौत	किलल	ख	गहलडा	गौराणी	चेनाणी
असावा	करमाणी	कीया	खरड	गहलडा	गौराणी	चेनारया
इ	करनाणी	कील्या	खरड	गटू	गांठ्या	चौधरी
ईनाणी	कहरा	कुदाल	खरड	गरूया	गांधी	चौधरी
ऊ	कलावत	कूया	खरड	गगड	गांधी	चौधरी
ऊलाणी	कला	कूकडया	खरड	गटाणी	गांधी	चौधरी
ऊजवाल	करमा	कुलथ्या	खटमल	गदइया	गांधी	चौधरी
ऊनवाल	कसंडा	कुचकुच्या	खडलौद्या	गदूका	ग्यानेपौता	चौधरी
ऊंवाणी	करवा	कूम्या	खटड	गवदूका	घ	चौधरी
क	करनाणी	केला	खरनालिया	गवलाणी	घरडौलपा	चौधरी
कयाल	कसूंबीवाल	केला	खावर	गायलवाल	घरडौलिया	चौधरी
कयाल	कूंम्या	केला	खावाणी	गीगल्या	घीया	चौधरी

चौधरी	झींतडचा	तापडिया	दागडचा	धूपड	नांद्धराणी	पडवाल
चौखडा	ट	तिरथाणी	दादल्या	धूत	नाग	परताणी
चौखाणी	टकचाल	तुलावटचा	दास	धूणवाल	न्याती	परसरामा
चौराणी	टीलावत	तुलछाणी	दीहराजाणी	धौलेसरचा	नाडागट	पटवारी
चंडक	टुवाणी	तूमडचा	दुढाणी	धौलेसन्या	नांगलपा	पटवारी
छ	टोपीवाला	तुरक्या	दूढाणी	धौल	नागला	पटवारी
छापरवाल	ठ	तेला	दुरढाणी	धौल	निकलंक	पटवारी
छाछचा	ठाकुराणी	तैजाणी	दुजारा	धौछ	नुगरा	पटवारी
छींतरका	ठांगा	तौसर्णावाल	दुसाज	धगडावत	नेवर	पटवा
छुरचा	ड	तौडा	दूदावत	धामाणी	नेतसौत	पटवा
छोटापमारी	डवकौडचा	तौतला	दूदाणी	न	नेताणी	पाहर
ज	डंडी	तौरण्यां	देवगटाणी	नरेसण्या	नेणसर	पांत्या
जठाणी	डागा	थ	देवगटाणी	नरड	नौसरचा	पावरिया
जजनोत्या	डावा	थिरराणी	देवदत्ताणी	नथड	नौसरचा	पापडचा
जाखेटिया	डामडी	थेपडचा	देवराजाणी	नगवाडचा	नौलखा	पापडचा
जालाणी	डाड	द	देसावत	नथाणी	नौगजा	पालडचा
जिंदाणी	डाणी	दरक	देसवाणी	नंदवाल	नौगजा	प्रागाणी
जुजेसरचा	डाखेडा	दमाणी	देवपुरा	नरेसणी	प	प्रतिलिंगौत
जुगरामा	डाल्या	दमाणी	द्वारकाणी	नवाल	पसारी	प्रहार
जुंहरी	डांगरा	दरावरचा	ध	नगणेचपा	पसारी	प्रह्लादाणी
जेयलपा	डौडा	दलाल	धराणी	नरअमडा	पसारी	प्रह्लादानी
जेसाणी	डोडचा	दमलका	धनड	नराणीवाल	पसारी	पीथाणी
जेठा	डौडिया	दगा	धनाणी	नरवर	पसारी	पीथाणी
जेरामा	डौढचा	दगडा	धनाणी	नरेडचा	परसावत	पीनाणी
जौला	डौडमहूता	दगडा	धनाणी	नावंधर	परसरामा	पीपाणी
जौधाणी	ढ	दरगड	धारूका	नागौरी	पनाणी	पीपाणी
जाजू	ढेढचा	दसवाणी	धाराणी	नागा	पलौड	पूंगलपा
झ	ढौली	दंताल	धाराणी	नाहार	पचीसरा	पूंगलपा
झंवर	त	दमलका	धीरण	नाटाणी	पदाणी	पूंगलपा
झालरिया	तहनाणी	दागडचा	धीराणी	नानगाणी	पढावा	पूंजलिया
झालरिया	तापडचा	दागडचा	धीराणी	नापाणी	पडचीवाल	पूनपाल्या

पूरावत	बारीका	बौसा	भाकरौद्या	मल्ल	मॉडक्या	मूंजी
पेडीवाल	वाजरा	वंग	भानावत	मल्लड	माणक्या	मूंलाणी
पौसरचा	वापडौता	वंवं	भागडचा	मल्लड	[illegible]लपाणी	मूंदडा
पौरवार	वाहेती	वंवू	भाला	मडिया	भाइया	मूंगर्ड
फ	बावलाणी	बूव	भालचंद्रौत	माडिया	माणुधण्यां	मूछाल
फांफट	बाघाणी	बागर्ड	भिचलाती	महलाणा	माणूंधणाँ	मूलाणी
फतेसिंगौत	बाघाणी	व्यपती	भिषाणी	म[illegible]ठाकुरा.	मामौणी	मूथा
फूलकचौलपा	बाघला	व्रजवासी	भूरा	महरा	माणक्या	मूथा
फौग्या	बाघला	वसुदेवाणी	भूत	महरा	मालण्याँ	मेरा
फौफल्या	बालदी	वील्या	भूरिया	मथराणी	मालाणी	मेण्या
फौफल्या	विसहर	वटंडचा	भूतडा	मरचून्या	मालाणी	मेणिया
फौगीवाल	विडहला	बलवाणी	भूक्या	मदसुनौत	मिरच्या	मेमाणी
ब	विदादा	वौरण्या	भुराडचा	मरौठिया	मिज्याजी	मौराण्याँ
बजाज	बिसताणी	बौरद्या	भुवानीवाल	मछर	मिलक	मौराणी
बघू	बिहाणी	भ	भूत्या	महदाणा	मीचरा	मौडा
बनाणी	बिठाणी	भइया	भूंगडचा	माणियार	मीचरा	मौडाणी
बहगटाणी	बिलावडचा	भइया	भूंगरड	मणक्या	मीमाणी	मौवण्या
बडाल्या	बीच्छू	भैरया	भेराणी	मलक	मीमाणी	मौदाणी
बलडिया	बीसाणी	भगत	भैलाणी	मानाणी	मीमाणी	मौनाणा
बडहका	बीसाणी	भगत	भौजाणी	मात्था	मुरक्या	मौठडा
बछाणी	बीझाणी	भगत	भौजाणी	मातेसरचा	मुरक्या	मौड
बहाडका	बिन्यायका	भन्साली	भौराणी	माहलाणा	भुवाणीवाल	मौदी
बलदवा	बुगडाल्या	भलीका	भंडारी	माल्ह	भुकनाणी	मौदी
बलवाणी	बेहडचा	भराणी	म	माडा	मुहणदासौत	मौदी
बगरा	वेजारा	भडक	मडदा	मालीवाल	मुलतानी	मौदी
बरसलपुरीया	बेजारा	भटड	मकड	माधावत	मुलतानी	मोदी
बांगर्ड	वेकट	भकावा	मक्कड	माधाणी	मुलतानी	मंजीठ्या
बागडी	वेडीवाल	भगूत्या	महेसराणी	माधाणी	मुहलाणी	मंत्री
बापेचा	वेषटाणी	भाकराणी	मरौठी	माधाणी	मुसाणी	मंडोवरा
बालेपौता	बोघाणी	भांकराणी	मल्लावत	मानावंत	मुसाणी	मुलाणी
बावरी	बौदासिंगी	भाकरौद्या		मानसिंगौत	मुंजीवाल	

मौलासरचा	राजमहूता	लखवाणी	लंबू	स्याहा	सुरहरा	संकर
मौराणी	रावत्या	ललाणी	लाहौटी	साँवलका	सुंदराणी	स्यहणा
र	रामचंदोत	लालावत	स	सादाणी	सुखाणी	स्यहरा
रणदीता	राहूङा	लाठी	सकरेण्या	सातवाणी	सुखाणी	साहा
रतनाणी	राठी	लालचंदोत	सखइया	सांभरचा	सुखाणी	ह
रदाणी	रांदरड	लालाणी	समदाणी	सांभरचा	सूंघा	हेडा
रधाणी	रेणीवाल	लालणिया	सतूरचा	साबू	सूंदा	हरड
राय(सोमाणीं)	रूप	लीकासण्या	समाणी	साबुण्या	सूम	हरकाणी
राय(राहूंधर)	रूडचा	लूलाणी	सहरा	सागाणी	सूणा	हलद
राय(भडारी)	रूडचा	लुःलाणी	सकराणी	सिंगाडचा	सेठ	हडकुंटिया
राय(अजमेरा)	रूया	लेखाणी	सकराणी	सिंधी	सेठी	हलद्या
राय(चेचाणी)	रूघा	लेःलाणी	सराप	सिकची	सेठी	हलद्या
राय(कचोल्यां)	रूपाणी	लेखणिया	सराफ	सिरचा	सेवर	हरिदासोत
रामावत	रौल्या	लोईवाल	सारडा	सिंगी	सेसाणी	हरचंदाणी
रामावत	ल	लोईका	साहा	सिंगी	सेसाणी	हींग्या
रामलिंगोत	लढा	लौगर्ड	सातलाणी	सिंगी	सोणी	हींगरड
राघाणीं	लखावत	लौगर्ड	स्याहार	सिंगी	सोभावत	हीरा
राघवणी	लखावत	लौहरड	साहताणी	सीलानी	सौधाण्या	हुरकट
रामाणी	लखासरचा	लौलण	साहणी	सीलार	सौनकचौल्या	हौलाणी
रामाणी	लदड	लौद्या	साकरचा	सीलार	सोन	हौलासरचा
रामाणी	लखौटिया	लौद्या	साल्हाणी	सुगरा	सोमाणी	——
राहूरचा	लटूरचा	लोसल्या	सागर	सुजाणी२	सौमाणी	——
राईवाल	लखाणी	लौसल्या	सांवल	सुरजन	संगमार	

अथ माहेश्वरीमूलखाँप व फलियोंकीसमग्रता.

इसचक्रमें याप्रकारसें देखो फलीकोष्टक नम्बर १ में है और मूलखाँपकोष्टक नम्बर २ में है यह आपमसें भाई जानों जैसें (कोठारी-सोनि(कोठारी दरक) कोठारी- सारडा (कोठारीमूंधडा) इत्यादि ऐसे चक्रमें खुलासा देखो. सम्पूर्ण पुस्तकका तत्वसार यही है.

अथ

माहेश्वरी कल्पद्रुम तत्वसारदर्पण.

नौक खाँप ।

ढियाँनं. १	खांप. नं. २	फली नं. १	खांप. नं. २	फली.नं. १	खांप.नं. २
(श्री)	——	कयाल	जांजू	काला	गगराणी
श्रीचंदाणी	राठी	कयाल	सोमाणी	काल्या	खटवड
श्रीचंदोत	राठी	कमेरा	सोमाणी	काल्या	का:लाणी
अजमेरा	अजमेरा	कचौल्या	कचोल्या	कहाल्या	कहाल्या
असावा	असावा	कचौल्या	चेचाणी	काहा	लाहोटी
अठासण्या	लढा	कटसूरा	कासट	कानूगा	सारडा
अटेरण्यां	मूंधडा	करनाणी	राठी	कासट	कासट
अखेसिंगोत	राठी	करनाणी	डागा	काकडा	पलौड
अठारचा	कावरा	कर्मचंदोत	राठी	काकरचा	पलौड
अमृपाल	वाहेती	कपूरचंदोत	राठी	कानाणी	डागा
अजनाणी	राठी	कलत्री	कलंत्री	काकाणी	काकाणी
अटल	अटल	कलंक्या	चेचाणी	कावरा	कावरा
अठाणी	मूंधडा	कसूम	व्वाहेती	काहालाणीं	काहालाणीं
आगीवाल	आगीवाल	कर्मसीत	राठी	काहौर	करवा
आगसूड	आगसूड	कसंडा	वाहेती	काग्या	करवा
आसोफा	सोमाणी	कहरा	राठी	किस्तूरचा	बजाज
अघाड	——	कलाणी	बलदवा	किलल	बिदादा
ईनाणीं	ईनाणीं	कलाणी	राठी	किलल	करवा
ऊलाणी	मूंधडा	कल्लावत	राठी	कीया	करवा
ऊंधाणी	राठी	कला	राठी	कुदाल	सोमाणी
ऊजवाल	——	करमा	राठी	कूया	लाहोठी
ऊनवाल	——	करवा	करवा	कूकडचा	अजमेरा
(क)	——	कसुंबीवाल	देवपुरा	कुलथ्या	अजमेरा
कयाल	हुरकट	काला	भंडारी	केला	सारडा

फली नं. १	खांप. नं. २
केला	भटड
केला	पलोड
केसावत	डागा
केरा	भटड
कोठारी	सोनी
कोठारी	दरक
कोठारी	सारडा
कोठारी	मूंधडा
कोठारी	राठी
कोठारी	तोसणीवाल
कोठारी	काबरा
कोठारी	भुराडचा
कोडचाका	सोमाणी
कोडचा	अजमेरा
कोकाणी	राठी
क्रमसानी	राठी
कुचकुच्या	—
करनाणी	—
केवर	—
कटारचा	—
कोकर	—
कलक	—
काग	—
कालाणी	—
कलक्या	—
कोल्या	—
कुभ्या	—
(ख)	—
खरड	सारडा
खरड	खटवड
खरड	झंवर

फली. नं. १	खांप. नं. २
खरड	चेचाणी
खटवड	खटवड
खरनालया	मणियार
खडलोया	वाहेती
खटमल	राठी
खावाणी	वाहेती
खाडावाला	सोमाणी
खींवज्या	वाहेती
खींवज्या	झंवर
खूंच्या	झंवर
खुवाल	नवाल
खूभडा	वाहेती
खेमाणी	राठी
खेताणी	राठी
खेतावत	राठी
खोगटा	कासट
खोडावाला	सोमाणी
खावर	—
खोभा	—
खेडीवाल	—
(ग)	—
गगराणी	गगराणी
गरविया	बाहेती
गहलडा	पलौड
गलहडा	गिलडा
गलरया	बिडहला
गदइया	गदइया
गदूका	बजाज
गबदूका	बजाज
गगड	नगराणी

फली. नं. १	खांप. नं. २
गटाणी	गटाणी
गवलाणी	मूंधडा
गवलाणी	राठी
ग्यानेपोता	सोमाणी
गायलवाल	झंवर
गांठ्या	बिडहला
गांदी	नावंधर
गांदी	राठी
गांदी	भटड
गांदी	खटवड
गांदी	झंवर
गांदी	वाहेती
गींदोडचा	बाहेती
गिलडा	गिलडा
गिरधरणी	राठी
गींगल	गिलडा
गुलवाणी	राठी
गुलचक	भंडारी
गूजरका	बिहाणी
गेनाणी	राठी
गेनाणी	सोमाणी
गोठणीवाल	अटल
गोरचा	बिडहला
गोरा	भंडारी
गोपालानी	राठी
गोमलाणी	राठी
गोयंदाणी	राठी
गौदावत	बजाज
गोधा	बजाज
गौकन्या	बाहेती
गौकन्या	भंडारी

फली नं १.	खांप नं २	फली. नं १	खांप. नं २	फली.नं. १	खांप. नं २
गौवरया	विहाणी	चौधरी	दरक	जूंहरी	मालपाणी
गौराणी	चंडक	चौधरी	सारडा	जुगरामा	लखोटिया
गौराणी	डागा	चौधरी	लढा	जेथल्या	पलोड
गौराणी	मूंधड़ा	चौधरी	मूंधडा	जेसाणी	राठी
गट्टू		चौधरी	माल्ू	जेठा	भटड
गिलगिलिया		चौधरी	राठी	जौला	लढा
गौकलाणी		चौधरी	भूतडा	जौधाणी	राठी
गीगल्या		चौधरी	माणूधण्यॉं	जौगड	चंडक
गुलचट		चौधरी	झंवर	जेरामा	
घ		चौधरी	हुरकट	झ	
घरडौल्या	माणुधण्यॉं	चौधरी	गदइया	झालरिया	झंवर
घीया	माल्ू	चौखडा	चौखडा	झालरिया	तोसणीवाल
घूवरया	विडद्दला	चौखाणी	राठी	झींतडया	वाहेती
वरडौल्या		चंडक	चंडक	झंवर	झंवर
च		चेनाणी		झंवर	सोमाणी
चरखा	वाहेती	चौराणी		ट	
चहाड़का	कहाल्या	छ		टीलावत	राठी
चमडया	मूंधडा	छापरवाल	छापरवाल	टुवाणी	खटवड
चतुरभुजाणी	राठी	छाछया	तापडया	टोपीवाला	गटाणी
चमार	बजाज	छींतरका	बंग	टकचाल	
चतरभुजोत	राठी	छूरया	विडद्दला	ठ	
चापटा	पलौड	छोटापसारी	मूंधडा	ठाकुराणी	राठी
चावंडया	पलौड	ज		ठींगा	झंवर
चापसाणी	राठी	जठाणी	राठी	ड	
चांच्या	भूतडा	जजनोत्या	जाजू	डवकौडया	अजमेरा
चिगतोड़ा	चौखडा	जाजू	जाजू	डागा	डागा
चिमक्या	मूंधडा	जाखेटिया	जाखेटिया	डावा	तौसणीवाल
चितलंगी	पलौड	जालाणी	राठी	डामडी	तौसणीवाल
चेनारया	तोसणीवाल	जिंदाणी	राठी	डाखेडा	सौढाणी
चेचाणी	चेचाणी	जुजेसरया	पलौड	डाडरया	डाड

फली. नं.१	खांप.नं.२	फली नं.१	खांप.नं २	फली.नं.१	खांप, नं २
डाणी	झंवर	थ	सोमाणी	देसवाणी	राठी
डाल्या	वाहेती	थिरराणी	डाड	देवपुरा	देवपुरा
डांगरा	वाहेती	थेपडया	वंग	देताल	सौढाणी
डूंडा	डागा	थरावत		दीहराजाणी	——
डोढ्या	गगराणी	द	——	दगडा	——
डौडया	मूंधडा	दगडा	लढा	देसावत	——
डौडमहूता	राठी	दमाणी	डागा	दलाल	——
डौडिया	पलौड	दमाणी	राठी	दुरढाणी	——
डौडा	अजमेरा	दरावरया	डागा		——
डासर	——	दरक	दरक	ध	
डंडी	न्याती	दमलका	मूंधडा	धराणी	नावंधर
ढ	——	दगा	तोसणीवाल	धनाणी	नावंधर
ढेढ्या	मूंधडा	दसवाणी	राठी	धनाणी	वाहेती
ढौली	सौढाणी	दरगड	वाहेती	धनाणी	राठी
त		दागडया	लढा	धनड	वाहेती
	——	दागडया	परताणी	धमडावत	राठी
तहनाणी		दागडया	पौरवाल	धामाणी	राठी
तापडया	राठी	दास	तोसणीवाल	धारूका	बजाज
तापडया	तापडया	दादल्या	सारडा	धाराणी	नावंधर
तिरथाणी	बांगडे	द्वारकाणी	राठी	धाराणी	लढा
तुरक्या	राठी	दुढाणी	नावंधर	धीराणी	नावंधर
तुलावट्या	बाहेती	दूढाणी	राठी	धीरण	नावंधर
तुलछाणी	जाजू	दुसाज	छापरवाल	धूपड	धूपड
तूमडया	राठी	दुजारा	छापरवाल	धूत	धूत
तैला	वाहेती	दूदावत	राठी	धूणवाल	बोहेती
तेजाणी	मालु	दूदाणी	चेचाणी	धौलेसरया	अजमेरा
तौसणीवाल	राठी	देवगटाणी	राठी	धौलेसरया	मंडोवरा
तौडा	तौसणीवाल	देवगटाणी	भूतडा	धौल	अजमेर
तौतला	खटवड	देवदत्ताणी	भूतडा	धौल	कावरा
तौरण्या	तौतला	देवराजाणी	राठी	धौल	बाहेती

फली.नं.१	खांप.नं.२	फली नं.१	खांप.नं.२	फली.नं.१	खांप.नं.२
न	———	नौसरच्या	झंवर	पालडच्या	कावरा.
नरेसण्या	भंडारी	नौगजा	नौलखा	पीथाणी	बिहाणी
नरड	सारडा	नौगजा	वाहेती	पीथाणी	भटड
नथड	वाहेती	नौलखा	नौलखा	पीपाणी	राठी
नथाणी	राठी	न्हार	डागा	पीपाणी	बिहाणी
नरेसणी	खटवड	नंदवाल	———	पूंगल्या	भटड
नवाल	नवाल	नरअमडा	———	पूंगल्या	चंडक
नगणेच्या	वाहेती	नागा	———	पूंगलिया	चंडक
नराणीवाल	कांकाणी	प	मूंधडा	पूनपाल्या	परताणी
नरवर	वाहेती	पसारी	बिहाणी	पूरावत	राठी
नरेडच्या	वाहेती	पसारी	मिणियार	पेडीवाल	बलदवा
नापाणी	राठी	पसारी	बंग	पदाणी	राठी
नाऊंधराणी	वाहेती	पसारी	सौमाणी	पौसरच्या	अजमेरा
नाग	असावा	परसावत	नावंधर	पौसरया	झंवर
नाडागट	वाहेती	पनाणी	पलौड	पौरवार	पौरवार
नागला	झंवर	पलौड	पलौड	प्रतिसिंगौत	राठी
नांगल्या	तौतला	पचीस्या	वाहेती	प्रागाणी	चंडक
नावंधर	नावंधर	पडचीवाल	पौरवार	प्रहलादाणी	मूंधडा
नागौरी	तोसनीवाल.	परवार	तौतला	प्रहलादाणीं	चंडक
नाटाणी	राठी	पटवारी	बंग	परसरामा	———
नानगाणीं	राठी	पटवारी	बलदवा	पीनाणी	———
नगवाडच्या	ईनाणी	पडवाल	परताणी	पसारी	———
न्याती	न्याती	परताणी	सारडा	पूंगल्या	———
निकलंक	न्याती	पटवा	चंडक	पूजलिया	———
नुगरा	सौनी	पटवा		पाहर	———
नेवर	तौसणीवाल	पढावा	अजमेरा	पागरिया	———
नेतसौत	राठी	परमरामा	लखोठ्या	पटवारी	———
नेताणी	राठी	पांत्या	सोमाणी	फ	———
नेणसर	भंडारी	पापड्या	बिहाणी	फतेसिंगौत	राठी
नौसरच्या	अजमेरा	पापड्या	वाहेती	फांफट	राठी

फली नं॰ १	खांप॰ नं॰२	फली॰ नं॰१	खांप नं॰ २	फली नं॰ १	खांप॰नं॰२
फूलकचौल्या	कचौल्या	बापडौता	पलौड	बंब	बूब
फौगीवाल	पलौड	बाहेती	बाहेती	बंबू	भुराड्या
फौफल्या	न्याती	बासाणी	बाहेती	बालदी	बालदी
फौफल्या	पलौड	बाघाणी	राठी	बृजवासी	राठी
फौग्या	———	बाघाणी	बाहेती	बोरण्या	———
ब	———	बाघला	बाहेती	बाघाणी	———
बजाज	बजाज	घावेरच्या	गगराणी	बेजारा	———
बनाणी	राठी	बिसहर	लाहोटी	बोदासिंगी	———
बहगटाणी	राठी	बिदादा	बिवादा	बावलाणी	———
बसदेवाणी	राठी	बिसताणी	राठी	बौरच्या	———
बलडिया	मूँधडा	बिहाणी	बिहाणी	बाघला	———
बडहका	बिहाणी	बिलावडच्या	बाहेती	(भ)	———
बछाणी	बिहाणी	बिठाणी	डागा	भया	राठी
बछाणी	राठी	बील्या	बाहेती	भया	चंडक
बहाडका	कहाल्या	बिसाणी	भटड	भया	लखौटया
बटंडया	बाहेती	बीझाणी	चंडक	भगत	झंवर
बगरा	राठी	बीसा	भटड	भगत	काबरा
बरसलपुरीया	राठी	बीचू	भटड	भगत	अजमेरा
बरघू	मिणियार	बिनायक्या	अजमेद	भन्साली	भन्साली
बलवाणी	भठड	बिडहला	बिडहला	भलिका	सारडा
बलदवा	बलदवा	बुगडाल्या	बाहेती	भराणी	मूंधडा
बडाल्या	बिडहला	बूब	बूब	भटड	भटड
व्यपति	असावा	बेहडचा	बजाज	भकल	पलौड
बांगड	बांगरड	बेजारा	राठी	भकावा	भंडारी
बागडी.	सोमाणी	बेकट	राठी	भगूत्या	अजमेरा
बापेचा	राठी	बेखटाणी	राठी	भाकराणी	मूंधडा
बालेपौता	सोमाणी	बेडीशाल	बलदवा	भाकराणी	राठी
बावरी	मूँधडा	बोरण्या	बूब	भाकरोद्या	लढा
बारीका	मूँधडा	बंग	बंग	भाकरोद्या	तौसणीवाल
बाजरा	राठी	बंब	मोदाणी	भानावत	सोनी

फली. नं. १	खांप. नं. २	ली. नं. १	खांप. नं. २	फली. नं. १	खांप. नं. २
भांगड्या	सारडा	मल्ल	वोहेती	माहलाणा	मूंधडा
भाला	खटवड	मल्लड	वाहेती	मॉंडस्यॉं	कावरा
भालचंदोत	राठी	मल्लड	भटड	मालपाणी	मालपाणी
भिचलाती	राठी	मजीठ्या	डागा	माणस्यॉं	कावरा
भिखाणी	चंडक	माडिया	डागा	माड्या	मणियार
भुवानीवाल	जाखेटिया	माडिया	राठी	माणस्या	अजमेरा
भुराड्या	भुराड्या	महराठाकुराणि	राठी	मालण्या	वाहेती
भूरा	मालपाणी	मथराणी	राठी	मालाणी	राठी
भूरिया	खटवड	मरचून्या	दरक	माल्हाणी	खटवड
भूतडा	भूतडा	मरचुन्या	बजाज	मालावत	राठी
भूक्या	भंडारी	मदसुनोत	राठी	मिरच्या	भंडारी
भूत्या	खटवड	मरोठिया	अटल	मिज्याजा	तोसणावा
भूंगड्या	भुराड्या	मच्छर	कलंत्री	मिलक	गटाणी
भौलाणी	राठी	महदाणा	मोदाणी	मीचरा	राठी
भौलाणी	हुरकट	महनाणा	मोदाणी	मीमाणि	नांवधर
भौजाणी	डागा	माणियार	मणियार	मीमाणी	चंडक
भौजाणी	राठी	मनक्या	मणियार	मीमाणी	राठी
भौराणी	मूंधडा	मलक	गठाणी	मुरक्या	काल्हाणी
भंडारी	भंडारी	मानाणी	सोमाणी	मुरक्या	बाहेती
भूंगरड		माख्या	भंडारी	मुवाणीवाल	झंवर
भैराणी		मातेसरच्या	मंडोवरा	मुकनाणी	चंडक
सूत		मालू	मालू	मुहणदासोत	भटड
(म)		मालू	राठी	मुलतानी	वाहेती
मडदा	सोमाणी	माडा	डागा	मुलतानी	चंडक
मकड	सौमाणी	मालीवाल	बाहेती	मुलतानी	राठी
महरा	राठी	माधाणी	डागा	मुलाणी	राठी
महरा	भटड	माधाणी	राठी	मुहलाणी	राठी
महेसराणी	राठी	माधाणी	चंडक	मुसाणी	राठी
मरोठी	राठी	मानावत	राठी	मुसाणी	वाहेती
मल्लावत	राठी	मानसिंगोत	राठी	मूंजीवाल	सारडा

फली. नं. १	खांप. नं. २	फली. नं. १	खांप. नं. २	फली. नं. १	खांप. नं. २
मूंजीवाल	पलोड	मंडौवर	आसावा	राजमहूता	मूंधडा
मूंजी	तोसणीवाल	मंत्री	मंत्री	रावत्या	पलौड
मूंजी	लढा	मातेसरया	मंडोवरा	रामचंदोत	राठी
मूंधडा	मूंधडा	माणूधण्या	माणुंधण्या	राहूडा	राठी
मूजाणी	राठी	माणुधणां	माणूंधण्यॉं	राठी	राठी
मुकनाणी	डागा	मेमाणी	झंवर	रामसिंगोत	राठी
मूरगड	तापड़्या	मूलाणी		रांदरड	वाहेती
मूछाल	खटवड	मामोणी		रूप	कचौल्या
मूथा	मालपाणी	मडक		रूडया	राठी
मूथा	गिलडा	महरा		रूडया	बाहेती
मेण्या	डागा	मीचरा		रूया	बाहेती
मेडिया	डागा	मौशाणी		रूघा	बाहेती
मौराणी	मूंधडा	(र)		रूपाणी	राठी
मौराणी	बाहेती	रणदोता	अजमेरा	रौल्या	बजाज
मौडा	पलौंड	रतनाणी	राठी	रेणीवाल	
मोडाणी	नावंधर	रघाणी	राठी	राहूरया	
मोदाणी	मोदाणी	राय	सोमाणी	रदाणी	
मौनाणा	लखोटया	राय	नावंधर	(ल)	
मौठडा	लखोटया	राय	भंडारी	लढा	लढा
मौलासरया	खटवड	राय	अजमेरा	लखावत	राठी
मौड	डागा	राय	चेचाणी	लखावत	बजाज
मौवण्या	झंवर	राय	कचौल्या	लखावत	राठी
मोटावत	बंग	रामावत	राठी	लदड	भटड
मौदी	लढा	रामावत	सोनी	लखौठया	लखौटया
मौदी	मूंधडा	रामावत	बजाज	लटरया	बाहेती
मौदी	तौसणीवाल	राघाणी	बाहेती	लखाणी	राठी
मौदी	राठी	रामाणी	बाहेती	लखवाणी	राठी
मौदी	गिलडा	रापाणी	भटड	लाहोटी	लाहोटी
मौदी	मालपाणी	राघावणी	बलदवा	लालावत	बिहाणी
मंडोवरा	मंडोवरा	राईवाल	बाहेती	लालचंदौत	राठी

फली. नं.१	खांप. नं. २	फली. नं.१	खांप. नं.२	फली. नं.१	खांप नं. २
लालाणी	राठी	सकराणी	मूंधडा	सुखाणी	चंडक
लीकासण्या	वाहेती	सराप	बिहाणी	सुखाणी	राठी
लु लाणी	राठी	सराप	राठी	सुखाणिया	राठी
लु लाणी	मालपाणी	सारडा	सारडा	सेट	सारडा
लुणाणी	राठी	साहा	सोमाणी	सेठी	सारडा
लेखणिया	राठी	साहा	राठी	सेठी	पलौड
लोईवाल	मालू	सातलाणी	राठी	सेसाणी	मूंधडा
लोइका	बिहाणी	स्याहर	माणूधण्यॉं	सेसाणी	वाहेती
लोगरड	वाहेती	साहणी	राठी	सौनी	सौनी
लोह्या	वाहेती	साहताणी	राठी	सौभावत	बंग
लौह्या	बिहाणी	साकरया	गटाणी	सौढाणी	सौढाणी
लौसल्या	पलौड	सालाणी	राठी	सुगरा	सौनी
लौसल्या	खटवड़	सागर	चंडक	सूंदा	भटड
लंबू	तोसणीवाल	सांवल	चंडक	सूम	माणधण्यॉं
लोलण	मालपाणी	सांवलका	बंक	सुजाणी	राठी
लाठी	भंडारी	सादाणी	राठी	स्यहणा	राठी
ललाणी		सागाणी	राठी	सुरजन	कासट
लालणिया		सांवताणी	राठी	सूणॉं	राठी
लौगरड		सांभरा	मूंधडा	सुंदराणी	चंडक
लोहरड		सांभरीया	काकाणी	सौन	कचौल्या
लेखाणी		सिकची	सिकची	सोमाणी	सोमाणी
लेहाणी		सीलाणी	सिकची	सोमाणी	झंवर
लेहलाणी		सीलार	सिकची	साबू	मालू
स		सीलार	नौलाखा	सुरहरा	
समदाणी	जाजू	सीहाणी	राठी	सकरेण्या	
सलूरचा	वाहेती	सीधडया	वाहेती	सीलाणी	
स्यहरा	नावंधर	सिंगी	तोसणीवाल	सिंधी	
सहरा	वाहेती	सिंगी	जाजू	संगमार	
समाणी	राठी	सिंगी	माणूधण्यॉं	सिरचा	
सकराणी	वाहेती	सिंगी	काबरा	सेवर	

फली. नं. १	खांप. नं. २	फली. नं. १	खांप. नं. २	फली. नं. १	खांप. नं. २
साबूण्या	————	हलद्या	दरक	हेडा	हेडा
सरवइया	————	हलद	भटड	होलाणी	जाखेटचा
सुजाणी	————	हमीरपुरा	बाहेती	हरड	————
सिंघाडचा	————	हींग्या	लढ	हलद्या	————
ह		हींगरड	गदइया	हौलासऱ्या	————
हरकाणी	राठी	हींरा	माणुधण्यां	हरिदासौत	————
हडक्रीटिया	सौढाणी।	हुरकट	हुरकट	हरचंदाणी	

यह मूलखाँपें और फलियें जिस्को जिस्के सांमिलकर खानापूरित-कीहै परंतू कईक फलीयेंकी मूलखाँप निश्चयहुई नहीं सू फगतंफली लिखदी है मूलखाँपकी निश्चय होनेसे खानापूरितकर तृतियावृत्तिमें लिखीजायगी यह उद्योगसरूहै वा आपलोगकृपाकरालिखें ॥

इतनी फलियोंका मूलपेढक्याहैपत्तानहीं ॥

अघाड	कूम्या	टकचाल	पसारी	बाघला	ललाणी	सेवर
ऊमवाल	खावर	डासर	पूंगल्या	भूंगर्ड	लालणिया	साबूण्या
ऊनवाल	खोभा	तौरण्या	पूंजालिया	भेराणी	लोगर्ड	सरवइया
कुचकुच्या	खेडीवाल	दिहराजाणी	पाहर	भूत	लेखाणी	सुजाणी
करनाणी	गटू	दगडा	पावीरिया	मूलाणी	लोहर्ड	सिंघाडचा
केवर	गिलगिलिया	देसावत	पटवारी	मामोणी	लेहाणी	हरड
कटाऱ्या	गोकलाणी	दलाल	फौग्या	मडक	लेहलाणी	हलद्या
कोकर	गीगल्या	दुरढाणी	बोरण्या	महरा	सुरहरा	होलासरचा
कलल	गुलचट	नंदवाल	बाघाणी	मीचरा	सक्करेण्या	हरिदासौत
काग	घरडोदिया	नरअमडा	बेजारी	मोराणी	सीलाणी	हरचंदाणी
कालाण	चेनाणी	नागा	बोदासिंगी	रेणीवाल	सिंधी	
लक्या	चौराणी	परसरामा	वावलाणी	राहूरचा	संगमार	
किल्या	जेरामा	पीनाणी	बोरद्या	रदाणी	सिरचा	

दोहा ॥ कह्योतनकइतिहासयह कथाबहुतसकुचाय ॥ अबसाखागुरुगौत्र नख देहुँसकलसमुझाय ॥ १ ॥ (छंदभुजंगी) बधीवेलतंतू फलीबोत-फूटी ॥ सँधीगुंथगुंथं जिसैंजालजूटी ॥ तिकेनालआगे चलीसौबताऊँ॥ मिल्यौनीरखीरं जुदाकरजताऊँ ॥ २ ॥ कहूपेढसाखा गुरूवेदआणूं ॥ पुन्हगोत्रमाता सबीजातजाणूं ॥ जराकानदेकं हृदयसुद्धकीजें ॥ बडौं-कीबडाई मनौंलाभलीजै ॥ ३ ॥ दोहा ॥ आदवंसगुरुगौत्रसाति माता-पवेरवेद ॥ खाँपखाँपमें सूँफली प्रगटकहूँसबभेद ॥ ४ ॥ छंदघनाक्षरी (सोनी) सोनोजीसोनगरा मातासेवलपा धूम्रांसगौत्र गुरुासिख-वालओझा सोनीसौबखानिये ॥ सुगरा १ लुगरा २ रामावत ३ भाना-वत ४ कोठारी ५ सोनी ६ भाडल्यांसरिषि जाको यजुरवेदजानिये ॥ १ ॥ (सोमाणी) स्यामोजीसौलखीपेढ माता बंघराय गुरु दाय-माआसौफासोतो आदारिषिआनिये ॥ आसोफा सोमाणी गोत्रली याइंसकहुआगे कुदालसोमाणीसोतो भलीभाँतजानिये ॥ दायमात्रिवा-ड़ीगुरु कुदालकुदालनके गौत्रमातएक दोनूंसोमाणीप्रमानिये ॥ सोमाणी १ आसोफा २ राय ३ कुदाल ४ कोडयाका ५ मड्ड्रा ६ मानाणीं ७ कयाल ८ पांत्या ९ मकड़ १० साहा ११ मानिये ॥ बागडी १२ प्रसावत १३ खाडावाला १४ वाले १५ म्यानेपोता १६ गेनाणी १७ कसेरा १८ झंवर १९ थिरराणी बखानियें २० ॥ २ ॥ (जाखेट्या जालमसिंघजादूज्यासूँ जाखेट्यासिसणायमात गौतरसीलांस सती-सौढलभतावे हैं ॥ मूँडक्याथांभाकाव्यास खटोडपारीकगुरु जाखेट्या १ भुवानीवाल २ होलाणी जतावैहै ॥ ३ ॥ (सोढाणी) सोढोजीसोहड़-जांसू सोढाणी सोढांसगौत्र गुरूसुखंडेलवाल मूछालत्रिवाड़ीहै ॥ यजु वेंद माध्यनी प्रवरतीन गोरोभेरूँ उम्रकोटथान माताझीणसो दिहाडीहै॥ सोढाणी १ दंताल २ ढोली ३ डाखेड़ा ४ हडकुटिया ५ बाजे॥जैसलमेर माँहजिाकी जुदी बाँकपाड़ीहै ॥ ४ ॥ (हुरकट) देवड़ाहीरोजीपेढ

देवीविसवंतगोत्रकस्यपहुरकटव्रतपोकरणाबटूलहै॥ हुरकटाँमेंच्यारबाँक भोलाणी कयालनामचौधरीसांभरमांय याहीबाततेंकहैं ॥ ५ ॥ न्याती नानाणसीनूबाणन्याती चांदसेंणमातागौत्र नानसेंणदेपियाउपादियापारी कहैं ॥ न्याती १ निकलंक २ डंडी३फोफल्या ४ येच्यारभाँत न्याति याँकीसतीसोतो नवासण न्यारीकहैं ॥ ६॥ (हेडा) हीरोजीदेवड़ाहेडा फलौधीधनासगौत्र गुरुसिखवालओझा आदसूँजतावैहैं ॥ पल्लीवालधा- मटाँकेग्रहणेंघरीहैबृत बवांससुग्दलांसगौत्रआपकोभतावेंहैं ॥७॥(करवा) कँवरसीकछावामाता कछबायमाँनेंकाग्या फलोधीकरवांसगोत्र धामटगु रजान्योहैं ॥ कागिया १ काहोर२ कीया ३ किलल ४ सुस्यामवेद पर- वरपांचखांपकरवोबखान्येंहै ॥ ८ ॥ (काँकाणी) कूकसिंघजोयापेढ आ मलकहींजेमातगोतमकपलांसगोत्रगूजरगोड़जानूँहूँ ॥ साँभरकेजरवांबा चौबेविद्यामेंप्रवीणभयेच्यारबेदकंठपाठ ऐसीबिधआनूँहूँ ॥गुरांकलिाछ नदेवी कोऊककाड़जमानें माध्यनीयजुरपंचप्रवरप्रमानूँहूँ ॥ लावरचौपि तरभेरूँ गूचन्यौलाछनसती कांकाणी१ नराणीवाल२ सांभरचा ३बखा नूँहूँ॥९॥ (माल्हू) मलोजीपंवारपेढमातासचियायजाकेगौतरखलाँयंसम्रू स्यामवेदमानिये॥ सारस्वतल्होड़ओझाप्रवरसुतीनजाकेसाहागोतमाल्हू सोतो नीकेकरजानिये॥ माल्हू१ साबू२ धीया ३तेला४ चौधरी५ रूलो ईवाल ६ सारस्वतल्होड़ओझामालवाँकेमानूंहूँ ॥साबूकेगूजरगौड़गोना- ड्याँत्रिवाड़ीगुर तेलाँकेजोपटव्यास दायवाँबखानूहूँ ॥१० ॥(सारडा) सीहड़पंवारजासें सारडाखरड़जानौं दूसरानरड़दोनूँ आपसमें भाईहैं ॥ स्यामबेद थौवड़ासगोतर कहीजे जाको औसियाँनगरजामें सचियामह- माईहै ॥ नरड़ाँकेगुरसारस्वतल्होड़ओझाजानौं खरडांकेगुरसोपारिक- हीप्रमानिये ॥ बरणाजोस्याँकेमांहिदुरगेपोतांकेव्रत औरांके विरतनाँहिं सेसपौताजानिये॥ केला १ मूंजीवाल २ सेठी३ कोठारी४ कानूगा ५ सेठ ६चौधरी ७ भलीका८ पटवा९ दादल्या १० सुमानिये ॥ नरड ११

खरड १२ अरु भांगड्या १३ कहीजेसाह १४ आदगौतसारड़ा १५ सु नीकेकहबखानिके ॥ ११ ॥ (काहाल्या) काहेजीकछावाजासूँ काहाल्याकागांसगोत्र लीकासणदेवी भेरूँसोन्याणाँजीजानिये ॥ दायमाँ मिसरगुरुकाकड़ाकहीजेव्यास थाँभादोयचहाड़ १ पहाड़ २ का पछा- निये ॥ १२ ॥ (गिलड़ा) गांगजीगहलोतजासूँ गीलड़ाडाहरीमात गौतमस्यगौत्र सतीमात्रिसूबखानूहूँ ॥ गिलड़ा१गीगल२और गहलडा ३ रु सूथा ४ मौदी ५ सारस्वतगुरु ल्होड़ओझासुप्रमानूहूँ ॥ १३ ॥ (जाजू) जूनोजीसांखलापेढ गोतरबालांसजाजू समदाणीफलोधीमात गोरोभेरूँमानिये ॥ गुरूगुजरगौड़काच्या जांगलाउपाध्याजाणौं बिनाक्र- तमेघासरचा थीरपालजानिये ॥ जाजू १ समदाणीं २ शिंगी ३ तुला- वटचा ४ कयाल कहुँ ५ जजनोत्या ६ करायोजग्य ख्यातमें बखानिये ॥ १४ ॥ (बाहेती) बेहड़नूबाणजासूँ बाहेतीछतीसभाँत गौतमातभि- न्नाभिन्न आपससगाईहे ॥ १५ ॥ (बिदादा) अघसिंघसोढाजासूं बिदाद्या किलल मातपाढायगजांसगौत्र खटवड़व्यासहे ॥ खटोड़ांमें थाँभादोय एकतोगटाणींमाँगें दूसराबिदादा १ किलल२कलंत्रि३सुख्यासहै॥१६॥ (बिहाणी) बिहारीपँवारपेढ मातासचियायकहूँ गौतरबालांसधुनि कौसी कवतावेहे ॥ दायमाबोराड़याुर स्यामबेदसाखानंत परवरपांचसोतो बीहाणीजतावे है ॥ बीहाणी १ पीथाणी २ लाह्या ३पीपाणी४बछाणी५ ओर लालावत ६ गूजरका ७ आप ८ बडहका ९ कहीजेहे ॥ गोबरच्या १० पसारी ११ ओर लैईका १२ सुड़ीडवाणें पापडचा १३ विहाणी बासमेड़तेरहीजेहे ॥ १७ ॥ (बजाज) बीजोजीभाटीहेमाता गाहसभ न्सालीगौत्र गुरूहेत्रिवाडीकंठ बजाजबखाणूँहूँ ॥ बजाज १ बेहडचा २ रौल्या ३ मरचून्या ४ चमार ५ और धारूका ६ गबदूका ७ फेर गटूका ८ प्रमाणूँहूँ ॥ रामावत ९ गौदावत १० गोधा११लखावत १२ किसतूरचा १३ केहूँ किस्तूरचा मरचून्या कौटा पाटणमें जाणूँहूँ॥१८॥

(कलंत्री) कालूजीकछावाजासूँ कलंत्री मछंर मात चावंडा चमलाय केई पाढायमतावेंहै ॥ गुरूहैखटोड़व्यास पारीकपंडितजी रु बावरजी-कार्थांमादोय बाँटकरखावेंहै ॥ १९॥ (कासट) केवाटपड़िहारपेढ चान णसंचायमात अत्लसांसगौत्र वेदस्यामहीबखान्यौहै ॥ गूजरगौड़लौयं-माँ उपाद्यागुरकासटके आदथानकासटीसु मंडौवरथान्यौहै॥ कासट १ कटसूरा २ सुरजन ३ खोगटा ४ येच्यारखौंक खोगटाजाजणमात गौर-भेरूँमान्यौहै ॥ २०॥ (कचौलया) कंवरसीतँवरसती डासणी पाढाय-मात गोतरसीलांस सोतोकचौल्याबखाणजे ॥ सौन १ रूप २ राय ३ फूल ४ च्यारभाईएकमात गुरूभिन्नभिन्न ज्याँरीबिगतप्रमाणजे ॥ रायके छांगाणीऔर रूपकेजोपटव्यास सौनअरुफूलके त्रिवाड़ीकाठयाजाणजे ॥ २१ ॥ (काहालाणी) कलौजीकछावाजासूँ काल्हाणीपाढायसती पारीकखटोड़गुर गोतरधौलांसहै ॥ स्यामवेदसाखानंत चेलक्यौभैरव पूजे चावंडादिहाड़ीकेई मानतकालांसैहै ॥ काल्हाणी १ अपाणसती मुरक्या २ रु कालया ३ तीन पंडितजीबावरजीथाँका आपसमेंइकला-सहै ॥ २२ ॥ (झँवर (जाँझणसीजादवजासूँ झँवर गाहलमात गौतर-झूम्रांस व्यासदायमाआसौफाहै ॥ झंवर १ सूवाणीवाल २ नागला ३ भगत ४ ठींगा ५ झालरचा ६ खरड़ ७ खूँच्या ८ पौसरचा ९ मेमाणी १० है ॥ नौसरचा ११ गाहलवाल १२ सोमाणीझंवर १३ बौले खींव-ज्या १४ सौवणिया १५ गौत चौधरी १६ रु डाणीहै १७ ॥ २३ ॥ (कावरा) कुंभोजीगहलौतजासूँ कावराप्रथमतीन माँडम्या अठारचा पुनि पालड़्या प्रमानिये ॥ संखवालमांडम्याँ अठारचा गुरपालड़्यासु मातासुसमाद गौत्र अचित्रांसजानिये ॥ कावरा १ भगत २ सिंगी ३ माँडम्या ४ अठारचा ५ धौल ६ पालड़्या ७ कौठारी ८ जाकांगौत्र बिजेमाँनिये ॥ २४ ॥ (डाड) डूंगोजीदहइयाडाड भद्रकालीपूजेमात आमरांसगौत्र सतीलिकासणजतावेंहै ॥ झींतरचो पितरमाँनें कालोभेरूँ

मंडोवर दायमानवालगुर आचारजमतावैहे ॥ थपइयाँकीमातालोता वंघरकहीजेकाली लखासणगोत्र वेदस्यामहीवतावैहे ॥ २५॥ (डागा) डूंगोजीपंवारपेढ मातासचियायकहूँ गोत्रराजहँस गुरुगोलवालव्यासहै ॥ औत्याँगढओसवाल मसरीभयेहैंआय डागागोतमिल्योताय जूनोंइतिहासहै ॥ डागा १ मेण्याँ २ मंजीन्या ३ करनाणीं ४ मोड ५ केसावत ६ भोजाणी ७ बीठाणी ८ मड़िया ९ गोराणीं १० डूडांसहे ११ ॥ कान्हाणीं १२ दमाणीं १३ न्हार १४ मुकनाणी १५ माधाणी १६ माडा १७ दरारचा १८ फलोधीपोकर्णबीकाणारवासहै॥२६॥(गटाणी) गटूजीगहलोत माताचावंडा ढालांसगोत्रगुरुहैखटोड़व्यास गटाणीबखानिये ॥ गटाणी १ मलक २ टोपविला ३ रु साकरिया४ कहूँ संकर५ मिलक६एलेभलीभाँतजानिये ॥ २७ ॥ (राठी) रिड़मलपंवारपेढमातासचियायमानेंगोत्रकपिलांसजाकोस्यामवेदपाव्योंहै ॥ जाकगुरपुष्करणाँ छाँगाणीकोलाणींजाणों,एकसोरुसाठनखराठीकुलवाढ्योंहै॥२८॥(विड़हला) वेहडसीपंवाराविडला वालांसपिपलानारीपि विस्वाहैपोकरणागुरु दहिडीसंचायहै ॥ विड़हला १में छूरचा २गांव्या ३घूबरचा ४गरूरचा ५ गोरचा६वडालियाँ७ केगोत्रगुरू भिन्नसवचायहैं ॥ गरवरियात्रिवाडी संखवालरुझवरांसगोत्र पूजीजेफलोधीमात मंडलरचायहैं ॥ संखावाटीमांहिंगोड़ बासोत्यासाडांसगोत्र लूटकोमूसलमिले सोहीलूँटखायोंहैं॥२९ (दरक)दुरगदासखीचीपेढ मूसाहैमहमाईमात खेत्रपालसोनेवाजी बालोपित्रमानिये ॥ संखवालहलव्याउपाध्यागुरजायलवाल गोत्रहरिद्रास साखमारध्वानि जानिये ॥ दरक १ मरचून्या २ हलव्या ३ चोधरी ४ कोठारी ५ पांच कँवलानामलक्ष्मी सूतो सदा थिरथानिये ॥ परवरपांच वेदयजुर उपासीराम रामनाथधाम सोतो दरक बखानिये ॥ ३०॥(तोसणीवाल)तेजसीचुहाणपेढ खूँखरबाँवलमात कौसिकगोत्रआदरिषिपीपलानमानिये ॥ दायमात्रिवाड़ीगुर डीडवाण्याँकहूँनामी तोसीणेंतोसणी

वाल तीसासाबखानिये ॥ प्रगटतौसणीवाल १ नागोरी २ मिण्याजी ३ मोदी ४ नेवर ५ कोठारी ६ डावा ७ डामड़ी ८ सुकेवेहै ॥ लूं९सिंगी १० दास ११ दग्गा १२ झालरचा १३ चेनारचा १४ मूँजी१५भाक रोद्या १६ बाजेसोतो नागोरमेंरवेहै ॥ ३१ ॥ (अजमेर) अजोजीचुहा गज्याँहूँ अजमेराखटौड़व्यास पारीकमानांसगोत्र नोसलसुमातहै ॥ विन्यायक्याँकेअजमेरा पारीकगुर गणपतदेवी नौसरचाँकेदायमाँ गोठे चासोबिख्यातहै ॥ अजमेराँमें १ कौठ्या २ राय ३ कूकड़चा ४ रण-दीता ५ धौल ६ भसूत्या ७ डबकोडचा ८ कुलथ्या ९ पढावाबजा-तहै ॥ १० माणक्या ११ विन्यायक्या १२ नें धौलेसरचा १३ डौडा १४ भक्त १५ सौसरचा १६ पौसरचा १७ खूँच्या १८ झंवरसुजातहै ॥ ३२ ॥ (भंडारी) भंडलकछावाजाकी नागणेंच्याकहीमात गोतर-कौसिक व्यासखटौडपारीकहै ॥ काला १ गोरा २ नेंणसार ३ भंडारी४ भकावा ५ राय ६ गोकन्या ७ कीमताशोतो गोकलन्यारीकहै॥ भूक्या ८ मिरच्या ९ गुलचक्क १० नरेसण्या ११ ने लाठी १२ मात्या १३ माताभिन्नभिन्न बोंक तेराभंडारीकहै ॥ ३३॥ (छापरवाल) छाजपाल-सांखलासु बंधरकही जेमात गोतरकोसिकवेद यजुरसुगायेहैं ॥ डीडवा-ण्याँदायवाँ त्रिवाडीगुरपौव्याकहूँ छापरवाल १ दुजारा २ दुसाज ३ यूँजतायेहैं ॥ ३४॥ (भटड) भेरूजी भाटीहैपेढ बीसलकहीजेमात गो-तभरद्वास सोतोभटडभतायेहैं ॥ स्यामबेद साखानंत प्रबरहैंतीनजाके गुरुपल्लीवाल सोतोधामटजतायेहैं ॥ भटड १ लदड़ २ सूंधा ३ मल्लड ४ हलद५ किला ६ बीसाणी ७ बलवाणीं ८ जेठा ९ रामाणीं १० बखानेहैं ॥ भूवणदासौत ११ गाँधी १२ कहरा १३ महरा १४ विच्छू १५ बीधा १६ पूंगलया १७ बीसंतमात पीथाणीं १८ सुजानेहै॥ ३५॥ (भूतडा) भूरसिंगसांखलाउभूतडा खींवजमात अत्लसांसगौत्र गुरु-ढिंगिधासखानूँहूँ ॥ सारस्वतबदर चंनणपलीवाल पुनि दोऊँ मिल बाँटे-

वंट इसीबिधठानूँहूँ ॥ भूतडाँ १ में चांच्या २ देवगटाणी ३ दत्ताणी देव ४ चौधरी ५ कहीजेएक जौधपुरजानूँहूँ ॥ ३६ ॥ (बंग) बाघोजीपड़िहारसती कोठारीसोढांसगोत्र बंगाँकगूजरगोड़गौनड़र्यांत्रिवाड़ी है॥यजुर्वेदकान्हणुसाखा परवरपांच भेरू मंडोवरकालौपूजे खांडलदिहाड़ीहै॥महमलपित्र मातार्कीटल केईकपूजै धारादेसतीकीधामकल्याणीं कीनाडीहै॥बंगामें १ छींतरका २ साँवला ३ सौभावत ४ पटवारी ५ बाजे मौटावत ६ धारावत ७ कहिये मूंडवे पसारी है ८ ॥ ३७ ॥ (अटल) अटूजीगहलौतजाकी मातासचियायसुन मात्रिसत्ती गौतमस्यगोत्र ही सुजानेहैं ॥ अटल १ गोठणिवाल २ मरोक्या ३ ये तीन बौंक अटलाँकेरटूगुर पोकरणाबखानेहैं ॥ पेःलीगूजरगौड़छौडी बटुवाभीत्यागदीनीं अबचित्तचावेसू अटलगुरुमानेहैं ॥ मरोक्याँकेगुर गूजरगौड़हैबीजाएण्यासु सुर्णाजूनीख्याततामें एसीबिधआनेहैं ॥ ३८ ॥ (ईनाणी) ईंद्रसींईदाईनाणी नगवाव्या जेसलमात गौंतरससांस जेसलांसबीबतावेहै॥गुरुसंखवाल सोतोगरवरियात्रिवाड़ी साखा तेतरी प्रवरतीन यजुरजतावेहै ॥ ३९ ॥ (भुराडया) भूरोजीचहुवाण माता सुणधणीं अत्रिगोत्र दायमानवालगुर आचारजआनूँहूँ ॥ भुराडया १ कोठारी २ बंब ३ भूगड्या ४ ये च्यारनख सुनीसोविगतकहि एसीभांतजानूहूं ॥ ४० ॥ (भन्साली) भाऊसिंधबांसजासूँ भन्साली चावंडामात गौतरभन्साली सतीडाहरीबखानिये ॥ आचारजगुरुसोतो दायवाँनवालजानों लाबरचोसौनाणोंभेरूँ भोलैपित्रमाँनिये ॥४१॥ (लढा) लोहड़पंवारपेठ बंधरसंचायमात गुरुगौलवालव्यास पारीकभताऊँहूँ ॥ गौतरसीलांस बेदयजुर ऊपासीराम साहगौतलढा १ मौदी २ अठासण्याँ ३ जताऊँहूँ ॥ भाकरोद्या ४ हींग्या ५ मूंजी६दागड्या ७धाराणीं ८ जौला ९ दगड़ा १० झंडेवालासेठ ११ चोधरीखताऊँहूँ ॥ ४२ ॥ (मालपाणी) मालदेजीभाटीजासूं मालपाणींसांगलमात गौतरभक्या-

स गुरुपुष्करणाछाँगाँणीहै ॥ मालपाणी १ मूथा २ मोदी ३ जूंहरी ४ लूलाणी ५ भूरा ६ लोलण ७ ये सातभाँत नीके कविजाणीहै॥ ४३ ॥ (सिकची) संकरपँवार जाकीमातासचियायकहूँ ॥ गोतरकस्यप सतीभावजप्रमानिये ॥ सिकची १ सिलाणी २ औरसीलार ३ कहिजे तीन गुरुभिन्नभिन्नजाकीऐसीबिधआनिये ॥ सिकच्याकेगुर जोसीचौ वटियापोकरणाजाको पाराश्वरगोत्रदेवीचावंडासुमानिये ॥ सीलारांकेडी डवाण्याँ गुरूहैगूजरगौड ऊपाद्याआचार्जगोत्र भारद्वाजजानिये ॥४४॥ (लाहोटी) लाभदेतंवरपेढ चामुंडाकहीजेमात सारस्वतबडओझा गुरुसोप्रमानिये ॥ कागायँसगोत्र साखातेतरी प्रवरतीन बसर १लाहोटी २ काहा ३ कूथा ४ सो बखानिये ॥४५॥(गदइया) गोरोजीगोयल-पढ मातावंधरायजाकी गोतरगोरांस गुरुसारस्वतठानिये ॥ ल्होड़ओ झाजाकी माता डाहरीमूसांसगोत्र यजुर्वेद सारवानंत त्रिपरवर बखानी-ये ॥ गदइयाँमेंबोंकसोतो चोधरी हिंगडे जान सुनी सोबिगतकहिएसी-भाँतजानिये ॥४६(गगराणी) ॥गांगसीगहलोत देवी पाढाय कस्यप-गोत्र गग्राणीं १ बबेरचा २ काला ३ डोडया ४ गगड़ ५ जानिये ॥ गग्राण्याकेगुर सो तो जोसीहैखंडेलवालसारस्वतल्होडओझाडोडयाकेप्र मानिये ॥ ४७ ॥ (खटवड़) खड़गलसिंघसा खलाके पाटवी खटौड़ १ जानौं मालाणि २ टुवाणी छोटा ३ आला ४ तौड़ा ५ जानिये ॥ भूरिया ६ सूछाल ७ खड़ ८ कालिया ९ लोसल्या १० कहूँ गोतरमूँगास मातालोसल्या प्रमानिये ॥ मौलासरचा ११ गहलडा १२ नरेसण्याँ १३ सराप १४ गांधी १५ भूरिया १६ खटौड सोला खातेमें बखानिये ॥ ४८ ॥ (लखोट्या) लोकसीपंवार जासूँलखोट्या लाखेचसती दीहाड़ी संचाय गोत्रफांफड़ास जानिये ॥ कोडमदेसभैरवपूजे बालक्योपितरजानौं गुर सारस्वतबडओझा सु प्रमानिये ॥ लखोट्या १ जुगरामा २ भइया ३ मौनाणा ४ परसरामा

५ मौठडा ६ खरीआमोठ पायोराजमाँनिये ॥ ४९ ॥ (असावा आसपालदहिया जासूँ, असावा पंचांसगोत्र आसावरिमात गुरुमंडोर व्यासहै ॥ आसोपा १ व्यिपत्ति २ नाग ३ मंडोवरा४कहुंचार माताभि ब्रमाने गोत्रखलाइंसखासहै ॥ नागलांकगुरसोतो नागलात्रिवाडीजानौं दीहाडीडूदलपूजे एसोइतिहासहै ॥ ५० ॥ (चंचाणीं) चंद्रसेणदहि याजासूं चचाणी १ डूदाणी २ खड़ ३ कलंक्या ४ कचोल्या ५ राय ६ गोतरअरडांस है ॥ दधवंतदेवी रायकचौल्यापाढायमानें पाटल्योमें खजाके गोतरसलिांस है ॥ कचौल्यारायकेगुरदायवाँत्रिवाडीजानौं औराँ केइनण्याँव्यास दायमाँबखाणजे ॥ न्यारान्यारागोत्रदेवीपूजतप्रतच्छगुरु दोयमातजायेभ्रात जाको भेदजाणजे॥ ५१ ॥ (माणूँधण्याँ) मोव-णजीमोहलपेढ माणूंधणींकहीमात जाखणसतीसु गौत्र जेसलानीमानि ये ॥ रिषिहैकपिल गुरु दायवाँजौपटव्यास माणूंधण्यामुणधाणियांसु इसीबिधजानिये ॥ गंगाधौरेदीन्हींदानलीन्हींहैखंडेलवाल मुणधाणियांकी बृतसोतो प्रगटप्रमानिये ॥ बाकीनख १ चौधरी २ घरडोल्या ३सूम४ सिंधी ५ स्याहर ६ हीरा ७ सातबौंकगुरु जौपटप्रमानिये ॥ (दोहा) कहैगोत्रपोलांसकइ केइकपिलांसकहेस ॥ केइसुरल्यामाताकहै जाखण नामलहेस ॥ ५२ ॥ (मूंधडा) माधोजीमोयल मातामूँदल गोवांस-गोत्रसारस्वतओझाबड गुरुसोप्रमानूंहूँ ॥ मूँधडा १ सकराणी २ डो ड्या ३ सेसाणी ४ मौराणी ५ मोदी ६ भाकराणी ७ भराणी ८ भोराणी ९ चमक्या १० जानूंहूँ ॥ गोराणी ११ माहलाणा १२ छोटापसारी१३ कौठारी १४ चमड्या १५ऊलाली १६ महूताराज १७ पन्सारीसुआ-नूंहूँ १८ ॥ प्रहलादाणी १९ सांभरच्या २० अटेरण्या २१बारीका२२ ढेढ्या २३ दम्मलका २४ बलडिया २५ चौधरी २६ बावरी २७ बरखानूंहूँ ॥ ५३ ॥ (चौखडा) चौखोजीसींदलजासूँ चौखड़ाजीव-णमात गोत्रहै चंद्रांस सती झीण सो चहीजिये ॥ झींतरचोभैरवपूजे

पितरकहीजेजाको वेदहैयजुर तीनप्रवर लहीजिये ॥ गुरुगूजरगौड़ सोतोगोनव्यांत्रिवाडीकहूँ थांभातीनवृतभिन्न औरहूकहीजिये ॥ ५४ ॥ (चंडक) चाँपोजीचहुवाण माताआसापुरा सचियाय गोतरचंद्रांस जाको स्यामवेद गाइये ॥ गुरुपह्लीवालसोतोधामटप्रवरतीन तेतरीसु-साखा गौत्रचांडकबतोइये ॥ चंडक १ धूंगलिया २ पटवा ३ गौराणी ४ सुकनाणी ५ भइया ६ भीमाणी ७ भ्रागाणी ८ सागर ९ सुंदराणी १० जानिये ॥ बीझाणी ११ भीखाणी १२ जोगड १३ आधाणी १४ सुखाणी १५ सांवल १६ अहलादाणी १७ मुलतानी १८ बसेकवेखाणिये ॥ ५५ ॥ (बलदवा) बाघोजीपंवारजासूँबलदवागांगवसतीगोतरबालांसमाताहिं गलादजाँनिये ॥ गुरु संखवालसोतोपंडित प्रवरतीन स्यामवेद वाजासि लटूल्योभैरव मानिये ॥ बलदवा १ पड़वार २ पेड़ीवाल ३ और राघ वाणी ४ कलाणी ५ रु बेडीवाल ६ येछेभाई आँनिये ॥ गुरपेड़ीवालके गूजरगौडडीडवाण्याँ ऊपाध्याआचारजसोतोएकाँहीके ठाँनिये ॥ ५६ ॥ (बालदी) बालोजीबडगूजर सु गारसकहीजेमात लौरसहैगोत्रजाको स्यामबेद जानिये ॥दायमाँत्रिवाडचाँमाँहैंबोरव्याकेबृत्तजानौं चंदवाण्याँ केबृतनाँहीं बालदीसुबानिये ॥ ५७ ॥ (बूब) बाघोजीतंवर जाकीभद्र काली कहूँमात मूसायंसगोत्र बूब बोरध्या बखानिये ॥ गुरुलहौड औझा सोतो अजमेराँकेथांभावाला औराकेबिरतनाँहिंपूजारीप्रमानिये ॥ जोध पुरवालाकरचावंडामाताकीसेवबूबनमेंबंटनांहिंएसीबिधजानिये॥ ५८ ॥ बांगरड) बाघोजीबडगूजर बाँगड़ १ तापाड्या २ संचायमात गौतरचूँडांस सतिघाडाय भताऊँहूँ ॥ एकगुरसारस्वत कहीजेखुवाल जोसी दूसरासिखवालजोसी बांगडांजताऊँहूँ ॥ ५९ ॥ (मंडोवरा) माँडाजी पड़िहारपेढ धौलेसरीमात गोराभैरववछांसगौत्रयजुर्वेद गायो है ॥ मंडोवरा १ मातेसरचा २ धौलेसरचा ३ भाईमानें मंडोवराहूई मात रूईन्होंबिछावेहै ॥ आदिगुरुसंखवालमंडोवराछोडीबृत पीछेतेंगद

इयाव्यास दायवाँपुजावेहै ॥ ६० ॥ (तौतला) तोलोजीचुहाणजासूं तौतलाँकूंखरमात गौत्रकापिलांस रिपिकापिलमरीचहै ॥ गूजरगौड़गुरुसोतो गौनड़र्यात्रिवाड़ीजानौंजालोजीजूझार सांभरनरांणौंकेबीचहै ॥ तौतला १ नांगला २ बडका ३ पटवारी ४ भीलाड़ामांहींखोगटांसूंबेर कूवेपाणीं नहिं सीचहै ॥ भौजनपंगतमांह जीमतनएकठौर खायेतेंउलट गिरै एसीपड़ी सीचहै ॥ ६१ ॥ (आगीवाल) आगोजीभाटीहैपेढ मातासुसैंसादसानें गुरुसिखवाल आगीवाल सु बखानिये ॥ स्यामवेद तेतरी सु प्रवरहै तिनजाके गोतरचंद्रांस आगीवालसोप्रमानिये ॥६२॥ (आगसूड़) अगरोजीतंवर माताजाखण कस्यपगौत्र आगसूड़ ज्याके गुर दायमाबखानूंहूँ ॥ डीडवाण्याँतिवाड़याँमें रामाजीकेथांबेभूत ख्यातमाँहीदेखीबात एसीबिधजानूंहूँ ॥ ६३ ॥ (परताणी) पूरोजीपंवारपेढ मातासचियाय गौत्रकस्यप पोकर्णाबीसा प्रोयतगुरूकहूँ ॥ प्रताणी १ रूपूंदपाल्या २ दागड्या ३ कहींजेबौंक नीकीभांत जानूँ जाकी बिगतएसेंलहूँ ॥ ६४ ॥ (नावंधर) नवनीतब्रबाँणपेढ अजलकहीजेमात गुरुपल्लीवाल सोतोधामटबखानेहैं ॥ अथर्वणवेद गोत्रवुग्दालिभ कहुँजाको नावंधर १ धराणी २ धीराणी ३ बौंकजाने हैं ॥ भीमाणी ४ दुढाणी ५ स्यहरा ६ राय ७ गाँधी ८ फेरजानौं मौंडाणी९ धाराणी १० धीरण ११ धनाणीं १२ पनाणीहै १३ ॥ ६५ ॥ (नवाल) नानणसीनृबाँणजासूँ नवालनाँण्यांसगोत्र नवासणदेवी सतीजाखणभताऊँहूँ ॥ नवाल १ खुंवाल २ मालीवाल ३ गोरोभैरूँमाँनें दायमाँनवाल सोतो आचारजजताऊंहूँ ॥ खुंवालाँकेगुरगूजरगौड हैत्रिवाड़ी माता खूंखर जाखड़ भैरू चेलक्ययोपूजायेहै ॥ खेरवाड़छोड वसेहाडोतीकेमाँय जायबादस्याहीमाँहीपित्र बालक्योजूझायेहैं ॥ ६६॥ (पलोड़) पालोजीपड़िहारपेढ गोतरसाँडांस देवीचावंडा गूजरगौड़ आचारजजतावैहैं ॥ बीसनख माताभिन्न गौत्र भिन्नभिन्न गुरुदायमाँ९

पलोडव्यास पारिकभीगावैहैं ॥ पलौड़ १ चितलंग्या २ मौडा ३ लौसल्या ४ पचीस्या ५ डौडा ६ बापडोता ७ सेठी ८ कोठीवाल ९ मूंजी १० आनिये ॥ जेथल्या ११ रावत्या १२ केला १३ गहलड़ा १४ चावंडया १५ भक्कड १६ कांकरया १७ फौफल्या १८ डोडया १९ जुजेसरया २० जानिये ॥ माता गुर गोत्र वेद साखा न्यारीन्यारी बोले पलौड़ चितलंग्या देवी नोसल सु जानेहैं ॥ फौफल्या लौसल्या अरु चितलंग्या रु फौगीवाल पूजत नौसल्यामाता गोरोभैरव मानेहैं ॥ १ ॥ बापड़ौता डोडया देवी पंचायमपूजे पुनि सेठी मातादायम जुजेसरया जुजेसरी॥जेथल्याँकीमाताद्योस चावंडयाचावंडामाने काँकरया चापटा मातासौढण प्रमेसरी ॥ २ ॥ बाकांस साडांस गोत्र कौसिक मानांस केई मामणांस मानहंस एसीभांतभाखेहैं ॥ रावत्याँकेकूंभ्या-जौसी जेथल्याँके गूजरगौड पलौड़ाँपलौड़ गुर दायमाँसोदाखेहैं ३ ॥ ६७ ॥ (तापडया) तेजसीचुहाणजासूं तापडया १ मूँगड २ छाछया ३ आसापुरामाता गोत्र पीपलानजानिये ॥ गुरुसारस्वतसोतो बदरकहीजेआद चनणबंटावेबूत ग्रहणप्रमानिये ॥ मूँगडांके दायमाचौ-लंख्यागुरुप्रोत जानौ गोत्रमोवणांस मातासंचाय पूजाईहै ॥ मोसालाका-गुर गोत्र दीहाड़ी भैरव माँनें तापडया मूंगड छाछया आपसमें भाईहै ॥ ६८ ॥ (मिणियार) मौवणजीमोहलपेढ गौतरकौसिक मातादा-यम त्रिवाड़ीगुर पौठ्यासोभतायेहैं ॥ मणियार १ पसारी २ बरघू ३ माइया ४ खरनाल्या ५ मनक्या ६ पसारीपीपाड़मांय नीकेकहजता-येहैं ॥ ६९ ॥ (धूत) धारोजीधांधल धूत लीकासणपूजैदेवी फाफ-ड़ासगोत्र जासूँ रधूवेदजानिये ॥ चींथरयोभैरव जालोपित्तर कहीजे गुरु सारस्वत गुड़गीला आचारच प्रमानिये ॥ ७० ॥ (धूपड़) धीरसीधाँधल माताफलौधी सिरसेसगौत्र धूपडगांधी के भैरव बाल-क्यो बखाणजे ॥ परवरपांच गुरदायमाँईनाण्याँजौसी पित्तरपरेवो जूझ्यो।

गायाँआगे जाणजे ॥ ७१ ॥ (मोदाणी) माधांजीमोहलजासूँ मोदाणी सांडांसगोत्र गुरुसुपलौड़व्यास दायमांत्रिवाडीहै मेडतामें इष्टि पुनि मडिया नागोरमांय सतीसुजाखण चावंडा वघरदीहाडीहै ॥ मोदाणी १ महदाणा २ वंव ३ महनाणा ४ येच्यारभाई गुरॉकीविगतकछु थाँबाँकी आगाडीहै ॥ लाडणूँ १ छापर २ रोड ३ तीनभाईबाँटेवृत सातेकेथाँ-बाकेभाई वृतछोडपाडीहै ॥ ७२ ॥ (दोहा) पौरवार १ अरुदैपुरा २ मंत्रि ३ नौलखा ४ जाँन जैनधर्मकुलत्यागकर ॥ असपतमिलिया-आँन ॥ १ ॥ (पौरवार) पूरोजीपडिहार जासूँ पौरवार मात्रिमात नानणांसगौत्र हूते औसवालवानिये त्रिगुणायतबयभंडचागुर सारस्व-तकहूंजाकी भद्रकालीदेवी विधिएसी भाँत आनिये ॥ पौरवार १ परवार २ दागडचा ३ भेरूंदामाँय मारवाडदेश जिल्लेमेडताकेजानि ये ॥ ७३ ॥ (देवपुरा) दीपाजीकसुँबीवाल दाहियाबंसदेवपुरा माता-हैपाढाय गोत्रपारस बखाणजे ॥ दायमाँनवालव्यास आचारजगुरुकहूँ देपुरानेंत्यागदीन्हाँ एसीविधजाणजे ॥ पारीककौसिकव्यास प्रोयतआम सिवाला भाणपीकाथांबा देवपुरा पूजे मानजे ॥ देवपुरा १ कसुंबीवाल २ आपसमें भाईदोनु जैनधर्मछौडभये मेसरीप्रमानजे ॥ ७४ ॥ (मंत्री) मानौंजीपंवार मातासचियाय कहुँजाकी गोतरकँवलाय ताको स्यामवेद जानिये ॥ गुरुसारस्वतबडओझा सोतो केलवाडचा औसवालचौपडा-सु मंतरीप्रमानिये ॥ ७५ ॥ (नोलखा) नौलसीजादवजाखूं नौलखा कस्यपगौत्र गुरुहैगूजरगौड बीराकाप्रमाने हैं ॥ माताहैपाढाय आदूगुरु हैत्रिवाड़ीकिंठ कहूँकहूँ आजलों पारीकहीबखानेहैं ॥ जैनधर्मत्याग भये मेसरीसुविष्णुधर्म नोलखौखिणायौबाव सारेजगजानेहैं ॥ कहाशिवकरण ये खाँपकुलखैटमुनि आदूनैत्रमुनि जग प्रसिध प्रमानेहैं ॥ ७६ ॥ ॥दोहा॥ खाँपबहौत्तरमूलके मातागुरुसबआन गौत्र सतीपरवरकहे भैर ववेदप्रमान ॥ ७७ ॥ एकखांपमेंबहुफली फूटरुबढीअपार ॥ क्रमसेंध-

रबरणनकरी छंदबंधविस्तार ॥ ७८ ॥ अबहीकरूँखतावणी लिखविग तखुल्लास ॥ दरकसहाशिवकरणकह बाचत है हुल्लास ॥ ७९ ॥ मेंबालकसमझूँनही छंदाभेदअपार ॥ भूलचूकपदभ्रमहे लीज्योकवी सुधार ॥ ८० ॥ इतिश्री इतिहास कल्पद्रुम माहेश्वरीकुलशुद्ध दर्पण छंदबंद सहा शिवकरण रामरतन दरक माहेश्वरीमूँडवेवालाकृतसंपूर्णम् ।

अथ

माहेश्वरी कल्पद्रुम ७२

खाँपखतावणी ।

(१ सोनी)

॥ सोनोजी पेढ सोनगरा मातासेवल्या गोत्रधूम्रास भाडल्यासऋषी यजुर्वेद गुरुसंखवालओझा गुराँकीमाताफलोधी गोत्रदमाइंस सोनी १ सुगरा २ नुगरा ३ रामावत ४ भानावत ५ कोठारी ६.

३ नुगरा, गांव, सांभर, डकाच्यासूंबाज्या, ६ कोठारी मेवाड, देवगढ इलासूंबाज्या,

(२ सोमाणी)

॥ स्यामोजी पेढ सोलंखी मातावंधर गोत्रलीयाइंस (आसोपा १ गुरदायमा आसोफा) (कुदाल २ गुरदायमाकुदालव्यास)

१ सोमाणी	———	८ कयाल	सांभरघाड	१५ ग्यानेपोता	बीकानेर
२ आफोसा	———	९ पांत्या	मेडतासें	१६ गेनाणी	बीकानेर
३ राय	———	१० मकड	मूँडवासें	१७ कसेरा	डीडवाणा
४ कोडचाका	———	११ साहा	मेडतासं	१८ थिरराणी	पोकरण
५ कुदाल	———	१२ बागडी	आसोप	१९ खाडावाला	वूंदीसं
६ मडदा	राणीगांव	१३ परसावत	फलोधी	२० झंवरसोमाणी	झांवरसे
७ मानाणी	बीकानेर	१४ वालेपोता	जेसलमेर		

॥ झँवरसोमाणीकीख्यात ॥ प्रगनेजोधपुरके गांव झाँवरमें सवंत ८३२

की सालमें सौनपालजीसोमाणी आपकेनाँनाँ जांझणजी झंवरके गोदी गया और सौनपालजीकी औलादचली वह झंवरसोमाणीवजे इस खांपमें साख पांचटले.

(३ जाखेटिया.

जालमसिंघजीपेढजादव मातासिसणाय गोत्रसीलांस सतीसोढल गुरांकोगोत्र सांवलिया वा सालांस माता जाखण गांवसांडलमें साखा माध्वनी पर्वरतीन ३ ॥ गुरपारीक खटोडव्यास मूँडक्याथांभाका ॥ यजुर्वेद ॥ गुरांकाथांभा गांवसांभरमें कँवलापतजीसें समत १४४४ में फटे (थांभा २) सिरासणा १ सांभर २ (खुलासा) १॥ साभर १ जेतारण २ जोधपुर २ जैपुर४रामसर५ इतनी जगेहैं ॥२॥ सिरासणा १ मारोठ २ मेड़ते ३ सौझत ४ इतनीजगेहैं गुराकेआदूबृत राजोरिया कायस्थकी १ ही इससमय झाँवरियाकायस्थ १ राजोरियाकायस्थ २ दोनोंकीहै (जाखेटीया १ हौलाणी २ भुवानीवाल ३)

(४ सौढाणी)

सोढोजीपेढसोहड़ माताझींण गोत्रसौढांस गोरोभैरव गावकमरकोटमें यजुर्वेद माध्वनीसाखा प्रवरतीन सतीजीर गुरखंडेलवाल मूछाछत्रिवाडी देवी संवाय (सौढाणी दंताल ढोली डाखेड़ा हडकुटिया)

५ हडकुटियागाँव जेसलमेर इलाखे मारवाडसें वजे ।

(५ हुरकट)

हीरोजीपेढदेवड़ा माताविस्वंत गोत्रकस्यप गुरु पोकरणाबटू हुरकट १ भौलाणी २ कयाल ३ चौधरी ४

३ कयालगावनावाँमें ४ चौधरीसाभरसें वजे

(६ न्याती)

नानणसीजीपेढनिरवाण माताचांदसेंण गौत्रनांनसेंण सतीनवासण

फोफल्याके गुरपल्लीवालधामट) गोत्रमुग्दलांस ॥ पारीकदुप्याउपाद्या मातालीवज गावदेईमें बृत १ न्यातीकी है॥न्याती इन्दोरमें हैं न्याती १ निकलंक २ फोफल्या ३ डंडी ४

(७ हेडा)

हीरोजीपेठदेवड़ा माताफलोधी गौत्रधनांस ववांस गुर संखवाल ओझा माताफलोधी (गुरुपल्लीवालधामट गोत्रमुग्दलांस हेडा) १ (किसीजगेंसंखवालओझाबृत्तलाटेऔरकिसीजगेंपल्लीवाल)

(८ करवा)

कंवरसीपेठकछावा माताकछवाय संचाय गोत्रकरवास पर्वर ५ स्यामवेद (गुरुपल्ली वालधामट) काग्याकीमाताफलोधी
करवा १ काग्या २ काहोर ३ कीया ४ किलल ५ वा कलंकीबजे

(९ कॉकाणी)

कूकसिंघजीपेढजोया माताआमल गोत्रगौतमस्य व कपलांस लाव- रच्योपित्र गूगरच्योभैरव यजुर्वेद परवर ५ साखामारध्वनी सतीलाछन गुर गूजरगौड़ सांभरच्या चोव्या देवीकाड़ज वा लाछन गोत्र गोतम
कांकाणी १ सांभरच्या २ नाराणीवाल ३

---

१ कांकाणी गोत्रकपलांस २ सांभरच्यामातालोसल ३———

(१० मालू)

मल्लोजीपेढपंवार मातासंचाय गोत्रखलांस वा थेपड़ांस . गौपालोहू- च्योपित्र स्यामवेद परवर ३ (गुरु सारस्वतल्होड़ओझा मालूके) (गुरु गूजरगौडगुताड़च्यात्रिवाडी साबूके) (गुरु दायमाँजौपटव्यास तैलॉके) व्यासांमेंथांबा ३ मूंडवे १ अरडके २ रहण ३ येक थांबावालाकेवंशाकीवृत है वह व्यासकहलाते हैं १ मालू २ साबू ३

घीया ४ तेलों ५ चौधरी ६ लोईवाल, पूर्वमें लोईका रुजगारसे वजे

४ तेला माताचावंडा गोत्रकँवलांस (ऊनेवख)

सोठो—करसावणरुजगार सावूबाजासहजमें ॥ तेरासेगुणसाठ तेज-नगरमहरामसाः ॥ १ ॥ करचोखरीदीतल धरचौरहोजुगच्यारलों ॥ तेलावाज्यातेह जागानेंपुरस्योजहाँ ॥ २ ॥ दूजाभाईधरि जागानेंव्रत घालियौ घीयानामधरीस सवकारनरुजगारसें ॥ ३ ॥

(सारडा)

सीहड़जीपेढपँवार मातासंचाय गोत्रथोबाड़स स्यामवेद गुरु सारस्वत ल्होड़ओझा नरड़ सारड़ाँके (गुरु पारीक बरणाजोसी खरड़-सारड़ाँके) गुरु पोकरण व्यासू पोकरण फलोधीका केलांके बाकीमारवाड़ मेवाड़ ढुंढाड़ वालांके गुरु सारस्वत ल्होड़ओझाहै खरड़ासारड़ाकीवृत प्रथम सारस्वत ओझाँके ही सूपारीकबरणा जोसी दुरगेपोताँको तीर्थपें पुंन्यदी सूअबे पारीकवणोजोसी दुरगे पोताके खरड़सारड़ाकीवृतहै सेसेपोतांकेवृतनहीं

१	सारड़ा	४	केला	७	कानूंगा	१०	पटवा		[illegible]पठ (डाडवाण	
२	नरड़	५	मूंजीवाल	८	चौधरी.	११	दादल्या		सेठां (रामदेवरे	
३	खरड़	६	कौठारी	९	भलीका	१२	मांगड्या			

(१२ काहाल्या)

काहोजीपेढकछावा मातालीकासण सतीचावंडा व फलोधी गौत्रका-गायंस भैरव सोल्याणाजी गुरुदायमाँ काकड़ाव्यासमिसर

गुरु दायमाँ काव्यात्तिवाड़ी पिण पूजीजेहै गुरांकेथांभा २ है मिसर डीडवाँण्या नागोरकाथांभांका (कहाल्या १ चहाड़का २ बहाड़का३) सोरठा ॥-काहाल्याबौंकजुतीन भाईनामप्रसिद्धजग ॥ गुरुउभयपूजीस, ग्राम भेद लखि पक्षतें ॥ १ ॥

(१३ गिलड़ा)

गागजीपेढ गहलौत मातामात्री गोत्रगौतमस्य सतिमात्रि गुरु सार स्वल्हौड़ओझा (रिषिड़ूछु) गिलड़ा १ गहलड़ा २ गगिलु ३ मूथा ४ मौदी ५

(१४ जाजू)

जूजोजीपेढसांखला माताफलौधी गोत्रवालांस गोरोंमेरव गुरुगूजरगौड़ जांगला उपाद्या काँच्या कौलासरचा ॥ गुरांकाथांभा ५ ॥ कौलासरचा १ मेगासरचा २ थिरपाल ३ बसिल्या ४ ——— ५ इस्में कौलासरचांकेबूतहै जाजू १ समदाणी २ सिंगी ३ तुलावत्या ४ कलश्या ५. जजनोत्या ७.

॥ समदाणियाँकीख्यात ॥

गाँवजाँगलूका जाजूहेमजी १ हरिधँवल २ हरिपाल ३ महिपाल ४ मामणसी ५ नरायण ६ माधोजी ७ समदरजी ८ पीढी आठवीं समदरजीसें समदाणीबजे समदरजीतक जाजू कहलातेथे.

(गुरांकीख्यात)

गुरु जांगला उपाद्या काँच्या यहपेस्तर गूजरगोडजोसीपिसागण्याँ कहलातेथे केसोजी जोसी साँखलोंके गुरुथे इधर जांगलोंके और उनकेगनायतोंसें आपसमें तकरार (हाडवैर) थी इसकारणसें भयभीतहो माहादुखीरहते तब अपनेगुरु केशोजीपासजाय सरणाले हातजोडके कहाकिमाहाराज आपसांवतहो और हम आपके सिष्यहैं सो दीन जान हमारी आप रक्षा करो जब केसोजी कही म्हेंतो सांवतहूं उधर उनके पास १००सूरवाँहै युद्धकीयेबराबरीहै अब दगेसें मारना चाहिये यहविचार सांखलोंके गनायतों पासजाय कहीके सांखलोंके यहां२५०कन्याकँवारी उनका स्वयंवर रचाहै तुम चलके विवाहकरलो एसेंकह वरात

सजाय सबकों लाके एक वागर (बडापरकोटा) में उतार नीचे वारूद विछाय सुरंगलगादी तव वह२५० कँवारीकंन्या प्रणकर बोलकि यह सम्पूर्ण कर्म हमारे नामसे हुवा इच्छचाकर वरातसाथ आये वह हमारेपतीहोचुके यहकह सतीहोगई ओरके सोजीकोंश्रापदियाके तुम्हा-राकुटंब (परिवार) बांटबांटहोजाय (यह श्रापितशब्द उलट कर) आ सरी बचनहो अतिशय बृद्धिहोगई तबतें यह गूजर गोड़ पिसांगण्यांसे गूजरगोड जोसी जांगला उपाध्या वजे फेर किसीकारणतें कांच्यावजे

केसाजीके १२ बेटा जिस्काथाँभाहुवा कौलजीकाकोलासरचा १ मेगाजीकामेगासरचा २ थीरोजीकाथिरपाल्या ३ बीसलजीकाबिसल्या वह भोजगहुय देवपुजाकरे है.

॥ थाँभापांचकेजाजूसमदाणीयाँकीवृतहै ॥

धेनाजीकाधेणाणीं १ चाचाजीका चांचाणीं २ बीसाजीकाबीसल३ हापाजीकाहापाणीं ४ ब्रह्मदेवजीकाब्रह्मदेव ५ ॥ इसमेंहापाजीकोथांभो-गलतगयो बाकीथांभा ४ केवंसहै बृतमेंआवेसोपावे ॥ थांभा ४ मेंबंट बँटियाँपछैखेरूंजवचे जिसकोबंटएकथांभाके २० हायतो सीवंट १मिले व एकथांभाके १ हीहोंयतोबंट १ लेवे.जादाहोयतो पाँतीमेंसें पात्याकर लेवे प्रथम खेरूजबंट थांभा ५ में था अब थांभा ४ में हुवेहै.

(१५ बाहेती)

बेहड़ासिंहजी नृबाँणपेढ माता गोत्र भिन्नभिन्न ॥ (गोकन्या गुर दायमाँनवालआचारज गोत्रगौकलासँ मातागोकन) डाल्या गुर ——— मातासामणगोत्रचंद्रांस. व. चानणेस. ॥ (डांगरा गुर ——— माता सोंढर) ॥ मल्लड़ गुरपौकरणाव्यास ——— ॥ नावंध-राणी गुरदायमाँपलोडव्यास ——— ॥ लौगरड़ १ चरखा २ गुरपारीकगोलवालव्यास गोत्रराजांस मातादधवंत (लोह्या १ नरवरा

२गुरगूजरगौड़गुनारड्या त्रिवाड़ी गोपीनाथजीकाथाँभावालांके मूतखांप २) खड़लौद्या गुरपुष्करणाँछागाणीं कौल्याणीं मातावीजासण॥(बाघला गुरसंखवालपींपाड़ापाँड्या मातासौढलधौलेसरीसती महपालपित्रकालोभैरवगोत्रकस्यप) मालीवाल भीलड़ीकाव्यास इसमें सेंआधी खाँप भाणेज गलूँडवालाव्यासाँको दीवीसू अब मालीवालांका दापादोनूं बराबर आदूँआद बाँटेहैं ॥ नरवरा १ मुरक्या २ डाल्या ३ लौया ४ लटूरया ५ पांचखांपभाई गुर गूजरगौड़ गौनारड़यात्रिवाड़ी माता गौत्रचंद्रांस (डांगरा गुर ——— माता नागणेची सती सौढर गोत्रकस्यप ॥ जागाबाहेत्याँमें व कापड़ीजुदीखांपबतावे) (खावाणी गुरदायमाँपलौड़ मातागाहल चीतोड़सेंबजे) धौल गुरगूजरगौड़ गुनारड़्या माताडाहरि गौत्रहरड़ांस (दरगड़ गुरखंडेलवाल डीडवाण्या मातालोईसण) (नगणेच्या गोत्रकपलांस) धूँणवाल गुर ——— माताडांहरी फाफट गौत्रहरडांस॥(मुसाणी गुर ——— गौत्रकाबशांस माता ———)नावंधराणगुर ——— मातागाहल (लौया गुर ——— मातासावणगौत्रचंद्रांस) नरवरा गुर ——— मातासाडांस गौत्रनंदांस (बील्या १ बटंड्या २ बिलावड्या ३ माताबंधर) ——— बाघला १ खींवज्या २ नींवज्या ३ नागणेच्या ४ डांगरा ५ भाईहै मातासोढल (शाईवाल १ शांदर्ड २ गांधी ३ भाईहै)(लौगर्ड १ गरविया २धनाणीं ३ रूड़्या ४ चरखा ५) खूंभड़ा १ बासाणी २ नौगजा ३ मालीवाल ४ सूम ५ मल्ल ६ दरगड़ ७ (मालाण्याँ १ मल्लड़ २ धन्नड ३ मुलतानी ४ मसाण्या ५ भाईहै) सतूरया १ मातासवासण गौत्रखीवसरांस गांवसतूरसें (तुरक्या ——— मातासावसण ——— नौंगावांसे) नरेड्या ३ ——— मातालीकासण ——— (नथड़ ४ ———) (गींदोड्या ——— मातदायम ———) धनाणी १ तापड्या नागोरमें,

(वाहेती चक्र)

अमृपाल	जंगा	धूणवाल	पेड़चीवाल	वंवडोता	रामाणी	लोगरड
कसंडा	झीतड़्या	धेनोत	वरोद्या	मह्ल	राघाणी	लोह्या
खड़्लोह्या	डाल्या	धोल	वटंडच्या	मह्लड	राईवाल	लोया
खावाणी	डांगरा	नरेड़्या	वाहेती	मसाण्या	रांधरड	सतूरच्या
खींवज्या	ढांगरा	नथड़	वाघाणी	मालीवाल	रूया	सकराणी
खूभड़ा	तापड़्या	नरवरा	वाघला	मालण्या	रूह्या	स्यहरा
गरविया	तुरक्या	नावंधंग	वासाणी	मुरक्या	रूवल्या	सेसार्णा
गांधी	तूंमड़्या	नाडागट	विलावड़्या	मुलतानी	रूडच्या	हमीरपुरा
गींदोड़्या	दरगड़	नागणेच्या	वील्या	मुसाण्या	लटूरच्या	
गोकन्या	धनड़	नींवज्या	बुगडाल्या	मोराणी	लीकासण्या	
चरखा	धनाणी	नोगजा	वेडीवाल		लोईवाल	

(वाहेती चक्र)

(१६ बिदाद)

अथसिंघजीपेढसोढा मातापाढाय गौत्रगजांस (सतीआसापुरा किलुके) (सतीखूबणबिदादाँके) गुरपारीकखटोड़्याऱ्यास पंडितजीका-थाँबाका मातारवूबणगौत्रधोलांस बिदादा १ किलह्न २ बिदादा-डीडवाणौं छोडने गांवविदियाद बसायो

(१७ बिहाणि)

बिहारीजी पेढपंवार मातासंचाय गौत्रवालांस रिषीकौसिक, स्यामवेद परवरपांच साखाअनंत सतिलाखेचा गुर दायमाँ बोरड़्यात्रिवाड़ी १ बिहाणी २ पीथाणी ३ लोह्या ४ पीपाणी ५ बछाणी ६ गूजरका ७ सराफ ८ बडहका ९ लालाणीं डीडवाणांका इंदोर मऊकी छावणीमेंहै १० पसारी डीडवाणांका गांवसेरस्यामें है ११ लोईका डीडवाणामें १२ पापड्यामेड़ते १३ गोबरच्या

(१८ बजाज)

बीजोजीपेढभाटी मातागाहल गौत्रभन्साली भैरव झींथ्यो गुरदाय-

मोंतिवाड़ीकंठ गौत्रगोतमस्य थांभा २ सतीको १ अटलाजी २ बेहड़्या गौत्रबछांस मातापाढाय सतीपाटल (मरचून्या गौत्रआंवलेस मातालोसल) (किसतूरच्या गुरांको गौत्रगौतमस्य मातालीकासण सतीसुबरणा)

१ बजाज	३ रौल्या	५ मरचून्या	७ धारूका	९ गटूका	११ सांभा
२ बेहड़्या	४ रामावत	६ चामग	८ गवदूका	१० गौडावत	१२ ललावत
५ मरचून्या हाडातीमें		१३ किस्तुरिया हाडास्तूरि.			१३ किस्तुरचां

(१९ कळंभी)

कालूजीपेठकछावा माताचावंडा व चमलाय व पाढाय गुरपारीकसटौ-ड्याल थांबा २ पंडतजी १ बावरजी २ गौत्रकस्यप कळंतरी १ मच्छर २ जोधपुरमेंहै.

(२० कासट)

केवाटजीपेठपडिहार माताचानण व संचाय गौत्रअत्लसांस स्याम-वेद गोरोभैरव खोंगटामाता जाँजणं गुरगूजरगौड़ लौयमाउपाध्या डीडवाण्यां कठैक वदुर चनण पलीवालभी कासटकीबृतखावैहै १ का-सट २ कटसूरा ३ सुरजन ४ खोंगटा.

दोहा ॥ आपसमांहींबैरहैं खोंगटारूतोतलाँन ॥
इकपंगतभोजनकरे उलटागिरेसचजान ॥ १ ॥

(२१ कचोल्या)

कंवरसिंघजीपेठतंवर मातापाढाय सतीडासणी गौत्रसीलांस (राय० गुर पुष्करणां छाँगाणी) रूप० गुर जोपटव्यास (सौन फूल गुर काठ्यातिवाडी कचोल्या) १ राय २ सौन ३ फूल ४ रूप ५

(२२ का:लाणी)

कलोजीपेठकछावा माताचावंडा सतीपाढाय गौत्रचौलांस व कालांस

ख्यानभेद साखानंत भेळख्योभैरव १ काःळाणी सतीअपाणपूजेहै गुर पारीकखटोडव्यास २ पंडतजी १ बावरजीका२ थांभादोय १ (काःगाली २ मुरक्या ३ काल्या) काःळाणी कळंत्री मुरक्या माता गुरु गौत्रएकहै जिस्सें आपसमेंभाईपासानेहैं इससिवाय औरकुछभेदनहीं गुरांकीविगत ॥ पारिकखटोडव्यास थाँभा २ पंडतजी बावरजी॥ पंडितजीकाथांभायाळांकेतूतखाप ७ सातहैं बावरजीकाथांबावाळांकेतूतखाँप ५ पांचहै और पंडितजीका थांबावाळांकेखांप २ (भंडारीराव १ सिंदादा २) घरहै वाकीखाँप पांचसीरसेंहै सू बंट बराबरबाँटै काल्हाणी १ कळंत्री २ मुरक्या ३ गटाणी ४ कुकुध्या ५ ये पांच.

(२३ झंवर)

जांजणजीपेठजादव——मातागौत्राभिन्नाभिन्न गुरदायमाँ आसोपा त्रिवाडीव्यास——खरड १ खूँच्या गुरपारीक अजमेराजोसी (गायलवाल मातागायल) गौत्रझूझांस नागला खरड मातासुद्रासण गौत्रमाणंस खूँच्या माता गौत्रलंडवांस झालरया——गौत्रसोवणांस १ गाहलवाल २ नागला ३ नौसरया ४ पौसरया ५ खरड ६ खूच्या ७ खीवज्या ८ ठींगा ९ मुवाणी १० सौवण्याँ ११ मेमाणी १२ झालरिया १३ भगत १४ डाणी १५ चौधरी १६ सोमाणीझंवर (सोमाणी झंवर साख ५ टाले)

खरड़झंवराँकी ख्यात

मारुधराका गांव आसोपमें नरड नोसरजी व पौसरजी दोयभाईथे उसमें छोटाभाई पौसरजी परदेसगमनकर बहोत द्रव्यपेदाकिया और नोसरजीकेपास भेजकर लिखाकि शुभकार्यमें खर्चकरो जब लघुभाईकी आज्ञावत नोसर सागर तालाव बनाया यह बातसुन पोसरजीकी बहूबोली के कामबेमेराखाविंद और उडावे जेठजी अपना नामप्रसिद्ध

करबडे सेठजी बजे यहबचनसुन नोसरजी इस्को जुदीकर तलावकेबीच पालन्हखाय नोसरसागर व पोसरसागर नामरखादिया चंदनमुद्दतबाद पोसरजी परदेससें आये और तलावकेबीचमें पाल देखकर नाराजहो पूछनेलगे तहकीकातसें कसूरअपनी औरतका पाया जब क्रोधितहो अपनीस्त्रिकोंदवागदे उसके पीहर गामसांभर अजमेरांकेभेजदी उस्केग र्भाधानथा पूर्णमासहोनेसें पुत्रजन्मा पर्वतनामरक्खा जब गुरु आसो- फातिवाड़ी पोसरजीपासजाके पुत्रजन्मका रुपया १ मांगनेलगे तबपो- सरजीनेकहा दवागदिवीस्त्रिके पुत्रोत्सवका रुपया हमनहिंदेंगे पुत्र व इस्त्रि हमारेयोग्यनहीं यहाँतककि तलवकेपानीभी सीरनहिं जबगुरू आसोफातिवाड़ीभी उसपुत्रकों त्यागकर बूलछोडदी वह लडका सांभ- रनांनेरे अजमेरांके प्रवरीसहो गुरुभीनानेराके पारीकअजमेरा जोसीकों पूजनेलगा गुरुकृपासें बडाप्रतापिहोकर दिल्लीबादस्याहके कामेतीबना और खड (घास) की मदतदी जबसें खरड झंवर प्रसिद्ध नाम ठहरा पुन्ह चूंगीकीमुट्ठीउगाई जबसें खुणंच्याबजे और अपने नामसें पर्वतस- रनामगामबसाया बडाप्रतापी हुवा

(२४ कबरा)

कुंभोजीपेढगहलौत मातासुसमाद गौत्रअचित्रांस गुरसंखवाल मॉडम्याँ १ पालड्या २ अठारच्या ३ (खाँपखाँपके) गुरांकागौत्र वासी- ष्ट यजुर्वेद साखा माध्धिनी परवरतीन देवीफलौधी पालड्या गोत्र विजे- मान कालूपित्र देवगाँव कावरा पालड्या चीतौडसूं जायकर माँगरांस गांव टूंकक्कनेबसायो १ काबरा २ मॉडम्याँ ३ पालड्या ४ अठारच्या ५ भक्त ६ सिंगी ७ धौल ८ कौठारी

(२५ डाड)

डूंगौजीपेढदाहिया माताभद्रकाली सतीलीकासण गौत्र आमरांस

झींतरचौपित्र कालोभैरव मंडोवरमें स्यामवेद गुरदायमाँनवालआचारज थेपड़चामाताबंधर काली सती चंद्रकाली गौत्रलखासण १डाड२थेपड़चा

(२६ डागा)

डूंगोजीपेठपंवार मातासंचाय व बंधर व दधवंत गौत्रराजहंस गुर पारीक गौलवालव्यास दवागणका मजीव्या गुरसारस्वतवडओझा

डागा	केसावत	विठाणी	दरावरचा	मुकनाणीं	माड़िया
डूंडा	कोन्हाणी	गौराणी	न्हार	मजेठचा	मौड (मेवाडमरोठमें)
करनाणी	भोजाणी	दमाणी	मेण्या	माधाणी	माडा

(२७ गटाणीं)

गटूजीपेठगहलोत माता चावंडा गोत्रठालांस रु. पड़ाइंस गुरपारीक खटौडव्यास माता पांडूखाँ मेडतासूँकोस ३ पश्चम
१ गटाणी २ मलक ३ टोपीवाला ४ साकरिया ५ संकर ६ मिलका

(२८ राठी)

रिड़मलजीपेठपंवार मातासंचाय औसियाँस्थान पीतवर्ण गौत्रकपलांस स्यामवेद गणपतीविन्यायक गढरणथंभौर भैरव बाँदरापुरजी नागौर शिवबाडीमें गढके दक्षण पश्चमकी कौंणमें आदगुरपल्लीवाल गुर पुष्करणाँ छाँगाणीं थाँभा ४ की विगत १ छाँगाणीं २ कोलाणी ३ गडारिया ४ दरासरी.

श्रीचंदाणी	सातलाणी	सुखाणी	कलाणी	गवलाणी	गोयंदाणी	चतुरभुजानी
साल्हाणी	साहताणी	सुखदेवाणी	क्रमसाणी	गिरधराणी	गौपालाणी	चापसाणी
सावताणी	साहणी	सुजाणी	कौकाणी	गागाणी	गुलराणी	जटाणी
सांगाणी	सालगाणी	सिहाणी	खेताणी	गेगाणी	चौथाणी	जसवाणी
सादाणी	समाणी	करनाणी	खेमाणी	गौमलाणी	चौखाणी	जेसाणी

जालाणी	नेताणी	म[illegible]ठाकुरा	हरकाणी	नेत सौत	कहरा	सहाणा
जिंदाणी	नापाणी	मथराणी	मुहलाणी	चतुरभुजौत	महरा	मौदी
जिवाणी	नाटाणी	मदवाणी	लखाणी	मदसुदनौत	बाजरा	गांदी
जोधाणी	नानगाणी	माधाणी	लखवाणी	धगड़ावत	बेजारा	ईदू
तहनाणी	पदाणी	मालाणी	लालाणी	मानावत	मीचरा	सराप
तेजाणीं	पीपाणी	महेसराणी	लूलाणी	खेतावत	[illegible]गारा (जेमल [illegible]रमें)	साहा
तुलछाणी	बहगटाणी	मुलाणी	लुहलाणी	दूदावत	लखासरचा	सिरचा
तिरथाणी	बेखटाणी	मुसाणी	श्रीचंदौत	देदावत	वरसल्पुरचा	कल्हा
दस्माणी	वनाणी	मुलतानी	करमचंदौत	पूरावत	कौठारी	वृजवासी
दसवाणी	वीनाणी	मूंजाणी	कपूरचंदौत	टीलावत	चौधरी	सांवल[illegible]
देसवाणी	वसदेवाणी	मीमाणी	रामचंदौत	कलावत	रूड्या	खटमल
देवराजाणी	बाघाणी	अरजनाणी	लालचंदौत	मलावत	राहूड्या	बापल
देवगटाणी	बिसताणी	आफाणी	प्रतिचंदौत	मौलावत	मड़िया	बापेचा
दुढाणी	बछाणी	ऊधाणी	मानसिंगौत	रामावत	लेखणिया	मरोठी
द्वारकाणी	भाकराणी	रंधाणी	फतेसिंगौत	लखावत	फांफट	करमा
धनाणी	भौलाणी	रतनाणी	रामसिंगौत	भिचलाती	बेकट	राठी
धामाणी	भौजाणी	राघाणि	अखेसिंगौत	भागचंदौत	भइया	
नथाणी	ठाकुराणी	रूपाणी	करमसौत	डौडमूथा	सूणा	

(२९ बिडहला)

बेहडसिंघजीपेढपंवार मातासंचाय गौत्रवालांस रिषिपिपलान (गुरपुष्करणाँविश्वा————) सेखावाटीमें गुर आदगौड बासोत्या गोत्रसाडांस (बडालिया गुरसंखवाल गरवारिया त्रिवाडी गौत्रझवरांस माताफलोधी) १ बिडहला २ छूरचा ३ गांध्या ४ घूधरचा ५ गरूरचा ६ गोरचा ७ बडालिया.

(३० दरक)

दुरगसिंघजीखीचीपेढ मातामूसा गौत्रहरिद्रास यजुर्वेद परवरपांच

सासानारुनी खेत्रपालसौनेवोजी कमुलानास लक्ष्मी वाळो पित्र गणप तीविन्यायक बिष्णुनाम सारंगपाणी ———————— (दुरकाँके गुर संखवालहलव्याइपाद्या जायलवाल) (हलव्याँकेगुर संखवालहलव्या जोशी) मेवाडमें गांवहींण्यों माँगरोंस पौटलांपास भेरू मोतीराम कुसाल नंदराम वगरहै वह हलव्याजोसीवाजेहै दुरकामेंसें हलव्या हलदुकारु ज्यार करणेंसें वजे और हलव्याँके घर हाडोतीमें जादाहै वाराँ माँगरोल अणते गेंते बूंदी पलायतें वंवोरी जिल्ह कोटाकेमेंहै

१दुरक२हलव्या३मरच्चून्या४कोठारीगांवराहणमें ५ चौधरी मेडतामें.

(३१तोसणीवाल)

तेजसीपेडचहुवाण माताखूँखर सतीवाँवली गोत्र कौसिक रुषिपिप्पलान साँडोपित्र कालाभैरव पित्र हरदमलाला वडगाँव मालवेमेंआनझरेस्थान सतीगंगा आहूमाता भवानी गोत्रसीद्द चूडाँसरुषी दुगामातासंचाय (गुरदायमाडीडवाण्याँतिवाडी गुरांकीमाताद्धवंत)

१ तोसणीवाल २ नागोरी ३ नेवर ४ भिज्याजी ५ मोदी ६ सूंजी ७ डामा ८ डामडी ९ लंबू १० सिंगी ११ दास १२ दुगा १३ झालरया १४ जेनारिया १५ सूंजी १६ भाकरोद्या १७ कोठारी

॥ गाँवतोसोणे तोसणीवाल तोसासाहहुवो ॥

संवत ११२९ में तोसासाह आपकी कन्याका विवाहकिया और चीतोड़का कावरां कीजान आई उससमयमें लुगायाँ जानमें आणि वंधहुई जिसकीख्यात (छंदकुंडलिया) दुसहजारहातीहुता पैदलपनरालाख ॥ तोसेनूतजिमाइया हीरापंन्नाँपाक ॥ हीरापंन्नाँपाक थालकंचनकादीया॥ जुगतेजानजिमाया सुजसजगमेंजिणलीया ग्यारहगुण चालीसमें सहीसूदन्यूँसाख ॥ दुसहजारहातीहुता पैदलपनरालाख॥ १॥ उतचढआयोकावरो राणागढचीतोड ॥ इतमुरधरतोसातणी समदोजो-

उसजोड समदीजोडसजोड जानएहिभाँतपधारे ॥ जरीयाँजाजमढाल धरापरपगनहिंधारे ॥ धररेसमपदपाँतिया करसुखमलकीसोड ॥ उतच-ढआयोकाबरो राणागढचीतोड ॥ २ ॥ एकमतेउदमादिया एकरंगएक-तौर एकसरीखाएकनर जाणकचितरचामोर ॥ जाँणकचितरचामोर एकपोसाखँसवारी ॥ घोडाएकणरंग जाँनइरभाँतजँव्हारी ॥ एकणरू-पउतावला एकाएकणजोर ॥ एकमतेउदमादिया एकरंगएकतौर ॥ ३ ॥ जरीतणींजाजमजठे नौसेसाईवान ॥ तौसेसाहातेवडाकियो आनउतारीजान ॥ आनउतारीजान सगीकाँधेउतरावो ॥ तबतौसासाः नटचौ लाखदसमोहोरलिरावो करठेरमोहोरदसलाखको व्याहणरथ उतरान ॥ जरीतणींजाजमजठे नौसेसाईवान ॥ ४ ॥ परणघणाँनरआ-विया किणियनटाल्योकंध ॥ तौसीणारेमाँढवे हुईलुगायाँबंध ॥ हुईलुगा यौंबंध तोसणीवालपलाइ ॥ करगाधोतरगाल आणमरजादचलाई ॥ असलहुसीकोइमेसरी सहीमानसीसंध ॥ परणघणानरआविया किणी नटाल्योकंध ॥ ५ ॥ रावनराँधेव्याहमें नारबरातनजाँय ॥ इणदोनाँमें एकगुण जानाँजोंगीनाँय२पसरथालीमेंजावे कहाकीताकरे नारानितराड फसावें ॥ कहेदरकाशिवकरणियों यूँबरजीइणताँय ॥ रावनराँधेव्याहमें नारबरातनजाय ॥ ६ ॥ (पुराचीनकवित्त) ग्यारहसेगुणचालवें तौसा साहातेवडाकियो ॥ समतग्यारसेगुणतालीसे छौलदेकालपडचौदुकाले॥ सुग्यातोबोहोतहीसताई ॥ तिणदिनमँडीकढाईरंकराणवाजिमाई ॥ अग-ट्योधानअओजरे ॥ जागदेईदासकीरतकही॥तौसणीवाल गोइंददेलौतणों करकीरतअविचलरही १ (वार्ता)तौसासाहतौसणीवालगांवतौसीणेंमाढो रचायो और चीतौड़गढसूं कावरांकी बडीभारीजानआईजिसमेंलुगायाँ आयकेहट कीयो के पहलीव्याहीकेकाँधे पगधरके फेररथसूंनीचेऊतराँ तबतौसासाह कांधेपगधरायोंनहिं और दसलाखमोहोरोंकाढेरकरायदीया जब व्याहण उसद्रव्यऊपरपगधर नीचेऊतरीयहबाततौसासाहनेअनु-

चित (निस्लज्य) मालूमहुई जब सर्वपंचोंकीअनुमतिलेकर विचार कीया जैसेंके रावथालीमें पसरकर सर्वपकवानोंकी जगहँ रोकके आप-काहीअसला फेला करलेवे जैसेही औरतकास्वभावहै कि आपथापी बातरक्खे व अनेकप्रकारकी कुतरकाँचलावे यहबात समझकर गाधो तरेगालकी सोगन मुकररकराई के असलमेंसरीहोगासो यहकार उलं-घन नहिंकरेगा याप्रकार बरातमें औरतोंकाजानाबंधहुवा.

(३२ अजमेरा)

अजोजीपेढचहुवाण मातानौसल गौत्रमानांस रुषीपीपलांस (गुर-पारीकखटौडव्यास ————) कुलथ्या मातासमराय गुरपारीकख टौड़व्यासपंडतजीका १(बिन्यायक्या गुरपारीक अजमेराजोसी यजुर्वेद सासामाख्वनी पर्वरपांच कोषाभैरव शिवदुग्धेश्वर गणपतीढुंढिराज) गौत्रबछांस सतीसगतकंवार देवगिणपत (नौसरचा गुरदायमाँगोठेचा, मातानौसर) पौसरचा १ खरड़ २ खूंच्या ३ यह झंवरहै माता सुद्रा सण गौत्रपौण्यास १ अजमेरा २ कोडचा ३ कुलथ्या ४ कूकडचा ५ राय ६ रणदीता ७ धौल ८ धोलेसचा ९ भगत १० भगूत्या ११ डबकोडचा १२ डोडा १३ मानक्या १४ विन्यायक्या १५ नौसरचा १६ पौसरचा १७ खरड १८ खूंच्या १९ पढावा.

(ख्यातअजमेरा)

विन्यायक्या अजमेरामें पुहनाका व नाडा बच्छाका थांभावालों कों जागानहिंमांगें कारन सरवाडमें दोयजागा जँव्हर कर प्राणत्यागन किया और उनजागोंकी स्त्रियें सतीहुई जबजजमान अपनापुत्र जागाजी कों दत्तकदे जागोंकावंसरक्खा जबसें इसथांभेको जागामाँगनाछोडा.

(३३ भंडारी)

भंडलासिंघजीपेढकछावा मातानागणेच्या गोत्रकौसिक गुरपारीक

खटवडव्यास (राय गुरपंडतजीकाथाँबाका) ———— गोकन्या गुर गोडन्निवाडी मातागोकुल (मिरच्या १ लाठी २ गुरपारीक बामण्या-व्यास) मातालोहन १ भंडारी २ भकावा ३ भूक्या४ काला ५ गोरा ६ गोकन्या ७ गुलचक ८ मातया ९ लाठी १० राय ११ मिरच्या १२ नरेसण्या १३ नेणसर

(३४ छापरवाल)

छाजपालचीपेढसांखला मातावंधर गोत्रकोसिक यजुर्वेदसतीभद्र-काली (गुर दायमातिवाडी डीडवाण्या पोठ्या) १ छापरवाल २ दुजरा ३ दुसाज

(३५ भटड़)

भेरूँजीपेढभाटी मातावीसल सतीसूँदल गोत्र व्यास स्यामवेद साखा अनंत परवरतीन ———————— (गुरुपल्लीवालधामट गोत्रमुग्दल मातावीसल) दोहा ॥ पनरासोपनडोतरे सुदसावणतिथि तेर ॥ भाटीसूँभट्टडहुवा जैसाँजेसलमेर ॥ १ ॥ ॥ पुराचीनहै

१	भटड	४	हलद	७	वीसाणी	१०	विच्छू	१३	गांधी	१६	भल्लड
२	सूँधा	५	केला	८	बीसा	११	राम.णी	१४	पीथाणी	१७	मृहणदासो
३	लहड	६	कहरा	९	बलवाणी	१२	जेठा	१५	पुंगल्या.मा.विस्वत	१८	महरा

(३६ भूतड़ा)

भूरसिंघजीपेढसांखला माताखींवज गोत्रअत्लसांस गुरसारस्वत बरद १ पल्लीवालचंनण २ गुरआवे सोपावे दोनूँआवैतो बंटवराबरबाँटे १ भूतडा २ चाँच्या ३ देवगटाणी ४ देवदत्ताणी ५ चोधरीजोधपुरमें.

(३७ बंग)

बाघसिंघजीपेढपडिहार माताखाँडल सतीकोठारी धारादे महमल पित्र गोत्रसौढांस रिषिवालांस मारध्वनीसाखा रहणकाथांभावाला मातकल्याणीपूजे मूँडवाकाथांभावाला माताखाँडलपूजे गुर गूजर-

गोड गौनारड्या त्रिवाडीव्यास गौत्रवछांस १ बंग २ छीतरका ३ साँदलका ४ साँभावत ५ मौटावत ६ थारावत ७ पसा, रीसूँडवे ८ पटवारीसूँडवे

(३८ अटल)

अटलसिंघजीपेढगहलौतमातासंचाय सतीमात्री गौत्रगौतमस्य प्रथम गुरगूजरगौड (पछेपोकरणाबटू) अबचितचावैसौहीगुरुमान लेवें प्रमा णनहीं मरौठियागुरगूजरगौड पंचौलीबीज्यारण्याँ मेवाड देसमें चीतोड-गढकेपास गांवधनेतमें गुरयजमानदोनूँहै.

१ अटल २ गौठणीवाल ३ मरौठिया

(३९ ईनाणी)

इंद्रसिंघजीपेढईदा मातजिसल गौत्रससांस जेसलांस नगवाड्या मातामात्री साखातंतरी प्रवर ३ यजुर्वेद गुरसंखवालगरवरिया त्रिवाडी

१ ईनाणी २ नगवाड्या

(४० भुराड्या)

भूरसिंघजीपेढचुहाण मातामुणधणी गौत्रअचित्रगुरदायमाँनवाल आचारज गौत्रसाठैलांस गुरांको १ भुराड्या २ कौठारी ३ बंबू ४ भूँगड्या

(४१ भन्साली)

भाऊसिंघजी पेढवांस माताचावंडा सतीडाहरीगौत्रभन्साली भैरव लाबरचौ १ सौन्याणौं २ पित्रभोला गुरदायमा, नवालआचारज भन्साली १

(४२ लढा)

लोहडसिंघजीपेढपँवार मातासंचाय सतीबंघर गौत्रसीलांस यजुर्वेद रामउपासना.

(गुरपारीक गौलवालव्यास सूत ३ लढा १ लौगरढ २ डागा ३)

१	लढा	३	मुंजी	५	भाकरोद्या	७	दगडा	९	धाराणी	११ चौधरी
२	मौदी	४	अठासण्या	६	हाग्या	८	दागडचा	१०	जौ ला	———

(४३ मालपाणी)

मालदेजीपेढभाटी मातासाँगल गौत्रभव्यास गुरपुष्करणाँछाँगाणी कौलाणी (मालपाणी १ मूथा २ मौदी ३ जूँहशी ४ कूलाणी ५ लौलण ६ भूरा ७ नागौरसेंहै.)

(४४ सिकची)

संरकजीपेढपँवार मातासंचायसतीभावजगौत्रकश्यपसिकचीगुरपुष्कर-णाजोसीचौवटियागौत्रपाराश्वरमाताचावंडासीलारगुरगूजरगौड उपाध्या डीडवाण्याँ आचारज गौत्रभारद्वाज (१ सिकची २ सीलार३ सीलाणी) सिकची इतनें गावेंमेंहै हरदेसर, मौलेसर, जगरामसर, दावदसर, गरबदेसर, बरजांगसर, हरियासर, रूपालेसर, कीतलसर भग्गू, आसोफ, माणकपुर; धूँध्याडी, मूँडवे, कालू, कैकींद, भूरासौ नाडोलाई,भादल, रावव्यावास, डेगाणा, उदेरामसर, मारौठ,डीडवाणा, भीलाडा, राहण, पालडीखोजीजीकी, घडसरसहर

(४५ लाहोटी)

लाभदेजीपेढतंवर माताचावंडा गौत्रकागांस परवर ३ साखातेत्री बिसहर——— गौत्रफोफडांस मातागाहल गुरसारस्वत बडओझा केलवाव्या. १ लाहोटी २ बिसहर ३ कूया ४ काहा.

दोहा—करणअंगसोबालचंद सुतसूजासुभियान ॥

लाहोटीप्रथमादमें दाददादइवान ॥ १ ॥

(४६ गदइया)

गोरोजीपेढगौयल माताबंधर गौत्रगौरांस यजुर्वेद प्रवर ३ प्रथम गुरदायमा पडवालओझा गाडरमालाजीका थौंबाकाहा अब गुरु

लखोटच्या २ जुगराभा ३ भईया ४ मौंठडच्या ५ मौनाणा ६ परसरामा

(५० असावा)

आसपालजीपेढदहिया माता आसावरी गौत्रपचांस बालांस नाग मातादूदल गुरसंखवाल नागला त्रिवाडी मातागुरांकी आसावरी रिषि-दूधसुर आसाइंस मंडोवरागुरसंखवाल मंडोवराव्यास गौत्रकलांसगुरांको गौत्र भारद्वाज माध्वंनिसाखा परवर ५ यजुर्वेदगुरांकीमाता दूदेसर १ असावा २ व्यपती ३ नाग ४ मंडोवरा

(५१ चेचाणी)

चंद्रसेणजीपेढदहिया मातादधवंत सतीपाढाय व पाडल गौत्रसीलांस रिषिअरड़ांस पाटल्यौभैरव गुरदामाँई दाण्याव्यास आचारज रायके कचोल्याँके गुर दायमा काव्या त्रिवाडी कचोल्यामाता पाढाय सती पाडल गौत्रसीलांस १ चेचाणी २ दूदाणी ३ कचौल्या ४ कलस्या ५ राय ६ खड

(५२ माणूधण्याँ)

मोवणासिंघजीपेढमोहिल माताभाणूंधणींसतीजाखणगौत्रजेसलानी कपिलरुषी (गुरदायमाँ जौपटव्यास माणूंधणाँके) माणूंधण्याँ गुरखंडे लवाल गौत्रपोलांस कपिलरुषी मातासुरल्या.(वार्ता) गुरदायमजोपट व्यास माणूंधण्यांकीवृत तो खंडेलवालांको दीवी (वाधीखाँपसातरहीसू दायमाँ जौपट व्यासके है) १ माणूंधण्याँ २ माणूधणां ३ चोधरी ४ स्याहर ५ घरडोल्या ६ सूम ७ सिंगी ८ हीरा

(५३ मूंधड़ा)

गुर सारस्वत बड ओझा केलवाडचा में सूँरेण्याँ गांवरेंणका थाँभाका गुरांकोगौत्र

भारद्वाज माता फलोधी थांभा केलवाडच्या रेण्या ठिलीवाल भट नेरा हिरण्याँ. (मूंधड़ा)

१	मूंधडा	७	सकराणी	१३	ढलाणी	१९	अटेरण्या	२५	बावरी
२	मोरांणी	८	भाकराणी	१४	डोडच्या	२०	महलादाणी	२६	वलड़िया
३	मोदी	९	भराणी	१५	देढचा	२१	पसारी	२७	दम्मलका
४	माहलाणा	१०	भौराणी	१६	चौधरी	२२	छोटापसारी		
५	सेसाणी	११	राजमहूता	१७	चमड़चा	२३	कोटारी		
६	सांभरच्या	१२	गौराणी	१८	चमवया	२४	वारीका		

(५४ चाखडो)

चौखसिंघजी पेढ सींदल माता जीवण गौत्र चंद्रांस पित्रजालो झींत रचोभैरव यजुर्वेद परवर ३ सतीझींण गणपती गणाधीश गुर गूजर गोड गोनरडचात्रिवाडी (चौखडा १) सोरठा ॥ कीन्हाँकामअनेक धर्म नीतपालीजरू ॥ छवसगुणसटसाल जग्यकियोजेगमसाह ॥ १ ॥ वस यौमगधरबास चौखनगरपूरबधरा ॥ गुणगायोजागाह कीरतजग रहसी अखी ॥ २

(५५ चंडक)

चाँपसिंघजपिढचहुवाण माताआसापुरा संचाय गौत्रचंद्रांसस्यामवेद पर्वर ३ तेतरीसाखा (पूंगल्या माताविस्वंत गौत्रछवाइंस) पूंगालिया मातादेल गौत्रबछाइंस पित्रचानणेश्वर (गुरपल्लीवालधामट गौत्रमुद्र-लांस गुरांको)

१	चंडक	५	मीमाणी	९	पूंगलिया	१३	भाइया	१७	सुंदराणी
२	गौरणी	६	माधाणी	१०	पटवा	१४	सागर	१८	जोगड
३	मुलतानी	७	प्रगाणी	११	बीझाणी	१५	सांवल		
४	मुकनाणी	८	महलादाणी	१२	भीषाणी	१६	सुखाणी		

(५६ बल्दवा)

बाघोजीपेढपंवार माताहिंगलाद सतीगांगेव गौत्रबालांस स्यामवेद

परवर३ वाजस्निसाखा लटूरचौभैरव बलदवा माता गांगलेसपूजेगुरसं खवालपंडित (वेड़ीवाल गुर सूजरगोड़ डीडवाण्या उपाध्या आचारज गोत्रभारद्वाज मातासींदल साखामारध्वनी) १ बलदवा० २ पड़वार ३ पेडीवाल ४ राघवाणी ५ कलाणी ६ वेड़ीवाल

(५७ बालदी)

वालोजीपेढबडगूजर मातागारस गौत्रलौरस स्यामवेद पित्रगांगी गौत्रवच्छस चंद्रांस मातालौसल वा लौसी गुरदायमाबौरडयाव्यास तिबाड़ीकोंकाणी (चंदवाण्याँ व; श्रीधराण्याँकवृतनहीं बालदी १)

(५८ बूब)

बाघोजीपेढपंवारमाताभद्रकाली गौत्रमूसाइंस गुरसारस्वतल्होडओझा अजमेरकाथांभावाला बाकी जौधपुरवाला बंठावतहै वह जोद पुरकागढमें चाँवडामाताकीपूजाकरै सू खांपबूबकीमेंबटनहींहै
१ बूब २ वौरड्या

(५९ बांगरड़)

बाघसिंघजीपेढबडगूजर मातासंचाय सतीघाड़ायगौत्रचूड़ांस गुरसारस्व-तखुंवालजोसी गौत्रचंद्रांस गुरसंखवाल बांगरड़ाजोसी मंडोवरा तापड्या-गांवडीडवाणाँमें तापडकारुजगारसेंवजे.
१ बांगरड २ तापड्या

(६० मंडोवरा)

माँडोजीपेढपड़िहार माताधोलेसरी रूई गौत्रबछांस धौलेसरचा माता धोलेसरी गोरोभैरव यजुर्वेद मंडोवरांकीमाता रूईहै जिणसूंनींचे रूईनहिंबिछावे आदगुरु संखवाल मंडोवराहा सू वृतछोडदी गौत्र भारद्वाज साखामारध्वनी यजुर्वेद परवर ५ मातादूदेसर (अबगुरु दायमाँगदइव्यास) १ मंडोवरा २ मातेसरचा ३ धोलेसरचा

(६१ तौतला)

तोलोजीपेढचहुवाण माताखूँखर गोत्रकपिलांस साखामारध्वनी ऋषि कपिल मारीच पित्रजालो सांभरनराणाँकेबीचमेंस्थानहै गुर गूजरगोड़ गौनारड़्यात्रिवाड़ी १ तौतला २ नहडका ३ नागला ४ पटवारी भीलाड़ेमें है

(तौतलाखोगटा)

॥ख्यात ॥ सांभर नराणाँके बीचमें खोगटा और तोतलाके आम्हीं साम्हीं बरातमिली जहां रस्ता (चहीला) छोडने बाबत तकरारहुई तलवारचली और तोतलांकी सारीजान मारीगई फकतबींदरहा जब दिल्लीजाय बादस्याहसें मदतले खोगटांसें वैरलिया फेर जालाजी सांभर नराणके बीचमें खड़ागडगया वह जालाजी परिनामसे प्रसिद्धहो पुजातेहैं अब तोतला और खोगटाँके आपसमें यहरीतिहै कि तोतला जीमें जहाँ खोगटापुरसे वा नजीक जीमणेंको बैठजाय वा पंगतमें आजायतो तोतलाकों वमन(उलटी) होजाय और आपसमें सगपनभीकरना मना है (क्योंकेतिष्टे नहीं ऐसा हाडवैरहोरहाहै ॥)

(६२ आगीवाल)

आगोजीपेढभाटी माताभैंसाद गोत्रचंद्रांस स्यामवेद तेतरीसाखा पर वरतीन गुरसंखवाल आगीवाल (आगीवाल १)

(६३ आगसूड)

अगरोजीपेढतंवर माताजाखण गोत्रकस्यप गुरदायमाँ डीडवाण्याँ तिवाड़ीरामाजीकाथांभाकाके बृतहै थांभा३(पांव्या १ पौव्या २ रामाजीका ३) पांव्या पौव्याकेबृतनहीं १ आगसूड़

(६४ परतांणी)

पूरोजीपेढपंवार मातासंचाय गोत्रकस्यप गुरपोकरणाबिसाप्रोत

(पारागौर्‌याँकेबूतनहीं १ परताणी २ पूँदपाल्या ३ दागड्या)

(६५ नावंधर)

नवनीतसिंघजीपेठ निरबाण माताधरजल गौत्रबुग्दालिभ अथ वर्ण-वेद नंदरांसरूषीगुरपल्लीवालधामट गुरांकागौत्रमुद्गल

१	नावंधर	४	धाराणी	७	मौडाणी	१०	पनाणी	१३	गांधी
२	धराणी	५	धीरण	८	मीमाणी	११	स्याहरा		
३	धीराणी	६	दुढाणी	९	धनाणी	१२	राय		

(६६ नवाल)

नाँनणसिंघजीनूवाणपेठ मातानवासण सतीजाखल गौत्रनानणास गोरोभैरव (नवाल० गुर दायमाँ नवाल आचारज —) खुँवाल० गुरगूजरगोड़ त्रिवाडी माताखूंखर जाखड़ भैरव चेलक्यो बालक्यो पित्र — (१ नवाल २ खुंवाल ३ मालीवाल)

(६७ पलौड)

पालोजीपेठपड़िहार माताचावंडा गौत्रसाँडांस गुरगूजरगोड आचारजडीडवाण्याँ (पलौंड़ लौसल्या गुर दायमाँ पलौडव्यास गोरो भैरव (चितलंग्या गुरदायमाँ पलौड़ आचारज गौत्र कौसिकस्य) (रावत्या गुर दायमाँ कूंम्याजोसी) — (भक्कड़ गुरपारीक तिवाडी —) (जेथल्या गुरगूजरगोड आचारज डीडवाण्याँ इष्टी.)

खांप	माता	खांप	माता	खांप	माता
१ पलौड	नौसल	८ चांवड्या	चावंडा	१५फौगीवाल	नौसल
२चितलंग्या	नौसल	९ कांकरचा	सौढण	१६ फौसल्या	
३ रावत्या	नौसल	१० भकड		१७जेथल्या	दौस
४ लोसल्या	नौसल	११ केला		१८वापडौता	पंचायम
५जुजेसरचा	जुजेसगी १	१२ सेठी	दायम	१९डौडचा	पंचायम
६ गहलडा१	जुजेसरी २	१३ चापटा	सौढणा	२०मूंजीवाल	
७ पचीस्या२	जुजेसरी २	१४ मौडा			

(६८ तापड्या),

तेजपालजीपेठ चहुवाणमाता आसापुरा सती समराई गौत्र बीपला न मूंगर्ड गुरदायमा चौलंख्या औयत गौत्रसौवर्णांस माता संचाय ताप ज्यागुरुसारस्वतबदूर (पल्लीवालचनण) आवै सौपावै दोनूंआवे तो बंट बराबरबांटै तापड्या १छाछ्या खांप२(तापड्या १मूंगरड२छाछ्या३)

(६९ मिणियार)

मौवणजीपेढमौहिल मातादायमा गौत्रकौसिक पसारीपींपाडमें है गुरदायमाँ त्रिवाडीपैव्या १ मिणियार २ पसारी ३ बरघू ४ माइया५ खरनाल्या ६ मनक्या

(७०धूत)

धूँरसिंघजीपेढ धांधल माता लीकासण गौत्र फाफड़ांस रघुवेद चौथ रचौभैरव जालौपित्र गुरसारस्वत गुड़गीलाआचारज.

(७१धूपड)

धीरसिंघजीपेढधांधल माताफलौधी गोत्रसिरसेस वालक्यौभैरव ॥ गुरदायमाँ ईंदाण्या जौसी पित्रपरेवा १ धूपड़ २ धूत

(७२ मोदाणी)

माधौजीपेढमौहिल माताचावंडा बंधरजाखणगोत्रसाडांस महनाणा गुरसारस्वतबढओझा गुरदायमाँ पलौडव्यास तिवाडी (इष्टी मेड़तामें) (मढिया नागौरमेंबाजे) थांबा ४ छापर १ रौहू २ लाडणूं ३ सातेंका ४ इसमेंसातेंकाथांभावालांकेब्रतनहीं १ मोदी २ बंब मातादाखण ३ महदाणा मातावंधर ४ महनाणा

(७३ पौरवार १)

पूरोजीपेढपड़िहार मातामात्रि गौत्रनानांस गुरसारस्वत त्रगुणा

यत बयभंडचा मातभद्रकाली सती मात्री २ पोरवार २ परवार ३ दाग डचामेरूदांमेंमेड़तापरगने (ख्यात) दागडचा रुढामें १ परताण्यांमें २ पोरवालमें ३ खांपमें हैं.

(७४ देवपुरा २)

दीपोजीदहियापेढ कसुंबीवालअसपतबंस मातापाढाय गौत्रपारस गुरदायमाँनवाल आचारज आदगुरहै सू वृतछोडदी अबगुर पारीक कौसिकव्यास प्रोयत आमलीवाला भाणपीका थांभाका है (१ देवपुरा २ कसुंबीवाल) देवपुरांकीख्यात कवित्त ॥ क्षत्रिन क्षित छौड बडे पाटपती ठाठसेती देसहूकनोजत्याग दिल्लीआनब्राजेहैं ॥ दहिया बंस- मेंतेंवैस्यभये हैं कसूंबीवाल भारीभिड़भीमप्रथीराजपाससाजे हैं ॥ ताहीसमयराजबाईपीथलकौविवाहभयो रावलसमरसीजीनेलग्नआनसा जेहैं ॥ बोलयेचहुवाँणसेती दायजेदिवाणदीजे दीपाकुलभाँणमेरे करेगा मताजेहैं ॥ १ ॥ आनकेदिवानभयौ भानहिंदवानहूके चूकेनाँजबान मान शत्रुनकोचाटेहैं॥ म्लेछनकौमारिके,दबायदीयेठौर ठौर कतेगढतोर तौर हल्लेकरकाटेहैं देवपुरजीतेताते देवपुराछापपाई मेसरीमेंमिलेआय जगमेंजसखाटे हैं ॥ पूरब अरु पश्चम उत्तर दक्षन लौ धाकपरी देश शिवकरणादिपे दौर दौरदाटेहैं ॥२॥ (वार्ता) दीपाजीकाबेटा सिंघजीनें रावल समरसीजी कुरबदीयौ ॥ दोहा ॥ पाटकँवरअरुकुम्भगढ घराख- जानाधींग ॥ च्याररतनचत्रकोटका समप्यातौनेसींग ॥ १ ॥ (वार्ता ऐसे कसुंबीवालसे देवपुराबज्ये)

(७५ मं[illegible] ३)

मानोंजीपंवारपेढ मातासंचाय जासूँ ओसवाल चौपडातिणमेंसे धर- मपालजी चौपड़ा मंत्री हुआ गौत्र कँवलाय स्यामवेद गुरसारस्वतबड- ओझा (मंत्री १)

मंत्रिख्यात ।

साहा चोथजीराठी नग्रओसियामें महोत्सव वैश्यजग्य किया संवत ४२९ माहा शुक्ल ५ जिस वखतमें ८४ गामके महेश्वरी सर्वत सविनय बुलवाये ॥ कवित छप्पय ॥ ओसीयाँथानसुथान ठामराख्याँठकुराई समतच्यारसेपचीस न्यातपौंखवेमिठाई ॥ समतच्यारसेपचीस मोहोराल इणबटाई ॥ समतच्यारसेपचीस रघूजसकीर्तरहाई ॥ जुगेजुगबातरहसी अखी कराँअमिटनामीकियौ ॥ राठियाँवंसहूवोनरेस जिणसतूकारचाहै तदियौ ॥ १ ॥ बरअक्खेमहमाय कीर्तिजागाजसअप्पै ॥ बरअक्खेमह माय चरूसौवनासमप्पै ॥ बरअक्खेमहमाय चौथचौरासीकीन्ही ॥ बर अक्खे महमाय लहणमोहोराँभलदीन्ही ॥ ओसियाँथानराठीधिनोंजिन कराँदानकचनकिये ॥ रिडमालसुतनजागानकों लखपसावहाथीदिये।२। (वार्ता) साहा चौथजी राठी एसा वैश्ययज्ञ स्वयंबर रचा और अपने मित्र धर्मपालजी वैश्य ओसवाल चोपड़ा गांव रहण मरूस्थलदेशमेंथे उनकोंभीबुलाये ॥ वहाँ वैश्यजग्यमें सर्व विद्वज्जन महेश्वरीयोंको अति उज्वलक्रिया स्वच्छतासें भोजनकरतेदेखे ॥ जेसेंगंगाकीसीछोल अति आनंद परस्परप्रीतीयुक्त मान मनुहार होरहीथी एसासमयदेख धर्मपा लजी अपनेमित्र चौथजी राठीसें कहनेलगेकी हमारेकोंभी महेश्वरीक रलो तब सविनय प्राथेना युक्त चौथजी सर्व महेश्वरि पंचोंसे अर्जकी तब इनकेमित्र समझ अपने पर्ममित्र जान मंत्रि पददे अपने सामिलकर लिया और जैनधर्म छुडा विष्णुधर्म धारण कराया ॥ दोहा ॥ प्रथमरह णकाचौपड़ा धर्मपालजीजान ॥ मित्रामिल्याँसूंमंतरी पायोकुरबप्रमान ॥ १ ॥ (वार्ता) याप्रकारमंत्रि गोत प्रगटहुआ गांवरहण मेड़ते पारेवे मूंधाड़ भकरी सावर वगेरे गांवोंमें बसे (पुन्ह) गांव सावर सगता तो की में २ सती हुई १ लाडमदे कँवारीथी तोरणबाँदआयकरस्वर्ग बासीहुआ जदसतीहुई २ पाटमदे यह दोय सतीपुजीजे है.

(७६ नौलखा ४)

नौलसिंघजी जादवपेठ मातापाढाय गौत्रकस्यप (आदगुर दायमाँ तिवाड़ीकंठ) कठैक गुरपारिकपूजै (गुर गूजरगौड़ बीराका डीडवाण्याँ) १ नौलका २ नौगजा

(आपरख्याँतें)

१ सारडा आपके नानेरे मालू के गौदीगया वह मालूसारड़ा बाजे है और सगाईमें साख ९ टालै

२ बाहेती बाघला आपके नानेरे मालूके गौदी गया वह मालूबाघला बाजै साख ९ टालै

३ सौमाणी नानेरे झंवरके गौदी गया वह झंवर सौमाणीबाजे साख ९ टालै

४ सारड़ा रूपचंदजी सांभरसे कालाणियाँके गोदीगया वह कालाणी सारडाबाजे साख ९ टालै गुरुभीपारीक खटौडव्यास नानेराके हैं.

५ माणुधण्याँ कनीरामजी सांभरमें कालाण्याँके गोदीगयासू कालहाणी माणुधण्याबाजे है साख ९ टालके सगपनकरे.

६ याप्रकारसे नागोरमें पिण दोहिता नाँनाँके गौदी अभीतक आताहै पुन्ह और भी केईजगें आल (बेटीकापुत्र) व औलाद (आपकापूत्र) इनदोनौंकाहक्कदस्त कमेंबराबरगिनते हैं.

अथ

न्यातगुरी माहेश्वरी ७२

खाँपके गुरु प्रारम्भ ।

(१ दायमा)

१ दायमा आसोपातिवाड़ी बृत खाँप २ सोमाणीआसोपा १ झंवरगायलबाल २

१ दायमा कुदालतिवाडी सौडागणराजकाथांभाका गौत्र कचा-

इस खांप १ सोलाणीकुदाल १ ना इसके नख फळी (दायमाँतिवाडी बाजेहै उनके वृतनहीं है.)

(१ दायमा डीडवाण्यातिवाडी थांभा ३) पांड्या १ पोठ्या २ रामाजीका ३ (वृतजुदी) जुदी है (उदाहरण) पांड्याके तोसणीवाल १ (पोठ्याके छापरवाल १ सिणिग्यार २) रामा जीका के आगमूड़

१ दायमा कूभ्याजोसी थांभा ३ (रात्या १ वाणारस्या २ चापड़ा ३) खांप १ पलोड़रावत्या १

१ दायमा बेहड़तिवाड़ी खांप १ बिहाणी १

१ दायमाकंठतिवाडी मातादधवंत गोत्रमाइस खांप ७ ॥बजाज १ बेहड्या २ काला ३ मरचुन्या किसतूरया ५ कटसूरा ६ मंडोवरा ७ (मंडोवरानेंछोडदीया)

१ दायमा तिवाडी वेराड्या व्यास थांभा २ कोकाणी १ चंदवाण्याँ २ सू. चंदवाण्यांके वृतनहीं है (कोकाण्यांके खांप १ बालदी)

१ दायमा काकड़ामिसरव्यास वृतखांप ८ खटवड १ माळाणी२ टुवाणी ३ काल्या ४ माला ५ सोलासऱ्या ६ गांडी ७ मूछाळ ८

१ दायमा खटवड व्यास वृत खाँप २ नगवाड्या १ गड्लडा २

१ दायमा खटवडव्यास थांभा ४ (कल्याणजीको १ सूरजीको२ मनारैजीको ३ गुरांको४) (वृतखाँप २) खटवड १ माला २ वा. दायमा काकडा मिसर व्यासवजे

१ दायमा जोपठव्यास वृत खांप २ माणूधण्या १ तैला २ (अपरवृत सोनपचोलीकीहै) .

१ दायमा गोठेचा वृत खांप १ अजमेरा नोसऱ्या १

१ दायमा ईनाण्याँ जोसी वृतखांप १ घूपड

१ दायमा ईलाण्याँव्यासआचारज थांभा ३ साँगावत १ सवावत २ केळावत ३ वृतखांप४ चेचाणी १ दूदाणी२कलंक्या३कचाल्या४

१ दायमा नवाल आचारज डीडवाण्या थाँभाका भाभडाबाजैहै माता दधवंत गोत्रब्रह्मणोछ रिषी माइस वृतखांप ७ नवाल १ भन्साली २ गोकन्यावाहेती ३

डाड ४ थेपड्या ५ भुराड्या ६ कसुंवीवाल ७ (देवपुराने छोडदी नासूं अबे पारीकहै)

१ दायमा पलोडव्यास थांभा ४ शोडू १ लाडपूं २ छापर ३ साते-का ४ सातेकाके वृतनहीं वृतखांप ७

बंब १ मौदाणी २ चितलंगी ३ नथड ४ नोसल्या ५ खाबाणी ६ नाहुधराणी ७

१ दायमा चौलंख्या प्रोयत पं-चोली बछाका वृतखांप १ ताप-ड्यामेंसूंनख मूंगरड १

१ दायमा कौलीवाल भीलडी काव्यास वृतखांप १ बाहेत्यांमेंसू नख मालीवाल १

१ दायमा गदइयाव्यास दवा गणका आदोबांधे खांप १ मंडो-वरा १ (आदगुर संखवाल मंडो-वराव्यास)

१ दायमा पापड्या आचारज वृतखांप ६ नावंधरा १ बूब २ चितलंग्या ३ लदड ४ खाबाणी ५ जंग ६

१ दायमा काकड्याव्यास वृतखांप ४ काहाल्या १ मोद ाणी

२ टुवाणी ३ खटवड राय ४

१ दायमा बेहड्या तिवाडी थांभा ४ कांकाणी १ रामाका २ खेमाका ३ श्रीधरणका ४ (वृतखा प १ बाहेतीवील्या १)

१ दायमा खटवड व्यास वृत (खांप १ खबडवड १)

१ दायमा पेडीवाल वजाडा गरमलका थांभाका (वृतखांप १ गदइया १)

१ दायमा बेहड्व्यासवृतखांप १ बिहाणी १

दायमा डीडवाण्यां वृतखांप १ तौसणीवाल १

१ दायमाकीसखवाल बछाका व्यास वृतखांप १ मूगरड़ १

१ दायमा डीडवाण्यां पाठक पौक्याछापरवालपौरवालमणियार

(२ संखवाल)

१ संखवाल औझा वृत खांप २ सौनी १ हेडा २

२ संखवाल हलव्या उपाद्या जायलवाल वृतखांप १ दरक

२ संखवाल हलव्याजौसी वृत

खांप १ दरकांमेंसूखांप इलद्या १ (कोटाबूंदीकाराजमेंहै)

२ संखवाल आगीवाल देवीब राई (बृतखांप १) आगीवाल १

२ संखवाल मंडोवराव्यास वृतखां प २ असावा १ मंडोवरा २ (मंडौवराअदगुरदायमामंडोवराव्यास)

२ संखवाल नागलांतिवाडी देवीजेठाई वृतखपां १ असावानाग

२ संखवालपंडित वृतखांप १ बलदवा १

२संखवाल पींपाडचा पांडचा वृतखांप १ बाहेतीबाघला १

२ संखवाल थांभा ३ मांडम्या १ पालड़चा२ अठारचा ३(काब शमाँडम्यां १ गौत्रअफड़ांस गुरसं खवालमाँडम्याँ काबरापालडचा१ गौत्रमेसूमाताफलौधीगुरसंखवाल पालडचा) काबराअठारचा१गौत्र मेसू माताफलौधी गुरुसंखवाल अठारचा

२ संखवाल माँडम्याँ उपाद्या बेहड़चागौत्र४ माँडम्याँ १उपाद्या २ पालडचा ३ अठारचा ४ मौयतबाजे है ॥

२ संखवाल गरवरिया तिवाडी वृतखांप २ ईनाणी १ नगवाडचा २ वडायल्या ३

२ संखवाल मंडोवराजोसीदेवी कनेश्वरी वृतखांप२ बाँगड १सेटी

२ संखवालपंडत्या देवी राहीवा-लवृत खांप १ पंडवार

२ संखवाल पांडचा देवीधौले सरी डंडवालसती वृतखांप ३ वा घला १ नींवज्या २ पनवाडचा ३

(३ सारस्वत)

३ सारस्वत बठऔझा केलवा ड़चामाता फलौधी गौत्र भद्रांस भाटन्यारोमांडे थांभा ४ उदाहरण भटनेरा १ ढल्लीवाल २ मारू ३ केलवाडचा ४ खांप ४ भेली ला होटी बिसहर १ मूँधडा २ मजी-ठचा ३ महदाणा ४

३ सारस्वत बडऔझा ढली-वाल वृत १ साबत लखोटचा १

३ सारस्वत बडऔझा रेण्या वृत १ साबतघरू-च्यारखांपतोभे लीच्यारूंथांभामेंबंटबाटेवदोयखाँ पजुदीआपआपकीहै (मंत्री १)

३ (सारस्वतल्होड़ओझा माता डाहरी गोत्रमूसारदषीमाइंस खांप७ सारड़ा १ नरड़ २ भांगड़चा ३ माल्हू ४बूब५ डोडचा ६ डूंडा ७ सारस्वत अजमेरांके बूब जुदीघरू खांपहै बाकीमें बंटबाटै) खरड़ सारडांका आदगुर सारस्वतहा सू पारीक बराणाजोसी दुरगेपोतानें गंगापरदीनी व बरणीबाँधी सू बर णाजोसीवाज्या अबे खरड़सारडां का गुरबरणाजोसी है

३ सारस्वत गुडगीला आचा रज वृतखांप १ धूत १

३ सारस्वत त्रिगुणायत बथ भंडचा वृतखांप ३ पोरवार १पर बार २ दागडचा३ दागडचा पोर वारसेंं निकले वहमारवाडकेगांव भेरूदामें है

३ सारस्वत खुँवालजोसी १ संखवालबांगरड़ाजोसी २ वृत खांप १ बांगडांकी है.

(४ गूजरगौड)

४ गूजरगौड़ आचारज वृत खांप २ पलोड १ खुवालनवा- लांमेंका १

४ गुजरगौड पंचोली बीजार ण्यादेवी दायमगोत्रपंचोल्या मरो- ठिया अटलमेंसूं खांप १ (अट- लांकेगुरम गोछित)

४ गुर गूजरगौड जांगला उपा ध्या कांच्या देवी चावंडा झाडाई थांभा ५ (उदाहरण)

बीसलका १ हणफका हाकाणी २ भद्रका ३ चेचाणी ४ भनाणी ५ इस्में थांभा ४ केवृतहीं फकत- थांभा १ जांगला उपाध्या कांच्या के वृत जाजू समदाणीकी है.

४ गूजरगौड बीराका डीड़वा- ण्यावृतखांप १ नोलका १

४ गूजरगौड़ लोयमा उपाध्या जीवणजी का थांभाका माता साव ज सतीखींदज वृत खांप ४कासट १तापड़्या२गदइया ३ भूँतड़ा४

४ गूजरगौड़गुनारड़्या तिवा ड़ीव्यास देवी चावंड़ा थांभा२एक तोव्यास१दूजातिवाड़ीवृतबंटी(१ व्यासांके वंग १ कसुंबीवाल २) २ तिवाड़ीके लोया १ लटूरचा२ नर वरा ३ मुरकया ४ ड़ालया ५ साबू ६ तोतला ७ बाहेतीपोल ८

चौखड़ा ९ कहालपा १० भूरचा १

४ गूजरगौड़काकड़ातिवाडी माता गुणाय वृतखाँप १ हींग १

४ गूजरगोड चौव्या सांभरया माता कुड़स वृतखांप १ कांकाणी

४ गूजरगोड डीडवाण्या उपाध्या वृतखांप १ ककल १

४गूजरगौड़डीडवाण्या आचारज उपाध्या माता सहींदल सावज गौत्र भारद्वाज रघुवेद साखा मारध्वनी परवर ३ नरसिंग थांभाका गौत्रकशप वृतखांप ७ वेडीवाल१ खोगटा २ जेथलपा ३ चितलंगी४ नौगजा५ सीलार ६ सीलाणीसिकचीमेंका ७

५ पारिक.

५पारीक गौलवालव्यासदवागणका देवीपाडाय गौत्र भारद्वाज थांभा ४ कालाणी १ मखाणी २ टीलाणी ३ खेमाणी ४ वृतखांप लढा १ डागा रांग २ लौगरड ३ चरखाबाहेती ४ डांगरा५नथड ६

५ पारीक बरणाजोसी थांभा २ दुरगेपोता १ सेसेपौता २ इस्में सारडाकी वृत दुरगेपौतांकेहै सेसे पौतांके वृत नहीं ॥ ख्यात ॥ सारडाखरडकीवृत सारस्वतलौडओं झाँकेही सू गंगाकीतीरपर धनवन्कापुत्र पारीकबरणांजोसी दुरगेपोताको दीवीसू अबवर्णा जोसीकेहै खांप १ सारडाखरड १

५ पारीक अजमेरा ———

वृतखांप१अजमेराविन्यायक्या १

५ पारीक खटोडव्यास मांडव्या माताराम्मणवृतखांप १जाखेटिया १

५ पारीक गायलवालमातापाढायगौत्रभद्रांस खांप ४ किलाण्यां १सोखाणी२डीलाणी३कुंभाणी ४

५ पारीकजोसी ———

वृतखांप १ लाड्या

५पारीकप्रोयत कौसिकव्यास वृतखांप १ देवपुरा

५ पारीक देप्या उपाध्या माता खींवज वृतखांप १ (न्याती १)

५ पारीक वामण्याव्यास माता लोहन खांप २ मिरच्या भंडारी १ लाठीभंडारी १

५ पारीक खटोडव्यास माता

फटकेस मारवाडमें मेडताकेपास गांव पांडूखां कोस ३ पश्चमकीत रफमेंहै थांभा २ पंडतजीको १ बाबरजीको२(वृतकीविगत)पंडतजीका थांभाके घरू वृत खांप २ बिदादा १ भंडारीराय २ थांभोमेडतासूँ यहदोयखांपत्तोघरूहै बाकीखांप ५ पांच सीरमेंबेटै(उदाहरण) काल्हाणी १ कलंत्री २ सुरक्या ३ गटाणी ४ कुलथ्या ५

५ पारीक बगडचा जोसी बंध छुडाईसू सातूंपूणकीवृतहै महेश्वरीखांप २ है अजमेरा कूकड्या १ नोलखानाहेती २

५पारीक मूंडक्याव्यास माता जाखड़ सती सोढल गोत्र सालांस परवर ३ यजुर्वेद मारध्वनी साखा वृतखांप ३ जाखेटिया १ झोढाणी २ सांवलिया ३ अपरवृत पंचोली झामरचा राजोरियाँकीहै.

गुर ——— लाडजोसी वृतखांप १ तुरक्या १

(६ खंडेलवाल)

६ खंडेलवाल नवालजोसी फनवाल दवागणका दिल्लीका थांभाका वृतखांप १ गगराणी १

६ खंडेलवाल सूछाल तिवाडी वृतखांप १ सोढाणी १

खंडेलवाल बढाढर डीडवाण्यॉ के वृतखांप २ गगड १ दगड २

६ खंडेलवाल मछल्या देवीसंवाय वृतखांप ३ सोढाणी १ डाखेडा २ ढोली ३

६ खंडेलवालवृतखांप १ माण्घण्यों १ ॥ आदगुरुदायमाजोपटव्यासथासूयजमॉनकोकुष्टी जांण छोडदिया सूखंडेलवालांकाआसीससेंबंसवध्या

(७ पल्लीवाल १)

७पल्लीवाल धामट माता सावज गोत्र मुग्दल वृतखांप४ चंडक१ भटड २ पूंगल्या ३ फोफल्या ४

७ पल्लीवालधामट आद गुरु संखवाल ओझा गावंघर १ करवा २ वाहेती ३ लदड ४ मल्लड ५ तुरक्या ६ डाल्या ७ भइया ८ पूंगल्याचंडकॉमेंसूँ ९

७ पल्लीवाल धामटचंदण साबीरस्वत बदर दोनोंके वृत सीरमेंहैं

सूआवेसोपावेदोनूँआवेतोबंट आदू आद बराबरबांटलेवे जैसे थांभा२ होय जैसें वृतबंटहै और दक्षणमें कहींकहीं मूडकाबंटबंटेहै तापड्या १ घीया २ भूतडा ३ कासट ४ राठ्ड ५ गांधमिसूँ १ (ख्यात) पल्लीवाल धामट मुग्दल रिषीकी औलादकाहैएकसमयमें मुग्दलजी जग्यकरतेथे सू मंत्र १ बाकीरह्या औरसाकल्यसामग्रीपूर्णहोगई तब आपकीचोटी उखाडकर एकमंत्र केसाथ साकल्यकर आहूतीपूर्ण करी ताकरके यासमयमें धामट मुग्दलजीके वंसके ५० पचासवर्ष की आसरे अवस्थामेंहोनेंसें चौटी अलोपहोजातीहै

(८ पोकरणा २)

२ पुष्करणा व्यासू गौत्रकौसिक देवीजांजला १ चामुंडा वृत खांप ३ केलासारडा १ सेठीसारडा २ मुसाण्याबाहेती ३ यह तीनखाँपहै

२ पुष्करणा छांगणीदेवीसरवाय वृतखांप ७ राठी १ मालपाणी २ खड़लोया ३ रायकचौल्या ४ डांगराबाहेती ५बड़ौद्यादकीया ७

२ पुष्करणा विस्वा वृतखांप२ मल्लबाहेती १ टाँवरी २

२ पुष्करणा प्रोयत बीसा यह नानेराकीलारेप्रोयतबजे परताणी १ बिड़ला २

२ पुष्करणा जोसी चौवटिया माता चावंडा गौत्र पारास्वर (वृत खांप १ सिकची १) (अपर वृत कालानुसार रतनू चारण)

२ पुष्करणाबटू वृतखांप २ अटल × १ हुरकट २

अटल × आदगुर गूजरगोड़ पंचोलीबीजार एया १ बटू अब चितचावेसोहीगुरहै.फेर ॥ अटल मेंसे मरोठिया १ गोठणीवाल २है इनके गुरुगूजरगोड़ बीजारण्याहै

२ पोकरणा छांगाणी ओझा देवीडाबाय वृतखाप ७ राठी १ वोरद्या २ मालाणी ३मालपाणी४ कूया ५ डांगरा ७ लौह्या ७

३ गोड़ तिवाडी वृतखांप १ गोकन्या भंडारी १

३ काव्या तिवाडी वृतखांप २ कचौल्या सौन १ फूल २

ख्यात वार्ता बंद वर्णन ॥

महेश्वरी ७२ खांप मूल व ९८९ नौक व माता गुरु गौत्र सती पर वर वेद छंदबंद व वार्ताबंद व खतावणी बहोत्तरखांप मूल व अपनीर खांपकी फलियें कुल विस्तारपूर्वक खुलासा उदाहरण करके चक्र व वार्तिक पूरितहै पुन्ह न्यातगुरांजिसमें छवन्यातके ब्राह्मण व अपर न्यातके ब्राह्मण जो महेश्वरियोंके गुरहै तिनकी एक एक खपांके जितनी २ वृत यजमानहै तिनका खुलासा व आदगुरुवर्णन और एततसमय प्रसिद्ध गुरु नाम सर्वतरहसें खुलासा करके वर्णनकीयाहै अब डीडूमहेश्वरीयौंमेंसे फँटकर (धाकड महेश्वरी) खंडलवाल महेश्वरी व मेड़तवाल व टूकवाले इत्यादि बोलेजातेहैं वह खुलासालिखतेहैं डीडूमहेश्वरीयोंमेंसे फँटकर जुदे नाम बोले गये उनमहेश्वरियोंके व इन डीडूमहेश्वरियौंके आपसमें रोटीव्यवहार व बेटीव्यवहार बिलकुल सन्बंध नहीं रहा कच्चीमेंतोकहाँ पर पक्कीमेंभी अपनीअपनीरुचीहै एसेंही टूकवाले महेश्वरी इनडीडूमहेश्वरी ७२ खांपमेंसेंही निकलकर जुदे होगये गौत्र नौंक तो यहीहै पर उनसें रोटीबेटी वगेरा कोई व्यवहार नंहिंरहा वह जैपुर व टूंकके राज्यमें वगरूमहला नीमाडे राणी खंड कुछ चीतोड करीब मिलाये ८०० । ७०० घरहोंगे वह टूंकमें राज्यके परबसफँस लघु जातीकेसंग भोजनकरके लघुहोगये और इन डीडूमहेश्वरियौंसे सन्मंध बिलकुल टूटगया उनका कुल व्यवहार उन्हीमेंहै अब अगाडी इनका इतिहासलिखतें हैं.

अथ धाकडमहेश्वरीआदउत्पत्ति ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥ श्रीगुरुसारदसुमरिहर बांदीविष्णुकेचर्ण ॥ धाकडगोतवतीसकाथि करप्रसिद्धशिवकर्ण ॥ १ ॥ धाकगढ्ढगुजरातमें बसतमेसरीजात ॥ वडनामोंपनंतजन खंडप्रखंडविख्यात ॥ २ ॥ खांपबहू

रबसतहै डीडूछापधराय ॥ धाकड़र्याहिविधबीछडे पलटेबचनकराय ॥३॥ नृपकोप्योतजिधर्ममौ देनलग्योदुखपूर ॥ तवसबमिलकौन्होंलिखत बसोदिसंतरदूर ॥ ४ ॥ रोपिसुरहसबसाहमिल तज्यो नअतलकाल ॥ अंजलकोऊनाँलहे लिखीगधोतरगाल ॥ ५ ॥ छिनकएकमेंछाडकर धनपूरितग्रहधाम ॥ वाहनभूषनबसनतज निकसेलोगतमाम ॥ ६ फँटेपुरुषकुलबीसतब रहधाकगढमाँह ॥ तिनकौंछोंडसकलमिल सगपणकरणोंनाँह ॥ ७ ॥ बीसबहूतरतेंकढे सोकहुँगोतबखाँन ॥ बारहइनमेंअपरमिल यूँबतीसप्रमाँन ॥८॥(कवित्तघनाक्षरी॥)

चंडक १ सौमाणी २ डाड३झंवर ४ बजाज ५ राठी ६ मालपाणी७ जाखेटे ८ भन्साली ९ कासट १०बायती११ ॥मूंधडे १२ टवाणी१३ डागा १४ भटड १५ तौसणीवाल १६ कावरा १७ साकौन्याँ १८ घीवा १९ बीसवाँलोहायती २० ॥ नागौरी २१ । बघेरवाले २२ । धरवा २३ । धरवाड २४ । मौरी २५ । मोहता २६ । गरगौती२७ । लाडे २८ । मनीवार २९ । बानिये ॥ मेडंतवाल ३० गूगले ३१ । कुलम ३२ । मिलेबारहआय भयेशिवकरणबतीसइमजानिये ॥ ९ ॥

दोहा ॥ बीसखाँपडी डूहुते बारहमिलियाआय ॥ फँटेधाकगढमेंरहे धाकडनामकहाय ॥ १० ॥ भोजनआति आचारयुत लैके पंगतिजाय ॥ ऊर्धपुंडउपनयनयुत पाटंबरपहिराय ॥ ११ ॥ उज्जलकुलरीतीचले साखनभाँनेंकोय ॥ जातपांतमरजादलखि तबैसगापण होय ॥ १२ ॥

इति धाकड महेश्वरी धाकगढसें उत्पाति गौत्र ३२ समाप्त.

धाकडगौत्रचक्रम् ॥

१	चंडक	८	जाखेडे	१५	भटड़	२२	बघेरवाल	२९	मनीवार
२	सौमाणी	९	भन्साली	१६	तोसणीवाल	२३	धारवा	३०	मेड़तवाल
३	डाड	१०	कासट	१७	कावरा	२४	धारवाड़	३१	गूगले
४	झंवर	११	बायती	१८	साकौन्या	२५	मौरी	३२	कुलम
५	बजाज	१२	मूंधडे	१९	घीवा	२६	मौहता		
६	राठी	१३	टावाणी	२०	लौहाती	२७	गरगौती		
७	मालपाणी	१४	डागा	२१	नागौरी	२८	लाड		

धाकडमहेश्वरीयोंकाप्रचार;

वार्ता इससमयमें धाकड़महेश्वरी वहौतकरके नर्मदासें दक्षणतट खंडवा व्हानपुर इलाखेमेंहे और खंडवेमें अभी इतने गौत्रमौजूदहें जिनकेनामलिखतेहैं ऊँकारमालवी चंडक शिवाजी गंगाराम चौधरी सोमाणी आगाजी तिलासाडाड रामाजी हरचंद मनीराम सीताराम झंवर रघुनाथजी नानक रामगोपाल बजाज ऊँकार बोदरूसा संकरदासराठी रामासाभाई लछीराम मालपाणी पदमासा कनीराम गौमंदराम मोती जाखेटे कालूसा गोविंदराम वाहेतीनंदराम मालवी मूँघड़े गोमंदराम कासीराम सदोबा बुला भटड़ देवाबुगलाल तौसणीवाल ॥ नाँनाँपदम मँडलौई बघेरवाल सदोबा गंगाराम गजाधर नागौरी इतनें गौत्र तो खंडवेमें मौजूदहें बाकी इस जिलेमें बहौतसाप्रचार इन धाकड़ महेश्वरीयोंकाहे और चालचलनभी इनका गुजरात काठीयावाड़की तरहसें हे खानपानादि स्वकृतकीयाकरते हैं.

॥ महाजनमहेश्वरीपोकरागोत्र ॥ १४ ॥

यह पौकरा महेश्वरी डीडूमहेश्वरियोंमेंसें १४ मनुष्य धर्मारूढी प्रपंचसें धड़ाडालकर अलगनाम पौकरापोकरजीसें बोलगये और गौत्र अपनें २ नामोंसें प्रकासितकर कायमकीया वह गौत्र १४ हैं सू नीचे चक्रमें खुलासाँलिखतेहैं व सुक्ष्महीं इतिहासलिखाहे बाकी उत्पत्ती डीडूमहेश्वरियोंकी वर्णनकीहैवहीइनकीजानों.

१	काचरवास	४	दौडवास	७	सिंगौल्य	१०	साहा	१३	——
२	सांभरया	५	धुंतावत	८	डंडवाड्या	११	चंदेरेचा	१४	——
३	कीचक	६	वलवल्या	९	बीगौद्या	१२	कावरा		

खंडेलवाल माहेश्वरी विष्णुधर्म गौत्र ७८।

यह खंडेलवाल महेश्वरी विष्णुहै कुछ गौत्र डीडूमहेश्वरियोंकेहै व कुछगौत्र खंडेलवाल श्रावकौकेभीहै और खंडेलवालबाजैहै विष्णुधर्म

१ अटोल्या	१४कूड़ावाल	२७झालाणी	४० नानवा	५३ वुसर	६६मुकमारया
२आलडच्य	१५ कूदावत	२८टांडवाल	४१नाणीवाल	५४ वेद	६७ मेठी
३ आमेरचा	१६खटवाड्या	२९ठाकरचा	४२पचलोड्या	५५ वंव	६८मोरवाल
४आमेरिया	१७खारीवाल	३०ठेठार	४३पावूवाल	५६ भंडारी	६९ रावत
५ ओड	१८खुटैटा	३१ डांस	४४पाटोद्या	५७भागला	७०रावल्या
कलक्या	१९ग्रेहण्या	३२तास्या	४५पीतल्या	५८भूकमारिया	७१राजोरचा
७कटारचा	२०गंगाइच्या	३३तामी	४६पूलवाल	५९ महता	७२ लांवी
काठी	२१गोधिंदराज्या	३४तामौली	४७वडोरा	६०मझलुया	७३साखुण्या
९कायथवाल	२२घीया	३५तौडावाल	४८वख्ूरचा	६१माणकवोरा	७४सांवरचा
१० काट	२३वीयाराय	३६ डुसाज	४९ वनवाडी	६२माठचा	७५सिरोया
११ कांठचा	२४घीयाकाल्या	३७धामाणी	५०वजरगण्या	६३ माली	७६ सेठी
१२कांचीवाल	२५जसौरचा	३८नरणीवाल	५१ वामी	६४मांचीवाल	७७ सोक्या
१३ कूडचा	२६झंगाण्या	३९ नाटाणी	५२ विंवल	६५मामोडचा	७८ हल्या

अथ सारीहीबारहन्यातप्रारंभ.

विदितहोके चतुरासीज्ञात व सारीही बारहन्यात भोजनव्यवहारमें सामिल जीमणा यह अपनें २ देसौंकी जुदी २ प्रथाहै कहींतो दोजात उधर देसवालौंकी प्रथामेंसे छोडके इधरवाले अपने स्वदेसी माहाजनौं कों सॉमलकरलेतेहैं वैसेंही उधरवाले अन्नदेशियोंकी दोयज्ञातछोडके अपनेंस्वदेशी दोयज्ञातकों सामिलकरलेतेहैं यह फगत देसप्रथाहैं इसबा तका कुछ वादाविवादकरना उचितनहीं यहतो केवल अपने २ देसकी प्रथाहै कहींक एसी सारीबारहन्यातमॉनतेहैं जिस्का नाम चक्रमें है

(चक्रनंबर १)

१	श्रीश्रीमाल	४	औसवाल	७	पल्लीवाल	१०	महेश्वरीडीडू
२	श्रीमाल	५	खंडेलवाल	८	पौरवार	११	हूमड़
३	अग्रवाल	६	बघेरवाल	९	जेसवाल	१२	चौरंडिया

यह सारीबारहन्यात मध्यदेस (मालवा) की है वो बहौत जँगहमौं न्यहै और किसीदेसमें ऐसेंभीहैं चक्र २

(चक्रनबंब २)

१	श्रीमाल	५	चित्रवाल	७	पौरवाल	१०	महेश्वरी
२	श्रीश्रीमाल	६	पलीवाल	८	खंडेलवाल	११	ठंठवाल
३	औसवाल	७	बघेरवाल	९	मेडतवाल	१२	हरसौरा

यहचक्र २ की ज्ञात गोढवाड गुजरात काठ्यावाड़कीहै वहां अग्रवालानहीं जहाँ चित्रवाल सामिलगिनेजातेहैंखंडेलवाल यानेंप्रसिद्धनाम सरावगीहै यह केवल देसप्रथाहै.

पुन्हसारीहीबारहन्यातवर्णन.

एकसममें खंडेलानग्रमध्ये खंडप्रस्थनाम राजा वैश्यजग्याकिया जहाँचतुरासीज्ञात तो पक्के भोजनमें सामलहुते तहाँ खंडेलवाल पक्कीमें सांमिलथे एसें (खंडेलवाल माहाजन १ खंडेलवालब्राह्मण २ खंडेलवालखाती ३ यह सब खंडेलवालोंमें सामिलथे) जब राजानें विचारकी थाकी यहतीनूंजात सामिलजीमणाँ उचितनहीं तब कची रसोई जुदि व पकी रसोई जुदि करवाई और कहाके जहाँ जिस्कीरुचीहोय वहाँ जीमो जब खंडेलवालब्राह्मण और खंडेलवाल खातीतो पक्की सामग्रीमें चले गये और खंडेलवाल माहाजन सारीही बारह न्यातके साथ कचीमें जीमें जबतें खंडेलवाल ब्राह्मण व खाती जुदे होकर अपनी २ जातीमेंगये और माहाजन महाजनोंमें जीमणें लगे बेटीव्यवहारतो अपनी २ जातमें ठेटसेंही करतेथे वैसेंहीकरना और भोजनव्यवहार कची व पक्कीमें

सामिलजीमणाँ दोहा ॥ खंडखँडेलामेंमिलि आर्हिबारहन्यात ॥ खंड प्रस्थनृपकीसमय जीम्यादालरुभात ॥ १ ॥ वेटीअपनींजातमें रौटीसाँ-मलहौय ॥ काचीपाकीदूधकी भिन्नभावनहिंकोय ॥ २ ॥ (वार्ता) याप्रकार वैश्यजग्यमें सांमिलजीमें उनकानाम और गाम चक्रमें देखौ.

(चक्रनंवर २)

१ श्रीमाल	भीनमालसें	५ वघरवाल	वघरासें	९ पौकरा	पौकरजीसें
२ औसवाल	औसियासें	६ पल्लीवाल	पालीसें	१० टींटौडा	टींटौरगढसें
३ मेड़तवाल	मेडतासें	७ खंडेलवाल	खंडेलासें	११ काठाडा	खाटूगढसें
४ जायलवाल	जायलसें	८ महेश्वरीडीडू	डीडवाणाँसें	१२ राजपुरा	राजपुरसें

अथ चतुराशीज्ञातिवर्णन ८४ ।

एकसमय गौढवाड़देसमें पद्मावती नाम नगरी पौरवाल महाजनकों अतिद्रव्य प्राप्तभयौ तव उसनें द्रव्यखरचकरनेंको वैश्यजग्य करनेका इरादाकीया तासमय अन्नदेशी वैश्योंकों न्यौता भेज २ वडी प्रार्थनाँकेसाथ आवते जावतेके खर्चसमेत द्रव्यपहुँचाया और वडेआग्रहसें चौरासीजातके वैश्यौंकों अपने स्थानपे पधराये और वडी धूमधामसे वैश्य जग्यकीया तहाँ चतुराशीज्ञातके माहाजन अपनें २ ग्रामतें आये जिनका नाम और ग्राम संक्षेपमात्र चक्रमेंलिखा है

(चक्रनंवर १)

नाम.	गाम.	नाम.	गाम.	नाम.	गाम.
१ श्रीमाल	भीनमालसें	७ अजमेरा	अजमेरसें	१३ कटनेरा	कटनेरसें
२ श्रीश्रीमाल	हस्तनापुरसें	८ अजौधिया	अयोध्यासें	१४ ककस्थन	वालकुंडासें
३ श्रीखंड	श्रीनगरसें	९ अडालिया	आडणपुरसें	१५ कपौला	नग्रकोटसें
४ श्रीगुरु	आभूनांडौलाई	१० कथवाल	आँवेरआमानग्रसे	१६ कांकरिया	करौलीसें
५ श्रीगौड	सीधपुरसें	११ औसवाल	औसियानग्रसें	१७ खरवा	खेरवासें
६ अग्रवाल	आगरौहासें	१२ कठाडा	खाटूसें	१८ खडायता	खडवासें

नाम.	ग्राम.
१९ खेमवाल	खेमानग्रसें
२० खंडेलवाल	खंडेलानग्रसें
२१ गंगराडा	गंगराडसें
२२ गाहिलवाल	गौहिलगढसें
२३ गौलवाल	गौलगढसें
२४ गौगवार	गौगासें
२५ गींदोडिया	गींदौडदेवगढ
२६ चकौड	रणथंभचकावा-गढ मल्हारीसें
२७ चतुरथ	चरणपुरसें
२८ चीतौडा	चीतौडगढसें
२९ चौरंडिया	चावंडियासें
३० जायलवाल	जायलसें
३१ जालौरा	सौवनगढजा०
३२ जेसवाल	जेसलगढसें
३३ जंबूसरा	जांबूनग्रसें
३४ टींटौडा	टींटौडसें
३५ टंटैरिया	टंटेरानग्रसें
३६ ढूंसर	ढाकलपुरसें
३७ दसौरा	दसौरसें
३८ धँवलकौष्टी	धौलपुरसें
३९ धाकड	धाकगढसें
४० नारनगरेसा	नराणपुरसें
४१ नागर	नागरचालसें
४२ नेमा	हरिश्चंद्रपुरीसें
४३ नरसिंगपुरा	नरसिंगपुरसें
४४ नवांभरा	नवसरपुरसें
४५ नागिंद्रा	नागिंद्रनग्रसें
४६ नाथचल्ला	सीरौहीसें
४७ नाछेला	नाडौलाईसें
४८ नौटिया	नौसलगढसें
४९ पलीवाल	पालीसें
५० परवार	पारानग्रवाली
५१ पंचम	पंचमनग्रसे
५२ पौकरा	पौकरजीसें
५३ पौरवार	पोरवासें
५४ पौसरा	पौसरनग्रसें
५५ वघेरवाल	वघेरासें
५६ वद्नौरा	वद्नौरसें
५७ वरमाका	ब्रह्मपुरसें
५८ विदियादा	विदियादसें
५९ वौगार	विसलापुरीसें
६० भवनगे	भावनगरसें
६१ भूँगडवार	भूरपुरसें
६२ महेश्वरी	डीडवाणासें
६३ मेडतवाल	मेडतासें
६४ माथुरिया	मथुरासें
६५ मौड	सीधपुरपाटण
६६ माडलिया	मांडलगढसें
६७ राजपुरा	राजपुरसें
६८ राजिया	राजगढसें
६९ लवेचू	लावानग्रसें
७० लाड	लांवागढसें
७१ हरसौरा	हरसौरसें
७२ हूमड	सादवाडासें
७३ हलद	हलदानग्रसें
७४ हाकरिया	हाकगढनलवरसें
७५ सांभरा	सांभरसें
७६ सडौइया	हिंगलादगढसें
७७ सरेडवाल	सादडीसें
७८ सौरठवाल	गिरनारसें
७९ सेतवाल	सीतपुरसें
८० सौहितवाल	सौहितसें
८१ सुरंद्रा	सुरंद्रपुरअवंतीसें
८२ सौनेया	सौनगढजालौरसें
सौरंडिया	शिवगिरावसिवाणा
८४	

(वार्ता) ऐसे वैश्यजग्य पद्मावती नग्रमें हुवा यह प्रथम पौरवार ब्रह्मसेथे और पद्मावती नग्रमें वसतथे वहां वैश्यजग्य कीया तबसें पद्मावति पौरवारपदवीपाई याप्रकारसेंगोढवाड़देशकीचतुरासीज्ञात है

अथगुजरातदेसकी ८४ ज्ञात।

(वार्ता) यह गुजरातदेशकी चौरासीज्ञातमें जोजो महाजन गिने जातेहैं वह नीचे चक्रमें लिखेहैं किसी ८४ में कोईजातहै और किसी८४ में कोई जात है यह केवल देसप्रथाहै जो महाजन जिसदेसमें जादाहुये वोही चतुराशीमें जाहर व सामिलहै.

अथगुजरातदेसकीचौरासीन्यात।

(चक्रनम्बर २)

१	श्रीमाली	१८	खातरवाल	३५	जंबू	५२	वाग्रीवा	६९	मौड
२	श्रीश्रीमाल	१९	खीची	३६	झलियारा	५३	वावरवाल	७०	मांडलिया
३	अगरवाल	२०	खंडेलवाल	३७	ठाकरवाल	५४	वामणवाल	७१	मेडौरा
४	अनरेवाल	२१	गसौरा	३८	डीडू	५५	वालमीवाल	७२	लाड
५	आढवरजी	२२	गूजारवा	३९	डींडोरिया	५६	वाहौरा	७३	लाडीसाका
६	आर।चितवाल	२३	गौयलवाल	४०	डींसावाल	५७	वेडनौरा	७४	लिंगायत
७	औरवाल	२४	नफाक	४१	तेरौड़ा	५८	भागेरवाल	७५	वाचडा
८	औसवाल	२५	नरासिंघपुरा	४२	तीपौरा	५९	भारीजा	७६	स्तवी
९	अंडौरा	२६	नागर	४३	दसारा	६०	भुंगरवाल	७७	सुररवाल
१०	कढेरवाल	२७	नागेंद्रा	४४	दोइलवाल	६१	भुंगडा	७८	सिरकेरा
११	कपौल	२८	नाघौरा	४५	पद्मौरा	६२	मानतवाल	७९	सौनी
१२	करवेरा	२९	चीत्रौडा	४६	पलेवाल	६३	मेडतवाल	८०	सौजतवाल
१३	काकलिया	३०	चहत्रवाल	४७	पुष्करवाल	६४	माड	८१	सारविया
१४	काजोटीवाल	३१	जारौला	४८	पंचमवाल९	६५	मेहवाडा	८२	सौहरवाल
१५	कौरटावाल	३२	जीरणवाल	४९	वटीवरा	६६	मीहीरीया	८३	साचौरा
१६	कंबौवाल	३३	जेलवालं	५०	बरूरी	६७	मंगौरा	८४	हरसौरा
१७	खड़ायता	३४	जेमा	५१	वाईस	६८	मंडाहुल	८५	

अथ दक्षणप्राँत चतुरासीन्यात।

(चक्रनम्बर ३)

१	श्रीमाल	४	कटनरा	७	कठनेरा	१०	कंदोइया	१३	खंडवास्त
२	श्रीगुरु	५	ककस्थन	८	काकरिया	११	खडायते	१४	खंडेलवाल
२	कपौला	६	कमाइया	९	कारेगराया	१२	खरवा	१५	गोलवाल

१६	गोंदोडिया	३१	धाकड	४६	पोरवाल	६१	ब्रह्माका	७६	आनंदे
१७	गोलपुरा	३२	धँवल	४७	पोसरा	६२	भवनगेह	७७	औसवल
१८	गोगवार	३३	नराया	४८	पंचम	६३	भाकारिया	७८	गाजिया
१९	गंगेरवाल	३४	नरसिया	४९	वघेरवाल	६४	भूंगडवाल	७९	लवेचू
२०	चतुरथ	३५	नरसिंगपुरा	५०	वपर्छवाल	६५	मटिया	८०	लाड़
२१	चकोड	३६	नागोरी	५१	वडेला	६६	महता	८१	सडोइया
२२	चकचाप	३७	नाथचल्ला	५२	वदवइया	६७	माया	८२	सरडिया
२३	चौरडिया	३८	नाछेला	५३	वहडा	६८	मांडलिया	८३	स्वरिंद्र
२४	जनोरा	३९	नेमा	५४	वघेरवाल	६९	मोडमांडलि०	८४	सोरडवाल
२५	जालोरा	४०	नोटिया	५५	वागरोरा	७०	मेड़तवाल	८५	सिंगार
२६	जेसवाल	४१	परवाल	५६	वावरिया	७१	अग्रवार	८६	सेतवार
२७	टकचाल	४२	पलीवाल	५७	विदियादा	७२	अष्टवार	८७	सौनेया
२८	टंटारे	४३	पहासया	५८	वुढेला	७३	अवकथवाल	८८	हरद्
२९	तरोडा	४४	पवारछिया	५९	वैस	७४	अस्तकी	८९	हरसोरा
३०	दसोरा	४५	पितादि	६०	वौगार	७५	अडालिया	९०	हाकरिया

इति दक्षिण प्रांत ८४ न्यात   ९१ हूमड

अथ दक्षणप्रांत ८४ ज्ञात।

(कवित्त घनाक्षरी) हूमर १ खंडेलवाल २ पोरवाल ३ अग्रवाल ४ जेसवाल ५ प्रवार ६ बघेरवाल ७ जानिये ॥ बावरिया ८ रु गोल वाड ९ गोलपुरा १० सिरिमाल ११ ओसवाल १२ मेडतवाल १३ पल्लीवाल १४ बानिये ॥ गंगेरवाल १५ खडायते १६ लवेचू १७ बैस १८ नाथचल्ल १९ ॥ खरुवा २० सडोइया २१ कढनेरा २२ उब-खानिये ॥ कांकरिया २३ कपोला २४ हरसौरा २५ औ दसौरा २६ फेर ॥ नाछेला २७ टंटारे २८ हर्द २९ जालौरा ३० प्रमानिये ॥ १॥ सिरिगुरु ३१ नौटिया ३२ चौरडिया ३३ भूंगरवार ३४ धाकड ३५ बोगरा ३६ गौगवार ३७ लाड ३८ जानके ॥ अवकथवाट ३९ विदियादा ४० ब्रह्माका ४१ सारेडवाल ॥ ४२ मांडलिया ४३ अडालिया ४४ स्वरिंद्र ४५मायान्यातके ४६॥अष्टवार ४७ चतुरथ ४८ पञ्चमा ४९बपर्छवार ५०॥ हाकरिया ५१ कंदोइया ५२ सौनैया ५३ आछी

अथ श्रीमाल गौत्र १३५ ।

(वार्ता) श्रीमाळजातीके महाजन १३५ एकसौपैंतीस जातके गौत्र हैं तिनकानाम नीचे चक्रमें खुलासा देखो.

१	कटारिया	२८	चरड़	५५	व्याधीया	८२	वाइसक्ष	१०९	मुरारी
२	कहूधिया	२९	चांडी	५६	तावी	८३	वारीगौत	११०	मूंदाडिया
३	काठ	३०	चुगल	५७	तरट	८४	वायडा	१११	राडिका
४	काल	३१	चंडिया	५८	दक्षणत	८५	विमनालक	११२	रांकियाण
५	कालेरा	३२	चंदेरीवाल	५९	नाचण	८६	वीचड	११३	रीहालीम
६	कादइये	३३	चक्काडिया	६०	नांदरिवाल	८७	वौहलिया	११४	लवाहला
७	कुराडिक	३४	छालिया	६१	निरद्धम	८८	भद्रसवाल	११५	लडारूप
८	कुठारिया	३५	जलकट	६२	निवहाटिया	८९	भांडिया	११६	लडवाला
९	कूकडा	३६	जूंड	६३	निवहेडिया	९०	भालौटी	११७	सागरिप
१०	काडिया	३७	जूंडीवाल	६४	परिमाण	९१	भूवर	११८	सागिया
११	कौफगढ	३८	जांट	६५	पचौसलिया	९२	भंडारिया	११९	सांभळती
१२	कंबैतिया	३९	झामचूर	६६	पडवाडिया	९३	भांडूगा	१२०	सीधूड
१३	खगल	४०	टांक	६७	पसरेण	९४	मौथा	१२१	सुद्राडा
१४	खारड	४१	टांकरिया	६८	पंचौभू	९५	महिमवाल	१२२	सौहू
१५	खौर	४२	ढींगड़	६९	पंचासिया	९६	मळठीया	१२३	सौठिया
१६	खौचडिया	४३	डहरा	७०	पाताणी	९७	मरदुला	१२४	हाडीगण
१७	खौसाड़िया	४४	डागट	७१	पावडगौत्र	९८	महातियाण	१२५	हेडाऊ
१८	गदउडघा	४५	डूंगरिया	७२	पूराविया	९९	महकुले	१२६	हीडौय्या
१९	गलकडे	४६	ढौर	७३	फलवाधिया	१००	मरहठी	१२७	अंगरीप
२०	गपताणिया	४७	ढौढा	७४	फाफू	१०१	मथुरिया	१२८	आकोड्पठा
२१	गदइया	४८	तवल	७५	फाफलिया	१०२	मसूरिया	१२९	उवरा
२२	गिलाहला	४९	ताडिया	७६	फूशपाण	१०३	माथलपुरी	१३०	बोहोरा
२३	गींदौड़्या	५०	तुरक्या	७७	वहापूरिया	१०४	मालवी	१३१	सांगरिया
२४	गूजरिया	५१	दुसाज	७८	वरडा	१०५	माल्हमहटा	१३२	पलहौट
२५	गूजर	५२	धनालिया	७९	बदलिया	१०६	मांदौटिया	१३३	घूघरिया
२६	घेवरिया	५३	धूवना	८०	बंदुवी	१०७	मूसल	१३४	कुंचालिया
२७	घाघड़िया	५४	धूपड़	८१	वाहकटे	१०८	मौगा	१३५	

(वार्ता) यह श्रीमाल जातीके महाजन गौत्र १३५ हैं और इनका चालचलन विवाहादि कर्मकांडक्रिया व वर्तनूक बहुधा गुजरातियोंकी प्रथासें मिलतीहुईहै और इनका प्रचारभी अतिशयकरके गुजरात काठियावाड गौढवाड झालावाड व मालवा अवंतिप्रांतमें विशेषहै और आद उतपती जिनकी पाई उनकी प्रगटकर दिखाई और अधिकनहिंपाई उनकी किंचितही दरसाई पाई सोछपाई रहीसोछिपाई॥

इतिश्री श्रीमालजाती गौत्र १३५ वर्णनसंपूर्ण.

अथ अग्रवार साढेसतरह गौत्र ।

प्रथम भगवाननें च्यारवर्ण उतपन्नकीये ब्राह्मण मुखसें क्षत्रि भुजासें वैश्य उद्र वा जंघासे शूद्र पगथलीसें वह अपना २ अधिकार पाकर जवन विषय स्वकर्मकर तेरहे यह तीनवर्ण (ब्राह्मण क्षत्रि वैश्य) कों द्विजसंज्ञादी और कर्म कांडभी वेदोपनीषदोंसें करनेकी आज्ञा मिली वहां ब्राह्मण राज्यकार्यकरता वही राज्यरुषी कहलाया जाताथा वहाँ एक राज्यरुषीके वंसमें धनपालनामराजा माहाप्रतापी हुवा और उनकाराज्य प्रतापनग्रमेंथा ताके आठपुत्र और एक मुकटा नाम कंन्याथी ताकं न्याका विवाह याज्ञवल्क रुषीसें कीयाथा औरआठपुत्रोंकोंविशालनाम राजाकी आठकन्याव्याही ताघरानेमें रंगनामराजामहाप्रतापीहुवाताके पुत्र विशौक और विशौकके मधु मधुके महिधर ता महिधरके पुत्रपौत्रोंमें अग्रसेननामक राज्यरुषी महाप्रतापी और धर्मज्ञहुवा वह अपनें नामसें अगरानग्र व अगरौहानग्र बसाया और दिल्ली मंडलमें निष्कंटकराज्य करतारहा तासमय पंगनकेराजाके पास दोयनागकंन्यामाहा रूपवंतथी एककानामतोमाधवी और दूसरीका नाम कुमुदथा ताकूंदेख कर सुरपति मोहितहुवा औरपंगनपातिसें वह नागकंन्या मांगनेंलगा और इधर उस नागकंन्यासें सुरपाति मोहितथा तब वह नाग

कन्या इंद्रको तो नहिंदी और राजा अग्रसेनकों व्याहनेकी उम्मेद
कीतब इंद्रने राजापे कोपकीया और उसके देसमें वृषा नहींकी और
प्रचंडवायूसें पृथ्वीका जल शौषनकरालिया तबराजा अग्रसेन इंद्रसें
जुद्धकीया और फतेपाई फेर सब राज्यकार्य अपनी पाठराणीमाधवी-
कों सौंपकरआप बनमें तपस्याकरनेंलगा वहाँ गर्गमुनीका समागमभयो
तहाँ उनकीसहायतासें हरद्वारहौकर कासीमें आये औरकपिलधारापे
जग्यकीया और माहादेवकी कृपाद्रष्टी प्राप्त हुई तब माहादेवजी प्रसन्नहो
कर राजासें कहा बरमांग तब राजा यहवर माँगनेलगाके सुरपति मेरे
आधीनरहे जब संभू यहीवर दानदीया और कहाके माहालक्ष्मी देवी
ताकी उपासनाकर जिससें तेरा भंडार द्रव्यसें पूरितरहे और इंद्रआधी
नरहेगा तब राजा माहालक्ष्मीजीकी पूजनकरनेंलगा जब महालक्ष्मी
प्रसन्नहो बरदेकरकहा हे राजन अबतूं कोहलापुरनग्रमेंजावहाँमहिधर
नामराजा नागकंन्याका स्वयंबररचाहै उस कंन्यावोंसें विवाह करके
अपना बंसचला और म्हें तुष्टवानभईहूं ताकारिके तेरे बंसमें कोईदरिद्री
नहिं रहेगा तबराजा तुरतही कोहलापुरपहुँचा वहाँ जाकर महिधरनाम
राजाके स्वयंबरमें १७ सतरहनागकंन्याँवोंके संग विवाहकीया फिर
हस्तनापुरकेपास आकर अगरोहानग्रसें पंजाबतकअपनाराज्यजमाया
और उनास्त्रियोंसें अपनाबंसबढाया यहबात इंद्रसुनकर महाभयातु
रहुवा और नारदमुनिकेसाथ अपनि मधुशालनीनाम अपछरा देकर
राजासें पीछे मेलकिया पीछे राजाअग्रसेन यमुनाजीके तटपर अति
अनुष्ठानकीया तब लक्ष्मी पुन्ह प्रसन्नहोकर कहाके हेराजन तेरेकुलकी
अधिकोधिक बृद्धीहोगी और तेरे नामसें तेराकुल प्रसिद्धरहैगा और में
तेरे कुलकी रक्षाकरनेवालीकुलदेवीहूं तूं जा जग्यकर यहकहकर देवीतो

अंतरध्यानभई और राजाजग्यकी पूर्णाहुतीकर ब्राह्मणोंकोंगऊदान सौवर्णदान मुक्तादानादि धनपूरितकर दक्षणादे आशीर्वादलिया और अपना राज्य करतारहा और यज्ञारंभशरूरहा सू सतरहजग्यतोसंपूर्ण हुवा और अठारवाँ यज्ञहोरहाथा सू अर्धहुवा तासमय राजाकूँ कुछ ग्लानी प्राप्तभई तब अर्धजग्यमेंही शांतिकरदी ताकारनसें साढीसतरह जग्यभये तब गर्गमुनीनेंकहा हे राजन तेरेनामसें साढीसतरहगौत्र और तेरेनामसें कुल वैश्यजाती अग्रवार श्रीमाहालक्ष्मी शक्तिके बरसें और हमारी आशीर्वादतें प्रगटहोगा तब राजा अग्रसेन अपनें सतरह राणीतो नागकंन्यावो और अठारवी राणी मधुशालनी इंद्रकी अपछरा उनोंसें जो पुत्रप्रगटहुयेथे उनराज्यपुत्रोंको अपनी २ स्त्रियोंसहित बुलवाकर कहातुम वैश्यपदधारणकरो और आपसका भ्रातृधर्म छोडकर मेराकुल अधिकोअधिक प्रगटकरो तब सतरहराजकुमार अपनें पिता अग्रसेनकी आज्ञा व अपनेगुरु गर्गमुनीकी आशीर्वचनलेकर वैश्यपद मंजूरकीया और प्रथमगौत्र गुरुनामसेंगर्गनामरक्खा वाकीगौत्र जग्योंके नामसें रक्खे और अठारवां अर्धजग्यथा उस्कानाम गोलणगौत्ररक्खा और कहाके यह आधागौत्र अगाडीप्रगटहोगा ऐसें प्रथक २ नाम रखकर अग्रवार वैश्यपदवी दी और गुरुगार्गपुत्र (आदगोड़के पग पूज यज्ञो पवित्रादिविष्णु धर्मधारणकीया और श्रीमाहालक्ष्मीजी कुलदेवीस्थाप नकरपूजाकरी वहांविधी भविष्योत्तर पुराणके उत्तर भागमें वर्णनहै या प्रकार त्रेतायुगके प्रथमचर्ण मितिमार्गशीर्ष कृष्णपक्षकी पंचमी तिथी और बार शनीश्चर प्रातसमय अग्रवार बंसप्रगटभया (दोहा) बदिमिगसरशनिपंचमीत्रेतापहलेचर्ण ॥ अग्रवारउतपतभये सुनभा- खीशिवकर्ण ॥ १ ॥ (वार्ता) याप्रकारसें अग्रवार पदवी लई और विष्णुधर्म कुलदेवी माहालक्ष्मी गुरु गार्गवबंसके गोड़ ब्राह्मण ऐसें साढीसतरह गौत्र ठहराये खुलासा चक्रमें देखो.

(चक्र नम्बर १)

१	गर्गयानेंगर	४	सिंगल	७	ऐरण	१०	जिंदल	१३	कुंछल	१६	मितल
२	गौयल	५	कांसल	८	ढेरण	११	जिंजल	१४	विंछल	१७	सितल
३	मंगल	६	वांसल	९	विंदल	१२	किंदल	१५	बुद्दल	१८	गौलणगौण

ऐसें साढीसतरगौत्र नामरक्खे और अग्रवार वैश्य कहलानें लगे ता पीछे राजा अग्राथणरुषीअपनें पाटवी पूत्र विभूकौंराज्यकार्य सौंपकर आप तपस्या करनेके निमित पाथोजबनकौं चलागया पछि विभूके पूत्र पौत्रोंमें दिवाकर नाम राजाहुवा वह वैष्णव धर्म छोडकर जैनधर्म धारणकरलिया और बहौतसे अग्रवार राज्यकार्यकरनेवाले जैनी होगये ताकारनसें अग्रवार वंशमें दौयमतहैं केईकवैष्णवधर्मधारिकहैं और केईक जैनधर्मधारिकहैं ऐसे अपने २ स्वस्थानोंपें कार्यकरनेलगे पीछे अगरोहानग्रमें बादस्याहस्यहाब्बुदीननें लडाईकर मुलककौं तबाहकीया तासमयमें अग्रवारे अपना वतन छोंडकर अपरदेसौंमें जाबसें परन्तू बहौतसारहना हस्तनापुरके पश्चिमोत्तरमेंहै और उनगोतोंमेंसे कुछेक नामभी बदलकर दुसरे बौलेगये वहनाम नीचेलिखतेहैं सू चक्रमें देखौ

(चक्र नम्बर २)

१	गरगौत	४	मंगलगौत	७	कासल	१०	ढेरण	१३	झिंधल	१६	हरहर
२	गौयलगौत	५	तायलगौत	८	वांसल	११	सिंतल	१४	किंधल	१७	वच्छिल
३	सिंगलगौत	६	तरलगौत	९	ऐरण	१२	मिंतल	१५	कच्छिल	॥	गरसूगूण

(वार्ता पुन्हऐसेभीनाम शब्दकाअपभ्रंशहोकरदेशप्रथासे बोले जातेहै)

(चक्र नम्बर ३)

१	गर्ग	४	मंगल	७	कांसिल	१०	ढेरण	१३	मधल	१६	गोभिल
२	गोयल	५	तायल	८	वांसिल	११	तुग्रल	१४	तिंगल	१७	गावाल
३	सिंहल	६	तत्तल	९	एरण	१२	मित्तल	१५	ठिंबल	१८	गरन

(वार्ता) याचक्रप्रमाण नामभीबोलजातेहैं और केईक अग्रवाले हस्थनापुरसें दक्षिण वा पश्चिम सेखावटी मागवाड गोढवाडमें

पसतेहैं उनका नाम औरही तरहसे जैसें बजाज नागौरी पटवा मेवाड़ा पसारी इत्यादि बोलनेलगगयेहैं वह केवल देसप्रथा व रूजगारकेनामसों रूढीपड़कर बोलतेहैं और असली गोतोंमेंसें कुछेकगोत लुप्तभीहोग येहैं पर श्रीमहालक्ष्मीजीका प्रतापसें बडे २ मायापात्र धर्मज्ञ वैष्णव सेवापरायण हरिहर मताऽनुवैभव व जैनी सर्वमतधारी मायापरिपूर्ण होकर रजमानहै और दानपुन्यधर्ममें इनकी बुद्धि निपुणहै सू श्रीजी इनबंसकीबृद्धि अधिकोऽधिकरक्खे ॥ इतिअग्रवारबंसोत्पत्ति सहाशि प्रकरण रामरतन दरक माहेश्वरी मारवाड़ी मूंडवेवाला कृत समाप्त०॥

अथ औसवाल महाजन उत्पत्ति ।

(छन्दछप्पय) राजाउपलदेपंवार नगरऔसियानरेश्वर ॥ राजरी-तभोगवे सगतसचियादीन्हौंवर ॥ नवसौचरूनिधान दियेसौनइयादेवी ॥
[illegible]
एकरसबदीतहोय ॥ नहिंराजपूत्रचिंतानिपटसगतप्रगटकहिकथासौय १॥ हेराजाकिसकाज करौंचिंतामनमाँहीं ॥ सुतनउदरदतवलिख्यौदेऊँकिम-अंकाविनाँई ॥ नृपतहोयादिलगीर दीनबायकफिरदाखै ॥ पूत्रविनाँसुर राय राजम्हारोकुँणराखै ॥ देवीदयाविचार बचनदीन्हौंनिरदोसी ॥ रहै म्हारोरायनिचिंत पूत्र निश्चयएकहोसी ॥ जुगजाहरजसपूरसुख घणाँनराँप णहलटसी ॥ चहुँवाणआँणफिरसीअठे पंवाराँगढपलटसी ॥२॥ देवीकेब रदान पुन्यराजफलपायौ ॥ नामदियौ जयचंद बरसपनारापरणायौ ॥ पूतपिताभिड़पास महलसहलाँसुखमाणेंतिणअवसरारीषिरायरत्नप्रभु-मासखमाणें ॥ सिखचौरासीसाथब्रत्तसंयमसबसाधेधरेध्यानइकतारदेव-जिनइंद्रआराधे ॥ सहरमेंगयासिखबहरबा धरमलाभकरताफिरे॥इणनग्र माहिंदातानको बसेसूमसाखासिरे ॥ ३ ॥ घरघरसिखफिरगये पवीतर अहारनपायौ ॥ बीप्रएकातिणवार बचनइसड़ौबतलायौ ॥ ममग्रहपावन

करो धिन्नधिनभागहमारो ॥ आजहुवो आवणों मुनिइहदेसतुमारो ॥ सू झतोहारदोषणविनाँ खीरखाँडबहराइया ॥ ऊजलेचित्तदोजणाँ लेगुर आगलआईया ॥४॥ देखगुराँगोचरी ध्यानआलोहनकीयो ॥ शबदतणेप रवाण जोयब्राह्मणघरलीयो ॥ नग्रमाँहिंनमलाख बसेवरएकसरीखा ॥ सगतपंथमतबाद सीरुसिंदूरीटीका ॥ समझहुवा थिरमान ध्यानअंतरसूँ खोले ॥ सिष्यप्रतीमाहराज मुसिकखबायकबोले ॥ गुरुकहैवारलागी घणीकहोसिष्यकिह कारणें सूझतोऽहार मिलियो नहीं हूँ फिरियो घर-घर बारणें ॥५ ॥ सिषसुखकेसुणबेणऽहारपिरथ्वीपरठायोपिवणस्यापहुय गयो महलनृपसुतके धायो ॥ पिवणस्यापपी गयो कँवरनेंचैतनकाई ॥ नहिंसासविसवास सोग हुयगयोसताई ॥ हाहाकारहुवोसहरमेंदागदेण-चालीदुनी ॥ रतनप्रभू साम्हल रुदन दयादेखमेंल्योमुनी॥६॥ मुनिबा-यकसुणवेनभ्रम्मराजानभुलानों॥ कोंननामगुरुकठेसाचदाखवोटिकानों॥ नृपतबचनसुणके मुनीउत्तरइमधारो ॥ उणखेजड़ेअस्थान कँवरनेलेर-टधारो ॥ साधाँ सरणे आय नृपतबीनतीकरावे ॥ सीसहुतीसेहरो मुकट-रिषिचर्णधरावे ॥ माफकरोतकसीरअब आपचूकबखसाइये ॥ मोब्रध्ध-कालकीलाज है गुराँकुँवरजीवाइये ॥७॥ करुणाँसिंधुदयालनृपतकूँहासिं-वरदीयो ॥ गयोरोसततकाल मृतकसुततताछिनजीयो ॥ घिरचोस्वास-बिसवास नैंनखुलियामुखबाचा ॥ रोग दोखसबदूर सबदसतगुरका साचा ॥ आलसमोड़तऊठियो कहैनींद आईभलाँ ॥ किहकाजमनें ल्यायाअठे दुरसकहोसाचीगलाँ ॥ ८ ॥ खँमाखँमासबकहे ऊठगु रुचरणाँलागा ॥ मंगलधँवलअपार बधावाआनंदबागा ॥ तोरणछत्रनि-साँण कलससोवनाबधावे भरमोतियनकाथाल सखिनमिलमंगलावे ॥ ओछाड़ियामहलबाजारघररतनाँचोकपुराइयाजरिखीनखाँपपगपाँतिया रतनप्रभूपधराइया ॥ ९ ॥ नृपतकरेबीनती जोड़करहाजरठाढो ॥ कृपाकरोमाहराज धरममेंरहसूँगाढो ॥ पटापरगनाँगाँव खजानाँ खास

खुलाऊँ ॥ कबहुनलौपूँकार हुकमश्रवणाँसुणपाऊँ ॥ गुरूकह्योत्यागधन माँगबो एकवचनमोहिदीजिये मिथ्यातत्यागजिनधर्मगहौदानसीलतप कीजिये ॥१०॥ तहतबचनउरधार नृपतश्रावकवृतलीया फुरडूंडीफि रवाय नारनरभेलाकीया ॥ भिन्नाभिन्नबाखाण सुणेगुरमुखकेबायक ॥ छवकायाप्रतिपाल सीलसंजमसुखदायक ॥ करमनसोबौसकलमिलमा नमोड़करजोड़िया ॥ सिधान्तजानजिनधर्मकों सक्तिपंथसुखमोडिया ॥ ११ ॥ सीलतणोंद्रढसाच करेपोसापड़कूणाँ ॥ सम्मायकसमभाव समकतीदिनदिनदूणाँ ॥ हिंसाकोनहिंलेस देसमेंआणफिराई ॥ धर्मतणाँ फलमिष्ट सकेसांभलज्योंभाई ॥ इहिभाँतजैनधर्मधारियो शक्तिपांथ सुखमोडके ॥ गुराँबचनासिरधारिनृप मानमोडकरजोडके ॥ १२ ॥ (दोहा) ईष्टमिल्योमनमिलगयो मिलमिलमिलियामेल ॥ फूलबास घृतदूधज्यूँ तिलियनमाँहींतेल ॥ १३ ॥ सेहंसचोरासीएकलख घरधि णतीपुरमाँह ॥ एकणथालअरोगियाभिन्नभावकछुनाँह ॥ १४ ॥ आँटा झगडाछोडिया गढमढशस्त्रसिपाह ॥ निरहिंसकनिरकपटहै चालतझी णीराह ॥ १५ ॥ छंदछप्पय॥ बहरमानतणें पछे बरषबावनपदलीयो ॥ श्रीरतनप्रभूसुरनाम तासुसतगुरुब्रतदीयो ॥ औस्याँहूतऊठिया जाय- भीनमालबसाणाँ ॥ क्षत्रिहुवासाखअठारा उठेओसवालबखाणाँ ॥ इक लाखचोरासीसहस्रघर राजकुलीप्रतिबोधिया ॥ श्रीरतनप्रभूओस्याँन- गर ओसवालजिणदिनाकिया ॥ १६ ॥ प्रथम साख पंवारसेस सीसोद सिंगाला ॥ रणथंभा राठौड़ वंश चंवाल बचाला॥ दया भाटी सोनगरा कछावा धन गौड कहीजे॥ जादम झाला जिंद लाजमरजाद लहीजे ॥ खरदरापाटओपेखरा लेणाँपटाजलाखरा ॥ एकादिवसइता माहाजनहुवा सूरबडाभिडसाखरा ॥ १७ ॥ गयोराजधारगई प्रथ्वीपलटी पँवाराँ ॥ ऊपलदेराजान करण लाग्योबेपाराँ ॥ इकबचनासतबैणझूटको कंधऊ- ठायो कोडीरुपियोंव्याज नफोब्रधतोंनहिंखायों ॥ इहभांत विगत एसें

हुई दुनियाआगेदौजगाँ ॥ पंवारौँघरप्रौयताँ ज्यूँऔसवालगुरभौजगाँ ॥ १८ ॥ एकलाखदेगऊ एकलखतुरीसमप्पै ॥ कंन्यावलसेससात बावनराजाथिरथप्पै ॥ देवीसचियामान भद्रपूजेसैंजौडे ॥ औस्याँगढ में आय छत्रसौवनोंचहौड़े ॥ समतदौयबावीसवें रिधूनामरहआवियो॥ अैसौजसाहभलतीजियो आभानगररंगछावियो ॥ १९ ॥ दोहा ॥ समतदौयबावीसके औसवालक्षत्रीहुवा ॥ चवदासौचंवालनख सकलक हूंजूवाजुवा ॥ २० ॥

अथ औसवाल माता गौत आचार्य ।

(वार्ता) औसवाल माहाजन उत्पत्ती वि० संवत २२२ औसियाँनगर राजा उपलदे पंवार ताकूँ आचार्यजी श्रीरतनप्रभुजी कंवल गच्छे प्रतिबौधितं प्रथम गौत कांकरिया प्रगटकीया तापीछे जाती नाम गाँमादि नामसें गौत प्रगट सौ यहाँतककी विक्रमसंवत १७०० तक हौतेगये औसवालगौत १४४४ नाम कहते हैं परकुछपारनहिंपाया जोकुछनाममिले वो लिखे हैं (१ श्रीहेमचंद्रसूरीजी आचार्य मलधारगच्छ प्रतिबौधितं) (२ छाजेड राठौड़वंस) (३ चौपड माता संचिकाय) (४ डांगी) (५ धाकड़) (६ दूगड) ७ घूप्या) (८ पींपाडा) (९ नवलखा माताआसापुरा) (१० कूकड ११ चौपड १२ गणध १३ चौपड़ा १४ सांड यह ५ गौत भाई हैं मलधारगच्छ आचार्यजी श्रीहेमचंद्र सूरीजी प्रतिबौध० कूकड गौततें ४ फेर प्रगट हैं १५ पामेचा १६ पौखरण मातासंचाय सं २४२ प्रगट० १७ मरड़चासोनी १८ पौकरणा राठौड ग्राम हटा साह प्रति० १९ बडौला माताबरडवल) २० बरडिया२१ बरड२२बाघमार मातासंचाय आश्विनशु० ९ चैत्रशु० ९ पूजीजे २३ चौरवाडिया मातासंचाय गौत ४ भाईहैं आमदेव १ ।२४ गादिया२।२५ गोलेचा ३ ।२६ पारख ।४। भैंसासाहका

वंसमें प्रथम चौरवड़िया गौतप्रगट हुवा) २७ मटा २८ खान्या २९ भीलमाल ३० गोखरू ३१ नपावल्या ३२ सांखला ३३ सुरपुरया ३४ सुकलेचा ३५ वापणा ३६ वोल्या ३७ सेठिया ३८ दक ३९ सीयाल ४० सालेचा ४१ पूनमिया ४२ नावेडा ४३ हींगड ४४ लूणिया ४५ आलावत ४६ पालावत ४७ थरावत ४८ मौहिवाल ४९ खुडद्या ५० टौडरवाल्या ५१ माधेटिया ५२ गडिया ५३ गोढवाड्या ५४ पटवा ५५ गांग ५६ दूधेडिया ५७ संगवी५८सांडल (सांड५९ सियाल ६० सालेचा ६१ पूनम्या६२च्याक्रूँभाईहै) साँडल६३वोरद्या ६४ वरड माताआसापुरा हलपूजन मितीआश्विनशुक्क ९ मिति चैत्र-शुक्क ९ ये दोय तिथिपूजे) (६५ बावेला ॥ चहुवाण मुनिचंद्रसूरजी चक्रेस्वरीदेवी आराधन औस्याँनगरे मंदमांसादित्याग संवत २४२ पीछे भीनमाल आया सं. ५५१ पंचौलपणाकोकाम पंचोलीवावेल०) (६६ संगवी बावेलमेंसूँ सं. १२७५बावेलगुसजनीवाजे०मलधारगच्छ श्रीरतनप्रभूसूरदेवप्रविबोध ०) ६७ तेल्या (६८ तलेरा करहेडा पार्श्वनाथजी प्रसादतं तेलखरीदियो मंदिर तेलका गारासूकरयोसं१५२० जिसबखत राणाजीनांवकढायो तेला तलेरा मलधारगच्छे श्रीहेमचंद्राचार्यजीप्रतिबोधितं० (६९सौलंखीराजासिंधरावसोलंखीप्रतिबोधितं०) ७० छोहोरया७१तातेड मातासंचाय लढा महेश्वरीप्रतिबोधस.१०१६ देवीपूजाअश्विनशु. ९ चैत्रशु. ९)७२ नावेडाभीनमालग्रामप्रतिबो०मलधारगच्छ७३खाटेडगौत ७४ रौटागणगोत ७५ कावड्या७६आकामार्गे ७७ पटविद्या ७८ नेणेसरमाताअंबका ७९ डूंगरवाल (८० नपावल्या संतनाथप्रशादतं) ८१ नांदेच्या नंदरायजीनेप्राति०विजयागच्छ (८२ सौनगरा चहुवाण संमत १५३२ विजयगच्छ (८३ सचेतीढिल्लिवाल पंवार मातासचेतीमलधारपूनमियागच्छ) (८४लौढामाताबडवलपूजा आश्विनशु. ९ चैत्रशुक्क ८) (८५ श्रीश्रीमाल ८६श्रीमाहाल(८७गेव

रियासाखा माताब्रह्मसांत पूजा मितिचैत्रशु. ९ अश्विनशु. ९ दोयवार पूजे संमत २४२ मलधारगच्छेप्रतिबोधितं) (८८ ढिल्लीवाल मातासंचायपूजे चैत्रशु. अश्विनशुक्ल ९ गांव औसियांछोडके भीनमालजाय वस्या)(८९ बरिणी ९० मटासमंत ४४४ प्रतिबोधितं)(पूरवमहेश्वरी मूंधडा पूत्रक्ददाती वौलिग्राम मटा गोत्र) (९१ बोराणी बीराजीसूंबीराणीहुवाबीराणीदोयप्रकार)(९२ बाफण हेमचंद्रसूरणजीप्रतिबोधगच्छ) (९३बापणामें२२गौतहैं मातासंचायश्रीरतनप्रभूजीप्रतिबोधितं०)९४ सचेती मातासंचाय संमत २४२ गच्छ (९५ सुराणा ९६ सांखला पंवारजगदेवनेंआचार्यजीश्रीहेमचंद्रसुरणजीप्रतिबोधितंजयदेवकेपूत्र २ सूरजी १मधुदेवजी२सूसूरजीकासुराणांसांवलजीकासांखला मातासुसाणी औरलौसल संमत १०३२ अवपांचबोंकहै सुराणां १ सांखला २ कक्रेचा ३ फलौदिया४नखत५(९७.सुरपुरचा माता आसापुरा)९८ सुकलेचा (९९ सीसौद्या बापारावलनेंप्रतिवो० वापाकेपूत्र३ तीनराफा १ माफ २ श्रवण ३ रांकाका रावल१ डूंगरपुरग्राममाफ २ का राणजी चीतोडगादीश्रवणकासीसौदिया) १०० नाहार साहलछमणजीमहेश्वरीमूंधड़ाजिस्केसूंडाजीगुरांप्रतापपुत्रहुवोनाहारनिंचूंगी तिणसेंनाहार श्रीमिलधारगच्छ संमत १०२२)(१०१ बापणा पंवारबंस मातासंचाय अश्विनशुक्ल ९ पूजेआचार्यजीश्रीहेमचंद्रसुरणजीप्रतिबोध०) (१०२ रांका बांका रांकाजीकारांका बांकाजीकादक बलभीगाँव रांकाजीका ४ बोक (रांका १०२ काला १०३ गौरा १०४ सेठीपावरा १०५ (बांका १०६ दक १०७) यहछवगौतभाईहैदक संमत १२७५ तेजपालजी बसतपालजीकेपाँत्येजीमिया मलधारगच्छ पांचमकीसमच्छरी पाले श्रीहेमचंद्राचार्यजीप्रतिबोध०१०८ खमिसरा १०९ खटवडमतालखासण सं. २४२ मलधारगच्छ भटारकजीश्रीहेमचंद्रसुरणजीप्रति

बौंधे खींवसरग्राम बासखेपमेल्यौ जिणसूँ खटवड खींवसराकहीजे खींव सरासाखा गांवखाटूमें पूरणमलजीपंवारप्रतिबोधितं (११० बंब पंवार वंसस २४२ मितिमाहासुद१४शनिवार भटारकजीश्रीहेमचंद्रसुरणजी प्रतिबोधितंबंबेराग्रामे साहानरायणदासजीकोकुष्टनिवारणं तासमयश्रा वकधर्मधारणकीयो ताकेपूत्र १६ ताका १६ गौत्र) ११० बंब १११ गाय ११२ आलावत ११३ पालावत ११४थरावत ११५ मोहीवाल ११६ खुडद्या ११७ टौडरवाल११८ माघोटिया ११९ गाडिया १२० गौढवाड्या १२१ पटवा १२२ बीरावत १२३ दूधेड़िया १२४ गांग १२५ गोध इनसौलहगौतकीमातासंचायमितिआश्विनशुक्क ९चैत्रशु८।९ पूजीजे ॥ गांवबंबेरा सूँऊठकर गांव गाँवाणी आया देवलकराया समेत सिखरजी आबूजी गिरनारजी दादा रिषभदेवजीकी यात्राकरीसंवत ४५२ वर्षे पुन्हकुष्टनिवारणं तहां गोध गौत्र स्थापनं गुरुपदपूजनं गुरां नेंकलपशुत्र मौत्यां की माला चंद्रवा ७ मोहोर २५ रूपया १०००० चेला १९ भेटकीया जहांसे मलधार गच्छका श्रावग अंगीकारकीया पून्योजथं गौत्र१६(१२६ गेलड़ागहलोंतबंस नागौरग्राम संवत १५५२ मातादाहमपूजे भटारखजी श्रीहेमचंद्रसुरणजी ताकासिष्य मुनिचंद्रसुर णजीनागौरआयातबगहलौतांगुरांकाघोड़ाँनेंदाणोदेवणोंसूमोहोरांकातो बोरा भरके चढायदीया तब घोडांमोहोराँखाईनहीं तहांगुरांकयौथेबडाग हलडाहोघोडातोदाणोंखायहैंजबसेंगहलडागौतहुवामातादाहमपूजैआश्वि- नशु. ९ चैत्रशु८ पूजन२) १२७पगारचा १२८खेतसी १२९मेडतवाल राजाविक्रमकेप्रोयत संकरदासब्राह्मण भीनमालनग्रेशिवधर्म त्यागो जैन मतधारणकीयो कुष्टनिवार्णं ताके दौयपूत्र खेतसी पगारसी सू पगार सीकापगारचा खेतसीका खेतसीगौत पछेमेडतवालवाज्या यह तीनूं भाई हैं मातासौहिलपूजे मितिआश्विनशुक्क ६ चैत्रशुक्क ६ मलधारगच्छे आचार्यजीश्रीहेमचंद्रजीप्रतिबोधितं० ॥

औसवाल गौत नाम ।

(श्री)	काला	गणध	(छ)	ढीलीवाल	धाडीवाल	पटवा
श्रीमाल	कातरेला	गडिया	छजलाणी	ढेढिय	धाडीवाह	पटविद्या
श्राश्रीमाल	कावडचा	गहलडा	छाजहड	(त)	धाकड	पगारिया
(अ)	कांकरया	गाधिया	छाजेड	तलेरा	धीया	पगारद्या
अमड	कंकालिया	गाय	छोहोरचा	तातहड	धूर	परघाला
अशुभ	कांचालिया	गावडिया	(ज)	तातेड	धूंधा	पारप
आलावत,	कुंकम	गांग	जणिया	तिलहरा	धूप्या	पापडिया
आयरा	कुभट	गंधिया	जालौरा	त्रिपेकिया	धेनडीया	पामेचा
आमदेव	कूकड़	गूगलिया	(झ)	तेलया	धौरचा	पालावत
आलाझाड	कूहड	गेवरिया	झंवक	तोडरवाल	धंग	पीपाड़ा
आकाशमार्गे	कूकडा	गौरा	झावक	(थ)	(न)	पीपलिया
आँचडिया	केड	गौखरू	झांवड	थरावत	नवलखा	पंचौलीबावेल
आंबागौत	कौवर	गौदेचा	(ट)	थररावत	नपावल्या	पूनमिया
(उ)	कौठारी	गौलेचा	टूंकलिया	(द)	नखत	पूनमिया
उस्तवाल,	कौठेचा	गौढवाडचा	टैडरवालया	दरगड	नडुलाया	पूनम्यॉं
उतकंठ	(ख)	गौध	ठाकुर	दक	नक्षत्रगौत	पूंगलिया
(क)	खटवड	गौलवच्छा	(ड)	दरड	नाहर	पौकरणा
कल्याणा	खाटौडा	धौसा	डफरिया	दीपग	नाहटा	(फ)
करणावट	खाटेड	(च)	डागा	दूणीवाल	नावरिया	फूलफगर
कटारिया	खाव्या	चहुवाणा	डागुलिया	दूधोड़िया	नाणावट	फौफलिया
कल्याण,	खीवसराझंवर	चतुर	डाकूपालिया	दूदवेड़िया	नागपुरा	फौकाटिया
कउक	खींमसरा	चीपट	डांगी	दूगड	नावडा	फलोधिया
करणाटी	खुडद्या	चीपड	डूंगरवाल	देसरला	नावेडार	(ब)
कणौड	खेमासरद्या	चौखडिया	डीडू	देहरा	नाडूलया	वरहाडिया
कठियार,	खेमानंदी	चौपड़ा	डौडिया	देवानंदी	नांदेचा	वछायत
करहेडा	खेतसी	चौधरा	(ढ)	दोसी	नेणेसर	वराड
कक्कड़	खडभंडारी	चौपडा	ढावरिया	(ध)	(प)	वडलौका
ककरेचा	(ग)	चंडालिया	ढिलीवाल	धनचा	पसला	वडगौत्रा

वलाही	विनयका	वंठिया	मकुयाणा	रांखेचा	लौटा	सुरपुरया
वलदोवा	वीरावत	(भ)	महाभद्र	रावल	लौलग	सुरपुरया
वणभट	वींरावत	भड्डडिया	मगादिया	राणाजी	(स)	सुकलेचा
ववाला	वीराणी	भडारा	माळू	रायभंडारी	सचेतीढिलीवा	सूरपुरा
ववेल	वीराणामूधडा	भद्रा	माधौटिया	रांका	सखला	सेठिया
वरडिया	वुरड	भडकतियां	मुहणाणी	रूप	समुद्रिया	सेठिपावरा
वडौल	वैद्य	मक्कड़	मूंहणौं	रूपधरा	सवरला	सौनगरा
वरड	वेहड़	भटेवरा	मूहणोत	रूंणवाल	सचेती	सोलंखी
वरड़	वेगड़	भाभू	मेडतवाल	रेहड	सालेचा	सौनी
व्रह्मेचा	वेताला	भीलमाल	मोहीवाल	राटागण	साहेल	सांड
वाघमार	वेतला	भौराडिया	मौहीवाल	(ल)	साखला	संगवी
वापणा	वौथरा	भौर	मौहववा	लकड़	साखल	संड
वापणा२२भाई	वौकडाया	भंगलिया	मंडौवरा	लखवाणी	सियार	संखला
वाफणा	वौहरा	भंडगोत	मंडौचित	लींगा	सीखा	सुंदर
वाग्रेचा	वोहरीया	भंगसाली	मंगलिया	लुंबक	सीसोदिया	संवल
वामानी	वौल्या	(म)	(य)	लुंकड	सीरोहिया	सखवालेचा
वाताडिय	वौरध्या	मटा	यक्षगोत	लूणावत	सीयाल	संगवी
वाका	वंब	मरडचौसौनी	योगड	लूणिया	सियाल	संचती
वालड	वंवौड़	मणहडिया	(र)	लेला	सुदेवा	(ह)
वावेल	वंस	मसरा	रतनसुरा	लेवा	सुराणा	हथुडिया
वाहरिया	वंका	मणहड़ा	राताडिया	लोढा	सुंदर	हींगड़
						हेमपुरा

अर्जसूचना सविनय ।

(वार्ता) औसवाल महाजन गौत्र १४४४ वर्णनकरते हैं उनमेंसे जितनें गौतके नाम गौत्रदेवी पेढामिलेवोलिखादियेहैं बाकी किसी महाशयोंकोयादहौयवहपत्रपौष्टद्वाराभेजेंतोतृतियावृत्तिमें दर्जकीया जायगा इसीहेतूसेस्वजन महाशयोंसें बारंबारसविनयप्रार्थनाप्रगटकीहै शि०रा० ।

अथ जैनमत ८४ गच्छनाम ।

(अ)	(ग)	(ड)	४२नाडूलिया	५८वोकाडिया	(र)
१ अनंपुरा	१५ गछपाल	२९डोकाउवा	४३नेगमिथा	५९ वोरसडा	७४रूदेलिया
२ आगमियाँ	१६ गुवेलिया	(त)	(प)	(भ)	७५ रेवइवा
(उ)	१७ गुदावाल	३० तपा	४४ पलिवाल	६० भरनरा	(स)
३ उठविया	१८ गंगेसरा	३१तीकडिया	४५ पालनपुर	६१ भरवछा	७६साधुपून०
४ऊसंगच्छा	१९ गंधार	द	४६ पुनतरा	६२ भावटगा	मियाँ
(क)	(च)	३२ दासरुवा	४७पंचवल्हण	६३ भीमसेनी	७७ साचोरा
५ कनरसा	२० चित्रवाल	३३दौथदणी	(ब)	६४भिन्नमाल	७८ सांडोरा
६ काछलिया	२१ चितवाल	(ध)	४८ वरडवा	(म)	७९ सिघांति
७ काबोना	२२ चीतोडा	३४ धर्मघोष	४९ वडगछा	६५ मलधार	८० सिद्धपुरा
८ किरेडिया	(छ)	३५ धुंधरवा	५० वहेडिया	६६ महकर	८१ सुराणा
९ कुंचाडिया	२३छातरीवाल	३६ धुधरवा	५१वडोदिय	६७मसोनिया	८२ सूपारिया
१० कोरावाल	(ज)	३७ धोपवाल	५२ब्रह्माणिया	६८ मंडार	८३ सेवता
११ कोछीपूरा	२४ जगायन	(न)	५३ वाइड	६९मांडलिया	८४संगडिया
(ख)	२५ जालोरा	३८ नागदी	५४ वाघेरा	७० मुजाहरा	(ह)
१२ खरतर	२६ जांगल	३९ नागोरी	५५ बिगडा	७१ मुंहडासि	८५ हंसारिया
१३खंभायती	२७जीणहारा	४० नाणावाल	५६ विजोहरा	७२मोगडिया	
१४खंभाणिय	२८जीरावास	४१नागरकोटी	५७ बुतपुरा	७३मोरेवडाल	

प्रथम ८४ गच्छ थे. या समयमें ८५ गच्छ हैं

अथ दसमत १०

१ आंचलियामाति २ पाइचंदमाति ३ काजामाति ४ पाटणियामाति ५ लूंकामाति ६ साकरमाति ७ कौथलामाति ८ कडावामाति ९ आतममाति १० वीजामाति लूंकामेंसूनिकलंक

अथ ८४ गच्छउत्पत्तिनाम

संवत	गच्छनाम
९९४	प्रथमपौसाल मंडी ८४ गच्छहुवा
१००१	खरतरगच्छ ऊजलामहात्माकहीजे.
१२१४	आचल्यां गच्छहुवा
१२३४	नागौरीतपाहरसौरागच्छ थापनहुवा.
१२५०	आगमिया. पूनमियामहात्माहुवा
१२६५	तपौ. प्रथमतपौगच्छ १ चित्रांवाद २ दोनूतपकीयौसूतपौगच्छहुवा
१५२७	तरंयंति. तरंउदेपुरिया. भवसरियाहुवा.
१५२३	मुहता लूंकासें लूंकागच्छहुवा
१५३१	स्वयंमेवलूंकाहुवा.
१५१८	कुंवरयतिहुवा
१५७२	तपाजतीक्रियाउद्धारकीयौ
१५८३	आनंदविमलक्रियाउद्धारकीयो
१५७६	पार्श्वचंदकीयाउद्धारकरी
१५४४	बीजामतीलूंकामांहसूंहे
१६०२	आँचलियाक्रियाउद्धारी
१६०५	खरतरक्रियाउद्धारी
१७३५	लूंकामाँहसूँढूंढ्या १ वीजामती २ निकले ढुंढ्या संवत १७३५ हाजीफकीरकीदवासे प्रगट०

अथ पौरवाल जांगड़ा गौत्र २४ ।

(वार्ता) पौरवारजांगड़ागौत्र २४ है इस्में जैनी व विष्णुदोनूं धर्मवाले हैं और इनका रहना बहौत करके चंबलनदीकी छायामें रामपुरा मंदसौर मालवा हुलकर सिंधेके राज्यमें विष्णुपौरवार ३००० तीनहजार घरवसतें हैं वाकीजैनधर्मधारिकभी पौरवार जांगडे मंदपुर उजीन वगेरे गावौमें हैं ।

(पौरवालगौत्र चक्रम्)

१	चौधरी	६	डबकरा	११	ऊधिया	१६	मंडावस्या	२१	नवेपस्या
२	काडा	७	भादल्या	१२	बखरांड	१७	मजावटया	२२	दानगड
३	कामल्या	८	भूत	१३	फरव्या	१८	मुनिया	२३	रतनावत
४	धनघड्	९	भेसोटा	१४	लभेपरया	१९	घाठ्या	२४	खरडया
५	धनौत्या	१०	सेठ्या	१५	महता	२०	गालिया		

अथखंडेलवाल श्रावक गौत ८४.

प्रथम आदनाथजीसूँलगाय और माहावीरस्वामीपरियंत जैनधर्मके साथ जैनीकहावतेरहे फेर महाबीरस्वामीकों मुक्तपधारे ६८३ वर्षहोगये तापींछे उजीणनग्रमें विक्रमानामराजा सूर्यवंशी पंवार चकवे मंडलीक राज्यकरके संवतचलाया तदनंतर संवत १एककी साल अपराजीत मुनिका सिघाड़ामेंसें जिनशेनाचार्य५०० मुनिराज साथलेकर विहारकरता २ संवत १ कामिती माहाशुक्ल५कोंखंडेलेआये तहाँ खंडेलानग्रकेराजा खंडेलगिर सूर्यवंशी चहुवान राज्यकरे ता. खंडेलानग्रकी अमलदारीमें गांव ८३ तँयासीलगे वहाँ केई दिनोंसें संपूर्णराज्यधानीमें माहामारीविशूचिकारोग अत्यंतफेलरह्याथाजारोगकरिकेहजारोंमनुष्य खंडितहोगयेथे तब राजाखंडेलगिरचैयतकी यहविवस्थादेख अतिदुखितहुवा औरमृत्यु आगमनजान भयातुरहोके भौदेव ब्राह्मण रुषीश्वरोंकों बुलाकर ऊंचे स्थानपे बैठाय पूजनकर सविनय प्रार्थनाकरी और कहा अहो भोंदेव यह उपद्रव,कायतेंमिटे तब द्विज ज्योतिष पुराण रमल वेदसुम्रत्यादिघट शास्त्र और शांतिकग्रंथ विचारकर बोले हे राजन नरमेधजग्यकर ताकीरके शांतिहोवेगी तबयथोचितकहकर राजाजज्ञकाप्रारंभकरताभया और यज्ञहेतू मनुष्यमंगवानेंकीआज्ञादी तासमय एक मुनिराज समस्थानभौमिमें ध्यानलगाय खडेहुते तिनकों नृपके किंकर पकड़के लेगये और यज्ञसालामें ल्यायके मुनराजकोंन्हवाय कर वस्त्र भूषण पहरायेपीछे राजाके हातसें तिलककराय हातमें साकल्यदेकर हवनकी वेदी कुंडमें

स्वाहाकरतेभये देखौ राजानें कैसे अविवेकसें मूर्खताकीसो प्रथमतौ मुनिराजका व्रतखंडनकीया; और चौकसनहींकी केवल अंधपनेंकी बातकर कैसा अनाचारकिया देखौअबलतौ मुनिराजके ध्यानसें विच्छे पपड़ा पुन्ह भूषणादि पहराणेंसें व्रतखंडितकीया पुन्ह साधूकौंजीतेजी होम दियाताापकारिके देसमें असंख्या गुणा कलेस और उपद्रवहोता भया पुन्ह माहाभयंकर घौर समय वरतणेंलगी अग्निदाह अनावृष्टि प्रचंडवातादि कष्टतेंप्रजापीडितहोकर राजाकेपास पुकारूगयेतबनृ- पतम्हासौचमें अंधाधुंधहोकरमुरछागतहोगयातासमयमें स्वप्नप्राप्तहो मुनिराजके दरसणहोते भये औरमूर्छादूरहोकर पीछे नेत्रखुले तबराजा भ्रमाक्लितचित उठकर रयत और ठाकुरसबउमराव भाई बेटाँ सहित बनमें विचरते भये वहाँ पांचसौ मुनिराज ध्यानधरतेहुतेतिनकौं दृष्टी सें देख राजाजायकर महामुनिके चरणारविंदमें मस्तकद और नाँनाँ- भाँतिसें रुदनकर प्रार्थना करतेभये तब मुनिराजबोले हेराजन दया- पालो तबराजा पूछाकरतौभयो हेमाहाराज मेरे देसमें उपद्रव बहोत कलेशहासो काहेते और कैसें निरवर्तहोयतबमुनिराजकहतेभये हेराजन यहनरमेधजग्यतेनें किया ताकातातकालफलतेरेकूँप्राप्तहुवाहैतेनें बिना विवेक मुनिकौं होमदीया तातेंदुःखपावताहैपुन्हऔरपावेगाजबराजाबहो तलौचारहोकरमानमोडहातजोड़करप्रार्थनाकरता भया तब माहामुनि राजकोंदया आवतीभईजबराजाकौंप्रतिबोधकरनेलगेहेराजनपापमेंपुन्य धर्मकहाँ देख तैने भोंदेवोंके कहनेसें नरमेधजग्यका आरंभकरअविवेक सेंमुनिराजकों होमदिया तो हेराजन जरा समझना चाहियेके तेरेकौं तेरा जीव कैसाप्यारालगताहै जैसासर्वज्ञजाणले येहीग्यानकामूलहै अब तुम कौं यहजैनधर्म रुचताहोयतो अंगीकारकरो और धर्मपालो व जिनधर्मके मंदिर चैताले कराके ग्राम २ और देशदेशांतर परगनौंमें प्रतिमापधरा वो तोशांतिहोवेगी तब राजा बडेभावतें पूजनकरवाईऔर अपनें उमराव

८३ तंयासीठाकूरॉसमेत श्रीगुरॉसें श्रावकधर्म अंगीकारकीया क्षात्रि ८२ और दोयगांवके सुनार हाजरथे वह सबजने मिलकर श्रीजिनसैन्याचार्य जी माहामुनीके चरणॉंलागतेभये तापीछे संपूर्णदेसमें शांतिभई और जिनधर्मकी महिमा बंधी तहॉं शिव वैष्णव धर्म छोडकर जिनधर्मसारेदेस आचर्यो तासमयमें मुनिविहारकरनेंकी इच्छ्याकरी तबराजाहातजोडकरकह्यो हेमाहाराज अब हमारेकूं क्या आज्ञाहोय सोहुकमकीजेतब श्रीजिनसैन्याचार्य माहामुनिराजाकों यह बखसीसकरी और साहागोत ठहरायो सोठीलारातासाह वाकीगॉंवॉंके नाम गोतहे साहकी देवीचक्रेश्वरी बाकीका ठाकुर ८३ की देवी आपरके राजकुलीकी और गॉंवके नामसें गोत इसतिरह ८४ गोतठहराया और खंडेलवाल श्रावक यानेंसरावगी जातीप्रगटभई अब ८४ गोतकी बंसावली गांव देवी गोत लिखते हैं ॥

खंडेलवालश्रावक गोत्र ८४

सं	गोत	वंस	गांव	देवी
१	साह	चौहान	खंडेलो	चक्रेश्वरी
२	पाटणी	तंवर	पाटणी	आमा
३	पापडीवाल	चौहान	पापडी	चक्रेश्वरी
४	दौसा	राठौड़	दौसा	जगाय
५	सेठी	सौमवंसी	सेठाणियौ	चक्रेश्वरी
६	भौसा	चौहाण	भौसाणी	नांदणी
७	गौधा	गौधड़	गौधाणी	मातणी
८	चादूवाड़	चंदेला	चंदूवाड़	मातण
९	मौठ्या	ठीमर	मौठ्या	औरल
१०	अजमेरा	गौड	अजमेरचो	नांदणी
११	दरड़ौद्या	चौहाण	दरडौत	चक्रेश्वरी
१२	गदइया	चौहान	गदयौ	चक्रेश्वरी
१३	पाहाड्या	चौहान	पाहाड़ी	चक्रेश्वरी
१४	भूंच	सूर्यवंश	भूछड़	आमण
१५	वज	हेमवंश	वजाणी	आमण
१६	वज्जमहाराया	हेमवंश	वजमासी	मौहणी
१७	राऊफा	सौम	रालौली	औरल

सं.	गौत	वंस.	गांव.	देवी.
१८	पाटौद्या	तंवर	पाटौदी	पद्मावती
१९	गगवाल	कछावा	गगवाणी	जमवाय
२०	पाघडा	चौहान	पादणी	चक्रेश्वरी
२१	सौनी	सौलखी	सौहनी	आमण
२२	बिलाला	ठीमरसौम	विलाला	औरल
२३	बिरलाला	कुरुवंसी	छौटीबिलाली	सौतल
२४	विन्यायक्या	गहलौत	विन्यायकी	वेथी
२५	वांकलीवाल	मौहिल	वांकली	जीणी
२६	कांसलीवाल	मौहिल	कांसली	जीणी
२७	पापल्या	सौढा	पापली	आमण
२८	सौगाणी	सूर्य	सौगाणी	कन्हाडी
२९	जांझरचा	कछावा	जांझरी	जमवाय
३०	कटारचा	कछावा	कटारयौ	जमवाय
६१	वेद	सौरडी	वदवासा	आमणी
३२	टौग्या	पंवार	टौगाणी	पावडी
३३	बौहोरा	सौढा	वोहोरी	सौतली
३४	काला	कुरु	कुलवाडी	सौहणी

सं	गौत	वंस.	गांव	देवी.
३५	छावड़ा	चौहान	छावडा	औरल
३६	लौग्या	सूर्यवंस	लगाणी	आमणी
३७	लुहाडाचा	मौरटया	लुहाडचा	लौसिल
३८	भंडसाली	सोलंखी	भंडसाली	आमणी
३९	दगवत	सौलंखी	दरड़ौद	आमणी
४०	चौधरी	तंवर	चौधऱ्या	पद्मावती
४१	पौटल्या	गहलौत	पौटला	पद्मावाति
४२	गींदौडचौ	सौढा	गिन्दौडी	श्रीदेवी
४३	साखूण्या	सौढा	साखूणी	सिखराय
४४	अनौपडचा	चंदेला	अनौपडी	मातणी
४५	निगौत्या	गौड	नागौती	नांदनी
४६	पांगुल्या	चहुवाण	पांगुल्यौ	चक्रेश्वरी
४७	मूलाण्या	चहुवाण	भूलाणी	चक्रेश्वरी
४८	पीतल्या	चहुवाण	पीतल्यौ	चक्रेश्वरी
४९	वनमाली	चहुवाण	वनमाल	चक्रेश्वरी
५०	अरडक	चहुवाण	अरड़क	चक्रेश्वरी
५१	रावत्या	ठीमरसौम	रावत्यौ	औटल

सं	गौत	वंस	गांव॰	देवी॰
५२	मौदी	ठीमरसौम	मौदहसी	आरल
५३	कौकणराज्या	कुरुवसी	कौकणज्या	सौनल
५४	जुगराज्या	कुरुवंसी	जुगराज्या	सौनल
५५	मूलराज्या	कुरुवंसी	मूलराज्या	सौनल
५६	छहडद्या	कुरुवंसी	छहडद्या	सौनल
५७	दुकडा	दुजाल	दुकडा	हेमा
५८	गौती	दुजाल	गौतडा	हेमा
५९	कुलभाण्या	दुजाल	कुलभाणी	हेमा
६०	वीरखंडद्या	दुजाल	वीरखंडी	हेमा
६१	सरपत्या	मौहिल	सरपती	जीण
६२	चिरडक्या	चौहाण	चिरडकी	चक्रेश्वरी
६३	निगर्द्या	गौड	निरगद	नांदणी
६४	निरपौल्या	गौड	निरपाल	नांदणी
६५	सरवडद्या	गौड	सरवडद्या	नांदणी
६६	कडवडा	गौड	कडवंगरी	नांदणी
६७	सांभरद्या	चहुवाण	सांभरचौ	चक्रेश्वरी
६८	हलद्या	मौहिल	हरलौद	जाणिधयाडा

सं॰	गौत॰	वंस॰	गांव॰	देवी॰
६९	सौमगसा	गहलौत	सौमद	चौथी
७०	बंवा	सौढा	बंवाली	सिखराय
७१	चौवाण्या	चहुवात	चौवरत्या	चक्रेश्वरी
७२	राजहंस	सौढा	राजहंस	सिखराय
७३	अहंकारद्या	सौढा	अहंकर	सिखराय
७४	भूसावडद्या	कुरु	भसवडद्या	सौनल
७५	मौलसरा	सौढा	मौलसर	सिखराय
७६	भांगडा	खीमर	भांगड	औरल
७७	लौहडद्या	मौरठा	लौहट	लौसलधिया
७८	खेत्रपाल्या	दुजाल	खेत्रपाल्यो	हेमा
७९	राजभद्रा	सांखला	राजभद्रा	सुरसती
८०	भुंवाल्या	कछावा	भुंवाल	जमवाय
८१	जलवाण्या	कछावा	जलवाणी	जमवाय
८२	वेदाल्या	ठीमर	वनवौडा	औरल
८३	लठीवाल	सौढा	लटवाडा	श्रीदेवी
८४	निरपाल्या	सौरटा	निरपती	अमाणी

इतिखंडेलवाल श्रावक ८४ गौतवंसगावदेवी उत्पाति संपूर्ण शुभम्

जैनमत सिद्धवरकूटनामस्थान वर्णन ॥

इसको प्रथम प्रसिद्धकर्ता इन्दोर सहरमें मोदी भूरजी सूरजमलजी मोतीलालजी श्रावकपांपल्यागोत्रवालेहैं ॥ यह इतिहासभी धर्माभिलाषी जैनीभाइयोंके धर्मवृद्धिहितार्थ हमलिखतेहैं कि यह स्थान मालवदेस इन्दोरसें २२ कोश दक्षण व खंडवासें उत्तरमेंहै इष्टेसन खेडीघाट व सनावदसें ३ कोश ऊँकारेश्वरतीर्थवहासें १ मील श्रीभेरूसिंहजी रावराणाकाराज्यमें पंध्यानामकग्राम रेवानदीके पश्चिम कावेरीनदीके तटपरहै और यात्राभी माघशुक्ल ८ सें १५ पूर्णमातक हरसालहोकर अनेक प्रकारपूजाप्रभावना धर्मोन्नतीहोतीहै इसस्थानकाइतिहास प्रथम ऊपरलिखेनामवालोंनें छपवायाथा अव वहि श्रीमान्य मोतीलालजी मोदीकी आज्ञाके हम इस ग्रंथमें वर्णन करतेहैं ॥ श्रीवीतरागदेव ॥

स्वस्तिश्री आर्य्यावर्तशुभस्थान उत्तमजन आवास सर्वोपमायोग्य सकलगुणनिधान गुणग्राहक धर्मानुरागी धर्मज्ञ धर्मावतार धर्मात्मा गुणगणालंकृत भूषित चारकाणाम् प्रतिपालक मिथ्यात्वनाशक सत्य प्रकाशक अनेकनयधारी कुगतिगदविदारी तत्वश्रद्धाधारी स्वगुण हित निहारी दिगम्बरआम्नाय श्रीसकलसंघचउविध धर्मके उत्साही योग्य विदितहोकि परमपुरुष वीतराग धर्मकी अधिकमहिमाहै कि इसपंचम कालमेंभी साधर्मिजनके हेतु तत्काल धर्मवृद्धि कारणदरसावेहै परंतु निश्चय दृढविस्वास विनाँ कार्यसिद्ध नहिं होय यातें प्रथम दयामइधर्म निर्ग्रंथ गुरु सत्य शास्त्रका दृढश्रधा राखे तब तत्काल कार्यसिद्धहोय सो साधर्मिजन इसवार्ताको अवश्य निर्णयकर द्रढ श्रधानको प्राप्तहोंगे भव्यजन जो शास्त्र द्वारा आजपर्यंत विदितथाकि सिद्धवरकूट नामक सिद्धक्षेत्र रेवानदीके तट मध्यसें पश्चिमादिशामेंहै एसा अनेकशास्त्रोंमें महात्म वर्णन किया है पुन्ह श्रीनिर्वाणकांडमें लिखा है ॥ गाथा ॥ रेवा

तडम्मितीरे दक्षिणभायस्मिसिद्धवरकूटे ॥ आउटय कोडिउणि. रेवा तडाम्भ तीरे संभवनाथस्स केवलुप्पती आउटय कोडिउं (भावार्थ)

दोचक्रवर्ति दसकामदेव साढे तीनक्रोड़ मुनिराज कर्मरूपीशत्रुको ध्यानरूपी खड्गकर विदार सिद्धपदको प्राप्तहुयेहैं ताते यहभूमि देवानि कर बंदनीकशुद्धहै।यासिवाय औरभी असंख्यात मुनि मोक्षगयेहैं याप्र कार माहात्म प्रगट था परंतु यथार्थ स्थानकी भूमी अप्रगटथी सो ऐसें विदितहुई कि श्रीमंत भट्टारक महेंद्रकीर्ति श्रीइन्दोरपट्टका स्वप्नद्वार संवत १९३९ कार्तिकृष्ण १४ कों श्रीसिद्धक्षेत्रकी रचना व श्रीजिन विंदके दर्शनसहित। गिरइत्यादि शास्त्रोक्तदृष्टि आये तब उक्तस्थलचि न्हके निर्णयहेतू उसस्थानपे गये अपूर्वआश्चर्यकारी अतिशयदृष्टिआये कि उक्तस्थल अतिरमणीक शोभायमान मोहनीरूपहै वहाँ सिंह दयाल मनुष्य रागद्वेस रहित एकसंग विचरते देखे यथार्थ है। कि जिना- तिसयके प्रभावसिद्ध क्षेत्रस्थल क्यों न अतिशययुक्तहोयअवश्यहोयहि होय (दोहा) श्रीजिनजपश्रधानते पावकपानीहोय॥अहिहरमत्तरुदुष्ट सह तापदसेवतसोय ॥ १ ॥ इत्यादि अतिशयदेख विस्वासधार आगे वनमें गमनकीया तो साक्षात श्रीचंद्रप्रभास्वामीकी प्राचीनप्रतिमा संवंत १२७९ सिति वैशाखशुक्ल ६ राणाउदयसिंहजीके राज्यमें स्वामी वि- शालभूषणके हाथकी प्रतिष्ठित दृष्टिआईऔरद्वितीयप्रतिष्ठाश्रीसोमसेन स्वामीकेहात साहा माणकचंद हेमदास सुत धर्मदासनें कराई ऐसें भां- ति२प्रतिमाके दर्शनहुये और प्राचीन मंदिरभी द्रष्टीआया ताद्वारपरश्री वीतराग छविकी मूर्ति बनीहुई या सिवाय२।३ देवालय जिनमंदिर फूटे- हुये द्रष्टिआये तब निश्चयहुवा कि यहीसिद्धवरकूट सिद्धक्षेत्र अतिशय युक्त प्रगटहुवा ॥ तब शास्त्रवेता धर्मानुरागी कर्नाटकवासी भट्टार्क श्रीचारुकीर्तिजी व श्रीगोमठस्वामीवाले श्रीसूरसेनभट्टाचार्य आदि माहाशय दृष्टिकरस्थलनिरूपणकिया तब सत्य निश्चय हुवा कि सिद्धवर

कूंटनामाँ तीर्थ यहीहै यह वार्ता संवत १९४० में निश्चयहुई तबभट्टा
कंश्रीमहेंद्रकीर्तिजी इन्दोर पट्टकीआज्ञानुसार मोदीजी श्रीभूरजीसूरज-
मलजी मोतीलालजीइन्दोरीलालजीफूलचंदजीश्रावक पांपल्यागौत्रकी
इच्छाउक्त स्थान नवीन श्रीजिनभवन बनानेकीहुई ॥ श्रीमंत गुणखान
पुण्याधिकारी राजाधिराज श्रीहुलकर इन्दोर श्रीतुकोजीराव हालविद्य-
मानश्रीमंतराजाधिराजशिवाजीराव हुल्करकीआज्ञा और सहायतासे-
कर सम्वत १९४० माघशुक्ल २ शुभलग्न श्रीजिनालयका काम प्रारंभ
किया सो आजपर्यंत कामप्रचलितहै व धर्मशाला अनेकधर्मस्थानभी
बनगयेहैं सत्यहै जोजीव पुण्यकीप्राप्ति व निजअर्थ साधनकीइच्छाक-
रतेहैं तिनहीका उत्तमधन धर्मकार्यमें लगताहै हेभव्यजनो० द्रव्य
विनाशिक दामनीवत स्थिर नहीं रहताहै और अंतसमय साथभीनहिंजा
ताहै यहसबजानतेहैं परलोभीमनुष्य धर्मकार्यमेंभी नहिं खरचते केव
ललोभवश्य अविवेकताकाकारनहै जिनधर्म प्रभावसे अनेक विघ्न टले
व सुखस्वरूप होय प्रवर्ततेहैं ॥ उक्तस्थलके दर्शनप्रभावसें अनेकप्रका-
रकी व्याधी मिटतीहै और युक्तभूमी की रजभी शुद्धभावसें निश्चयकर
शरीरमेंलगानेसेंअनेकरोगदूरहोय सुंदरता प्रगटकरती है वनिवासकरनेसें
मनकीविशुद्धताहो द्रव्यकी प्राप्ति होतीहै यह अवश्यसत्यहै ॥ यहीस्था
नपे श्रीजिनमंदिरनहेतुइन्दोरसरकारसें अधिक मदतहुई लकडी चूना
ईंट पथ्थर आदि इनामी मिले व यात्रानिमित्त भूमीका महसूल माफ
होकर यात्रियोंके रक्ष्यार्थ प्रयत्न भी स्वच्छतापूर्वक रहताहै और
मंदिरकी देखरेखके अधिकारीमन्नालालजीवाकलीवाल उच्छाह युक्तहैं
या भूमिके दर्शनतें अनेक पापनाशहोके उत्तमगति और उत्कृसुख
प्राप्त होयहै याते सर्व साधर्मिजनके कल्यणार्थ यह पत्रद्वारा उक्तस्था-
नकी भूमि करब, ठिकाना विदितकीयाहै ॥ सो उत्तमजन धर्मके ग्राहक
उत्तमसुखकेवांछक इष्टवस्तुके संजोगार्थ अवश्य उक्तभूमीके दर्शनकर

अपना नरभव कृतार्थकरें और द्रव्यकी महिमाभी तीर्थ यात्रा धर्मकार्य कीयेतें सफलहोयहै ॥ अहो भ्रात्रिगणो धर्म अपंग (पांगला) है सो साधर्मी बुद्धिमानन गुणज्ञोंके चलायेसें चलताहै यहविचार अवश्यतीर्थ यात्रानिमित्त उद्योगकरनाचाहिये मार्गकी घोषना प्रथमवर्णनकरचुके॥ भव्यजन दर्शनाभिलाषी दर्शनवंदनाभावभक्तिसें कर मनुष्यजन्मको सुफलकरें तातें शिव (मोक्ष) का अविन्यासी सुख प्राप्तहोय ॥ श्लोक धर्मः सर्वसुखाकरो हितकरो धर्म बुधाश्चिन्वते ॥ धर्मेणैव समाप्यते शिवसुखं धर्माय तस्मैनमः ॥ १ ॥ भावार्थ धर्म अप्रबलहै तातें सम्पूर्ण सुखप्राप्तहोय धर्मतें कल्याण व बुद्धिकी वृद्धिहोय पुन्ह धर्मरूपी समुद्रमध्ये अविनाशी लक्ष्मीवसैहै और धर्मके प्रभावते ४ पदार्थ (द्रव्य अर्थ काम मोक्ष) सिद्ध होयहै॥ अधिककयालिखें ॥ दोहा॥ यह अथाह्अर्णवसुभग, को कवि पारलहाय ॥ गुणसमूहकथनीकरन गणधरथकितरहाय ॥ १ ॥ श्रीसिद्धवरशुभकूंटहै अतिशयमुक्तमहान ॥ नमो भूमिताहाँतेंगये अगनितमुनिनिर्वान ॥ २ ॥ शुभऊँकारपुरीशुभग मालव देशबखान ॥ रेवातटपश्चिमदिशासिद्धसुक्षेत्रप्रदान ॥ ३ ॥ तार जमहिमाँकोकहै वपुलागतगदजाय ॥ उत्तमशोभायुक्तहो मनवांछित फलपाय ॥ ४ ॥ सुरपतिनितपूजाकरेभावभक्तिउरधार ॥ वसुविधिरि पुदलअघहरेपावतमोदअपार ॥ ५ ॥ सज्जनजनातिंहिभूमिको नितप्र तिकरत प्रकाश ॥ धारतप्रेमानंदअति कुगतिकुज्ञानविनाश ॥६॥ बाल मुकुंदरचनाकरी गोधागौत्रबखान ॥ जिनचरणांबुजनितनमै सदरकाग ठीथान ॥ ७॥ द्रगरुवेदग्रहब्रह्म शुभ सम्वत लेहुविचार ॥ पोषचंद्रदश मीअसित पत्रपूर्णकरसार ॥ ८ ॥

इति सिद्धिवरकूटपत्रम् ॥

आपक।—

शिवकरण रामरतन दरक रामसागर छापाखाना; इन्दोर.

अथ बघेरवाल ५२ गौतप्रारंभ ।

(वार्ता) बघेरवाल माहाजन गांव बघेरामें राजा बघ्रसैन्यकी समयमें उत्पन्न भये गौत ५२.

सं.	गौत.	सं.	गौत.	सं.	गौत.	सं.	गौत.
१	खटवडगौत	१४:	वनवाडयागौत	२७	जिठाणीवालगौत	४०	पापल्यागौत
२	लावावासगौत	१५	धौल्यागौत	२८	सथूरयागौत	४१	भूंगरवालगौत
३	साखूण्यागौत	१६	पगारयागौत	२९	जौगियागौत	४२	ठगगौत
४	धनौत्या गौत	१७	वौरखंडयागौत	३०	अवेपुरागौत	४३	वहरियागौत
५	सावधरागौत	१८	दीवडयागौत	३१	निगौत्यागौत	४४	चमारयागौत
६	वावरयागौत	१९	वडमूंडयागौत	३२	कावरियागौत	४५	मुरलायागौत
७	सीधडातौडगौत	२०	तातहडयागौत	३३	ठाइयागौत	४६	सौरायागौत
८	वागडयागौत	२१	मंडायागौत	३४	कुचील्यागौत	४७	सौलौसगौत
९	हरसौरागौत	२२	वालदचटगौत	३५	मादलियागौत	४८	सावूण्यागौत
१०	सादूलागौत	२३	पीतल्यागौत	३६	सेठयागौत	४९	गंवालगौत
११	कौटियागौत	२४	दगौरयागौत	३७	मुंइँवालगौत	५०	केतग्यागौत
१२	भाडारयागौत	२५	भूरयागौत	३८	सांभरायागौत	५१	खरडयागौत
१३	कटारयागौत	२६	देहतौडागौत	३९	सखागयागौत	५२	——

अथ नरसिंगपुरा माहाजन चैनी गौत्र ।

भटारखजी श्रीरामसेनजाकी थापना १०८

(वार्ता) येजो नरसिंगपुरा महाजनहै इनकी उत्पत्ति नरसिंगपुर नग्रतेंहै भटारखजी श्रीरामसेनजी महाराजका उपदेसकरिके मिथ्यातधर्म त्यागनकर निरहिंसक धर्म धारणकिया.

सं.	गौत.	देवी.	सं.	गौत.	देवी.
१	खडनर	वारणी देवी	४	रयणपारखा	रयणीदेवी
२	पुलपगर	पावईदेवी	५	अभयिया	रोहणीदेवी
३	मीलणहौडा	अवाईदेवी	६	मुद्रपसार	भवानीदेवी

सं. गौत.	देवी.	सं. गौत.	देवी.
७ चिभडिया	घलदेवी	१८ खांभीगौत	दरवासनीदेवी
८ पवलमथा	पावईदेवी	१९ हरसौलगौत	चक्रेश्वरीदेवी
९ पदमह	पलवी देवी	२० नागरगौत	नीणेश्वरीदेवी
१० सुमनौहर	सौहणीदेवी	२१ जसौहरगौत	झांझणीदेवी
११ कलसधर	मौरिणदेवी	२२ झडपडागौत	पिशाचीदेवी
१२ कुंकुलौ	चक्रेश्वरीदेवी	२३ बारौडगौत	पिपलादेवी
१३ वौरठेच	वहूरूपणीदेवी	२४ कथौटियागौत	पिरणदेवी
१४ सापडिथा	पसावतीदेवी	२५ पंचलौलगौत	मौरणदेवी
१५ तेलियागौत	कांतेश्वरीदेवी	२६ मौकरवाडा	
१६ वलौलागौत	अंबादेवी	२७ वसौहरागौत	सीवाणीदेवी
१७ खेलणगौत	कंटेश्वरीदेवी		

गौरारा माहाजन जैनी गौत ।

(वार्ता) श्रावक ३ तीनतरहकाहै १ गौरारे २ गौलसिंघारे ३ गौलापूरब यहतीनप्रकारसें बोलेजातेहैं और इनसब लोगोंका जैनमतहै और रहना इनका ग्वालियर इटावा आगरा इलाखेमेंहैं उत्पत्ति कुछ वरा वरपाईगईनहीं फगतगौतामिले सू लिखदीयेहैं किसीप्रियमित्रोंके पास इस्का इतिहास कुछहो लिखके पत्र द्वाराभेजें तो तृतियावृत्तिमें सामिल पुस्तकके कीयाजावेगा.

स. गौत.	सं. गौत.	सं. गौत.	सं. गौत.
१ पावेकेसेंगेई	७ कौसाडिया	१३ ढनसइमागौत	१८ चौधरीकूकरचा
२ गयेलीकेसेंगेई	८ सौहानें	१४ अदवइया	१९ डुवागौत
३ पेरिया	९ जमसरिया	१५ सराफगौत	२० तसटिया
४ वेदगोत	१० चौधरीजासूद	१६ चौधरीवरादके	२१ वडसइया
५ नरवेदपुरवेद	११ चौधरीकौलसे	१७ चौवरीआंतरीके	२२ तेतगुरिया
६ सिमरइया	१२ वरेइयागौत		

सगाई व दत्तपूत्रबिषयमें शिक्षा ।

(वार्ता) सगाईकरनें व दत्तपूत्र (खोळे) लेनेकी समयमें चाहिये कि कंन्याँ पूत्रोंकी परीक्षा करले और एसा अंधाधुंधी न करें पहलेतो नहिंदेखे और पीछे नाप्रशंन कर झगडाडाले इस्काप्रथमही बंदोबस्त यहहै कि अपणा परखाय देख चोख समझ बूझकर सनमंधकरें वा दत्तकलेवें तो यहाँकोईकहेंगेके परीक्षाक्याकरनाहै जोकुछ किसमतमें लिखाहै वैसाहुवाहीरहेगा भलाँ किसने बर अच्छा देखा और कंन्याँके किसमतमें दुःखहीलिखाहोगा तथा दत्तपूत्र अच्छा देखा और कुपात्र निमटेगा तबक्या जोरहै तोयहबातठीकहै पर वहतो अंतरंगलक्षणहै अच्छानिमटना व बुरानिमटणाँ वहतो अगाडीरहा हाँ इतनाँतो यहाँभीजरूरहै के उनकीबोध और प्रनालिका पिछाडीकी देखनाचाहिये कहतेहैं के माजेसीडीकरी और घडोजसीठीकरी तापेएकद्रष्टांत एक समयमें एक साहूकारनें यहमिसरासुनाकेमाताकेगुण कंन्यामें आते हैं और पिताका गुण पूत्रमें आताहै वल्के दादाकेपौतामें और नाँनीकेगुणदोहतीमें वहाँएक द्रष्टांत प्रतक्षअविलोकनहुवाके एकसाहूकारके पूत्रबधूकी नाँनीं विषअहारकीयाथा तब परीक्षालेनेंकेनिमित साहूकारनें अपना द्रव्य व संपूर्ण कारखानोंकी कूँचियें व मालकी बेटेकी बहूकों सौंपदी बादचंदमुदतके साहूकार एकाएकही घबराया हुवा आकर पूत्रबधूसें कहा अयबहू आजतेरा पहननेंका गहना दागीना समेत सब द्रव्य देवेतो इज्जतरहै और इज्जतरहजायगीतोफेरही द्रव्यबहोतहोजायगासो हेबहू सबद्रव्य मेरेकूँ जलदीदे तब पुत्रबधूबोली तुम्हारी इज्जत काल्ह जाती आजहीजावे में द्रव्यनहिंदेउंगी और जादतीकरोगे तो विषपानकरलूंगी यह वचन पुत्रवधूके मुखसें सुनकर हसके बोले बस मेरेको कुछद्र

च्यकीचांछनानहीं फकत तेराइमतिहानहीलेनाथा यह कह कर यह दोहा कहनेंलगा (दोहा) मायसरीखी धीवडी पूत्रपितासमथाय ॥ दादी नानीनिरखिये ओलपहूंतेआय ॥ १ ॥ बेबड़कीनाँनींपियो जहरसुण्यो कसेठ धनमाँग्यो चिन्दाखियो ओलपहूँतीठेट ॥ २ ॥ च्याहूँहिंपछाँ कजली कसरनदीपैकोय ॥ जिणघरतोरणबानिये धणकुळवंतीहोय ॥ ३ ॥ (वार्ता) सो हे स्वजन प्रियबरमित्रों परमेश्वरनें अपनेकों श्रवण नेत्रादि दीयेहैं सो वाह्यके रूप रंग देखनेके वास्तेहैं सो यहाँ कंन्या पूत्रोंको निरख परख करके लेना देना उचितहै जैसें काणाँ खोड़ालूल्हा अंधा चीपड़ा कूबड़ा कुष्टी तिरछादेखनेंवाल बकाई खोरा अर्धअंगरहा कुवा विरडुमुखा गूंगा बहरा उन्मंत्त उलू पेटी लत्ती दिनांध गंजामृगी पांडुरोग क्षईरोग जालंधर इत्यादि रोग खेडवालोंको नेत्रोंसें परीक्षाकरके देखनाचाहिये हाँ इनमेंके कितेकपूत्रकन्या कुछकँवारेनहिंरहेंगेपरआपस मेंदेख परखकर समझके दत्तकलेना व सगपणकरना मुनासिबहै नहीं तो अगाड़ी झगड़ाकरकर छोडना छुडाना चाहोगे यह बातभी बुरीहै उधरवाले कहेंगे पहले क्यूंनहिंदेखलीया इधरवाले कहेंगे तुमने क्यूंनहिं कह दिया तो देखो यहाँ नेत्रोंकी परीक्षा अच्छीहै सो पहले देख परख लेनाहीं उचितहै और ऐसाभीकहाहै(श्लोक) मूर्खो १ शठो २ पापरतो ३ ह्यसीलो ४ वृद्धो ५ दरिद्री ६ च नपुंसको ७ वा ॥ नित्यं प्रवासी ८ निकटं ९ च दूरे १० दोषा दशस्त्याज्य ददौच कन्या ॥१॥ (वार्ता) मूर्ख शठहो पापेष्टीहो सीलरहित (कुसंगी) हो वृद्धहो नपुसंक पूर्षार्थसेंहीनहो नित्यही विदेसगमनी विदेश भ्रमनेवाला होय वा अत्यंतही नजीक एकमोहोल्लेमें रहते होयतोवहाँलज्जाहीनहोनेंकासंभव है वा बहोत दूरहोय जिनका मिलाप होनाँहीं दुलभ वा महानरोगीहोय वहिं प्रथमही देखना उचितहै पुन्ह सगपणकीये वाद एसे अपलक्षण प्राप्तहोजाय वा पाया जाय तो सगपण छूटनेंमें भीकुछ अयोग्यनहीं यहाँ कंन्या अबला

वोंकीभीतरफ पंचजराध्यानरक्खें क्योंकी कंन्यातोकेवल धर्ममर्यादामें बंधी हुई॥माता पिता पंचोंके आधीनहै तो अपनेंको उचितहै कि धर्म मर्यादा वो लज्या कायमरहनेंका ही परियत्नकरें जैसें सगपणकीया और पाणीग्रहण (विवाह) नहिं हुवा वहाँतक यह उपायहै फेर कुछ यत्ननहीं यहाँविचारकरनाचाहिये जैसें हिंज (नपुंसक) निकलजाय कुष्ठहोजाय हातपाँवटूटकर अपंगहोकर कमाखानेसें जातारहै वा पांडुरोग जलंधर अंडवृद्धि मृगी पथरी आदि माहानरोग उत्पन्नहोजायतौसगपणछूटनेमें कुछहरजनहींपरदत्तपूत्रतोलीयेबादकहाँ जाय वह तो अन्नवस्त्रवहाँहीपा वेगा परंतू सगाईमें तो प्रथम जरूरहीदेखनाचाहिये और विवाहमें तोर णकी समय स्त्रियाँ गीतभी गातीहैं के०(सासूनिरखजँवाइये पछेदलीओ लभा०) तो समझना चाहिये कि यह देखकर परीक्षाकरनाँतोप्रथमही ठीकहै जो यह परीक्षा प्रथमहीकरके सगपणकरोगेतो फेर कोईप्रकारकी भी फिसाद झगडा लड़ा नहिंहोगा और दोनोंतरफ स्नेहबराबरबनारहेगा और इसबारेमें झगड़ाउठनेंसेदोनूतरफका स्नेह उठ जाताहै वल्के पक्षप कड़कर धड़ा भी डाल लेते हैं वहाँ सबका मगजफिरकर क्रोधितहोके आपसका सबव्यवहार प्रथक २ करलेतेहैं तो जरासमझनेकी बातहै के ज्ञातीमें कितना बडा बखेड़ा पड़कर नुकसानहोताहै और अपरजा तवाले भी हँसतेहैं तो यहाँ प्रथमही विचारकर कार्यकरना उचितहै (पुन्ह) सगाईविषयमें एक औरभी विचार आताहैकेअपनेंलोगोंमें कईकलोग कुँवारे रहजातेहैं इस्का क्यासबब है तो कुछेकजानागयाके पहले तो कपड़े छीनणेमें एकबेटीकाबाप ही बहोतहै जो सगाईकीहाँ भरे और सगाई करती बखत यह भी हिसाब करना पड़ता है के इतनें रुपये तो प्रथम बेटीकेबापको देनेंकूँचाहिये और इतनें रुपये गुरोंकोंदापे और पेटियोंके और इतनेंरुपये कंचनीयोंके नचानेके और इतनेंरुपये वारूदउडानेंमें और इतनेंरुपये खानें पीनें कपड़े बरी बरा

सके खरचसें यूँ करके हिसावकरतेहैं तो पूँजीकम और खरचमें तो एक दमडीभी कमनहिंहोसकती जब विचारकरनापडेगा के वहन बेटी भाई बिरादरके यहाँसें ढूंचहांचकर लावेंगे कभी वोभी सरतंतलगावे तोएक औरभीसूलनिकलतीहै वोक्या तो वोयहहै कि साहजीने ठहराये हुये रुपये तो लेहीलिये और तोरणपरलेना उनकीमनमेंहोरही दिलचाहे उतनालेकर तोरणवानगेंदेंगे और पहलीलीयेवो रुपयेतो घरमें खरच भीडालदिये औरसगाईबेटीकीकरहीदी पर एकझगडा उतनीहीपूँजी का फेरनिकला वोभी पूंजी खरचकरनेंकों जरूरहोनाँ वो यह हैके गहणाँ इसकों इतनें और उतने रुपयेंका घालेंगेतो सगाईसही रहेगी अब इत- ना और उतना गहनाँ घालेतो ल्यावेकहांसें और साहजीकहै उतनाँन- हिंघालो तो इज्जतगई और माँगपरणावैनहीं एसे सादेआदमियोंपर तो यहमुसीवतबीततीहै और कोईधनवानहोय वह गहना जादा नहिं घाले तो बेटीकाबाप कहताहै कि क्या हमखाजातेहैं तो यह बातजरूरहै पर केईकलोग हजारोंरुपयोंके दागीनें खापभी बैठतेहैं आजकल गहने दागीनेंका बडाही रवीणाँ निकलगयाहै इसपरसें हमारे कांनकी सुनी हुई और खुदद्दष्टी गोचर (देखी) हुईबात केवल दृष्टांतके वास्ते लिख तेहैं एकसाहजीनें बेटीकीसगाईकरी और गहनेके बाबतमें झगड़ा पड़ग या जब लोगबोले तुमकों गहनेंसें क्या कामहै अगलाधनवानहै परणके अपनेंघरमेंलेजायगा जब बहोतही गहना पहरायगा तब उसनें यहजबा बदीयाके इसकेपांचच्यारबेटे हैं नजानें यह गहना मेरी बेटीकों पूरादे या नहिंदे हमारेतो इतनेहजाररुपयेके दागीनेंका इकरारहै जब एकभलेआ- दमीनेंकहाक्यूँहुज्जतकरतेहो गहनेंमेंतुमकोंक्या आण्याँहै बेटीकाब्याह करदो जब वह साहजी बेटीकाबापवोला तुमठीककहतेहो परंतु कालक दंतर इसबेटीका खावंद स्वर्गवासीहोजायतो फेर मेरीबेटी क्या खावे और इसके क्या साहारा रहा इसवास्ते इतनाँ दागाना पहले इसके वास्ते

चहातां चाहताहूं सो थोडीसीडीतकखर्चका साहारा इस्केपासहोजाय इतनीसुन वह चुपहोहरा देखो अपनेलोकोमें एसी २ समझदारीकी बातें होनेंलगी के और दूसरी नीचजातीमेंभी एसीबात कोई कन्याँकापिता नहिंकहै एसी २ नीची बातोंपे अपणें लोगोंका ध्यानपहुचनेंलगा यह बातेंयहांनहिंलिखता परंतू क्याकरे कारनके वास्ते लिखनाँहीं पड़ा देखो सगपनमें एसी २ विचारकी बातेंहोनें लगी जब गरीबआदमीहोय वहतोकँवाराहीरहै क्योंके इतनाद्रव्य खर्चकरनेंकी सामर्थनहीं और कहाँसेंलयावे जब उनपुरषोंकीतो उम्मर द्रव्यवगेर यूँहींगई जबकोईक अधीर्य मनुष्य कुछऔरही तजबीजकरालेवे जैसें किसकी माँगकोंउडा-य वहजाय लेजाय परणलेवे वोभी राज और न्यातका गुन्हेगारहोकर दुःखपावे एसी २ उपाधियें फकत अत्यंतद्रव्यखर्चहोनेंसें खडी होती हैं इस कमखर्चकरनेंका बंदोबस्तकरना केवल पंचोंके आधीनहै जैसें महे-श्वरीप्रबंध मेवाडके भील वाड़ेमें सभाहोकर ११२ गामके महेश्वरी पंच सिरदारोंने समग्रहो २८ नयमबांधाहै उस्को अविलोकनकरनेसें आसा हैकि अन्यग्रामोंके पंचोका भी चित्त प्रबंधकार्यमें जरूरलगेगा उसमें यह एकबडीगहनबातलिखीहै कि जोसख्स बेटीकी रीत लेवे उस्के यहां गुडगालनेकेसिवायसक्करकी पंच आज्ञा नहिंदेवे यहांतककीउनकों किसी कार्यमें पांचवर्षतक सक्करगालनेकी सख्तमनाईनियम १९ के मुतावि-कहै देखो धन्यहै उनपूर्षोंकों जो बेटीकापेसा हलाहलजहरकाप्याला लेनेवाले लोगोंकी एसीदुर्दसा प्रगटकी तो यकीनहै इस विषपान (बेटीकीरीत) कों लोग जरूर त्यागनकरेंगे यह विषपानक्या बल्के बेटीका रक्तपानहै कन्याके घरका पानीतो नहीं पीतेहैं. पर इतनाद्रव्य हरलेवेकिजिस्सें अपनी सातपीढीतकएसकरे वाहरेवाह रीतलेनातोकेव ल कन्याकों अजियावतबेचदेनाहै बसअबअधिकलिखनामुनासिबनहीं (पुन्ह) अपनेलोग धर्मशास्त्रों व वेदोक्त ग्रंथानुसार विवाहादि करतेहैं

सो कर्म और कर्तव्यतातो ग्रंथोंके प्रमाणसे करनाँही उचितहै परंतु ग्रंथवहोतसे प्राचीन ज्ञातहुगीहैं और अभी कलयुग वर्तमानहै इस्में जराविचारनेकी वातहै जैसें विवाह ठयाविषय लिखाहै कि (श्लोक) पंचवर्षात् भवेगौरी सप्तवर्षा च रोहणी नववर्षात् भवेकंन्याँ तत्रऊर्द्ध रजस्वला ॥१॥ भावार्थ यह हैके पांचवर्षकी कंन्यॉका विवाह करे तो गौरी (पार्वती) के समान फलहै ॥ और सप्तवर्षकी कंन्यॉका विवाह रोहणिवत नववर्षकी कंन्यासंज्ञा या उपरांत रजस्वलासंज्ञाप्राप्तहोजाती है वा ऐसेंभीकहाहै ८ वर्षकीगौरी ९ वर्षकीरोहणी १० बर्षकीकन्या या पश्चात् रजस्वला संज्ञाहै ॥ सो यहलिखना कौनसी समय और किसवास्तेथा और अबवर्तमान कौनसमय आयाहै इस्का जरा विचार करना चाहिये देखो उस समयमें आयूभी दीर्घ होती थी और माहामारी हैजा राजरोग (पानीजरा मोतीजरा थोथाजरा) लकवाफिरंगवाय धणकीया प्रेमरोगादि अनेक प्राणघातिक व्याधियेंभी नहीं थी और उसवखतमें अवषाधियेंभी आति प्रबल गुणदायक सिघ्ररोगनाशकथी सो वैद्यक ग्रंथोंके देखनेसें विदितहोताहै और याकालमें अवषधियेंभी गुणहीन अल्पताकत होगई और उस समयमें अमृत संजीवन अमरफल आदि होतेथे जिससें मृतक जी जातेथे सो अब कलुमें ऐसे पदार्थभी गुप्त होगये और प्रथम छोटे २ गांवड़ोंमेंभी बहोतसे वृद्धपूर्ष स्थितथे अब यासमयमें बडे २ सहरोंमेंभी वृद्धपूर्षोंका दर्शन भी दुर्लभहोगया और प्राचीन ग्रंथोंमें येभीलिखाहै कि पिताबेठे पूत्र स्वर्गवासी नहीं होता था सो यासमयमें दादा प्रदादा बैठे पूत्र पौत्र कालवष्यहोजातेहैं एसी गतीदेखनेंसे निश्चयहोताहै की जबवह ग्रंथबनेथे उसवखतके और इससमयके बहोतही फरकपडगया इसवास्ते मेरालिखना स्वभाविक विचारसें यहीहै के पांच छव वर्षकी कन्याका विवाह करना सो बडाही नेष्टकर्महै (सरासरी कन्यॉंवोंको जहरका पि-

लानाहै) क्योंके वो विचारी ब्याह और बरसें क्या समझे विवाहेपीछे विधवा होजाय तो उस अबलाका जन्म व्यतीतहोना बडाही मुष्कलहो-जाय क्योंके अपने उज्जललोकोंमें पुनर्विवाह तो होताही नहीं और पुरु-षोंके वास्ते नोनोंवार बलके सोसोवार तक विवाह करनेकी आज्ञादी गई जरा विचारनेंकी बातहै कि पुरुसोंकोतो किसीबातकी तकलीफही नहीं पासद्रव्यहोना बुढेकी नाड़ाडिगडिगाटकरे तोभी धनपात्रआठवर्ष की कंन्याकों बरे क्योंके वृद्धाविवाह वर्जनीय कोईप्रबंधनहीं फिर इसही क्याहै कानपकड़के आज्ञियावत अबला खरीदलाये अब देखिये वो विचारी अबला कमउमरमें पाणीग्रहणकीहुई बालरंडा होजाय तो वो क्याक्याकर्म करके उम्मर निकालेगी कदापिकाल उस्कों मदनकेसता वनेंमें दृढतानहिंरही और किसीतरहका उस्के उद्रमें वखेड़ा खड़ाहोग-या तब अवलतो वो हिंस्सा गर्भपात हिकिरेगी और जो निर्वतनहिंहुई तो अपना प्राणोंसे हातधोवेगी इस्से भी बची तब उस्के इज्जतका क्या हालहै जातवाले जातसें और घरवाले घरसें व पीहरवाले पीहरसें जिधर जाय उधर धक्काही धक्का तोसोचनाचाहियेकि ऐसी दुर्दसाहोनेकासबब क्याहै हाँ प्राचीन ग्रंथानुसार चलनेंमेंहमकुछ संकानहींकरते धर्मशास्त्र मानणांही उचितहैपर कुछसमयकालभीदेखना चाहिये हां कन्या खाली हातहोजानेकातों कुछउपाय मनुष्यके हात नहीं यहतो ईश्वरीमायाहै पर हमारी राहमें आताहै कि इधरतो कन्या वरयोग्यहोकर समझनें लग जाय और उधर पतिकोंभी स्त्रिकीचाहनाहोय वैसीसमयमें विवाहकर देना उचितहै वह अपनेस्थानपे जहाँतक पति चिरंजीव रहे वहाँतकसं-सारका व्यवहारादिक अच्छीतरहसें समझकर करके अपने मनका मनोर्थ पूर्णकरले बिलकूलही कम उमरमें कन्याका विवाह करदेना तो घातकरने तुल्यहै देखो इससमय सर्वत्रदेसमें रेल बोटज्याझसें बिलायत और अपरदेशोंतक जाना सुगमहोगया और जहाँ परंदोंकाभीगुजारा

नहींथा वहाँतक मनुष्य पहुचनेंलगे और छोटे २ बच्चोंका विवाहकरके पिता पुत्रकों बेपारादिकवास्ते लेके देशाटन गमनकरतेहैं वह स्त्रीपुरुषोंके समझे पीछेभी मिलापहोना दुर्लभहै क्योंके देशाटन दूरका मामला और लोकभी जालमें फसना निनानवेंके फेरमें लगेरहतेहैं इधर नाना प्रकारके रोगोनें जालफेलाया बस कमउमरमें कालके पंजेमें आगया तो फिर उसअबलाका ईस्वरही मालिकहै मनका मनोर्थ अपूर्णही रह जाताहै ॥ इसवास्ते विवाहकाभीकुछनयम कायम होजाय के कन्याका विवाह समझे बगेर नहिं होय और विवाहकीये पश्चात् दोनोंका एकत्रप-नहोंनकाभी नयम (गोंना) सर्वत्र लोक मान्य होनाउचितहै यहाँ कुछ हास्यकीबात उत्पन्नकरना मुनासिबनहीं जरा कलुकालकी प्रचंडधा-राकों देखकर विचाररूपी नयमकी नवकासें अबला (कन्या) वोंको सहायतादेना चाहिये ताकि अल्पजीवनमें अपना मनोर्थ पूर्णकरले इसकार्यमें हास्यकरना केवल मूर्खताहै क्योंके आयूका नयमनहीं (कीयासो काम ० रहगया तो बेकाम ०) (पुन्ह) विवाहादिकोंमें अपने लोग द्रव्यभी हैसियतसें जादे खरचनेंलगगये यहभी स्त्रियोंके हकमें बुराहै क्योंकी उससमयमेंतो प्रचंडबेगपे चढकर दूसरे लोगोंकी बराबरीका उत्साहसें खर्च देतेहैं पर आखरकों चौंटीका पसीना एडी तक आयाही रहताहै फेर यातो देशाटन करनाहोगा या घर, जर, (गहना) या नाम बदनामकर परायामलहर या बेनबेटी भानजी मित्रकों जुहार, खड्डा भरनापडेगा और ग्रहकार्यके नित्यखर्चकों भी तंगकरना पडेगा तबभी उस द्रव्यहानी जो हैसियतसें अधिककी है. बडी मुसीबतसें बराबरहोगा ॥ जोअगर उधारही मिलगया तो पीछाभी देनापडेगा और पासद्रव्यहै वो कुलखर्चकरदिया तो फेर कमानेका भी कार्यकरनेमें हानी होगी क्योंके द्रव्यसें द्रव्य पैदाहोताहै (केवल) शरीरकी महनतसें तो पेटहीभरेगा इसवास्ते हैसियतसें अधिक खर्चा

करना भी बुराहै यहभी कायदा पंचायतके जरियेसें कायमहोना मुना सिबहै और पंचोंको भी चाहियें कि धजा धौवती नारेल सुपारियें पताशे सिंघाडे इत्यादि रकीणोंमें बेवाजवी कपडे नहीं छीनले क्योंके यहपैसा बेटीके घरकाहै एसानहो कि शीतरसममें विचारे सगेका घर पराया होजाय नेग जोग वाजवी निरभाऊ लगनेदेना यह पंचोंका धर्महै सबका दिन एकसानहिं रहता ए हरदमविचारकर पंचनिरभाऊ नयम अपने २ ग्राम प्रथावत कायमकरें तासें कीर्तिप्रकाशितहो ॥ और घर-धणीं भी अपनी इज्जत व हैसियतका हरदम विचारकर खर्चकरें कि-सीकी बरोबरीकर फेरदुःखपाना उचितनहीं (पुन्ह) बरातमें बहो-तसे मनुष्य लेजानेका क्या सबबहै एभी समझनाचाहिये एकतो वहां कुछ सिसपाल कृष्णादिकोंके युद्धहुवाथा इसतरहसें झगड़ेका संभवहै या कीर्तिबढानीहै (हां) स्वै जातकिपूर्ष अधिकहोना ये ठीकहै पर अन्य-लोगोंको लेजानातो (जैसें गाय दोय गंडकोंकूं डालना) बेमुनासिबहै चाहिये कि दुतरफे अपने ग्रामके व सगा सनेही भाई मित्र दस बीस मनुष्योंकी समतीसें विवाहकर लेना जिस्सें जातीका बखेड़ा किसप्रिकार नहिं होय केवल साक्षीभूत (गवाह) है इसीकारनसें दुतरफे बिरादर इकट्ठे कीयेजातेहैं इनके समक्ष विवाहादि काय हुवा तो फेर बर कन्याके परस्पर व्यवहारमें किसीप्रकारकी हानी नहीं केवल येही सबब पायागया कदापी अधिक मनुष्य ही लेजाना चाहो तो भी दुसरोंकी बराबरीकर फेरफजीतहोना मुनासिब नहीं जैसे यार दोस्त बहन बेटियोंको हौंचहौंच बजारसेंभी उधार ले बडीसी बरात बना इज्जतबधाईतो वो भी इज्जत अल्पदेरकीहै आखर-कों देनांहींपडेगा और साफउत्तर दे बैठोगे तो उसकीर्तिसें यह अपकी-र्तीका दाग केई पीढियों तक नहिं धुपेगा ॥ तो चाहियेंकि प्रथमहीवि-चारकर काम अपनी हैसियतमुजबकरे आमदनी मुजब खर्चकरना

चतुरमनुष्योंका कामहै जैसे (जेता पाव पसारिये तेती लंबी सोड़) बिनाविचारे करोगेतो भीतरका बहा कभी उपरनहीं आनेदेगा नन्ना अनोगेतो इज्जतमें हांनी ॥ और सरमसें मुंहाछिपावोगे तो गुप्त आहसें भस्म हो जींदगीसें हात धो बैठौगे बस अब जादा लिखना हमारी भूलहै इसलिखनेपर अल्पबुद्धिमनुष्य जानेंगे के लिखनेवाला बडा कमहिम्मत निरधन कृपणहोगा तो खैर मुनासिबमें आवेज्यूं समझो पर भीतरका घावतो सब अपने २ दिलका दिलसें जानतेही होंगे मेरा लिखना तो यहीहैके घरकी सरधा मुजब खर्चकरो लोगोंकी बराबरीकर फेर दुःखपाना मुनासिबनहीं ॥ इसपें कोईकहेगाकी फेर कमाना किसवास्तेहै पुत्रजन्मोत्सव विवाह और माता पितावोंका खर्च वहां जो द्रव्य नहिं खरच्या तो फेर कमानांही व्यर्थ है कोठीक पर समझनेकी बातहै कि पैसा जिसबारीकीसे पैदाहुवाहै उस्कों वैसेही उत्तम कार्य में हैसियतमुजब खरचना चाहिये अगरकिसीके धाडेकाही माल हाथलगगयाहोतो उसीतौर उडादो क्योंके द्रव्यआगमनमें महनत नहिं हुई तो फेर खर्चकरनेमें भी विलंबकरना मुनासिबनहीं पर धाड़ाभी हरबखतहातलगनेकानहीं इसबातोंपेंदृष्टांततोबहोतहैंसोकहांतकलिखें इतनेंही लिखनेकों स्वजनपुर्ष वाचके हासी नहींकरेंगेतो में बडा मोटा इनाम लखसा मानूंगा (पुन्ह) आजकल उत्साहोंमें बहोतसा बारूद उडाते हैं तहां अवलतो अग्नी प्रकोपसें (आगलगकर) मकानादि अनेक पदार्थों व मनुष्योंतकको हानी होजातीहै द्वितीय सूक्ष्मजीव असंख्यात धूम्रादिसें नाश होजातेहैं केवल दृष्टीकों आनंदतो इतनांहीं के बत्ती दिखाई और चिरकालमेंही भड़ाभड़होकर आखरको धूम्रहीधूम्र बस नफा नुकशानका हिसाब इन्साफके काँटेमें तौलकर देखो (पुन्ह) रंडियोंके नचाने व बाजंत्रियोंसे बाजेबजवानेमें भी वैसाही खर्च पर यह ठीकहै विवाहादिक है वो खुसीका दिनहै इसदिन सबलोग खुसी हो-

नाचाहिये इसवास्ते अपने घरानेंमुजब खुसीभीकरना उचितहै परंरंडि-
योंकूं नचवाना उससमय अपने यारदोस्तोंसें रुपे दिलवानायेक्याबातहै
अपनेघरसेंखर्चना सोतोठीक और उधारीहाँतीमित्रविशदरोंसें बरततेहो
तो बखतसदैव सबका एकसा नहिंरहता जब खर्चनेका बखतहै. और
मुफलसीकाजोरसें दबाहुवाहै तो. उससमय उलटी अपकीर्तिका
तिलक लगेगाबल्के उधरवाले मित्रोंके मुखसेंभी यहवार्ता प्रगटहोगी के
जबइनके घरपे उत्सवथा जब हमनें इतने और उनते रुपे रंडियोंकों दिया
था आज हमारेयहां आकर इनोंनें कुछभी नाहिं किया, तो वहां उनमि-
त्रोंको निरमान्यहोकर नीचे देखना पड़ेगा. तो आनंदकार्यमें मित्रोंको
अनानंद प्राप्तहोना. ऐसीलेवादेवीहै सो यहखर्चकरवाना अनुचितबातहै
देखो ऐसे विवाहोंमें अपने घरकी बहन बेटीयोंकों तो सूकीही निका-
लदे और कंचनी कलावतोंको हजारों रुपये माँनदे पर वोभी खरच
अपने घरानेकी रीतिको समझकर गुंजासमुजब करनालाजिमहै एसाक
रना मुनासिबनहीं के आगे हमारे ऐसे और वैसे होताआयाहै और हम
हमेसेंसें ऐसेही करते आये हैं जब हमारा लिखना और आप मित्रोंका
समझनाव्यर्थहै ऐसेंही चलनेदो परहमारीरायतोयहहै केसबकाम अपने
घरानेके रीवाज व गुंजास मुजब समझकर करना दूसरोंकी बराबरी
करनेमें आकर दुःख कष्टकी उन्नतीहै ॥ नुखते महोत्सव इत्यादि वि-
वाह पुत्र जन्मोत्सवादिकमें खर्चकरना इसीवास्ते कमानाहै पर संपूर्ण-
धन एकहीकार्यमें व्ययकरदेना तो फिरकोई तंगीका बखत आगया तो
फिर हिरणकीसी छक्काकूद चौकड़ियां भूलकर कांनभींच ग्यारतीयां
मनाते नजरआवोगे इसवास्ते पहलेसेंही सम्हलकर चलना, ठीकहै
इसलिखनेको केईक अतिदीर्घबुद्धिजन मनुष्य (अत्यंतबुद्धिसें
अजीर्ण होगया हो वह मनुष्य) मेरेकों दरिद्री वा कम हिम्मत गिनेंगे
क्योंकि इस नासियत मालामें कुल द्रव्यका व्यय कमहोनेका उपाय

लिखाहै पर हे दीर्घबुद्धिः अति धनवानों यह मेरालिखना अनुचित मत समझो मेनें खुद नजरोंसें देखाहै कि जो अंधे घोड़े चढ हजारों लुटातेथे वो रोटीसें मोहोताज हातपसारे फिरतेहैं द्रव्य व्यय करनातो सुगम रीतीसें ही होसक्ताहै पर द्रव्य पैदाकर संग्रहकरना अपने हात नहींहै जब कोई कहेकि जैसा होना होय वैसाहोगा वो ठीकपर ऐसासमझना संसारत्यागी बितर्कजन योगपुर्षोंका काम है जिस कठिनतासें द्रव्य उपार्जन होताहै वैसेही श्रेष्टकार्योंमें व्ययकरना चतुरपुर्षोंकाकाम है पर यह सब खर्च करना तो अपनी २ खुसीसे है परंतू एक जबर खरच गुरोंकेदापका औरहै पर यहाँकुछ थोड़ासालिखताहूं है तोविचारनेकीबात परंतू पक्षबाँधकर लोग नाराज होजानेका डरहै इसवास्ते किंचितही लिखते हैं (समझनेंसें इतनांही बहोत)

प्रथम विवाहसमयका रूढीमतवर्णनकरताहूंके।

लग्नचँवरीसमयब्राह्मण अपने भाईबंदजादाआणेसेंऔर बढजानेकेभयसें जल्दीही हतलेवा गणजोड़ा करके बेदकि पास स्थितकरदेतेहैं और बहोतही सिघ्र सबकामनिमेटकर अर्धविवाहकरके जीवणेसे डावे बाजू झटपट बिठालेतेहैं क्योंकि कोई भाईबंदआपडेतोदापमें पाँती पड़ालेवें इसवास्ते वहाँतककातो काम जल्दीसेंही निमटालेवेंगे कुछपूजन किया और कुछनाकिया सटपटकर जीवणेसें डावेकराय निश्चिंतहोबेठतेहैं फेर तो पैसोंके वास्ते ठोड़ २ सिरपचीकरके दिनउगादें वहाँतकभी विवाह पूरानहींकरेंगे और बैठेखुलफातमाखू हुक्के वेफिकर उडाये करेंगे क्योंकि भाईबंदोंको भयतो जीवणेंसें डावेबाजूलियेपीछे दापमेंबंटपड़नेकामिटहीगयापरदेखोइसकाममेंयजमानके घरमेंक्या २ फायदेहुये यह विचारकरनाँचाहिये प्रथमतो हतलेवा जुड़ाये पीछे गोत्राचार चँवरयामें सुनातेहैं तथाकेइगावामें तोरणजीतेपीछेवावरणामें भी गोत्राचारसुनाते हैं

तो देखो यहगौत्राचार किसबखतसुणानाँचाहियें और गौत्राचार सुणानें का हेतूक्याहै तो हेस्वजन प्रियवरमित्रौंइसगौत्राचार सुणनेंका हेतूतो यह है के बर कन्याँ दोनौंहीं एक गौत्रके नहिं होजाय याकारन गौत्राचार सुण्या सुणाया जाताहै और दोनौंतरफके भाईबंधु वृद्धपुरुषभीइक्खटे होतेहैं तो सपरदान सगाईकी बखत गौत्राचार सुणना सुणाना उचितहै अर्धविवाह तो होगयाथा तोरणजीतलीया फरगौत्राचारसुणना सुणाना क्याकामआवेगा जब वरकन्याँ दोनोंकाएकहीगौत्रमिलगयातोफेरक्याइ लाजहैक्यौंकी अर्धविवाह तो होही गयायहगौत्राचारप्रथमसुणनाउचित हैपुन्हएकऔरभीशास्त्रविरुद्धवात होतीहै के हतलेवाजलदीजूडायकर जीवणाहाततो शुतायदेतेहैं और पीछे डावाहातसेंदेवपूजनकन्याँभूदान गऊदानादिसर्वकार्य वामहातसें करवातेहैं और दक्षणहात हतलेवामें ताकीदीसें फक्त गुरु भाईबंदोंके जादाआजानें और दापेमें बंटपडजा नेंके भयसे दक्षिणसे बामभागी तुरतही करादेतेहैं वहाँ यजमानका शु- भकार्य पूजनादि दक्षणहातसें कोंहाँहुवा पर गुरुलोगौंकातो दापामें बंट बचहीगया जरासोचनेकीबातहै के वामहातसें सुभकार्य पूजनादि करना कोई ग्रंथमें नहिं लिखा यहाँ प्रमाण प्राचीन ग्रंथौंकाहीमुख्यहै ॥ पुन्ह कंन्या दान भूदानगउदानादि पूजनवामहातसें कार्यकरनाहोताहै फर उसहातकों गुरु ब्राह्मण वेदियाजी शुद्धकरवातेहैं सो यहाँ बड़ी हास्यकी वात हैके यह डावाहस्तपहलेहीवोशुद्धहोगावहवरमलमूत्रसेंरहितहोके रजलाई वामहातसें नहिं करताहोगाक्योंकेवामहातजोअशुद्धहोतातोपू- जनादिशुभकार्योंमें प्रथमही शुद्धकरवाते पुन्ह औरभी बहोतसें ,हरजहैं कहांतकलिखें क्योंके साचीकहनेसें लोगनाराजहोजातेहैं परंतू विवाह विषे गुरुलोगौंकी बहोतसी धूमधामपाईजातीहै इनका कुछ सज्जन ब्राह्मण अपनेंकों विचार करना चाहिये क्योंके बेवाजबतकलीफोंसें यज मानौंका हृदय कंपितहोकर गुरुभाव लूप होजाताहै यह कलुकाल

सगाईकी व सपरदानकी समय सुणायाजाय उचित बात तो यह है (पुन्ह) और एकदूसरा दापेकी समयका गभोला फेर इस्सेंभीजादे मालूमपडताहै वह यह है के विवाहादिकोंकीसमय इन ब्राह्मणोंमें कोई कड़ाकी भाईबंद मच्छ आपडताहै वह दापेके रुपे किसीदुसरेभाईकों नहि ठहरानेंदेताहै और जो कोई दुसरा भाईबंद ठहरायलेवे तो आप नहिं मानताहै और आपठहरायलेताहैजब दुसरे भाईबंदगरीबोंकों जैसें समझे वैसें समझायलेताहैबलके डरायधमकायकरदाबलेताहै वह डाकी मच्छगुरजजमानकेपासदापेजितने वा आधेरुप सूंकके पहलेही लेलेता है जब दापा ठहरनेकाकामपारपडनेदेताहै तो देखो यहाँविचारकरनेंकी बातहै के अपन माहाजनहो इरठौरसूंकेदेकरउनमच्छोंकोंबढायदेतेहैंतो यहाँसूंकदेनेका क्याप्रयोजनथा क्याजंगलमें किसीनें फासी डालीथी क्या दुराचार्योंसें लुटे जातेथे तथा कोईदुसमनोंसे छुटनाथा या जमकीं-करोंनें घेरादियाथा देखो अपनें घरके तोगुरु और गनीमोंजैसाकामकर-पुन्ह हरवखतअपनेसेंलेनेकीहीआसारक्खे इधर अपनलोग अपनें गुरु जानकर देनेकीही आसा रखा करतेहैं परंतू विवाहादिकोंमेंतो खुसबख्तीकीबखतहै क्या दोरुपे जादा और क्या कम हम इसबातसें नाराज नहीं पर बारूदउडाना और कंचनियोंनचाके द्रव्यव्ययकरना जिस्सें तो यहबहतरहै कभीनकभी रसोईतोबनाकरजिमावेंगे देखो यह बाततो हुईपर एकओर नवीहासीकी बातहै के कर्मकांडविषयमें देखोगुरुलोगोंकों क्या अच्छिबखत यजमानसें स्वारथकरनेकों मिलती है देखो इधरसेंतो एकआदमी घरसें मृत्युपावे उधर विचारेकों जातका मनावणों करणेंकी बखत व पावणें आते हैं उनसें बातकरनेका मोका एसी समय इनगुरुवोंनें कैसा रोकाके अन्ननहिं खाना व पानी नहिं पीनां और पिंड नहिं उठाना बेठे रखना घरके सब कामोंसें हरकत करदेनां गागरि (दोवणी) केपास काचे तागेसें बांधके यजमानकों बिठा रखना

और इतने और उतने रुपये दापके माँगके अड़ा बैठनाँ इस्का भी जराविचार गुरुलोगकरेंगे और इसलिखनेपर नाराजनहिंहोंगे यह बात समझकर विचारणेकेवास्तेंलिखीहै जादालिखनेका मेरेकूं क्याप्रयोज-नहै दापाके दसरूपे जादाकरलेतौ भाईबंदसव गुरुलोगआँटखाय पर इसमेंयजमानकी सरधा देखकर कम जादा ठहरानेका जरा बिचाररखना लाजमहै पर मच्छगुरुजी डरा धमकाके अलगही अपनाकाम निका-ललेना यह काम कुछ अच्छा नहिं मालूमहोताहै इसबातकौं सर्वपंचजा-नतेहैं और जानकर फेरबी यह एकरूड़ीपकड़रक्खीहै कारन यहाँकु-छ फगतमच्छगुरूजीकीही गलतीनहीं कुछ पंचौंकीभी चेष्टा लड़ानें भीड़ानेंमें होगा नहिं तो पंच रकीणाँ दापेका क्यूँनहिंबांधते क्या पंच रकीणाँ नहींबांधसकतेहैं क्या पंचौंकी बांधी कार कोई उलंघनकरस-काहै गुरू लोगतो अपणेहीहै सो पंचौंका यथोचित बाँध्यारकीणाँ मंजू-रहीकरेंगे देखो राजा और ईश्वरभी पंचौंकाकीयाकाम मंजूरकरलिहाज-रखतते हैं तो पंचौंको उचितहै कि दापेका रकीणाँ मुनासब समझकर जरूरबाँधें परंतू पंचोंमेंसे सिरेपंच जडेसेठजीकी कुछहाजरी वह मच्छगु-रूजी साझते होंगे तब यह मदतहै पर यहमदत जातके बेटेकों तकलीफ देनेंकी अपनेंही लोगोंकी पाईजातीहै इस्का पंचौंकों विचारकरनाचाहि-ये और दापेका बंदौबस्तबहोतजगहँ पंचौनें बांधरक्खाहै जैसाही बंदोब-स्त सब जगँहके पंच बाँधेंगे तो कहींभी हल्ला दंगा फिसाद व तकलीफ हरकतकिसीकौंनहिंहोगी और यजमानौंका प्यारभी अपनें गुरुलोगोंपर विशेषबढेगा एसीमृतकसमय यजमाँनकौं तंगकरनेंसें हृदयस्थान कंपि-तहोकर गुरुभाव लुप्तहोनेंकीवृद्धिहै तो यहाँ गुरुलोगोंकों चाहिये कि जरा दयालुतासें घरकीसरधामुजब दापालेनेंकी आशा रक्खें और अपनी शांतबुद्धिसे यजमानौंकों आशीर्वाद देंगे ताकरिके अपनें लोगोंमें विशेष आनंद फलप्राप्तहोगा। देखो विचारकरनेकी बातहैके इस भरतखंडमें मा-

हाजनतो सेंकड़ों जातीके बसतेंहैं पर यह सारीवारहन्यातके महाजन कुछस्वधर्ममें और शुद्धाचारमें निपुण और पुन्यातमाहै परंतू सब माहाजनोंमें आजकल कुछ अपन महेश्वरी अपना घोड़ा अगाड़ी निकालतेंहैं जैसीही गुरुलोगोंकी धांधलहै पर अपनें लोगोंमें बरदासहै जैसी औरजातके माहाजनोंमें नहिं पाई गई अब न जानेंतो अपनेंगुरुलोगोंकी सामर्थता है नजानें पंचाकी गलती है न जानें क्या है पर विचार तो दोनोंकों करना ठीकहै और पंचौंकाधर्महै के इसबातोंका बंदोबस्त एसा करे जिसमें सबका नृभाव अच्छी सुलभरीती और सुगमतासें होजाय यह मेरीतो विनंती साहित लिखना समझनेंके लिये है फेर सबतरहका बंदोबस्त करना सब पंचौंके अखातियारहै पर इन बातोंका बंदोबस्त जरूरकरना उचित है (जिस्सें ज्ञाती भाइयोंकी अनेक तकलीफें मिंटे)

॥ श्रीः ॥

दत्तपुत्रविषयप्रश्न ।

(वार्ता)यहदत्तपुत्रकेलेनेमें प्रश्नकीयेहैं ताकाउतरमें जुदा२नहिं लिखा कारण सर्वदेशीप्रथा एकसाँनहीं कहींकतो धर्मशास्त्र मनुं याज्ञवल्क पाराश्वरादिस्मृतियोंके प्रमानसें दत्तकलेतेंहैं और कहीं २ देशप्रथा फगत रूढीहीपड़रहीहै पुन्हकहींकहींक स्वैगोत्रसिवाय कन्याँशिशु (दोहिता) कोंभी दत्तकलेतेंहैं यह अपने २ देश व सहरोंकी प्रथाहै सर्वदेशी एकप्रथा नहींपाईगई और धर्मशास्त्रमतानुसार प्रश्नलिखदेता परंतू सर्वदेशके माहेश्वरमिान्य मानणेंकी आसानहीं कारन देश२काढूढीमतजुदापड़गया यहीकारनसें केवल दत्तपूत्रके प्रश्नहीलिखेहैं पुन्ह यहीप्रस्नलिखके मान्येवर सेठबिसनलालजी मिणीयारकी मारफत जोधपुर माहेश्वरीसभामें श्रावणशुक्ल१ संवत१९५०कों पैसकीये तो वहाँ वैश्यकुलभूषण माहेश्वरीसभा समग्रहोकरयहप्रश्नबाचेगये तबसर्वविद्वज्जनमंडलीको अतिआ-

नंदप्राप्तभया और उक्तसभासंपादिकमहाशयोंकी यहीराहाहुईके जो म्हें ऊपरलिखआयाहूँऐसेंहीं प्रश्नछापकर प्रसिद्धकरणाँ फेर सबकीअनुमती मंगवाकर सर्वदेशमान्य उत्तरलिखणाँ योग्यहे यह आज्ञामिली और अन्यसभावोंसेंभीयहीआज्ञाउपस्थितहुई तब वैसाही प्रश्नलिख आपमाहाशयोंकी दृष्टीगोचरदेके सविनय प्रार्थना करताहूँके यथोचित सर्वमान्य उत्तरलिखभेजें ताकारके मेरी अभिलाषापूर्णहो और सर्ववैश्य माहेश्वरी प्रियमित्रोंकों दत्तपूत्रबारेमें सहायतामिले.

अथदत्तपूत्रप्रश्नप्रारंभ ।

१ किस्कापूत्र किस्कोंगोदीलेना-

२ दत्तकमें क्या क्या रीतरसूम होनी देशपृथा वा धर्मशास्त्र मर्यादादी.

३ पूत्रकोदत्तकदेनेमें किस्काहक्कहे (पूर्षका वा स्त्रिका)

४ दत्तकाकिस २ कीआज्ञासेआवे.

५ पूत्रको माता दत्तक देसके क्या.

६ माता पूत्रदोयहे मातापूत्रको दत्तकदेवे और करजेदार मना करे कि हमारा करजाचुकावो तो मन्हाकरसक्ते या नहीं.

७ माता पूत्रकोदत्तकदेवे और दुसरा पुत्र नहींहोय तब करजेवालेका हक्क दत्तकलेनेवालेपे लागू होसक्ताहे क्या.

८ बडाभाईकी आज्ञा वगेरे छोटा भाई स्वेइछ्यासें दत्तकजासक्ता है क्या.

९ छोटाभाईकीआज्ञाविना बडाभाई दत्तकजासक्ताहे क्या.

१० भाई भाईजुदाहोके हिस्सेका धनसमेत दत्तक जासके क्या.

११ भाई भाईकों दत्तक देसके क्या छोटेकोंबडा या बडेको छोटा.

१२ बडाभाईछोटेकोंदत्तकदेत्ते भाईबंधमनाकरसक्तेहें क्या.

१३ पिता अकेलाही पूत्रकों दत्तक देसक्ताहे क्या.

१४ भाईबंध दाइयेदार मृतकमातापिताके एकहि पूत्रहो दत्तकदेसक्तेहें क्या.

१५ अपनीस्वैइच्छासें दत्तकजास
क्ताहै क्या

१६ च्यारभाईभेलेरहतें एककंवा-
रा दतकलेसक्ताहै क्या

१७ अकेलाई कंवाराहोय दतकले
सक्ताहैक्या

१८ एकहीहो नपुंसक (हिंज) दत्त
कलेसक्ताहैक्या

१९ नपुंसक परण्याहुवाहोय एक
हीभाई वहदत्तकलेसक्ताहैक्या

२० दोभायोंमेंसेंएक विवाहिताभ
ईनपुंसक दतकलेसक्ताहैक्या

२१ सर्वअंगहीन घरमें अकेला
होय दत्तकलेसक्ताहैक्या

२२ एकनेंप्रथमविवाहकीया संता
ननेंहोते दुसराविवाहकीया पु
न्ह संताननेंहोते दत्तकलेतो
किस्केनामसेंआवै स्त्रिलघुके
नामसें दत्तकबजेगा या बडी
स्त्रीकादत्तकबजेगा,

२३ पतीकायमहो दोनूअपूत्रणी-
स्त्रियादोयदत्तकलेसक्ताहैक्या

२४ एकके च्यारपूत्र च्यारूंकावि
वाहकरादिया उसमेंसें एक लू-
ल्हा लंगड़ा अंधा बहरा सर्व
इंद्रियोंसेंहीन केवलएकाशिशु-
नइंद्री विषयकरणेंनिमित का-
यमहै दत्तकलेसक्ताहैक्या

२५ दोयसासू एकबहूतीनूंबिधवा
दत्तककिस्केनामसेंआवे

२६ दोयसासू एकबहू तीनोंजुदा
जुदादतकलेसक्तीहैंक्या

२७ तीनभायोंमेंएकस्वर्गवासीहो
गया उस्कीविवाभेलेरहतेदेवर
जेठोंकीआज्ञाबगेर दतकले-
नाचाहे तो लेसक्तीहैक्या

२८ एकके च्यारपूत्रोंकी च्यारूं
बेवा सुसराकेभेलेरहते सुसरा
की आज्ञाबगेर च्यारूंहींजुदा
जुदादत्तकले तो लेसक्तीहक्या

२९ एकके च्यारपूत्राकीबेवासुसरा
अपनेंनामसेदत्तकलेसकेक्या

३० एसेंहींएकबेवापुत्रवधूकेनामसे
दतकलासक्ताहैक्या

३१ प्रथमदतकलीया बादमें विवा
हितास्त्रिकेपूत्रहोगया तो वह
लीयाहुवा दत्तक पीछा फिर
सक्ताहै क्या

३२ च्यारभाईयोंमेंएककेपूत्रहोते
दुसरेभाईबंदोंकापूत्र भाईयों

कीआज्ञाबिनाँदत्तकले तौ ले-
सक्ताहैक्या

३३ दिवरजिठानी दोनूँविधवा भे
लीरहते एकदत्तकलेसकेक्या

३४ एककेच्यारपूत्रोंमेंएककीस्त्रि-
बेवा ताकौंसुसरालघुपूत्र (दे-
वर) दत्तकदेवेतौदेसकेक्या

३५ च्यारपूत्रौंमेंदोयविधवाउनकौं
सुसरादोनोंलघुपूत्रौं (देवरौं)
कौंदत्तकदेवे तौ देसक्ताहै क्या

३६ दोयस्त्रिबेवा बडीकेदोयपूत्र
छोटीकेएकपूत्र तीनूंहीपरणेहु
ये वह छोटीकापूत्र कालवसहो
य तबछोटीसासू आपकीबहू
केदत्तकलावे तो देवरजेठोंकी
आज्ञाबिनालासक्तीहैक्या

३७ दोयसासूबेवा एकछोटीसासू
केपूत्रकीबेवा उसके दत्तकलेना
होयओरबडीसासूकेपूत्र उम
रमेंलघुहोयतब वहदेवरसंज्ञक
हाके दत्तकआसक्ताहैक्या

३८ पितापूत्रकौंदत्तकदेवेपूत्रइन
कारकरे तौ जबरीसेंदेसक्तेक्या

३९ पुत्रस्वैइछ्यासे दत्तकजावेपि
ताइनकारकरे तौ कैसें

४० दोयपुत्रौंमें एकदत्तकदेवेदुस-
राफौतहोजावेतबफौत होनेवा
लेकीबेवा दत्तकलेवे वहाँसुस-
रारौकसक्ताहैक्या

४१दोयपुत्रमेंएकदत्तकदीया दुस
रा बिवाहिताफौतहुवा यद्यपि
तादत्तकअपनेंनामसेंलेनाचाहै
और बेवाबेटेकीबहुमनाँकरे तौ
रौकसकतीहैक्या

४२ दोयपुत्रौंमें एकदत्तकदीया दु
सराकँवारामरगया सिरपेकर-
जातौदत्तपूत्रदियाउसपे लागू
होसक्ताहैक्या

४३ दोयपुत्रोंमेंसें एकपुत्रकवाँरे
कौदत्तकदेवे वोहोराजकर्ज-
दारोंके तौरौकसक्ताहैक्या

४४ दोयपुत्रपरण्याँहुवामेंसेंएककौं
दत्तकदेतेवोहोरारौकसकेक्या

४५ दोयभाईमेंसेंएकभाई स्वैइ-
छ्यासें दत्तकजावे तबदेणाएक
पेहीकायमरहा या गया उसपे
भीलागूहोसक्ताहैक्या

४६ प्रथम स्त्रिअपूत्र दुसरीकेपुत्र
बडीअपूत्रणीदत्तकलेसकेक्या

४७ प्रथमस्त्रीकेपूत्रछोटी अपूत्रणी

दत्तकलेसक्ताहैक्या

४८ एककेपूत्र दूजीअपूत्रणी पती जीवता वहपती अपूत्रणीस्त्रि- कोदत्तक अपणे हातसेंलावे तो लासक्ताहै क्या.

४९ कन्या परणायके घरजँवाई रखलेतेहैं यहभीएकप्रकारका दत्तकसंज्ञाहै इस्कीरीतरसूम क्या क्या होनाचहिये.

५० घरजँवाईरखना मुनासबहैक्या

५१ भाणजा दोहिता दत्तकलेनेमें क्या २ हानी और क्या क्या फायदा है.

५२ भाणजा दोहिता दत्तकलेते स्वैगोत्रीभाईबंद वर्जसक्तेहैंक्या

५३ नजीकीभाईबंदकेलडकाहोते दूरकापूत्रआसक्ताहैक्या.

५४ भाईबंदकेलडकानहीं और दूरकालातेरौकसक्ता है क्या.

५५ अपूत्रमातापिताकन्याकों जर जेवर जमींन देसकती है क्या.

५६ च्यारभायोंमेंएककीबेवा भेले रहतेदत्तकलेनाचाहैदेवर जेठ इनकारकरे तबउस्के पतीका कर्मकांड किस्के हातसेंहौना.

५७ च्यारभायोंमें लघुभ्रातृस्वर्ग- वासीहोजाय और तीनूं बडे भाई अपूत्रहोय वह लघुभ्रातृ- कीबेवा दत्तकलेनाचाहै तबजे- ठबोले के हमारेभी नहीं तूंक- सेंलेगी वहस्वर्गवासी लघुभ्रा- तृका कर्मकांड किस्केहातसें होगा क्योंके सबभाईबडेहैं.

५८ च्यारभाईमें एककीबेवा धन- पाँतीछौडके दत्तकलेतोकैसें.

५९ च्यारभाईयोंमें एककी बेवा देवरजेठोंकों कहै कि यातो तुमदत्तकदोयादुसराल्यानेकी आज्ञादो जिस्सेमेरापतीका नामरहै तौदत्तकविषय उजर- पोंहोंचसक्ताहै क्या.

६० एकएकपूत्रतीनूंभाइयोंके चौ- थेकीबेवा अपूत्रणी दत्तकलेना चाहै और कुलव्यवहार च्या- रूंभाईकाभेलाहै वह दत्तक लेसक्ती हैक्या.

६१ एकनेदोयव्यांहकीये दोनोंके एकएकपूत्रहुवा एकपूत्रके पौ- त्रहुवा वहपरणायेबादपूत्रऔर पौत्र दोनोंकालवसहुये व. सा-

सुसौभाग्यवती पतीकीआज्ञा विनाँ अपनेपुत्र वा पौत्र वा प्रपौत्र दत्तकलेवेतौलेसकेक्या

६२ एकके दोयस्त्रि दोनोंसेप्रगटदो य पुत्र दोनोंव्याहे एकपौत्रवौ भीव्याहे पुत्रपौत्रकालवस उ-स्के दत्तकलवेतब पिताकीतो आज्ञा और पुत्रइनकारहोय तो दत्तकआसक्ताहै क्या.

६३ एकके दोस्त्रिसें दोयपुत्र दोनों कोंव्याहे एकके पुत्रहुवा व एक अपुत्रकालवसहुवा उसपुत्रकी बेवा सुसरा औरदेवर व देवर-पुत्रकी आज्ञाविना दत्तकलेतो आवे या नहीं.

६४ ऐसेंहीविधवा अपुत्रणी सुसरा सासूकी आज्ञासें औरदेवरप्र-तिकूलहै या जेठप्रतिकूलहै और जेठकेभीएकहीपुत्रहै तो उसबेवाके दत्तकआवेयानहीं

६५ एकके दोयस्त्रिएकएकपुत्र एक पौत्र एकपौत्र वृध और १ पुत्र १ पौत्र कालवसहो तब विध-वा सासू बहु पौत्राकी बहु ती-नूँहीं जुदाजुदादत्तकले या

सासूअपननामसेले वा बहूके नामसेंले वा पौत्रबधूकेनामसें ले तहाँ बडीकापुत्र छोटीमा-ताकों या छोटीकापुत्र बडी माताकों मनाँकरे तो वहपुत्र शोतनकाजायासमझ आज्ञा उलंघनकर पुत्र पौत्र या प्रपौ-त्रादिदत्तकलेनाचाहैतो दत्तक आसक्ताहैया नहीं

६६ एकनें दोव्याहकीया एकस्त्रि-के दोयपुत्र एक स्त्रि अपुत्र वह दोनोंपुत्रव्याहेपीछेसंताननैं हो तेस्वर्गवासीहोगये सुसराजीता है वहअपुत्रणीअपनेंदत्तकलेना चाहै वा बहूदोनोंदत्तकलेनाचा हे वा वृद्ध आपलेनाचाहैतहाँ हककिसकेनामसेंदत्तक आने काहैवादत्तककेहककदारकोनहै.

६७ एकनेंप्रथमव्याहकीया एक-पुत्र होकर वाऽस्त्रिकालवसहुई पुन्हवृद्धदुसराव्याहकीया एक पुत्रउस्के हुवा दोनों पुत्रविवाहे बाद स्वर्गवासीहुये तब एक सौभाग्यवती सासू और दोय विधवापुत्र व धूदत्तकले किस्के नामसें आवे

६८ एकस्त्रि १ पुत्रजनफौतहुई दुसरीस्त्रिके २ पुत्र पातितीनूपुत्र स्वर्गवासीहुये तवबेवासासू तीन बहूवेवा इनन्यारोंमें दत्तक ले तो किस्केनामसे आवे.

६९ एकसासू ३ बहूवेवा न्यारूंहींजुदाजुदादत्तकलेकर अपना२नामरखेतोलेसकेयानहीं

७० एकविधवा सासू तीनबिधवा वहू एकनपुंसकपुत्र इस्मेंसासू अपनेनामसें दत्तकले तो तीनूं बहूमेंसें कोई वा नपुंसकपुत्र मन्हाँकरे तो करसकेयानहीं

७१ एकपुरुषनेंप्रथमव्याहकीयाएकपुत्रहुवा परणायापीछे स्वर्गवासीहोगया तब वहीपूर्ष १ स्त्रिहोते पुन्ह विवाहकीया एकपुत्रहुवा वादमें वृद्धस्वर्गवासीहुवा अबदोयसासू एकवडी कि विधवावहू एकछोटी कापुत्र वह वडी अपनेंपौतादत्तकलेवे तहाँछोटीकापूत्र मनाँ करे तो करसकताहैक्या.

७२ एकपुर्षके प्रथमव्याहसें एक पुत्र नपुंसक दुसरेव्याहसे १ पुत्रपणाया फौतहुवा अब नपुंशकतें कुल नहीं वधसके और एकसासू पौत्रदत्तकले तो नंपुसक वरजसकताहैक्या.

७३ एकप्रथमस्त्रिके दोयपुत्रहुवा परणायाँवाद पूत्र स्वर्गवासी हुवे तवदुसराव्याहसें एकपुत्र वोनपुंशक वृधस्वर्गवासीहुआ अववडीअपनें दतक वा दोनों बेवावहुवोंके दत्तकलेनाचाहे लहोडीभीमौजुदहे तवकिस्की आज्ञाहोना.

७४ बडीकेदोयपुत्र छोटीके १पुत्र वोतोनपुंसक और बडीकेपुत्र परणायेवादस्वर्गवासी तवनपुंशक पुत्रकीमाता दत्तकलेवे तो किस्कीआज्ञासेंआवे.

७५ एसेंहीदोयसासू दोयबहुप्रथक २दत्तकलेनाचाहैतोआसकेया नहींऔरनपुंशककाक्याहकहे

७६ एककेदोयपुत्र दोनोंव्याहेबडा स्वर्गवासी छोटानपुंशक तब बेवा दत्तकलेनाचाहे और देवर रोकेतो कैसा.

७७ दोभाईंव्याहेहुये छोटास्वर्गवासीहुवा बडानपुंशक भेलेरहते छोटेकीबेवादत्तकलेवे तबनपुंशकजेठरोकसकताहै या नहीं विवाहकीयाहुवास्त्रिसहितहै.

७८ एकपूर्षविदशगयाजीतेमरेका पत्तानहीं वहस्त्रिदत्तकलेनाचाहे तो लेसकेक्या या किस्की आज्ञाहोना.

७९ च्यारभाइयोंमें एकभाईबडा व दुकानमें नामचलताहै और द्रव्यभी उस्कापैदाकियाहुवा है वहपूर्षसंन्यस्थलेके भिक्षा अभोजनकरनेलगगया उस्की स्त्रिदत्तकलेनाचाहे और देवर वरजे तो रोकसक्तेहैंक्या.

८० एकपूर्षसन्यस्थधारणकर रोटी अपनेंहातकीस्वेंकरखाताहै. उस्कीस्त्रिकों दत्तक लेनेका अधिकारहै या नहीं.

८१ तीनभाइयोंमें; एकसंन्यासले भोजनघरेआकेकरताहै उस्की स्त्रि दत्तकले तो लेसकेयानहीं

८२ एककापतिसंन्यासलेकेविटलगयाताकीस्त्रिपूत्रलेसकेक्या

८३विटलेपतीकीस्त्री दत्तकले तब नजीकीभाईबंधरोकसकेक्या.

८४च्यारभाई थितवितबाँटके अलगहोगये बादमें एकभाईबिटल गया उस्कीस्त्रि दत्तकले तब देवर जेठ रोकसक्तेहैं क्या

८५ भानजा व दोहिता व जंवाई दत्तकलिया तब उनके गुरुकोन पहलीके व आयेजहांके दापाकिस्कोमिले इत्यादि.

एसे २ दत्तपुत्र (खोल) विषे सेकडोंप्रकारके प्रश्नखडेहोतेहैं परंतू यहाँकुल ८५ ही प्रश्ननमूनेंमाफक किंचितदरसायेहैं बाकी इसीप्रश्नोंका प्रस्तार (फलाव) होकर बहोतसेहोजातेहैं अब इसप्रश्नोंके अंतरगत (अंतरंगलक्षण) वारिसहकदार व इनके हिस्सेबंट किस २ का कितना २ व कैसे होना वो लिखतेहैं.

[वारिसहककदार व हिस्साबंटविषयप्रश्न]

१ हकदार पुर्षहै किऽस्त्रि है
२ हिस्साबंटपुर्षकौंमिलनाँ केऽ स्त्रिकौं मिलना
३ दोयस्त्रिअपुत्रणीं खावंदमरेबा- द धनकीमालकणीकौंण
४ च्यारभाइयोंमें एकभाईपर- ण्याहुवा लूलहा लंगडा अंधा बहरा सर्वइंद्रियोंसें हीनपरवि- षय इन्द्री साबतहै भाईयोंसें हिस्सा बंट मिले यानहीं व कैसा हक्कहै
५ च्यारभाइयोंमें एककी औरत वेवा भेलेसें जुदीहौनाचाहै तौ देवर जेठोंसे हिस्सा बंट जर जेवर जमीनका लेसकेक्या
६ च्यारभाइयोंपें एककीवेवा गाँ- व कूवा खेत खान बाग घर दुकानादिमें बंटलेसकेक्या
७ च्यारपुत्रोंकीवेवापुन्हसुसरान- विनविवाहकरपुत्रपेदाकरेतहाँ च्यारूँविधवावौंकाक्याहक्कहै
८ एकनेंदोयव्याहकीये पहलीऽ- स्त्रिअपूत्रणी और दूसरीकेपुत्र तबपहलीअपूत्रणींस्त्रिका क्या हक्कहै.
९ पहलीपुत्रणीद्रितियाअपुतणी उस्काक्याहक्कहै
१० प्रथमदत्तकलीया बादमें व्याह ताऽस्त्रिके पूत्रहुवा तबप्रथमद- त्तकपूत्रालिया उस्काकितनाँह- कहै पतिजीते०
११ प्रथमदत्तक पीछे पूत्रजन्म भेलाईदोनूँभाईरहै पितामरे बादजुदाहौय तबहिस्साबंट कितना औरकैसा०
१२ प्रथमदत्तकदूसराजन्म्यादोनों कोंजुदाकरपिताअपनाहिस्सा ले जुदाहो पीछेस्वर्गवासीहुवा उसकेहिस्सेके जर जेवर जमी- नका हिस्साबंटकैसा
१३ प्रथमदत्तकदूसराघरजन्मपुत्र जुदा पिताजुदा सौवर्षपूगणेंसें उस्कादेण लेण काजकिरिया वरका हक्किसपें
१४ प्रथमदत्तकदूसराजन्म्याँपिता मरेबाद माताके कर्जकाफर्द

फकिरपेदोनोंपेयाएकपे
१५ च्यारभाइयोंमें एकजुदाहोना चाहै तो हिस्साकिसकिसची- जमें और सराफीदुकानहोतो क्यातरीकाहै
१६ तीनभाईपरणेंएककुँवारा पि- तास्वर्गवासीहुवा वोजुदेहोना चाहै तब कुँवारेकाबंटकितना और कैसाहोना
१७ पिताच्यारपुत्रोंसांमलरहकर एकपांचवाँपुत्रकों जुदाकरे तो हिस्साबंटकीतना औरकैसा होना (लेनदेनादिमें)
१८ माता पिता दोनोंहीपुत्रोंसें अलगरहे तो हिस्साकितना
१९ बडोंकेहातके द्रव्यमें मातापि ता २ पुत्रोंका बंटकितनाकैसा
२० सासू सुसरा विधवाबेवां २ हिस्साबंटकैसा
२१ सासूविधवादोनूबहू विधवा- धनपेमालकीकिस्की
२२ सासू १ बहू २ तीनूँहीविधवा नहिंबणते हिस्साबंटकैसा
२३ च्यारोंदिवरजिठाणीं विधवा हिस्साबंटकैसाहोना
२४ च्यारौंविधवॉमें एककेपूत्रहैय नकामालककौन
२५च्यारविधवा एककेपुत्र जुदेहो नाचाहै तो बंटकैसा
२६ च्यारूंपुत्रजुदेकरे तब माता पिताकाहिस्साकितनाँ
२७ च्यारपुत्र एकमाता जुदाहोय तो माताकाहिस्साकितनाँ
२८च्यारपूत्र माता अलग मरेबाद उसधनका हिस्साकैसा
२९ च्यारपुत्रोंकों जुदाकर पिता एकपुत्रकेभेलारहे स्वर्गवासी होनेंबाद उसपिताकेंहिस्सेका हकदारकौन
३० वृद्धपितामृत्युसमय अपना धन एकपुत्रकोदेसक्ताहैक्या
३१ एकनेंदोयव्याहाकिया दोनौं स्त्रिके दोदो पुत्रहुये हिस्साबं- टकरनाचाहै तब कैसा और- कितना २ होनाँ
३२ एकास्त्रिकेतीनपुत्र एककेएक पूत्र हिस्साबंटकर जुदेहोना- चाहै तो एकपिता २ माता ४ पुत्र कैसाबंटहोना
३३ च्यारोंपुत्रोंको जुदाकर वृद्ध

पितादोनोंऽस्त्रियोंसमेत जुदा रहै वह स्वर्गवासीहोनेसें धनका मालककौन

३४ दोयमातासें च्यारभाई माता पितामरेबाद हिस्साकितना.

३५ बडीकेपूत्र २ छोटीके १ व्या हकियाहुवा पितामरे और दो नोंमाताकायम तव हिस्साबंट कितना व कैसा

३६ बडीकापूत्र २ छोटीके ३ मातामरेतें हिस्साबंटकैसा

३७ बडीकापूत्र२परण्यों छोटीका पुत्र १ कंवारा हिसा कैसा.

३८ बडीका १ कंवारा छोटीका२ परण्या हिस्साकैसाहोनाँ.

३९ दोयमात ४ भाई (एकके ३ एकके १) हिस्साकैसाहोना.

४० बडीके २ छोटीके १ व्याहा हुवा मरजावे तब बंटकितना

४१ बडीकेएकपरण्या एककंवारा छोटीके १ परण्या एकपोता बंटकरे तव कितना औरकैसा होना.

४२ छोटीके १ बडीके २ पोत्र ३ बेटा ३ परणेबाद बंटकैसाहोना

४३ एकव्याहतास्त्रिके तीनपूत्रए-कके एकपूत्र च्यारूंजुदहोय तव दोयमाता एकपिता उन-काहिस्साकितनाहोय.

४४ प्रथमव्याहताऽस्त्रिके तीनपूत्र यादमेंस्वर्गवासीहो दुसराव्या-हसें एकपूत्रइनच्यारूंकोंजुदा करै तववृधपिताएकास्त्रिसहित कितनाहिस्सा व पूत्रोंका कैसा हिसा वंटहो.

४५ दोयस्त्रियोंमें छोटीकालवड्य हो उस्केहिस्सेकावारिसकौन.

४६ दोयस्त्रियोंमेंबडीमृत्युपावेतब उस्केहिस्सेकामालिककौन.

४७ दोयपुत्रोंमें एकदत्तकदिया दुसराफोतहुवावृधपितावमाता स्वर्गवासीहोते धनकामालि-ककौन.

४८दोयपूत्र एकदत्तकदिया दुसरा फोतहुवा कँवाराही० व माता और बृधपिता स्वर्गवासी होय तब सिरकादेणाँ देकेरिण सेंमुक्तकौनकरणाँ वा किसपे लागू है वारिसकौन.

४९ एककेपूत्र दूजीअपूत्रणी पती

मरेतें धनमें हिस्साकैसेंहोनाँ.

५० एकभाईकेदोपूत्र दूसराकेए-
ककन्याँ जुदे होनेंबाद कन्याँ
काविवाहकर घरजवाँईरक्खें
और जरजेवरजमीनका कुल
मालिकबनावे तो बनसकेया
क्या क्यामिले.

५१ लड़कीपरणाय घरजँवाईरखे
बाद वृधकेपूत्रजन्में तबघरज-
वाँईकोदूरकरे तो जवाँईका
कुछजरहिस्सावंटमें हैया नहीं

५२ भाणजा दोहिता शीतरस्मूमसें
दत्तकलेनेबाद पूत्रहोजावे तब
आपसमेंहिस्सावंटकैसा.

५३ माता पिता बेटेसेंविरूधहो बे-
टीको धनदेवे बेटामनाकरे कि
धनतोंवरवादकरतेहो सिरका
देनाकौनदेगाऐसेरोकनाचाहतो
जीतेपितापूत्र रोकसक्ताहैक्या

५४ एसेंहींसर्वस्वधन पितालुटाना
चाहे वाजमीनपुन्यार्थ देनाचा-
हे तो पुत्ररोकसकताहैक्या.

५५ च्यारभाईभेलाहोते एकको
बेवाजुदीहोनाचाहे और पाँती
माँगे तो मिलसकतीहैक्या वा
क्याहकहै.

५६ च्यारभाइयोंमें एककी बेवा
पासधनहै देणमेंपातीदेकीनहीं

५७ च्यारभाइयोंमें एकभाईकाम
काकरताथावोसबगहणादागी-
ना व रोकड अपनी स्त्रिको
सौं स्वर्गवासीहोगया सिरपे
करज तीनभाईकेंवारे माता
पितावृधइसबारेमें उसबेवापा
ससें धनक्योंकरलेनावाकैसा
हिस्साहोना.

५८ एककेदोस्त्रि प्रथमके २ पूत्र
व्याहेहुयेस्वर्गवासीहोगये व
उसकीमाताभी कालवश्य दू-
सरी स्त्रिअपूत्रणीसू वृद्धजी-
ते बहूविधवा दोनोंजुदीहोना
चाहेतो हिस्सावंटकैसें.

५९ एसेंहींभेलीरहकर पांतीमाँगे
तो कैसें वा क्यादस्तूरहै.

६० एककेदोस्त्रि अपूत्रणी पती
कालवश्यहुवा दोनोंल्होड़ी ब-
डीमें धनकीमालकीकिस्की
वाहिस्साकरेतोकैसें.

६१ एकनेप्रथमव्याहकीया उस्के

१ पूत्रहुवावोव्याहेवादस्वर्गवा सीहुवातबवृधदुसराव्याहकी- या उस्केभी १ पूत्रविवाहकी येतें कालवश्यहुवा व वृद्धभी पर्मधामपहुँचे ते दोयसासू दो- यबहूअबधनपेमाल्कीकिस्की हौना

६२एसेंहीं नहिं वणते जुदे हौनाचा है तौ हिस्साबंटकैसा

६३एसेंहीं सासु एक दौयबहु हिस्साकिस्कूँकितनाहौना

६४एसेंहीं सुसरा सासू दौयबहून- हिं वणते हिस्साबंटकैसा

६५एकसासू दोयबहू छौटीबहूजु- दीहौनाचाहेतोधनकाउजरदो- नोंमेंसेकिस्सेंकरे धनपेमाल्की किस्की

६६दोयसासूविधवा दोयबहूविध वाएकदेवरनपुंशक नहिंवणते जुदीहौनाचाहे तब जर जेवर जमीनपे कैसाबंटहोवे

६७ एकनेंप्रथमव्याहकीया एकपू त्रहुवा परणायापछेमरगयातब फेरव्याहकीया उस्केएकपूत्र हुवा वृधपूर्षकालवश्यसें दोय सासू एकविधवाबहू एकछोटी काजणहुवापूत्र येजुदेहौनाचा हेतबकिस्कारहक्काकितना रहे

६८एकपूर्षनें प्रथमव्याहकीया ए- कपूत्रहुवा वह नपुंसकहै दुसरे व्याहतासें एकपूत्रवा वोपर णायेवाद मृत्युपाई वृधभीका- लवश्यहौते धनमें पातीकरे तो (एकमाता और एक नपुंशक पुत्र) इधर(एकसासू औरविध वाबहु) हिस्साबंटजरजेवर ज- मीनमें कितना और कैसेंहोना

६९एककेप्रथमास्त्रिके २ पूत्र पर- णायेवादमृत्यु दुसरी स्त्रीसें एकनपुंशकपूत्रहुवा वृद्धस्वर्ग वाशी ० धनकाहिस्साबंटकैसें (एकसासूदोयबहू एकमाता एकनपुंशकपूत्र)

७०भोजाईविधवा जेठनपुंशक सा सूविधवाधनपेअखतियारकि स्का और जुदीहौनीचाहे तो भोजाईकाक्याबंटहो

७१एककेदोयपुत्रदोनोंव्याहे एक पूर्षथावोस्वर्गवासी नपुंशक और उस्कीऔरत सौभाग्य

वती वधनहोते जुदहोनाचाहे तवबंटकैसा सासू १ बहू १ न पुंसकस्त्रिसह २

७२ विवाहकीया हुवा नपुंसकका पांतीमेंहककितना

७३ एककापतिविदेशगया जीतेम रेकापत्तानहीं ऽस्त्रीदेवरजेठोंसें जुदीहो हिसाबंटामिलेयानहीं वा कैसा

७४च्यारभाई बडेकानामदुकान में धनभीउस्काकमाया वो स न्यासीहोगया उस्कीऔरतदेव रजेठोंसेंधनमाँगे वा हिस्सा बं ट जर जेवर जमीनमें माँगे तो मिलेयानहीं वा कितना

७५एसेंहीसंन्यासी रोटीघरे आके खाताहै तो स्त्रिकाहिस्सामिले या नहीं

७६ तीनभाईमेंएकाविटलगया उ स्कीस्त्रि देवरजेठोंसें जुदीहो कर अकेलीरहनाचाहे तो हि स्साबंटामिले या कितना कैसा

७७ तीनभायोंसें जुदेहोनेबाद एक विटलकरचलाजाय बादमें आ कर अपनी पांतीकी जमीनपे दाइयाकरसक्ताहै या नहीं

७८एकसंन्यास मनसेंही लेकेचला गया और विटलानहीं पीछे आकरभाइयोंसेंपांतीमाँगे तो मिलसके या नहीं.

७९एसेंहीपरण्याहुवा होय पीछा आके स्त्रिके साथ होकर भाई योंसेंहिस्साबंटमाँगे तो मिलस- के या नहीं

८० एसेंहीकंवाराहोय भूलकरसं न्यस्थहोगयाविटला नहींपीछा आकरभाइयोंसें पांती माँगे तो मिले यानहीं.

८१भाईभाईजुदेहोनें बाद संन्यास लेलेतौसाहूकारोंकाकर्जकिस्पै

८२च्यारभाईभेलेरहते एकसंन्या सलेलेतो उस्कीपांतीकाक- र्जकिस्पै

८३संन्यासधारण करनेमें किस्की आज्ञाहोतीहै वा उस्की स्त्रिका खर्च व पांती व दत्तकवगेरा क्याक्याकायदाहै

८४हिस्सेंबंटेमपांती मर्दकी या औरतकी.

८५एक भाईनें दोय व्याह एकनें

ककीया हिस्साबंटकैसाहोनाँ

८६ भाईभाईजुदेहोनें बादएकभाई भोजाई समेत कालवश्यहो उसके २ कंन्याँहे कंवारी बाप रणी उसकाविवाह वा मामेरा किसनें करणा वा भरणपोषण व श्राध कर्मादि कौंनपेलागूहे व उसके धनका व देनलेनका मालिककौंन.

८७ भाईभोजाईवगेरधनमुफलिस है वा भोजाईविधवाहै वा अपंग कुष्टीइत्यादीरोगीहै तोपालन पोषणाकिस्पे.

८८ इनसबकार्योंमें हकदारमर्दहै या औरतहै.

८९ पांती औरतकोंमिलेया मर्दकोंया नपुंसककों.

९० एकमर्दघरमेंहोतों दुसरी भाईकीवहू या काकी भोजाई इत्यादि विधवाऽस्त्रियोंका क्या हकहै हिसाबंटहो या नहीं.

९१ च्यारभाईमें तीनपरणेएककँवारा धन वा रिणहो धनमें पांतिकितनी और कैसी रिणमें पातीकिस किस्की कीतनी २

९२ एकके च्यारपूत्र परणायके जुदेकिये सबके एक२ लड़का एककापतीस्वर्गवासीहुवा तब उसनें आपकापूत्र दूसरा दूसकाभाईबंदकों दत्तकदेदिया अब करजदारोंकाकरजा कौंन चुकावै वा भाइयोंपेलागूहो सक्ताहैक्या.

९३ एसेहीपुत्रदूसरेकोंदेदिया वाद वो स्वर्गवासी हुवा तब उसपूत्रकेधन वा रिणकाहकदार कौं नरहा.

९४ एकविधवा स्त्रि पूत्र दूसरेकों दत्तकादिया वाद आपकालवसहुई तब उसस्त्रिका धन व रिण कौंनदेवे लेवे.

९५ एकपूर्षके दोयस्त्रिदोनोंकेएक२ पूत्र एककोंपरणाया एक पौत्रहुवा बाद बाप बेटा पोता स्वर्गवासीहुवा फगतएककँवारापूत्र दोयमाता एकभोजाई एकप्रभोजाई इनके आपसमें नहिं वणते जुदे होनाचाहे तब हिस्साबंट कितना और कैसा किन २ कौं कितना २ मिले

१६ एकपुत्र उस्कीस्त्रि दोयमाता एकभोजाई एक प्रभोजाईएक नपुंशकभाईवभतीजाहिस्सा- बंटकैसे और कितनारहोना.

१७ एकमाता एककाकी दोय भोजाई सबविधवा एकनपुंश क अब हिस्सा बंट करै तौ जर जेवर जमीन बाग कूंवा इत्यादिका बंटकैसेहोना। इस धनपे मालकी किसकी और बंटकर देनेवाला कौन किस तरहसे बंटहोना।

१८ इनसबबातोंमें हकदार हिस्से बंटकामालककौनहै.

अथअपुत्रणीविधवाऽस्त्रिविषयप्रश्न ।

१ अपुत्रणीविधवाऽस्त्रि अपणेंबंटकीजमीन बेचसक्तीहैक्या

२ अपुत्रणी विधवा अपनाद्रव्य किसीकों बक्सीसकरसक्तीहै क्या (स्थावर वा जंगम)

३ अपुत्रणीविधवाअपनीजमीन पुन्यार्थ देसकतीहैक्या।

४ अपुत्रणीविधवा अपनाबंटकी जमीन गिरवीरखसक्तीहैक्या।

५ अपुत्रणी विधवा अपनीजमीन बेटीकौदेसक्तीहैक्या

६ अपुत्रणीविधवाअपना बंटकी जमीनबक्सीसकरसक्तीहैक्या

७ अपुत्रणीविधवास्त्रि अपनीजमीनजायदात गहणा दागिना घर खेतादि कुलबिभवलिये भाईबंदों देवर जेठोंसें अलग रहती है और जीतेजी अपनी स्थावर जंगम सबचीजों रूप रलिखेमुजब करे तो नजीकी भाईबंद रोकसकते है क्या जीतेजीविधवा अपुत्रणीके धनपे वारसी किस्कीहोना वा है

भाईभाइयोंकाशुद्धाशुद्धव्यवहार।

१ भाईभाईभेलारहे रुजगारभेला खर्चभेला रोटीएकचौके जीमें पुत्र कंन्याका विवाहसामल खर्चखाता आराजुखता लेनदेनवेपारव्यवहार सबसामलसो उत्तम

२ भाईभाई धनबाँटले बेपार व्यवहार सांमल रोटीएकचोके जुडताधन व खर्च अपना २ शाकी साल आंकड़ाबांधे जमा वा लेखे अपना २ मांडले वै सो सम.

३ भाईभाई बेपारसामिल रोटी जुदीजुदी दामअपने २

४ भाईभाई बेपार जुदा रोटीसाँमल खर्चहिसाबंबटहैनाँवेंमंडे

५ भाईभाई जुदे बेपार व्यवहार विवाहादि रोटीखर्चसवैंतजुदा होवे (ऐसाभी होता है)

६ भाईभाईदुकाना अपने २ नामसें धन हाण बृद्धि व खर्चसामिल विवाहादि खर्च व रकम गहना दागीना जादा कम अपने २ नावेंमांडे रोटीजुदी २ एसातरीकारक्खें.

७ याप्रकारसें भाई भाई जुदे भेले रहनेका उत्तम समध्यम सम अधम कनीष्ठादि छवप्रकारके तरीके हैं देखो भेलेरहनेमें वा जुदेहोनेमें क्या २ हानी व लाभहै सुविचारो.

अथ

[अनुभविक उत्तर]

सूचना संक्षेपमात्रलिखतेहैं कि उत्तरतो इनप्रश्नोंका कुछआपलोगों सें प्रबंधबंधकर आनेकी आशाहै पर हमकों अनुभवहुई वोबातें लिख जाहरकतेंहैं सोभीजराबाचके विचारकरें.

१ धनमेंहक पूर्षकाहैऽस्त्रियोंका नहीं स्त्रि घरमें १०होय और पूत्र १ एकहीदिनकाहोगा तो जन्मतेही मालकसोही पूर्षहै. विधवाऽस्त्रियोंका हक रोटी कपड़ा वरांणे मुजब हातखरच धर्मपुन्यकों परवोभीकुलमर्यादमेंचलेतो (मनइच्छितपूत्र नहीं करसके)

२ नपुंशककाहक रोटीकपड़ाखर्च चाहेराजपूत्रक्योंनहिंहोय कुल मरजादमें चले जबमिले

और कुलमर्यादउलंघजावे तो येभी नहिं.

४ देनेकरजेकाफर्ज परण्याहुवापे हैं कँवारेपे नहीं परसर्वस्वविभवकामालिकहै तो देनें लेनेंका भी हकदारवहीहोगा.

५ क्रियाभ्रष्टहोनेंवाद हकदारी वारसी व बंट हिसानाहिंमिले.

॥ श्रीः ॥

[प्रबंधकार्य सूचनिक शिक्षा]

प्रियवर माहेश्वरी जातीभाइयों आप आपसमें इकलास रखके इतने कार्यका प्रबंध तो जरूर करें जिस्सें आपकी सुकीर्ति प्रगटहो और अपनी ज्ञातीमें कुरीतियाँ निर्वाण हुये अनेक व्याधी मिट आरोग्यता प्रगटे और सर्व ज्ञाती भाइयोंको सुलभतासें हैसियत मुजब कार्यकर अपनी अभिलाषा पूर्णकरनेका अवकाश मिले यह ज्ञाती प्रबंध (कायदा) अपने २ ग्राम व देश प्रथावत सर्वजगहैं जरूर बाँधेगे यह पूर्ण आसाहै.

[शिक्षा]

१ कम खर्च करना औरोंकीबराबरी करनेसें आखिर नतीजा बुराहै, सदैव दिनएकसा नहीं

२ कम उम्मरमें श्यादी करनेसें वीर्यहानीहोकर अनेकरोगोत्पत्तिहोतीहै.

३ वृद्धविवाह वर्जनीय प्रबंधहोना ३५ उपरांत व४०वर्ष उपरांत तो जरूरही वर्जनेयोग्यहै

४ कन्याकाविवाह १० वर्षहैं उपरांत १४ वर्षकेभीतर होजाय तो श्रेष्ठहै.

५ आटेसाटेकी सगाईकरनेमें धर्मकीहानीहै

६ कन्याकीरीत लेकरधर्मखोके नामबदनाम करनेसें बचना

७ गरीबभाई कमखरचसें कार्य करे उनकी हास्य नहीं करना

समझनाचाहियेकिसबकादिन एकसानहिंरहता

८ गरीबभाइयोंके व बेमाबापके बालकोंकोंसहायतादेना

९ विद्याकाप्रचार पाठशालाबनानेकीकोशिशकरना

१० स्त्रियोंकोंपढानेकाउद्योगकरना

११ जग्योपवित्रस्नानसंध्यादिधर्मोन्नतीकरनेमेंमदतदेना

१२ इल्महुन्नर सीखनेकीकोशिश व कारखानाकरना

१३ कुरीतीनिवार्णार्थप्रबंद्धबांधना

१४ आतसबाजीरंडियाँ वगेरेमें नफेनुकशानकाविचारकरना

१५ विधवास्त्रियोंके खर्चकाप्रबंद्ध दया युक्त विचारकरना

१६ सगाई दत्तपूत्रादि रीतरसूमका प्रबंद्धबांधना

१७ गुरांकादापाविवाहविषय व मृतकदोवण्याँदिकाप्रबंद्धहोना

१८ कमउमरवालेके नुखतेकीआज्ञादेनाभी अयोग्यहै

१९ किरकोलखर्च धजा धोवतीनेगरकीणाँ कमीणआदिकाकांसा व रोकड़देनेका प्रबंद्ध

२० शुभकार्यमें नारेल सुपारी गींदोडा आदिकानयम

२१ प्रबंद्धहरकार्यका अपने २ ग्रामदेशप्रथावतकरनायोग्यहै

२२ सर्वोपरीकाम यहहै कि आपसमें इकलासरखकेनिरपक्षहो धर्मनितीयुक्तप्रबंद्धबांधनाहम तो लिखनेकेताबेदारहैं आगे अखतियारपंचोंकाहै

आपकाताबेदार.

शिवकरणरामरतनदरक

माहेश्वरीमूंडवेवाला।

श्रीः

शिक्षाआचारविषय।

अपन विष्णुधर्मधारिक लोगोंनें आचारभगत न्हाना व धौनाहीमा-नरक्खाहै तौजरूरहैके वंगेरन्होंनेंसेंक्याआचार परअपनेंन्हानेमेंतो बीस घडेपानीतक पारपडजायतो भी अच्छाहै वर धौना क्या यह खबर ज-रूररखनाचाहिये देखिये अपनें नवहीद्वारौंसेंमलआठौंपहर चुवताहीरह-ताहै परंतूइननवद्वारोंमें दोयद्वार एकतोमल औरदूसरामूत्रद्वार यह दोय महाभ्रष्टहै इन द्वारोंसे औरसबहीद्वारउत्तममानेगयेहैं औरसबद्वारोंसेउ-त्तमकार्यभी बनसक्ताहै पर यह दोयद्वार तो केवल मलमूत्रश्रवाहीहै तब चाहियेके इन मलद्वारोंकों अच्छीतरह धौकेपवीत्रकरें परंतू यह बाततो आपनी २ एकांतरही नजानें धौई के पौंची पर प्रसिद्धसें झाडेके हात धौजाननाअच्छीतरहसें आजायगा तो भीआचारठीकरहामानेंगे देखो महाराष्ट्रदेशकेउत्तमवर्णअच्छेवेदपाठी व आचारीकर्मकांडके जाणनेंवा-ले मलसें फरागतहोकेहातनहिंधोतेहैं केवल दोअंगुलीमेंपृथ्वीसें स्पर्स करकेएकपैसेभरपानीउसीलोटेमेंसेंजोमलशुद्धीकोंलेगयेथे झेलचाला तेहैं उसीसेंजरासाधोलेतेहैंपुन्ह उसी पानीसें दांतुनमुखप्रछालकरके गा-यत्रीपाठकरशुद्धहोजातेहैंउसमेंसेंथोडासाछींटाकामपडेतो पवीत्रमंत्रके साथ अपनेशरीरपेभीडाललेतेहैं तब कुछेक अनुभवसें जानाजाताहै के उनके हात अशुद्धनहिं होतेहैंक्योंकेवहविवेकी पुर्षमूलद्वारके हात लाहकोंस्पर्शकरतेहोंगेजबहातधोनेकाक्याकामवहतोशुद्धहीरहा परंतू हमलोगोंकोंतो मलद्वार हातसें मल२ के धौनापडताहै इसवास्तेपहलेतो बामां हात जादा नहिंतो तीनवारतो सूखीरखोंडी वा मृतकासें खूबस-फाकरें फेर वामहस्त मृतिका जलसें ३ वार अलगधोकर संकारहितक-रले फेर जादानहिंतोतीनवारदोनोंहस्तमिलायकरमृतिकाजलयुक्त मर्द-

देनकर २ के धोवे मुखप्रक्षालधोना अच्छीरीतीसे आजावेगातो देखनेंवा-
लौंको मलद्वारभी शुद्धिकरआनेकी पूरितांहोगी नहिंतो पानी कितनाहीं
डोलो परमलसें सफाईकहाँ देखो पहले यह न्दौनेंका मूलधोनाहै इसवास्ते
हात मूँहँ नाक अच्छीतरसहसें धोवे यह द्वारश्रेष्ठ रखनेंसें कोईरोगभी
प्रगटनाहिंहोगा और पास बैठनेंवालोंकोभी कभी गिलानी नहिंआवेगीदे
खोगुजरातदेशकीप्रथा कैसीउत्तम देखनेंकौंलायक हैके मलसेफरागतहो
के मूलद्वार शुद्धिकरो वा नकरो पर दांतुनकरनेका झगडातो १ पहर
सेंकमदेरीमें पारनहिं पडेगा वल्के जलदीकाकामहौगातो रस्तेचलते
मलश्रवतेभी दांतुनकीयेसें रोटीखावेंगे इसीतरह देशप्रथावौंसें आचारमें
विचार वगेरफरकपडजाताहै पर मलद्वारतो सर्वदेशौंमें एकसाही माना
जाय यहठीकहै एसेकहींआचारजादा और विचारका खड्डा और कहींवि-
चारहीविचार और आचारकाखड्डासमझकेदेखोतोंआचारथोडाहीहोय
और विचारसावतरहेगा तौक्रियानेष्टनहिंहोवेगी मुख्य खान पानोंमें आ
मष मदिरादि व नीचजातीके हात व घरका खान पानोंसेंबचणा मुख्य
शुद्धाचारवालोंको ४ वातोंसेंहरदमबचकररहणाऔरविचाररखनाचाहि
ये (मल मूत्र मदिरा आमसें बहोतबचतेरहें) पुन्ह पुराचीन आचा-
र्योंने वेदादिकोंमें मदिरा आदि सर्ववस्तु लीनलिखगयेहैं वह श्रुतिय
वाचपढके अपनेंलोगोंको डहकनानाहिंचाहिये वह लिखनाभी उनका
सचहै परंतू यह बात तामसियोंकेलियेहै सात्विक धर्मवालौंको तो शुद्ध
आचार रखनाउचितहै देखो अपना शुद्धाचर्ण रखनेकौं कैसे २ प्रबंध
बांधेहैं यहाँतककी शाकभी विदरंगहोय ताकात्याज्यकीया जैसें (गाजर
कौंदा सलगम मसूरकीदाल लहसुण वगेरे बहोतसीकविदरंग औरं बद-
बोकी वस्तुवौं छोडदी) पुन्ह गुड़केसाथदुग्धवेरीबमूलकेदांतुण महुवेके
पत्तेकी पत्रावल इत्यादिका त्यागकीया सो केवल शुद्धाचारकेलियेहैपर
एकबहोतमोटीभूलअपणें विष्णुधर्मधारीक लोगोंमें रूडीपडरहीहैके

रात्रिभोजन और अणछाणियाँपाणी देखो अणछाणियाँ पाणींमें असं-
ख्याजीव चलते हलते नाचते कूदते कलवलते तौ पीजातेहैं और शुद्धा-
चारीजी कहलाये जातेहैं तौ यहाँ दयाकाधर्मअपनाँकहाँरहा लक्खोंजीवों
का नाश कर पेटमें भरलीये जब अनुकंपातोगई पर सुग्या भी नहिं
आई परंतू अपनेंकोंक्यादोषहै अपनें आचार्य गुरुसौभीतौ अणछानेंपा
नीकी भिन्ननहिंगिनते और कहतेहैं यहजलतौ आपहीजीवरूपहै और
जीवनइस्कानामहै वहठीक परंतु उसजलमें जीव चलतेहलतेहैं सो वहजी
वतों न्यारेहै उनकों तौ बचावो परउनजीवजंतुवोंका बचनाकहाँहै देखो
अपनेगुर आचार्य गंगागुर गयागुर कासीगुर जगदीसगुर कानकूब्ज
उत्कल माथुर तौ बडेबडेमच्छोंका आचर्णकरते हैं औरसंध्योपासनागंगा
कीतीरपर करनेंकों बेठते हैं तब जाल और कंटकडालके मच्छपकड़ा
करते हैं तौछिपा २ के कुछऔरभी खानपानादि कियाकरतेहोंगे सुनासु
नते हैंतो इस्मेंक्याफरकहै जो उन्होंनें अपनेहातसें लटपटातेहुये मीनहा
तसेंबनाचर्वणकिया तब सीधासोदा कसाईकालेनेंमें क्या गिलानीका
कामहै और अपनेंगुर सारस्वत ब्राह्मणहै उनकी उत्पत्ति पंजाबदेससें
कहते हैं जहाँपंजाबदेशमें यहीसारस्वत अभीतकदसपांचमनुष्य सामिल
होके बजारमेंसेंभैंसा मेंढा बकरा जीता मौललेकेहातसेंबनायचबाजातेहैं
सुन्ह इधरवाले सारस्वत देवीपूत्रतौ कहलातेहैं परंतु अत्रदेशी
प्रथाप्रनालिकामें चलतेहैं पंजाबमेंतौ अभीतक यह काम करतेहैं हा हा
राम राम राम अनुकंपा हृदयस्थानसे उठके कहाँ जा छिपी पर
नहिं २ यहबात झूठीहोगी वेदपाठी ब्रह्मवेत्ता ब्राह्मण एसे निठुरकर्म काहे
को करेंगे और जो करतेहीहोंगे तो आसाहै कि जरूर त्यागनकर शुद्ध
धर्म धारणकरेंगे और दाधीच दायव ब्राह्मण अपने गुरु करते तौ
माहामायाकीपूजाहै परशुद्धाचारसे ऊज्जलक्रियाकरतेहैं औरब्राह्मणोंके
गुरु संन्यासी वहभी शिवशाक्ति उपासनावालेहैं इसीतरह जिन २ गुरु-

वोंका अपनेकों धर्मउपदेसहोताहै सोतो इसतरहका उपदेसदेनाचाहेंगे अब अपनें शुद्धाचार चलनेका रस्ता तो श्रीभगवानके ही हातरहा विचारकरदेखो और विवादछोडो हमजिसरस्तेचलतहोंग वैसाही उपदेस देंगे हरएकतरहसें श्लोक श्रुति स्मृत्योंसें अपने मनकामनोर्थ पूरण करहीलेवेंगे कोईप्रतिवादी साम्हनें बोलेगा उस्को हरएकतरहसें वेदोंकी दलील और पुरान कुरानादि आछुधोंसे मार हटाय अपनी जयकरही लेवेंगे पर वहचलते हलते जंतू मारखानेंकी हिंसावोंको कहाँछिपाकेर रखेंगे हमकोंचरचामेंतोलखोंबखतजीतजाय परंतू एकाहिंसानहिं करेतो वह करोड़वार हमारेगुरु औरआचार्य नहिंतो वह है सो है यहाँ अब क्यालिखें हमारेवडोंकेपुन्यहेताकारनसें हमकों भीपूजणाँभागहै परंतू हाय हाय थूथू राम राम राम उनतड़फते जीवोंकोंपेटमेंभरलेवें एसेगु रोंकों हमकायासेंतो पूजलेवेंगे परंतू मन और वचनसें तो विचारहीकरते रहेंगे क्याकेर बडोंके मानें पूजेगुरू और पंथपक्षोंसें बंधेहुये कदापी हमसमझ बीजावेंगेतो भी हमकों तो बंधेहुये मरकटकी नाँई उनके ना चके संग नाचनाँहीं पड़ेगा. पुन्ह, रात्रिभोजनविषयमें भारत भागवत मार्कण्डउद्यालकबाल्मीकिवशीष्टादि बडे २ रिषिराजोंने रात्रिभोजनका निषेधकियाहै जो प्रमाण श्रुति स्मृति श्लोकोंसें भूषितकरें तो वडाएक पोथा बनजायसो कहाँतकलिखें और बाचनेवालोंसेंभी नहिं बाच्याजाय परंतूअत्रदेशीविष्णुधर्मधारिक भाइयोंमें एसी रूढ़ीपड़ रहीहैके जोभोजन दिनकोंतय्यारभीहोगयाहोय तोभी कहेंगेके तारेऊ गजानेदोफेरतारेदेखकेव्यालूकरेंगे अभी अधरबिंबमें क्या भोजनकरणा और एकश्लोकभी मार्कंडेय पुराणका याद करलेतेहैं आशय यहहैके एकसूर्यमेंदोबखत भोजन नहिंकरणाँ सो हे विद्वज्जनोंजराविचारतोकरो यहश्लोककिनकेवास्तेथाऔरक्याअर्थहै यह बात ब्राह्मणोंके वास्ते थी के एकदिनमें एकाहिवार भोजनकरणाँ पुन्ह दूसरेदिन फेरवही षट्कर्मों-

से निर्वर्तहोकर ईश्वर अरपित भोजनकरणाँ परंतू रात्रिभोजन करनाँ तोनहोंलिखा केवल १ सूर्यमें एकबखतही भोजन करना यहबातथी और एकादिनमें दोयबखत भोजनकरनातामसियोंकाधर्महैं सात्विकियोंकातो अल्पअहार और एकहीवार भोजनहोताहैं अभीदेखो बहोतसे ब्रह्मचार्य और साधूसंत एकवारहीभोजनकरतेहैं और इधररात्रिभोजन रोचिकां के समझमेंतो एसाहीआताहैपरंतूउनलोगोंकें एककारनसेंतोरात्रिभोजन नहीं सिद्धकरनापडेगा के प्रातसमय अणोदयसो माखणमिश्री और पि छेदूधरबडिये पुन्ह राजभोगकी तयारीके माळमसाले सघन आहारसां झतकनहींपचनसेरात्रि भोजनहीं द्रढकरणाँपडा और जिसवास्ते अपनें आचार्य गुरुचले उसीरस्ते अपणेंकों चलना भाग्यहै परंतू दिनके भोज न जैसा रात्रिभोजनमें सुखनहीं देखो प्रथमतो यहगुणहैकेदिनमेंभोज- नकीया वो रात्रिसयनसमेंतक पचनपेआजायगा और जलपानकी इच्छाभी पूरितकरलेगा तब अजीर्णादि रोगभीउत्पन्ननहिंहोंग और पेट में वायु वर्द्धनभी नहिं होगी और निद्राभी सुगमरीतीसें आजावेगी रोगोंकी उत्पत्ति फकत अजीर्ण आचरण अपचआहाररहनेंसे और भोजनपे जल नहिं पोंहोंचनेसे होती है तो दिनका भोजन कर ना अच्छाहै जीवोंका पडना और नहिं पडनाँ तो दूररहा पर कीड़ी मकोड़ी रात्रिमें खैर कहाँदीखेगी जानेंदोजी दिनकों भीतो पा- नीके जीव लक्षों किलविलातेहुये एकहात कपड़ेसेंही वचसकतेहैं वहभी अपणें पेटमें गटकाय जातेहैं तो रात्रीमें अणदीखतजीव पडते नहिं पड़ते किसनें देखे और थोड़े वहोत पड़हीगये तो क्याहुवा हमन्हानें धोनें और तीखे तिलकोंसें आचारीतोबाजहींजावेंगे और सोदोयसो श्लोककंठा करलेवेंगे तो माहात्माजी कहलायेजावेंगे परहे पर्म पवीत्र वैष्णव धर्मधारिकस्वजनवर महामित्रोंआपविचारकरदेखोग तो शुद्धाचार भक्षाभक्षकेविवेक औरविचारसेहीहै और जहाँभक्ष अभक्षव स्तुवोंका विचारनहीं वहांही अनाचर्ण औ अनाचारहे परंतू कितेक लोग

बालपनेसेंहीलोभमेंलागकेकुलधर्मरीतीकोंछोडकर फगत पेटहीभरनेंके उद्योगमें लगजातेहैं इधर वेसेंहीं यजमान कीर्तिधर्मधारिकहोजातेहैं जैसें दक्षनके वैश्य भंडाराकरे और ब्राह्मणोंको दक्षणा आठआनेसेंलगाकर ५ पांच ७ सातरुपेतकदेतेहैं वहां भौदेव साठ २ सौसोकोसतकके रात्युंरातकासीदोंसेभी अधिक दोड़के जापहुंचतेहैं वहाँ कहाँतो संध्याँवंदन और कहाँ का न्हानाँधोनाँ वल्के लघुसंकाभी खडे२करके अगाडी चलनेंसेंहीं ध्यान रखतेहैंआगेजाकर जीमें वहाँ संजोगी वैरागी कुलटूट जिस्के जात न पाँत बावाजूके कुलसतरे और सातमा खाती बापसुनार दादी दरजण दादालुहार और पूछेतो अंतनपार ऐसे २ भोजनभंडारेमें सामल जहाँगुरडे, डाकोत कारटिये भी विचारे कहाँ जाय कोईजात जा मिलेतोकोनपह्चानेंऔर कौनकिस्कों जानें वहाँतो गफेमारनेंसेंहींकाम लियेदक्षणाकेदामऔर भगेदूसरेभंडारेपें तीसरेहीगाम परसेठजीतो कीर्तिदानहिसें राजी और भौदेव दक्षणाकेहीअनुरागी वहाँधर्मकहाँ केवल लोभसेंहींकामहैं जवहमारेएसेगुरु भंडारोंहीमेंदोड़ २ के अपठरहजातेहैं औरहमारेमहेश्वरीयोंके जबविवाहादि कर्मकांड व हवनादिकोंका काम पड़े तब महाराष्ट्र ब्राह्मण आकर शूद्रसंज्ञाकायमकर शूद्रकमलाकर शूद्रवास्तव शुद्रसंहिताहीसें वेदोक्त मंत्रपठकर कर्मकरावतेहैं तहाँ वेदमंत्रभाषण हीनहींकरते तो जरादेखो भगवानने ४ वर्ण उत्पन्नकिए और ब्राह्मण क्षात्रि वैश्य इन तीनवर्णोंकों वेदपठनका अधिकारदिया तो दक्षणके महेश्वरी वैश्य शुद्रवतक्यूँहोगये यहबडेआचर्यकी वातहैं देखो और देशोंकेमनुष्योंसेंइनकाआचार न्हाँना धोना स्वेतवस्त्र तीखेतिलक कंठी कटिसूत्रादिसबतरहसें स्वच्छदीखताहै औरएन्हेंशुद्रसंज्ञाक्यूँ मिली तो कुछेकजानागयाके वह दक्षणके वैश्य महाराष्ट्रदेसप्रथा कुछ कमरखतेहैं गजैसेंमहाराष्ट्रदेशी विप्र मलसेंरहितंहोके हात व मुखप्रछालादि उसीशेष जलसें करलेतेहैं व रंडास्त्रियोंका कियापाक भोजन व लहसुण प्याजा-

दि भक्षण व मामा मासी आदिकी कन्यावोंसें विवाह एसे २ कामकरते हैं वैसेंही महेश्वरी नहीं करनेके कारन शूद्रठहरायेगये मालूमहोतेहैं शाखतमलसे रहित होके हातमृतिकासें धोलेतेहोंगे जिस्सें वहशूद्रवतसमझगये तबउनब्राह्मणोंके नजीक तो मूलद्वारभी धोनामुनासबनहींथा परंतूक्याकरे जबकुलगुरू पंचगौड़ अपढरहगये और अपणेंको कर्म करावणाँहीपड़े तब दुसरीजातीके ब्राह्मण चाहे शुद्रछोडके औरही कुछ कायमकरले तौक्याजोरहै पर गुरुलोगोंकों एसीरकासीदियें कराके द्रव्यदक्षणाँदेतेहैं जब उनको पढनेकी समयकबमिले अहर निस भागनें सोहीं काम और याहीकारनसे दीन मलीन शूद्रपदकों प्राप्त होगये और होतेंहीजातेहैं तो जराविचारनेकीबातहै दान और दक्षणाँ देनेमें हम नाराज नहीं पर ब्रह्मकर्म और आचारविचारनेष्टहोताहै यही जराविचार आताहै जादा क्या लिखें इति ०

श्रीः ।

ब्रह्मकर्मरहितद्विजमुख-
चपेटिका ।

हेद्विजवर महाश्रेष्ठाविद्वज्जनों माहेश्वरीकुलगुरूजीजरातोविचारकरों के इसच्यारवर्णमें प्रथमवर्ण आपकाहै और हमारे तृवर्ण (क्षात्रिवैश्य शुद्र) के आपगुरुहोकर हमारेकों धर्मोपदेसदेके शास्त्रानुकूल धर्ममार्ग मेंचलानेकी आशारखतेहो और हमभी आपके मुखारविंदके बचना कों सचे और मुक्तिफलदायक समझके हृदयस्थानविषय स्थापनकर लेतेंहें और उसी बचनोंप्रमान चलतेहैं पर एक आश्चर्य उत्पन्नहोताहैके हमतो आपसें लघुवर्णमें हैं और आपउच्यवर्णहोकर ब्रह्मकर्म छोडके कलुविडंबनरूपक्यों धारणकरतेहोंक्याकलु आकर एकीजगाँहै उच्चस्था

नदेखके प्रवेशहोंबैठा तो क्याआप कलूकों शास्त्रोंकेशस्त्रलेनहिंभगासक्ते हो क्या आपकीसामर्थामें कुछबलप्राप्तहोगयाहै आपतो सर्वज्ञ और सर्वशास्त्रव्यक्ता सर्वजग्तगुरु भौंदेवहो जरातो विचारनेकी बात है क्या एसे २ कर्म कीयेबगेर पेटनहिं भरता. या ब्रह्मकर्म करनेमें आपकों कुछ ग्लानी प्रगटहोकर यहकर्म श्रेष्ठपायागया. तब कोईकहेके एसीहाजरी साधेविनाँ पेटनहिं भरता तोयह अनेकाद्विज कर्मसाधन बराबरकरतेहैं वोक्या भूखेमरतेहैं आपहमारे धर्मगुरु श्रेष्ठाचारिहोकर ब्रह्मषटकर्मछोडके कलुषटकर्म क्याधारणकरलिया जैसे चूल्हा चक्की मूखल (मूशल) इत्यादि तो जराहास्यकीबात प्रगटहोतीहै के आपजो एसे निठुरकर्म नहिं करो और स्वधर्मकविद्या अध्येनकर श्रेष्टउपदेस हमलोगोंकों करके धर्ममार्गमें चलावोगेतो क्या आपकेहानी होती है जबकोईकाद्विज जबर कहेंगे के विद्यासीखी क्याकामआतीहै और कौनसुनताहै वोबात ठीक. आप झूठीकपोल कल्पितकथावों वा रसाणादि मंत्रोकीबातेंतो छोडदो और सचे सचे वाक्यौंका(शब्द)उच्चारणकर धर्ममार्गप्रगटकरोगे तो सर्वमनुष्य मंजूरकरेंगे. परंतू दासत्वकर्मकरनातो अयोग्यहै इस्सेंतो एसे २ कार्यभी उत्तम है पढना पढावना जोतिष वैद्यक दुकानदारी सराफा नोकरी इत्यादि पर जाना गयाके इनसबकार्योंकामूल विद्याअ-ध्ययनकरनाहोताहै और यहपरिश्रमसेंही सिद्ध होती है और पाकादिका कार्यमें आटाबिगडेतोंहीपराया पेटतो भरहीलेंगे पर इनद्विजवरोंके यह कामोंसें हमारे तृवर्णोंकोतो बडी सहायतामिली के हमारे घरकी औरतोंकातो परीश्रममिटा आपकुलगुरूजी भोजनासिद्ध करके जीमायदि येहीकरोऔर गीलेलकडजलाके अद्रिस्य असंख्यात जीवोंका वधस्या नकीयेहीकरो क्या गिलानी है पेटतो भरहीजायगा दक्षणाँ-काहीक्या फिकर है पर आप लोगोंकों जरा विचारणेंकी बात है के आप सर्वोपरी कुल धर्मप्रवर्तिक यह निठुरकर्म अंगीकृत

करके दासत्वपदक्यूँधारणकीयाहै परक्याकरे कबूतरकोतोकूवाहीदीखे और कोईकहेगा तो कलूकोदोषलगा खडेरहेंगे तो कलूनेंक्या आपका जातीगुण छीनलिया इधर हमारेवैश्योंकाभी धर्म केसालुप्तहुवाहै के औदेवोंसें दासत्वकर्मकरवाना और आप मायापात्रबणकर कुलगुरूजी को धर्महीनबनादेना जलपीकेउचीष्टिपात्रतकद्विजवरोंके करकमलगत करदेतेहैं और भोजनसिद्धिकराके आपप्रथमजीमनाफुन्ह शेषान्नद्विज- वर भोजनकराना तौशेषान्न उचीष्टवत गिनाजाताहै परक्यागिलानीहै पेटभरनेंसेंहींकाम ब्रह्मकर्मजावो चाहेरहो यहाँतोयहकिर्म(पाकाधिकार) सर्वोपरी पायागया और अत्युत्तम द्रष्टीगोचर मन्नानंदप्राप्तहुवा पुन्हवे दोच्चारणकीजगह तो फागुनकेख्याल व मंत्रोंकीजगह कुफारकाबकना गडगुडीकीजगह तमाखूकेबटवेमेंहात यज्ञकीएवजमेंचिलमकापलीता देवपित्रोंके आवाहनकीजगहचिलमाकारंग वलीपानकीजगह लौटा भ- रभंग फेरकुलगुरूजीबिनेंउन्मत जैसाजडभरतजीकेभाई परमिलगई हम लोग एकयजमानोंकीहीकमाई ढूंढतेढूंढतेमिले कहूँ मरेकीबधाई जब सु- सीमनावे के दापातोतैयारहोयहीगया औरपेटइधरभरहींलियाअब धर्म कर्म साधनकीमहनत क्यूँ करें पर हेस्वजन हमारेकुलगुरूजीयहमेरा लिखना निंदामतसमझो आपहमारेकुलगुरूधर्मोपदेशदेनेवाले आपही ब्रह्मकर्मछोडकर कलुविडंबनरूप धारणकरलोगे तो फेर हमारा क्याहा लहै क्योंके हमारेधर्मरक्षकतो आपहीहोयहमेरालिखना अनुचितमत समझो यहचेतावणीके शब्दपुष्पगेंद मारीहै सो जरा दयालुताधारणकर बाचके किंचित बिचारकरणाचाहियेकितेकलोगएसेकर्मधारनकरलिये हैं वह यहाँकवितोंमें देखो क्षमाकरवाचो (कवित्त) धरिकेअनेकभेख बिदुकबहुरूप्याजेसे धर्मकेविगारवेकूं कलियुगखिनायेहैं ॥ ब्राह्मणक्षिय- जायनाई सोनीग्रहपाककरे छोडेनाछतीसपोन सूतकमेंन्हायेहैं ॥ रसना करने दग्ध पराअन्नपतीग्रहा परदाराहरखिनिराखि मंत्रका फुराये हैं ॥

देखौरदेखौद्विजदौंजगींदरीद्रभरे छोंडषटकर्मखोटकर्मनकौंधायेंहैं ॥ १ ॥
ऊँठलादेबहिल्लादे खेतीकासीदीकरे तंत्रजंत्रजादूकर मंत्रकोफुरायेंहैं ॥
चाडीकरचुगलीढौरगाडचौंकीदलालीकरेवारुणीपीधूम्रपानगुरगुरीघुरा
येंहैं ॥ मृत्युसमयजीमें कंठरुकेपीछेदानलेतघाटासरावें पुरुगागरीगुरायें
हैं ॥ कहैंशिवकर्णमाठेकाजारेपिराजकरैं थौरेसेगनाये गुनलाखनदुरायेंहैं
२ ॥ गंगामेंगूतदान छोंडेनाछतीसपौंन हींजरे कलावत भाँड वैस्या
ग्रहखायेंहैं ॥ ग्रहणमांहिंअष्टमाहा भूमीअरुहेमग्रहे भस्मीलेंजायअस्त
गंगाकौंधायेंहैं ॥ सूतकअरुपातक नीचदानेंकौंनटत्तनाँहिं थोड़ेसेगनाय
हाय बहुतसेबहायेंहैं ॥ कहैंशिवकर्णरिखराजपदखोयबैठेहैंतोकुलआपरू
पकुलगुरुकहायेंहैं ॥ ३ ॥ नटज्यूंगुलाचाखायनाचतरिझायगाय एकपे-
टकाज कोटचेटिकचहायेंहैं ॥ कचौरीपकोरीपूरीहलवाजलेबपाक लकड
भाडझोंक जीवलाखनदहाये हैं ॥ भये विभचारिविप्र कहाँ ब्रह्मचारी
पद वानप्रस्तदंड त्याग मूसरउठायेंहैं ॥ छड़ेपीसे पोवे धोवेकहाँलोंगनाऊं
यातें कहैंशिवकर्ण गुन थौरेसेगायेंहैं ॥ ४ ॥ (छंदइंद्रवज्र) ब्राह्मण शेषवचे
सोभखे जुजमानकोंभोजन पहलेकरावे ॥ लेटडकारेरुवावसुरेपुनिछींकत
थूकरसोईमेंजावे ॥ नीरपिवायकेलोटालेहातमेंसेहजाबिछायपलंगरठावे ॥
कहशिवकर्णगुरूके गुरूअरुदासभटचारेकासीदिकूंधावे ॥ ५ ॥ नाइसुनार
कुम्हारकमीनकिंचिलमतेंविप्रकरेधुम्रपाना ॥ स्याफिभिजोवेसुनारकिकूं
डितेंराखेजुदीयेअचारदिखाना ॥ देहसोलेहनटेनकभूभखलीनअलीनभ
लीनकादानाँ ॥ पूछेतोदोषकलूकुँलगायकेधायकेमालाजितहितितखाना
६ ॥ ब्राह्मणवेद तज्योपढिवो चढिमहल अटारिपें रागनि गावे ॥ हौरिकि
ख्याल कुफारबकेवनिताबननाचिकेअंगदिखावे ॥ हाततंबूरोसतारलिये
कठतालदेतालघरोघर धावे ॥ जोस्वरग्यानिहुवेधनवान तिन्हेंपदगायके
जायरिझावे ॥ ७ ॥ विप्रनवेद तज्योतोतजो पण ब्राह्मण्योंबेदलवेदगुनाये ॥
गीतरुगारिकुफारिकेमंत्र रिचापढि स्यामकोगानसुनाये ॥ लेजजमाँनके

पीत्र्यौंकानामपठायकेनकेहिमाँझिमुँजाये ॥ ह्वाशिवकर्णदशाद्विजदेवाकि शेषपेभारलेशीशधुनाये ॥ ८ ॥ कवित्त ॥ भड़वेदलालदूत ब्राह्मणभ- ट्टचारेभये । ब्राह्मण्याँन्हवावेसीसगूथेंसठाणीको ॥ झारेलिवायजायदासी ज्यूँहजूरीमाँथहाथसूँहुंधुवावेलोटाल्यावेभरपाणीको ॥ बिछौनाउठावेफेर दाँतुण करावेदोरझारूलगावेकरेकाममहतराणीको ॥ कहेशिवकरणदेखो दासभयेडोलेहाय पूज्यतेंअपूज्य रूपकलूकीनिसानीको ॥ ९ ॥ छंदइंद्र- वज्र ॥ टेरेकेकाजसबेरेहिऊठिकेहेरेदसूँदिसलूकारिजैसें ॥ भूकारिदौरम्धूकारि हेतसिलेतितचाटतकूकारिवैसें ॥ टुकारिदेकोउझूकारिहात लेखूखीरचाव्रत सूकरितैसें ॥ केतिकबात छिपायहिये शिवकर्णगुराणिकिखोलियेकैसें ॥ १० ॥ ब्राह्मणिजीमेंमलेछग्रहैसुतकोंदोहुठोरकोदोरखवावे ॥ कामसुवाकड़ औसरब्यावकोढोलपेनाचकेगीतगवावे । जाजजमानात्रियेमरिजायतोरोटि बनायकेबालधवावे ॥ कामकरैशिवकर्णसबे गरलौंडिकिलौंडिगुराणिक- वावे ॥ ११ ॥ जायसँदेसोदेआवेसगानकोंनोतादेतेड़ादेलावनाँबाँटै ॥ नाव- पादासिबडारणज्यों कुटणीसमदोरिकेटेरालेचाटै ॥ सूततपातअसूचिहि- त्यापरखायकेछोतसबन्नाकिदाटै ॥ यूँशिवकर्णगुराणिंकिरेगुरुदोरकुसामँ- दहाटहिहाटें ॥ १२ ॥ (दोहा) सेठपधारेसासरेगुरपडकानियाँजाय ॥ गुरपत नींदेडायजेओलंदासिंगआय ॥ १३ ॥ शातग्रहेयजमाँनकेरातीजगौजगाय ॥ कूकड्बोलेगेरकढ चक्कचूंदडीलगाय ॥ १४ ॥ (कवित्तछप्पय) गोबरक चरोकरे मुरडभरगाडोल्यावे ॥ गुरूकरेनीरणीं नारछोकराहँगावे ॥ माँज- थालकचोलपलँगऊठायपिसावे ॥ जंगलजावेसाथ दौडकरचरणधुवावे ॥ चौकबुहारेचूँपसूँ घड़ाँघड़ाँपाणीभरे ॥ दानदेसाहजिणविप्रनें भरेचि- लमहोकाधरे ॥ १५ ॥ (छंदइंद्रवज्र) क्षत्रिनछाँडदयोक्षितपारिबोवै- श्यनछाँडिदयादिलदाने ॥ शूद्रनकौंअधिकारभयो तब विप्रनकौंकहाकै सेंपछाने ॥ ऊँचकरेसबनीचकेकर्मरु धर्मकोंछूद्रभलीविधजाने ॥ यूंशि वकर्णविलौमभये त्रिसनावसउद्यमऔरहिठानें ॥ १६ ॥ इति०

श्रीः

[इतिहासविद्याविषय.]

देखना चाहिये के विद्या पढने पढावने वगेर भूलकर अविद्य हो सद्‌ विद्या नष्ट हो जातीहै जैसें एक समयमें विद्या नष्ट होनेसें यत्र देशी मनुष्य अनार्य (अविद्य हो गयेथे जब तातार देशके ब्राह्मण आके अनार्यसे आर्य (अज्ञानियोंसे ज्ञानी) कीये ॥ अनार्य होनेका कारन सत्‌ संगत वगेर विद्यानेष्टहो अविद्य (विद्याहीन मूर्ख) होगये और वहीरीती इसदेसमें अभीतक प्रचालितहै कि एकएकसें विद्या हुन्नरगो प्यरखते यहाँतक कि पिता पूत्रकोंभी आंखसें नहिं दिखावे और न सिखावे अपने पेटमें ही लेकेपरलोकगमनकर जायभलाहुवाकि इस दिनोंमें यहाँ इंग्रेजराज्यधानीकेसबबसे कोईपढो औरकोईपढावो और पढनेपढावनेंकों ग्रंथोंकीभी सहायता इस छापखानोंकीवृद्धिसेंमिली यदि जो यह नहिं होते तो आजतकपीछेवोही अत्रदेशीमनुष्यअनार्यहों जाते उसदिनोंमेंतोतातारदेशकेब्राह्मणोंनें अनार्यके आर्यकरलियेथे पर अबकहाँके ब्राह्मणआयके विद्याकाप्रकाशकर आर्यकरतेउन्होंनें तो अ नार्यसें आर्यकर वहाँतसेमनुष्योंकोंपीछेविद्यावानकर अपनें काममेंलाये व अपनी जातीमें भीमिलालियाकरतेथेऔरउनकेग्यानध्यानमेंनाहिंआते उनकों (अनार्य अनाड़ी) कहतेथे जैसें (मूर्ख) अज्ञानीको अबभी अनारी कहतेहैं फेर तातारदेशियोंनेभी यत्र देशीप्रथामुजब एसाबंदोबस्तबाँधाके अपने ढबमें जोजो मनुष्य आये उनकों तोपढावो बाकीके मनुष्योंकों अपने अनुचर शुद्रवत रक्खो और उनकों विद्या हुन्नर कुछमतसिखावो पढने नहिं देना और कोईपढनेका आरंभहीकरे तो उनकों दंडदेना एसा बंदोबस्तबाधाँकेयहतोफगत अपनेचाकरबेगा

रीहिरहै इसीतरहसेंशुद्रोंके वास्तेपढानेकी वहीप्रथा यहाँतककी अंग्रेज राज्य धानीका प्रचारनहींहुवायाचलाआताथा और वैश्योंकोंभी इतना हीपढातेथे के अंकोंकीतोदस पाटियें और कका बाराखडी सिद्धासमान नमं सीहोमाहा अशुद्धघोर पुन्ह वहीप्रथा अन्नदेशीपाँडियोंमें अभीतक चलीआतीहै एसाघोरअशुद्धशब्दोंका उच्चारणकरवातेहैके सब रस्मरहा पढनेमेंपूर्णकरदे तबभी बाचनाआनाकठिनहै क्योंकीप्रथमही एकअक्ष-रमें अनेकखोट इठादेते हैं जैसें फगतएक (क) अक्षरकों ककोकोडको कहकरसिखातेहैं और (ख) अक्षरकों खखोखाजूल्यो और (ग) अक्षरकों गगागोरीगायठथाइंइसीतरहबतीसअक्षरोंमें अनेकखोटसिखा-तेहैं और मात्राके विषयमें लघुकोदीर्घवदीर्घकोंलघुबोलकरसमझादेतेहैं पुन्ह कॅवले (क) कनें (का) पहूं (कि) अम्बू (की) इत्यादि एसेश ब्दोच्चारणकराते हैं फेर एसाही उनकों थोड़ासा कागदलिखणा बांचणाँ सिखायके थोडासा जोड बाकी समझायके रोजनावाँ खाता व्याज भत-लादेतेहैं (अधिकविद्याकिमर्थं) फेरउनकालिखाकागदभी वेसेही फार सीनवेसजी आसराबाजी कुछसदावंदी लिखावट रगोतीसें सिरखड़ाक-राकरतेहैं और लिखे कुछ बचे कुछ जैसे लिखे गूँद और बाचे गूंदी गूंदा गदा गेंद गांदी गुदी गोदा इत्यादि औरहि पुन्ह लिखेतो काकाजी अजमेरगया म्हेरूईलीया थेरूईलीज्यो परंतु विनामात्रासें एसाबचे के काकाजीआज मरगया म्हे रोयलीया थे रोयलीज्यो औरकितेकएसा भीलिखतेहैं सो उसीवखतका लिखाहुवा पीछाउसीसें भी नहिं बचे जब कोईकहकेदेखोइसमें क्या २ लिखचुकेबाचके सुनावोतोपीछा ज्वाब देवेके इधरकालिखा पीछाइधरही वाचनेसे अशुभहोजाताहै श्रीजीकरे अगलवाचहीलेगा एसेलिखेपीछेबाचनेंपे एकहास्यमिसराभीहै एकनें कागदलिखवाया और लिखनेवालेसेंकहाजरापीछाबाचकेसुनावोतबले खगजीनें ज्वाबदीया० इतकालेखाणियांबाचेसोके उतकावाचणियाँ मर-

गया०मतलब आपकालिखाहुवा आपसेंबंचें न सगेबापसेंबचे०और विचारें छोकरे दस २ वर्षतक पढ २ सिरखगड़ाकरतेंहैं पर एकमात्राका भी अच्छीतरह उच्चारणनहींकरसकते क्योंके केवल एक (क) अक्षर-कौंककौंकौडको पढादिया अवविचारेंक्यावाचे इन अन्नदेशीपाँढियोंनें छोकरोंका जीना मृतकवतकरदिया जैसें ढौरवत रखादिया०अब बांचना लिखना शुद्धशब्दोंका उच्चारणतौ दूरहीरहगयातोअन्नदेशीऐसेपाँडियों-काएकअपरविलायतकेटापूमेंमुलकवसजानेंकी हम इस्वरसेंप्रार्थना जरू रकरेंगे जीस्सेंअन्नदेशी भोलेबालकोंका अविद्य (विद्यारहित)रहजानेंका दुःखमिटेइधरजतीलोगोंनें श्रावकोंके छोकरोंकौं थोड़ा बहोत वाचणाँप ढणाँ ठीक २सिखाया कारण जैनमतकेग्रंथ सम्मायक प्रतिक्रमण तवन सिज्याय शुत्रादि सीखके भगतीकरेंगे तौ हमकोंभीठिकमानेंगे यह हेतू सेंपढाया ऐसे हमारेगुरु वैष्णवलोगोंनेंभी बाचणाँ पढणातो नहीं परंतू पंचरत्न गीता उहस्त्रनामादि पाठ पौथियोंसें कंठकरवाये परंतू वही पाठ दूसरी पौथी पुस्तकपै नहिं वाचसक्ते जोकोईपूछेकि यहाँ क्या लिखाहै तौहरिइरकहेंगेकिहमक्याजाणें हमतो केवल मुखपाठहीकरतेहैं कोईपू छेकिपाठसेंक्यालाभहोगातौ कहदेंगेके हमाराभलाहोकर वैकुंठप्राप्तहो जाँयँगे अर्थसें क्याकामहैऐसेमुसलमीनोंनेभी कुरानसरीफकेतीसूँसिफारे जवानीहीपढके हाफिजजीवन पुजातेहैं अर्थअल्लाजानेपर अबयासमयमें इंग्रेजराज्यधानीसेंछापखानेंप्रगटहोकरग्रंथसार्थछपकेविद्याप्रकाशित हो मिलनेंलगी तो कुछेकअर्थजाननेभीलगें देखोहमारेधर्मप्रकाशित याज्ञ वल्क मनूमहाराज पारासरादि ऋषियोंने श्रुति स्मृतियोंमें तीनवर्ण (ब्राह्मण क्षत्रि वैश्य) कों वेदपढनेका अधिकारलिखगये पर अबहम कौं वेदतोकहाँ पूरासाक स्वरव्यंजन (कका बारावडी) भी अच्छी तरहसें पढायदेते तौं वेद और उपनीषद सबहीमानलेते पर धन्यहै ऐसे गुरूपांडियेजीकौं सो वैश्योंकातोजन्म खूबहीबिगाडा कुछउपमा और

नकलमिसलें लिखेंतो एकमाहाभारतवतग्रंथवनजाय हम वैश्यलोगोंका लिखनातोक्या और वाचनाक्या (दोहा) करविगरीसुधरीजबाँ वाचि कवणिकवसेख हींगमिरचजीरोकहे हगमरजरालिखदेत ॥ १ ॥ यहली-खकरअटकलसें वाचलेना यह तो एकरफत और रगोती आसरावंदूरे पर पढानेमेंतोकपटहीरक्खा. नजानेआपपाँडेजीभीइतनाहीं जानते हैं खैर और उसवखतमें केईकब्राह्मणोंनें बोधमत (जैन) धारणकरलिया था परवोभी आर्यकहलायेजातेथे और अभीतकभी ग्यानके धारण करनेवाली ओरतोंको आर्याजी कहते हैं और बोधधर्मधारिकपूर्वलोग मतकीजयऔर विजयकरनेसें उनकानाम. छापपड़के जयाविजय सूर चंद्रकीर्तिजी इत्यादिनामपड़कर आर्यकहलानाभूल गये वह आजतक-भी आर्यदेस व अनार्यदेस (ज्ञानियोंकादेस और अज्ञानियोंकादेस) वर्णनकरतेहैं ऐसे आर्यदेस केईवार विद्याविसर्जनहोहोके अनार्य होगये थे इसदेसमें दोयवातकीहानी हमेंसा रहाकरतीहै एकतो विद्या गोप्यरख-नेसेंनष्टहोजातीहै औरएकराजावोंकतराज्य भलीतरहनाहिंरहता ० जब विद्याभीअपरदेशीआआकेपढातेहैं जैसें राज्यभीअपरदेशीआआकर दबालेतेहैंकारन यह है के विद्यातोगोप्यरखकरनहिंपढावनेसेंनष्टहोजातीहै और राज्यराजनीतीबगैरनेष्टहोजाताहैअत्रदेशरिराजावोंमें यहएकरूढी-पड़रहीहैकेपढनेओरविद्या व नीतीसें क्याहोनाहै हमतकदीरकाखातेहैं और कामेती दिवान मुत्सदी भी अपने लोभवश्यराजपुत्रोंको यही सि-क्षाउपदेसपढातेहैं के(द्रष्टांतदोहा) ॥ पढढोवेपोठेबणिकरखेराजरीपीक ॥ अणभणियाँ घोडाँचढे भणियामाँगेभीक ॥ १ ॥ राजामहाराजा आप-तोदारूड़ापीवो और मारूड़ागवावो जबतो राजा महाराजा मन-मेंफूल जाते हैं और मोजेंघरहीमें कीये करतेहैं रयत विगडोचाहे राजबिगडो पीछे केई दिनोंमें पैसेकी तंगी आवेहीगी जब रयतपर तोफा-न डंड डालकर उनकाद्रव्यहरनाँसरूकर खजानाँभरेंगेचुगल और अ-

न्याइयौंकी मिसळतें कानधरें तब रयतकी सुनवाईकौनकरे इसीतरह रयतकाटूटना और तालावकाफूटना क्यापालवंधसकेराजबिगड़हीजाय. फेरइसीतरहअन्नदेशी पोहोपदेव पंडितोंके पाथियेंतोंबडेबुड्ढोंकेहातकी घरोंमेंधरीहुइंतो वहोतसीरहतीहैं पर नतोआपपढे और न किसीकोंपढावे पोथियोंसे मटके व हंडेभर २ कर गोप्य कररखतेहैं. और जाना करतेहैं के हमारेघरमें वहोतसीविद्याभरीहुईहै जिसघमंडमें राते माते फिराकरते हैं. पर यह बातइसदेसमें खूबहै के जिसके बापदादोंने कुछ विद्याका प्रचारकर प्रसिद्ध होगयाहो. बस उसीके नामसें दसपांचपीढीतकतो पूजीजेहीकरेंगे और विद्यापढकर महनतकरनेका क्या काम दीखनेकेही टपकूरहकर कमाखाना बडा डाढा बडापाघड़ा बडाहीनीचा लंबाधोता बडामोटा बगलमें पोथा पर विद्याविनथोथा पंडतजी बजारमेंसे निकले तब भोलेभाळे मनुष्य आसारक्खे की माहाराजइधरकृपाकरें पर वह तोपोहोपदेवजी सीधेघरसें मंदिर और मंदिरसेंपीछेघर. आकर गूतपाठ सेवनकर अद्रिस्य बनबैठतेहैं कोईविद्या अभिलाषी आकर कुछ प्रश्न करनेकी अभिलाषाही करे तो घरवाले कहदेवेकी माहाराज गोप्यविद्य पाठसेवन करतेहैं पर जाना जाता है कि यह केवल अविद्यापनकी लज्ज्याका वाहाना गोप्य पाठहै यहां कुछगुफामें गूह्य मंत्रका सेवन कुछ नहीं. वही है जो ऊपरलिखा० ऐसेतो अविद्यरहनेका कारनहुवा और पीछे किसीसमय उनके घरके पुस्तकोंकी यह गती होजातीहै के बृषाऋतुमें अचानचक पाणीआपड़ताहै और पुस्तके मटकाहंडामें होती हैं सोपानीसें भरके पोथाजीतो गळसड जातेहैं फिर पंडित पोहो- पदेवजी फगता फगतहीरहजातेहैं पर किसीको एक अक्षर न तो देवे औरन सीखे और न सिखावे बापबेटेसेंही विद्यागुप्तरखलेतेहैं यहांतककी मृत्युसमय तकभी कोई पूछेगातोनहिं भतळावेंगे तुस्नी होकर वह विद्या तो स्मस्याणभोमीमें संगहीलेजायँगें इसी हेतु या देसकी विद्या नष्ट

होगई तब अपरदेशी विद्यवान आयके यत्र देशियोंको विद्यवानकिये एसेंही राजनीती बिन राजावोंकाराज्यनष्टहोहोकेर अपरदेशकेराजा-वोंनेंराज्य अपनेंआधीनकरलिया यह सबहानी विद्यानहिंपढावनेसेंहो-तीहै देखोअबतो माहाराष्ट्रदेशीलोग बडेविद्यवान और विचिक्ष्ण होगये पर केईदिनोंपहले एसेअशक्तहोगयेथे कि जिनकों संध्या गायत्री भी यादनहिंरहीजबवेदतोदूररहातबद्रवडदेशवालोंनें आकरपढाके पंडित कीये एसेबालबोधी विद्यासींदेवभाषासहित (देवनागरी) देवनग्रवाले यत्रदेशमेंलाकर प्रकाशितकी जिस्से इसदेसवालोंका कामचलताहै इस तरह अभी अंग्रेजराज्यधानीमेंभीजगेंरमदरसेवपाठशालावोंहोकर बाहरकीविद्यासे अत्तहदेशी लखोंमनुष्यसुधरगये परंतु अपनेलोगसमझतेहैं के यहसबविद्या अपनेंदेशमेंसेंही इनकोंप्रासहुई और यह विद्वान बनकर अपनेंकोंही उपदेशयोग्यहोगये ॥ तोठीक एसाहीसमझो परंतू अपनी विद्या और अपनसेंहींनेष्टकयुँहुई तोजानागयाके गोप्यरखनेसेंही यह हा-नीहोतीहै और अबभीयत्रदेशीपंडिततो शब्दविद्यापढावनेकीइच्छाही नहीं रखते फिकरहैके अबहीसीखीहुईविद्याभूलभालकेअनार्थनहिंहोजा य पर एकआसाजरूरबँधीके इधरतो कायदेकानून जारीहुये और इस बाचेंपढेबगेरश्रेष्टकार्यनहिंचलता सोजराबाचपढकर द्रष्टीगोचरकरनाही पडेगा और इधरछापेखानोंकेसबबसें असंख्यातग्रंथछपकर प्रकाशितहो रहेहैं सोपोहोपदेवतोअबभीगोप्यकरनाचाहेंगेपरकहींनकहींतो विद्यारू पी मणिचमककरप्रकाशितरहइंगी इनछापखानोंकी विद्याकायश और कीर्ति धन्यवाद सहबारुंबारमाननेंयोग्यहै ॥ विद्यापढकरपढावनेसें अधिकवृद्धिहोतीहै आर गूप्तकरनेसें प्रकाश हान होजातीहै जैसे दीपक-कीक्रांति पवनके संगप्रकाशितहै औरदीपककापवनबंधकरनेसें क्रांति हीनयाने (बुझकर)नाशकोंप्राप्तहोजाताहैवैसेंहींविद्यादबाकर गुप्तरखनेसे नेष्टहोजातीहै तब पीछाप्रकाशितहोनेमें बडाक्लेशउत्पन्नहोताहै तो प्रथम

हीबचीतहैके विद्या पढनें पढानेंकों उद्योगकरें देखौ अपनभीतोकिसी-
सेंसीखीहै और इस्सें सीखकर अत्यंतआनंदयुतद्रव्यसंग्रहभीकियातौ
अगाडीसिखाकर प्रकाशकरनाचाहिये यह कार्य अत्यंतही श्रेष्टसमझकर
पढानेंकाउद्योगसेंदेवरक्खें हमारातौस्वजनसदविद्यावान पुर्षोंसें वारुँवार-
सविनय यही प्रार्थनाहै आसा है कि स्वीकार करेंगे विद्याके सिवाय
अन्यवस्तु नहिंहै ॥ श्लोक ॥ विद्यानामनरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं
धनं ॥ विद्याभोगकरीयशःसुखकरी विद्यागुरूणां गुरुः ॥ विद्याबंधुजनो
विदेशगमने विद्यापरं दैवतं ॥ विद्याराजसुपूज्यते नहि धनं विद्याविहीनः
पशुः ॥ १ ॥ ऐसासमझ विद्यासीखनासिखानाचाहिये.

श्रीः ।

अथकन्या सिक्षा ।

प्रथम कन्यावेंके मातापितावोंकों चाहियेकि कन्याकौंजन्मसेंहीश्रे
ष्टचलन शुद्धशब्दभाषण साहाकारा जीकारा मधुरताकेसाथबोलणाँसि
खावें रकारा तूँकारा गाली कटुकबचन हुरखा इसखा ऐसे वाक्यनहिंसी
खनेदें जबच्यारपाँचवर्षकीहोजावे तब (लँहगाघागरादि) वस्त्रपहरणाँसि
खावै पुन्हजीमणाँ बडी चातुरताकेसाथहौना दैराटपका व हात व मुँहभी
नाकतकनहिंभरले व थालीकेबाहरनहिंविखेरे और अधिकथालीमेंभी
नहिंछिपटावैयहचतुराई बालपनेंसेंहींआवेगीऔरएसालाडनहिंलडावै
की कन्याघरघरभटकती फिरे और हासीखिलवतकरदांतनिकाले व
नाचकूदके बेसरमबेहयाहोजाय (पुन्ह) चुराकेमिठाईखाय सबसें
लडतीफिरे जोऐसे२कुलक्षणबालपनेंमेंसीखेगीवह सुसरारमेंजाकर माता
पिताकौं हमेसेंगालियें दिवायगी इसवास्ते कन्याकों जन्मसेंहीं लाज-
सरम चातुरता सुभाषण सिखानाचाहिये॥पुन्ह केईकलोगकहते हैं कि
बडी होगी जब लाजसरम रहैतहीसीखलेगी तो यह कहना उनलोगोंकी

बडीभूलहै क्योंके कच्चे घडेकेतोकारीलगानानहिंचाहै और पकनेंपर कारीलगानेंकीइच्छाकरे यहमूर्खताहै समझनाँचाहिये कि जन्मसें कुलक्षणसीखे फेरभूलकरशुलक्षणआनाकठिनहै इस्सेंबालपनेंमेंहीशुलक्षण सिखानाउचितहै औरविशेष बेअदबीके गीत गार व नाचना यहभीबुरा सुशोभित कलाकिंचितहीचाहियेयहतोऽस्त्रियोंका स्वाभाविकधर्महै जबबडीहोवे तब हावभावगानविनोदादिआपहीआपप्रगटहोजातेहैं बालपनेमेंतो कन्याकों चातुरीसिखानाचाहिये क्योंके कन्यापराये घर जावेगी कुछन सिखावोगे तो सुसरारवाले गालियेंदेवेंगे जिस्कोंसुनकर वहकन्या घरमेंकलहक्लेशकरेगी वही कलह तुमारे तकपोंहोंचेगी क्यों-केबेटीका सुख दुःख पीहरतक आयाकरताहै जिस्सेंउचितहैके प्रथमतो घरका धंधामें प्रवीनकरें यद्यपि आप लक्षाधिपति होवे तोभी कन्याको इतनीचातुरीतोजरूरीसिखानाचाहिये जैसे वरतनमाँजणाँ घर-नीप ढोल झाडू बुहारूदेके सांफररवणाँ माँडणा चित्रणाँ नाजसोझणाँ दालचुगणाँवीणनाँनाड़ा डोरी कसणाँ गुंथणाँ सीवणाँ कसीदा निकालणाँ शाकपाक शुद्धकरणाँ भोजनादिपाकबणावना (सूपकारविद्या) जलछानेंकीस्वच्छाक्रियाउज्जलता वस्त्रधोके उज्जलरखणाँइत्यादिहस्त क्रिया चतुराई सुद्धभरीतीसें सिखानाचाहिये (पुन्ह) कन्याँवोंकों पढनें पढानेंका तो आपनेमहेश्वरी लोगोंमें प्रचारहीनरहा तो अब मेरेलिखनेंसें कौंन पढावेगा देखोकोई अविवेकी अबूझ अन्याई अंधोंने कैसा धोखा डालदियाहै के स्त्रियोंकोपढावे तो विधवा (रांड) होजावे व कोई कहरवड़े होजातेहैंके एक घरमें दोकलमनहिं चलनें देनाँ जोकदापि उन-कोंपूछें कि दोयकलमक्यों नहिं चलनाँ और पढनेसें कैसें रांडहो जाय तब वह अविवेकी मनुष्य लडनेंकों तैयार होजातेहैं और प्रमाणिकउत्तर कुछनहिं देसक्ते देखो इनलोगोंनेंऽस्त्रिरांड (विधवा) नहिं होनेंकी क्या अच्छी दवा ढूंढली है आ हा हा इसबातपे बडीहाँसी आती है के उनकी

दीर्घबुद्धि चातुरपाँडेजीकों पूछनाँचाहिये के यह क्यों औरतें विधवाहैं
और हुयेजातीहैं सोक्या सब पढी हुई हैं. ऐसाईतो होताहोय जबतो प-
ढाणाँतो कहाँ पर किसीकों पढते आंखसेंभी नहिं देखना चाहिये परंतू
हे पिढेकी पूर्णों जराविचारतोकरो. पढनेसें रांड (विधवा)होनेका धोखा
केवल मूरखोंने डाला है अवइन स्त्रियोंकोंपढानेकोंफायदा जो लिखूँतो
बडीही किताब भरजाय कन्यापढनेसें पतीको जीवहानी पोहोचना यह
भ्रमतो हृदयस्थानसें दूरहीकरें देखो मुसलमानोंकी औरतें कुछपढीहुई
होतीहैं. और दक्षणी व गुजराती व पूर्वदेशियोंमेंभी कन्यावोंकों पढाने
के मदरसे जगह २ होकरपढाई जाती हैं माहाजन ओसवलोंमेंभी किं-
चित पढनेंका प्रचारहै और ब्राह्मणोंकी कन्याँवोंभी बहोतसी पढीहोती
हैं कुच्छ क्षत्रियोंमेंभीस्त्रियों पढी होती हैं. पर आपणमहेश्वरियोंमें तो
पढानेंका नामही नहिं लेते देखो यहकैसी आँटपडरहीहै और कैसी भू
लहै. नजानेंकिसनें धोखाडालाहै सबमुलकमें सबलोगोंकीऽस्त्रियाँ पढी
हुई होती हैं पर वह सबविधवा होती तो नहिं देखी देखो काशमीरमें
छतीसपौंणकीऽस्त्रियें पढकर वेद पुराणकी पुस्तकें लिखा करती
हैं. चीण और अपरविलायतोंमें सबऽस्त्रियेंपढकर अनेक
चीजोंपे कसिदेऽस्त्रियोंके हातके आते हैं उनमें कैसे स्पष्ट अक्षर हिंदी
अंग्रेजी बंगाली लिखे होते हैं और स्त्रियोंपढकर अपनेंपतीकोंकितनी
सहायतापोहोंचातीहै अव्वलतोठंढीछाँहबैठेरहनाँ जाजम बिछौना स्वच्छ
बिछेहुये और इज्जतसें अपनेंघरबैठीरहकर और अच्छी २ श्रेष्टची
जोंबनाना पढना लिखना इस्से द्रव्यकापैदाहोना व अपनेपतिकों अने
कसाहतादेना व नामवरीजाहरहोना तोयहसबविद्याका गुणहै औरपढने
पढावनेंमें कुछदोषणनहिंपायाजाता फायदातोप्रतक्षहीजाहरहै देखो जि
स्कीऽस्त्रिपढीहुइहै और उसकापतीकहिंविदेसमेंहै वह जोकुछदिलकी
अभिलाषाकेसमाचारहै दुतरफे लिखपढकर अपना आपहीसमझलेतेहैं

वहवातेंसिवायस्त्रिपूर्षोंके तिसरानाहिंजानसक्ता औरजोस्त्रियें लिखीपढी नहिं होतीहैं वह पतीको कुछकोफियतलिखवानाचाहै तबअव्वलतो पर पूर्षसे लाचारी सहितभाषणकरनापड़ेगा और केईदिनकुसाँमदिये करते२पत्रलिखनेंकीहाँभरेगा तो मोकाभीपत्रलिखनेंकाएकांतहीदेखेंगे और जोकोईएसी हकीकतहै कि जिस्को जाहरनहिंकरसकती तो वह मनकीअभिलाषा मनहींमेंरहेगी और जोजाहरकरे तो वह वातलीजेका- नहोतीहै और पत्रलिखनेंवालेसें लज्ज्याभखुलजातीहैयहाँतक किसंक खुलकर व्यभिचारसंगकिय। और धर्मभीनिष्ट होजानाकुछअसंभवनहीं इस्सेभीजादाखराबियेंबहोतसीहोतीसुनि वखुदनजरोंसेंवी देखी परजादा जाहरमेंनहिंलिखसकतेयहसबनेष्टकर्मअपढस्त्रियोंकेसबबसेंहोताहै और जो कुछ गुह्यबात लिखनेंवालेकोंनहिंकहैतो पतीतक पत्रद्वाराजाहरभी नहिंहोती जबपतीमिलेतबअपने दिलकाआशयकहेगी क्योंके कोईभी गुप्तबात (ऽस्त्रिपूर्षके) परस्परकहनेकारीवाजहै और दोनोंमेंसें एकका शरीरनाशहोगयातो बसदिलकीदिलहीमेंरही (पुन्ह) स्त्रियोंके नहिं पढनेसें एक औरभीबडी हानीहै कि लेनदेन वहीपानाँ खत खाता तम- स्सुक पट्टा रहनामा फारखती आईबंट मकानादि तकसीमनामा वगेरा कागजातहै और पतीस्वर्गबासीहोगया तो अपढस्त्री वह कुलदस्तावेज्ज दुसरोंकोंभतलावेगीवहाँअनेकप्रकारकेनुकशानेंहैंकहाँतकलिखें सुजन मनुष्य थोड़ेमेंहीसमझलेंगे देखो पढीऽस्त्रीपतीकों अनेककार्योंमें सहा- यतादेसक्तीहैयहाँतककी राज्यादिकुलव्यवहार अपनें घरका वोस्वच्छ- तासें चलायसकेगी (पुन्ह) घरघराणाँ व्यवहार द्रव्य लेन देन कुछ नहिंबिगड़नेदेगीअबइसदेशकी अपढअविद्य (मूढ) स्त्रियों अपने प- तीकों क्यालाभपोंहोंचासक्ती उलटी तकलीफही देतीहैं और अपनेंपुत्र पौत्रोंको विद्या व सिक्षा चालचलन व्यवहार व, कन्याँवोंकों चातुरिव- गेरा क्या सिखावेगी देखो कन्यांकापढनानिषेधहोता तो अपनेंपितामह

ब्रह्माँजी सरस्वतीकौं क्योंपढाते पढनेंलिखनेंवाली स्त्रि नेष्टकार्य प्रथम तौकरेहीनहीं और किसीसें बणहीजायगा तौ धर्मसें डरेहीगी और नेष्टकार्यकरनेंवाली स्त्रियौंकौं सिक्षादेतीहीरहेगी कितेकलौग ऐसे द्रष्टांतदेतेहैं के स्त्रि जोपढीहुईहोगी वा अपनादिलचाहेजिसकेपासस्वयंपत्रलिखअपने दिलकाअभिप्राय (जैसाचाहेवैसा) जाहरकर मनेच्छितकार्यपूर्णकरलेगी तोजराविचारनेंकीबातहै किअनेकास्त्रियेंनेष्टकर्मकरनामडुबातीहै सो क्यासबपढीहुईहैं नहिं नहिं पढीहुईस्त्रिहोगीवो अनेकपुस्तकोंके द्रष्टांत बाच पढहरतरह नेष्टकर्मोंसें बचेहीगी और अपढमूढ स्त्रियें हैं उनकों सिवायखानेपीनेपहरनेओढने बराबरकीमेंकहकहमारहसनेकेऔरकामनहिं है वह स्त्रियेंजो कुमार्गी होजानेमेंतो कुछआश्चर्य ही नहीं क्योंकिवहनिंदककर्म कथावोंको क्यासमझे शुद्ध धर्मप्रवर्तिक होना येतो सतसंगतकाफलहै (कर्मकीगतिकोईजाननहिं सक्ता) हमारी राहतो यह है कि कन्याकौंजरूरपढाना जिस्सेंसंसारव्यवहारकार्य औरधर्म धर्ममें समझके कुछपरलोकहितकारी धर्ममार्गकी पुस्तकोंकाभीपाठकरें अविद्यमनुष्यतो पशुवतहै और मानुषदेहभी बारंबारप्राप्तनाहिंहोतीइसवास्तेंउचितहैकि कन्याकों जरूरपढाना इति॥

श्रीः ।

[वैश्य व्यवहार रत्नमाला सिक्षा.]

चौपाई - श्रीगुरुदेवचरणचितराखूँ ॥ वैश्यव्यवहाररत्नयहभाखूँ ॥
परथमशिशुशिक्षासुनलीजे ॥ सुजनहोयनीकेचितदीजे ॥ १ ॥

दोहा — श्रीगुरुदेवमनायहूँ पूरेमनकेकाज॥ पुनिबंदनकरिब्रह्मकों सज्जनसंतसमाज ॥२॥ बंदुँजगके कविनकों चतुरनकों सिरनाय ॥ सिक्षा

ग्रंथ बनायहूँ बालबोधसुखदाय ॥ ३ ॥ (अथशिक्षा) प्रातसमय नितऊ ठिके सुमरो श्रीगुरुदेव ॥ गुरतेंज्ञानउपाइये लहेसकलविधिभेव ॥ ४ ॥ संथालेगुरुदेवपैं घोखे चित्तलगाय ॥ कंठचढेततकालही जनमलगे सुख पाय ॥ ५ ॥ पाके भाँडेनाँलगे कारीकोडउपाय ॥ अध्यापनविद्यापढे चढैन कंठसुभाय ॥ ६ ॥ तातेंमेरीबिनती सबजनतेंकरजोर ॥ बालक सिक्षादीजिये ज्यूँनृपदंडेचोर ॥ ७ ॥ स्यामदामअरुदंडले भेदच्यारपर कार ॥ नृपतसकरपें सोंचले बालकविद्यासार ॥ ८ ॥ जबबालककोजन्महै कीजेहरखउछाय ॥ इष्टसहितगुरपूजिये कुलकुलदेवमनाय ॥ ९ ॥ रखो खिलावणकारणें उज्जलकुलकीधाय ॥ खानपानउज्जलअलपदधिघ्रतदूधपिलाय ॥ १० ॥ नितउज्जलपोसाखिये निरमलनीरन्हवाय ॥ चितचौकसकररखिये कुसमृतिकानहिंखाय ॥ ११ ॥ जबमुखवाणीउचरे सुंदरबचन सिखाय ॥ ऐसूँकबहुनकहिसके यह सबके मनभाय ॥ १२ ॥ तबखेलनमें चितलगे बालमंडलीमांय ॥ उज्जलबरणमिलाइये नीच संग नहिं थाय ॥ १३ ॥ बरषपंचकाजबहुवे विद्यागुरुपेजाय ॥ बहुतबीनती कीजिये बालकहितासिरनाय ॥ १४ ॥ सुणीप्रसंस्याआपकी विद्यागुण भरपूर ॥ बालअज्ञानउडाइये ग्यानउदितघटसूर ॥ १५ ॥ यहममबालकतोतला समझतनांहिं अजान ॥ याको बहुतप्रकारकी दीज्येविद्यादान ॥ १६ ॥ रोजहाजरीलीजियेकीजेबहुतबखान ॥ प्रीतरीतमुखभाखिये जबलगिपुत्रअजान ॥ १७ ॥ कहूंकुसंगनहोसके कीजेजत्नसुसंग ॥ बालकविद्याराचिहै ज्यूंमजीठकोरंग ॥ १८ ॥ द्रष्टांत सोरठा ॥ बालपनेकी बाणबाणहतीजेहिताड़िका ॥ शिवधनुतोड़्योताँणरामबाणरावणहत्यौ ॥ १९ ॥ इन्द्रसीलकोंछोड बालपनेसेयोकुसंग ॥ गुरुगोतमघरजाय जूणसहश्रपसिद्धजग ॥ २० ॥ दोहा—बालपणेंचौपड़रम्या पंडवपढ्याकुपाठ ॥ राजगमायोबनलयो सिरमें दईबराट ॥ २१ ॥ बालपनेचोरीकरी मोसोजनमपर्यंत ॥ कौस्तुभमणिदानवहरी चोरीकृष्णदयंत ॥ २२ ॥ ग्वालकु-

संगलपायके चौरीमाखनखाय ॥ राजपाग्ररुकमाणिंहरी प्रकृतविाल्लुआ-य ॥ २३ ॥ होतकुसंगनबडनकों लेतकुलक्षणअंग ॥ साचकहैशिवकर णियों कीज्ये जतनसुसंग ॥२४॥ बरषदवादसकोहुवे जबअनहेतजनाय॥ मंदमंदसीत्रासदे विभ्रमवचनसुनाय ॥ २५ ॥ नितपतलीजेहाजरी दीजे सीसधुनाय ॥ कछुनपढयोंपूँ बोलिये आगे औरसुनाय ॥२६॥ ज्यूं ज्यूं पढपढचतुरहै त्यूंत्यूंकरियेधीर ॥ डुन्नरहदवासिखाइये चलगतचालउमीर ॥ २७ ॥ सगपणसौंजवणाइये जोड़पेढकोजोय ॥ आदअंतलगपूछिये घणकुलवंतीहोय ॥२८॥ भूपणवसनबनाइये खूबीरंगसुरंग ॥ वर्षपांच सुखदीजिये पितातणेंपरसंग ॥२९॥ वरषचतुर्दसकोहुवे जबएकग्यान-उपाय ॥एकदोयगुरुईष्टका दीज्येग्रंथपढाय ॥ ३०॥ चवदेविद्यानिधान कर कलाबहूतरजोय ॥ पुत्रपरोटनरीतहै सुणलीज्योसबकोय ॥३१॥ यहचवदेविद्याग्रगटजगतमाँहिंविख्यात ॥ नामधरूँक्रमतेंसबहिंचातुरहि यहधरिबात ॥३२॥ राग रसायण नृत्य गत नटविद्या बेदंग ॥ तुरचिढन व्याकरणपढणं जानतजोतिषअंग ॥ ३३ ॥ धनुषबाण रथहांकबो चित्त-चौरी ब्रह्मग्यांन॥जलतीरण धीरंजधरण चवदे विद्यानिदान ॥३४॥ सबों परिधीरजधरण विद्यानामवसेक ॥ यातेंसबहीसिद्धहै धरोधीर्यपुनिएक ॥ ३५ ॥ प्रथमपरीक्षादीजिये खातारोकड़दाम ॥ तोलमोलअरुभावका दीज्येभेदतमाम ॥ ३६ ॥ चूंपचाँप भूषणवसन बैठकमानमरोड ॥ डु करांईसबसोंमिलत कीज्येनाहिंअखोड ॥ ३७ ॥ यहिबिधिपुत्रपरोटिके कुशलकरोसबकाम॥जगसपूत सोभालहे बहुतकमावेदाम ॥३८॥बाल बोधशिवकर्णकहि यह लरकनकेहेत ॥ चतुरनकोंबहुग्रंथहै लीज्योअर-थसमेत॥३९॥इती रीतशिशुकोंसबे सीखावेगुनवान॥मान्य लेहिंसबठौर वह बाजे चतुरसुजान ॥ ४० ॥ इति वैश्यव्यवहार रत्नमाला बालबोध सिक्षाचालीसी सहाशिवकरण रामरतन दरक मूडवेवाला कृत ।

श्रीः

[बेपारी बोधवचन शिक्षा.]

(दोहा) सकलरीतबेपारकी बोधवचनरसरीत ॥ वैश्यधर्मकोमूल हे सुनोस्वजनकरप्रीत ॥ १ ऊठप्रभातदुकानकों नमसकारकरखोल ॥ झाड़बिछायतकीजिये राखोपूरातोल ॥ २ ॥ ॥ घड़ीलगावोमालकी इकहिसाबकरबोल ॥ सत्यपुरषकीबोवनी कीज्जैसच्चामोल ॥ ३ ॥ सादू रसहितमिलापकर पूछोसबकुसलात ॥ जोआवेपरग्रामतें हँसकरकीज्यै बात ॥ ४ ॥ आवतमिलियेभावतें जावतकरियेप्रीत ॥ वैश्या चानिक सुनार ठग अंगच्यार एकरीत ॥ ५ ॥ मीठीबाणबोलिये गाहकरसहु-जसुभाय ॥ मूलदामकोउअधिकदे देपीछापलटाय ॥ ६ ॥ अधिकलो-भनहिंकीजिये तजदुकानमतिजाय ॥ वैश्यबोधहिरदेधरे ठगतेंनांहिठ-गाय ॥ ७ मूलप्रतीतनकीजिये सौतकोऊअनजान ॥ भेदनदीज्येआ-पको परकोलेहिंपछान ॥ ८ ॥ जहाँजुहारबहुमित्रता तहाँनकरोउधार ॥ भाणेजानाहिंबिणजिये समदीविणज्याँहार ॥ ९ ॥ सालाबहन्याईससुर धीयजँवाईबीर ॥ एता विणजनकीजिये कहकरगयेकबीर ॥ १० ॥ गहणाँगाँठापारखा गिरवेधरोअँकाय ॥ कोलबोलकीमत असल लीज्योंतोल लिखाय ॥ ११ ॥ चीजहोयहरएकहीं सस्तीहोयसुभाय ॥ तोखरीदकरली-जियेमाससवायाथाय ॥ १२ ॥ अनसंग्रहकरताँबनेआयेभावनराख ॥ बाढी सेतीदीजिये नवीसवाधोसाख ॥ १३ ॥ सकलअन्नमें जीवकी उतपतहोय अपार ॥ तातेंवस्तुअनेकहैं पापरहितव्योपार ॥ १४ ॥ भांगतमाखूला खलो नीलखारविषढोर ॥ लकड़कसाईठगबधिक तजोजुवारीचोर ॥ १५ ॥ एताविणजनकीजिये लाखगुणाँजोहोय ॥ देखपड़ोसीविणजता जीतीगयानकोय ॥ १६ ॥ काढाकाढेओरका देवेअमरउधार ॥ सिरप

रिणरहजातहै तामेंफरनसार ॥ १७ ॥ पुराचीनसाख १ ॥ काढाकाढे देहउधारा ॥ जाकाजायाफिरेकँवारा ॥ उधारहारटांगरारीता ॥ राखौंदै तनसेंकहै रौकलियासौजीता ॥ १८ ॥ (दोहा) जौबैरीसिरपनहीं तौतुमकरौउधार ॥ सज्जनतेंदुसमणहुवै कहशिवकरणविचार ॥ १९ ॥ बहुतजतनकरराखिये पैसेजैसीचीज ॥ मुसकलसेंपैदाकिया फौगटमत कररीझ ॥ २० ॥ खरचदामपैदासरम लोगोंकीक्याहोड ॥ तैतापांव पसारिये जैतीलंबीसौड ॥ २१ ॥ पैदाखरचसम्हालके चलियेमध्यवि व्हार ॥ भलोकहैसबलोकमें नहितरकहैगँवार ॥ २२ ॥ आरानुगतामा हरा कीज्यैजुक्तविचार ॥ धरमरहैहुरसतबधै एहीलोकाचार ॥ २३ ॥ वृद्धहोयघरआपणें सज्जनसकलमिलाय ॥ बहुतदीनतीकीजिये मुखसें मीठखिलाय ॥ २४ ॥ जिणवरवृद्धउछावहै तजकड़वाईवाद ॥ मीठा जीमणभूलसीकड़वाबोल्यायाद ॥ २५ ॥ काहूरीसनकीजिये काहूमती रिसाय ॥ गालीठट्ठामसकरी नामुखसैंरबसाय ॥ २६ ॥ हलकीबाणी बोलतां ओछीउपजेबुद्ध ॥ मीठीवाणीमनरँजे सबकौंआवतशुद्ध ॥ २७ ॥ चालबडोंकीचालिये होयअनोपमरीत ॥ हेकुचालतज दीजिये बहुरनकरियेचीत ॥ २८ ॥ मौटाकामकमायके मतगर भीजोकोय ॥ बडेएकतेंएकही आलेआलेहोय ॥ २९ ॥ हुवते पारीजानकर हलकीनकरजबान ॥ माटीनीप्याजानजे चूलहास कलसमान ॥ ३० ॥ मांडूगिरमालागिरी तहांएकभैंसासाह ॥ सुणमो सौगुजरातकौ दीन्हीलांगखुलाय ॥ ३१ ॥ कबहूभूलनकीजिये मोटा सेंतीवाद ॥ जोजीतेतौहिहारसम जबतबहोतविखाद ॥ ३२ ॥ रेसजनाँ कीज्यौमती सबलाँविणजरुवैर ॥ लांगखुलाईलंकगत छिनकनलागीवैर ॥ ३३ ॥ रामवैररावणमुँवौ मांडूभैंसासाह ॥ तेलविणजगुजरातमें दीन्हीलाँगखुलाय ॥ ३४ ॥ अधिकपुराणोनग्रतज अरुकुसंगकुग्राम ॥ तजकुमित्रततकालही बसौनाविनसुग्राम ॥ ३५ ॥ बालआलनहिंकीजिये

वडांनकीज्यैबेर ॥ गॉवकळालछोडिये धनवतन्नसियेसेहेर ॥ ३६ ॥ नवाअन्नभोजनकरो पाणीपीवोछाण ॥ खातापीताचालणाँ सगाकरोतोजाण ॥ ३७ ॥ बहुतगुंजनहिंकीजिये अधिकमित्रताजाँण ॥ दीन्होंभेदसुनारकों बीप्रभयोबिनप्राँण ॥ ३८ ॥ सुनीबातअतिमर्मकी काहूमतीसुनाय ॥ जोजाहरकीयांबने तो रैंस्येरैंस्यजनाय ॥ ३९ ॥ मुखतेंनिकसे दुःखहुवे ऐसीबाताछिपाय ॥ सवासेरअनपचतहे तैसेंगुपताछिपाय ॥ ४० ॥ द्रष्टांत पुराचीन कवित ॥ १ ॥ एकतोसुनतबात बुद्धकेसथानपसो स्वातजळसीपजैसें अंतरधरतुहे ॥ ताहीतनताकके तकतमरजीवासो पावत नहिंपारजोपें सिंधुमेंपरतुहे ॥ एकजोसुनतबात कंठमेंपरतआत नाहनकहे तें अति अंतरजरतुहे ॥ एकसुनऐसेंयूँ प्रकाशकरेठोरठोर मानूँदीपमालकाके दीपकसेजरतुहे ॥ ४१ ॥ दोहा ॥ तीनपूतलीपातस्या मेलही ळेनपरख ॥ एकअमोळएककोडी्लाखकी एककोडीतीनतरख ॥ ४२ ॥ मीत्रद्रोहघरघातसम चुगली चोर अन्याय ॥ ढक्याडघाडेपारका नरकनझेलेताय ॥ ४३ ॥ राजसभापरवेसकर हरहुन्नरतेंजाय ॥ तजोसूकचुगलीअहूँ तोनृपपूजेपाय ॥ ४४ ॥ गृष्टकरेजोदोयमिळ दीज्येनांहींकाँनसूँपबिनाँहसवोनहीं अधिकनकीजेताँन ॥ ४५ ॥ दोयआपसमेंबोलँता बिचेनबोलोबीर ॥ चुपकताळरसपीजिये मूलगहोमतिधीर ॥ ४६ ॥ संत मिळेजबबोलिये सबकूँवैणसुहाय ॥ आठमासमूंगीरहे पिकुअमृतरसपाय ४७ ॥ मनमजूसगुणरत्नहे चुपकदेतहैताळ ॥ गाहकबिनाँनखोलिये बायकजनचनरसाळ ॥ ४८ ॥ बैठहताईबुझनकीरसकीबातनभाक ॥ समझतकहाविनोदमें वेकरबीकेगहाक ॥ ४९ ॥ पुराचीन १ ॥ रेगायन यहगायसुत तूंजानतपरवीन ॥ यहगाककरबीनके तेंजुलियोकरबीन ॥ ५० ॥ मूरखकोसुखबिंबहे निकसतबचनखुयंग ॥ ताकोअवपधमूनहे जहरनव्यापतअंग ॥ ५१ ॥ कीयेबादगँवारसूँ उलटीबुद्धसराय ॥ कहोंही रूखोंफोरिये पथ्थरसेतीजाय ॥ ५२ ॥ ओछेनरकीसंगतें निश्चयहोतकुं

संग ॥ इंडधरोपिकुकाकघर पायौरंगकुरंग ॥ ९३ ॥ औछासंगत जौहुवे समयपायवनजाय ॥ कामनिकारोआपनों चौततछिनाछिद्र काय ॥ ९४ ॥ भूलनकीजेजामनी झूटीसाखनगोय ॥ अणदीठीमतआ दरे सुणीसुझूटीहोय ॥ ९५ ॥ ब्रुधजनवैरनकीजिये जोहैतोहुसियार ॥ भूलप्रतीतनकीजिये कोटकरेजोप्यार ॥ ९६ ॥ पुराचीन ॥ १ ॥ पायपरेहूपिशुनतें मिल नहीं कीजेवात ॥ नमतचंचजोकूपकौं जविनहर-लेजात ॥ ९७ ॥ पहुणपरायेमतचढे भूषणवसनकृपाण ॥ परघरपर-त्रियभोगताँ जवतवदुखकीखान ॥९८ ॥ मंदमांसपरघरगमन परधनजू वाझूट ॥ अमलतमाखूभांगनव सज्जनदीज्योपूठ ॥ ९९ ॥ सकलवि-सनतें बीगरे सुधरे नाहिंप्रवीन ॥ धनछीजेकायादहे जगकुशोभ है दीन ॥ ६० ॥ मित्रकरोकुलवानको गरवाग्रीष्टगँभीर ॥ बिपतपरचाँ बिर-चेनहीं वह सज्जनमतिधीर ॥ ६१ ॥ पुराचीन ॥ सौसज्जनअरुलाख मितमजलिसमित्रअनेक ॥ भीरपरयाँभाजेनहीं सौलाखनमेंएक॥ ६२॥ काल व्याल गज केसरी रिपु अगनी सुलतान ॥ सतमित्रशिवकरणकह देख्यासुण्याँनकान ॥६३॥ नापिक कापिक हेमकुट चक्री तक्री धोट॥ यह खटमित्रनजाणिये चुग्गाऊपरचोट ॥ ६४ ॥ कणवारया कागा कुता गोलाँ किसडीगोठ ॥ एतामित्रनजाणिये चुग्गाऊपरचोट ॥६५॥ वेश्या भड़वा बांदरा भांड भालु अरु वैद ॥ एतापलटेपलकमें बरुआ षष्टनखेद ॥ ६६ ॥ रेबारी रोगी रिणी जूवारी करसाँण ॥ चोर रसाणी गारडू अष्टझूटकीखाँन ॥६७ ॥ अतिलज्या अधिधरिता अतिआलश अभिमान ॥ सतभवनदारीद्रके कलह उंघ अज्ञान ॥ ६८ ॥ बहुम-हिनत बहुमित्रता बहु हुन्नर बलवान ॥ पुनिसुबुद्ध अरुसुगमता धनकेस तमकान ॥ ६९ ॥ सवसुलच्छहिरदेधरो तजकुलक्षविप्रीत ॥ जगसोभि तमघचालिये एहबडोंकीरीत ॥ ७० ॥ बोधवचनबहुविध किये सखिस लूझे कोय ॥ बाचंविगाडेमूंहकौं नाँकछुहासलहोय ॥ ७१ ॥वैश्यरीत्ति

जाउँनहीं स्वजननकीयोरीस ॥ तैकूपालकहोटीकेहै यह मोकूबखसीस ॥ ७२ ॥ ४० ॥ इतिवैश्यव्यवहाररत्नमाला वैपारी बोध वचन ॥

श्रीः

अथ हुन्नरियोंका इतिहास ॥

सहा शिवकरण रामरतन दरक माहेश्वरी मारवाडी मूंडवेवाले-
की प्रार्थनासहित विनयहै कि इस्कों वारंवारवाचना ॥

यासंसारविषयहुन्नरऔरविद्या व्यवहार और बेपार यह च्यारबातमु-ख्यहैं इनवस्तुवोंसेहीन जौमनुष्यहै उसकाजीवनहीवृथाहै सो विद्याप्रक र्णतौ प्रथमहीवर्णनकरचुके अब व्यवहारसंबंधी व हुन्नरीयोंकीबातें व हुन्नरकागुणलिखतेहैं अपनेलोगोंने व्यवहारइसबेपारहीकोंमानरक्खाहै पर बेपारऔर व्यवहारकास्वरूपजुदाजुदाहैव्यवहारकहतेहैं संसारव्य-वहार पर इसकीजडसमझनाचाहिये जिस्सेंसबव्यवहारबराबरचलेंप्रथ-मतोसत्यवचन और सच्चे कौल बोल सच्चे हलन चलन सच्चेलेनदेनरक्खे छलछेद्रछोडकर सत्यवचनभाषणकरे और न्यायनीतीमें बरते यहतौ व्यवहारकीजडहै अपनासोअपना परया सो पराया इस्कोंव्यवहार कहतेहैं बेपारादि सब इससत्यव्यवहारकेपेटमेंहै चाहे जिस चीजकाबेपा-रकरो। अब अपनेलोगोंकों फगत बेपार और गुमास्तगिरिहीपसन्दहै जोकदासकोईबेपारकरनेको पैसानमिलेवहफिर गुमास्तगिरीही करे और यहदोनोंरुजगारोंसेंछूटजाय तौ आजकल सौदा सट्टा आवरेज पेटी औरपानीकासौदा जैसाके जुवाकाखेल इत्यादि रुजगारकरतेहैं पर जबइनमेंभीपूरानपडे तब वह सहरछोडकर दुसरेसहरमें व दुसरेमुलक-में जापडतेहैं जबकुछदिनतकतौ वहांके लोगोंसे पहचानकरे और रोटि-योंके मोहोताजहोकर लोगोंकी खुसामँदियें करते फिरे पर कुछ हुन्नर व

विद्याअच्छेननहींकर लेतेजौकदापि कोईहुन्नरसीखलेते तो काहेको किसी की खुसामदकरते और क्यूँस्वस्थानछोडकर परमुलकौंमेंभ्रमणकरते और अपनेपासकुछहुन्नरहोतातोअपनीखुशामदलोगकरतेकहाहैके सद् विद्याचकिंधनैः ॥ सच्चविद्याहैहुन्नर सौपासहोवेतव प्रथमतौअपनास्वदे- सहीनहिंछूटेजैाकदापिमनइच्छयासेंपरदेसभ्रमणकरेतोभी जहाँजावे त- हाँ आदरपूर्वक वहाँकेलोगहुन्नरीकोरक्खें औरवहांभीउस्सें हुन्नरसीख नेकीइच्छयाकरेऔरहुन्नरीजिससहरमेंजावेवहाँजातेही अपन ाहुन्नरप्रका शकर पैसेपेदाकरलेवेऔरअपनागुजरअच्छीतरहसें चलालेवे रोटियोंसें मोहोताजकभीनरहेगापरंतूअपनेंलोगोंकोंतौहुन्नरसीखनेकीबडीहीसरम आतीहै और यहबातकहरवडेहोजातेहैकेहमारेबडे बडे बुड्ढे तो वडे नामी थेऔरअवहमयहहुन्नरकाकामकैसेसीखें औरकैसेंकरें हमारे घरानेंमेंतो एसाधंधाकिसीनेंनहिंकीयादेखोउसदुरदशामेंभी हुन्नरसीखनाबुरामालू- मपडा और इधर उधर भटकर कर अपनेबडेबुड्ढोंका नामप्रसिद्धकरते हैं लौगकहते हैं के यह अमुकेघरानेके हैं बिचारे आजकालबेरुजगारे हैं देखौ सवदेसोंमें और सर्वविलायतौंमें सबजातकेलौग सबतरहके हुन्नर सीखक ताजीरोटियें कमाखातेहैं और हजारोंकोशौंतक अपनानामभी जाहरकरलेतेहैं और हुन्नरसें एसीइज्जतबढालेते हैं केपिछाडीवालेभी सेकडौंपीढियौंतकउसनामसे कमाखातेहैं देखौअपरविलायतौंमें है तो बड़े २ हुन्नरी पर एकछोटेसेहुन्नरीका कैसा नामप्रसिद्ध हुवा है (राजस) वहराजसके कैंची और चक्कू वगेरे सौ उनके घरके औजारजिसकि- सीके हातमें आताहै वह पीछा नहिं रखता खरीदहीलेता है एसें और भीकईऔजार बनाते हैं सौ सबभर्तखंडमें जाहरहो गये हैं उस्के बनाये हुये औजार हरएकआदमी मुखके माँगे दाम देके लेजाते हैं इसी तरह और हुन्नरियोंके नाम गनाऊँ तौं एक बडीसी किताबभरजाय मुख्य हुन्नर बडी चीजहै इस्सें हजारों आदमी पेटभरते हैं और इसविद्या हुन्नर-

कीजड़ पेटमें रहती है नतो कोई चुरासके न धाड़वीलूँटसके न कोई जबरदस्तीसेंलेसके जोकोईसीखे सो उनसिखानेंवालेकासागीर्दही हो जाय और उम्मरतक सिखानेंवालेका नामलेकर अपना कानखींचके उसका र्यका प्रारंभकरे पुन्ह हुन्नरीजहाँजावे जहाँ अगाड़ीसें अगाड़ी सब तत-वरि हाजर और मौजुदहोजातीहै और नौकरी गुमास्तगिरीकी जड-पत्थरपर वरनेपत्थरसेंभी गजभरऊँची है सौबर्षतेपानीमेंभी सूखजाय और बेपार अपारहै पर इसकी जड़पूँजी है औरसमयकालवर्तमान भाव रगौतीरुख हमेंसें देखाकरे तब जडहरी रहती है और निश्चावश्य हो नेंहें तो छतीपूँजी मंदी मंदवाड़ौमें जड़लुप्त होजानेकी आशा है पर इसजड़कों बचाना बडेबागवानोंकाकामहैनहिंतोसूकजाय इसजड़कौं हरीरखना इस्में साचका जल और लेनदेनबराबररखनेका व्यवहारहै उस्कौंविचाररूपी बाडदेके बचाना और झूटरूपी प्रचंडपवनसे वह बेपाररूपी वृक्ष जड़मूलसे उखड़ जाताहै तब वह बेपाररूपी बागके रक्षक (बागवान) निकम्में हो जाते हैं तब केईदिनोंतक तो दुकानके अड्डुबारदानौसेंकामचलावेफिरतोगहनौंपरहातडालनापडताहै क्योंके रोजमररेकाखरचतो कहाँतककमकरेंगे फेर घर हवेली और बरतनबासण कपड़े लत्ते भी बेचणेमें आजातेहैं परंतुनिकम्मेंबैठे पूरापड़नामुश्कल पीतपीतसमुद्रभी खालीहोजाय और सीर यानेंपानीकीआवँदवगेर कूपनदी सागरादिसबहीखालीहोकर सूखजाय ऐसें कितनेलोग बेरुजगारहोकर निकम्में रोटियें मोहोताजफिरते हैं पर हुन्नरसीखके कमाखाना स्वीकार नहिं करते क्योंकि बडे घरानेंवाले रेसमके पोतडोंके जन्मे हुयेकों हुन्नर औरछोटाधंदाकरना अच्छा नहिंलगता फेर इसपे कहनावटोभी है (दोहा) केहंसामोतीचुगे के लंघनकरजाय ॥ छीजभीजघरमेंनले तो कमायनहिंखाय ॥ १ ॥ इसीतरहसें घरमें बैठे २ सब धन और अलेबण अड्डाबारदानाथित वित गहना कपडे बेच २ के

खायपूराकर घरमें बैठ २ गरतेहैं और छीजके मरतेहैं पर वेह बडघरजी
कुछभीपुरुषार्थनहींकरसकते विचारे मारेसरमके कुछभीविद्या व हुन्नर व
हिल्ला नहिंकरते अजीवहतौबडघराणेंके जन्मलाडलेपुत्रपौत्रहैं पर बडे
घरानेमें गुमास्तेरहेहुयेभीकबी बेरुजगारेहोजातेहैं तब अपनेमालकोंकी
नाँईघरमेंरोटियोंमोहोताजहोकरबैठरहते हैं औरकहाकरते हैं कि हमउस
ठिकानेंमें कामकमायेहुये छोटाधंधाक्याकरें हमारी नजरमें कोईरूज-
गारजमतानहीं देखोभूखेंतोमरतेहैं और कपड़ोंके पैवंद (थेगलियें)
और पगडीमेंचींथरे भरकर टापटीपसेंनिकल्मेंजूतियाचटकाते फिरते हैं
पर ऐसीदुरदसामें भीकोईविद्या हुन्नरको सीखके हिल्लानहिंउटासकते दे
खोकोईभी हुन्नरसीखलेते तो लोगोंकीखुसामदक्योंकरतेउलटीखुसामद
लोगहुन्नरवालोंकीकरते हैं बिनपूँजी और बिनपहचान परदेशोंमें हुन्नरी
सबसेंमित्रहोकेधनकमालेते हैं और अपनानामप्रगटकरलेतेहैं पररोटियों
सेंतोकभी मोहोताजनहिंरहते इसपेएकदृष्टांतदेतेहैं (कहानी) गुज
रातदेसमें एकबडासाहूकार लक्षाधिपति बहादर वीर बुद्धिवजीर धर्म-
नीतीपालकथा ताके मनोजमंजरीनामस्त्रीथी जाके प्रभाधानहोकर एक
कन्याजन्मी ता कंन्यांकानाम क्रांतिप्रभारक्खावोकंन्याँ ऐसीसुसोभित
रूपशौभाग्यकीसीमूर्ति दसवर्षकीहोकर विद्यामें निपुणभई और देश
देशांत्रोंमें क्रांतिकाउद्योतहोकर बडेबडेसहरोंके साहूकारलोग स्वजाती-
वालोंकी मंगनीआनेंलगी पर साहूकारने यहीप्रणधारणकीयाके जोवि-
द्या व हुन्नरमें निपुणहोगा (धनवान व दरीद्रीहो) ताकूँ कन्यादूंगा॥
जबकोईविद्याला कन्याँकीमंगनीकाआता ताकूंसेठजीपूछतेकी कँवरजी
कुछविद्या हुन्नर भि सीखेहैं तब वशीठी (दलाल) कहतेकी उनकोइन
बातोंसेंक्याकामवहतोबडेमोटेघराणेंके और घडेकडूवे(बडेपरिवार)वाले
धनवंतहैं उनके हुन्नर और विद्या सीखनेसें क्याकाम हजारों मनुष्य उनके
हाजरीमें हाजरखडे रहतेहैं औरधनवानकीआसाकरतेहैं तबपीछासेठ

कन्याकापिताकहकहताकिठीकहैम्हैंकोईहुन्नरीढूंढताहुँइसीतरह करते २ कन्याबरसोंकयहोगईतबकेईदिनोंबाद एकलडकाअपनेमतकनालिका-कास्वजाती बहुहुन्नरीनजरआयापरउसकेमातापितातोजन्मसेही स्वर्ग वासीहोगयेथेऔरकोईसगानलगसंबंधीजाने अकालसें पटका और जमीन-झेला कोई जाणनापिछान परंतु वहलडकाहरएकहुन्नरकरकेनित्यकूवा खोदकर जलपीवे याने हमेसाँनविनहुन्नरकरसेटीकमाकेलावे औरखा-कीबचताओ पैसाहुन्नरसीखनेमें लगादे तब सेठउसलडकेको बुलाकर अपनीबेटीका विवाहउसडेहतसवसेंआनंदपूर्वककर दिया औरवहस्त्रि पूर्व आनंदसेंरहनेलगे व नित्यनविनहुन्नरकर अच्छी रीतीसेंअपनेघरकाका-मचलावेफेरकेईदिनोंकेबाद देसमें बारहकाली पडकरपरचक्रहोके वह मुलकलुटगया धनवानके कंगालहोगये किसीकेपास कोडीपैसानरहा जिसवखतमेंसब लोगअपना २ जीलेकेजिधरचाहेउधरभगचले एक २सें मिलनेभीनहिंपाये माईपूतबिछुटगयेतबवहबहुहुन्नराजाताआपकी और-तकोलेकर अहमदाबादसरीखे सहरमें जापहुंचे और वहाँ जाकरहुन्नर काचलनदेखा तबरेसमी व कलाबतूके खीनखाँपबणानासीखकर थोडे सेदिनोंमें दोरुपयेरोजके कमाऊहोगये बस रोजकेरोज दोरूपेकमा-केलाकर अपनीस्त्रिको सौंपादियाकरता बहोतादिनहोगये तब एकदिन पाडौसननें बहुहुन्नरीजीकी औरतको पूछाके बाई तुम यहाँ आये थे जब तुमारेफटेहुये कपडेथे और पैसाभी तुम्हारे पासनहीं था अबतोतुम अच्छीतरहसें खातेउडातेहो तुमारेक्यापैदासहै जब बोबहुहुन्नरीजीकी औरत बोली के मेरेकोंतो कुछखबरनहीं न जानें क्याहिलाकरतेहैं पर मेरेकूंतो दोरुपेरोजलयादेतेहैं खरचउठासोउठा बाकीबचेसोजमाकरतीहूँ जबवहपड़ोसनबोलीके नेकवखत पूछतोसही हैकेक्याधंधा और क्या पेसाकरके दोरुपेरोजकमालातहै एसाहोतो जो यहधंधाकरतेहैं वह हमभीकरें जबउसनेकहा हाम्हेंआजपूछूंगी तबवहब-

हुहुन्नरीजी सांझको आये तबऽस्त्रिनेंपूछाके आपदोरुपये रोज किस-
धंधेसें कमायकरल्यातेहो जब पूर्षनेकहाके तुमकों पूछनेसें क्याकाम
तुमतोंचिकनीरोटियेंखावो और अच्छे २ रेस्मी जरी खीनखांपके स्वच्छ
वस्त्र पहरोओर मौजकरो तब वो अस्त्रि विचारी चुपहोरही परउसप-
ड़ोसनकों कहाँजकपड़तीथी दुसरे रोज फिरभीपूछा जब वोंलीके मेरे-
कोंतो कुछभीनहिंबतलाया और कहा तुमकोंपूछनेसेंक्याकामहै तुमतो
खुसीकरो तबपड़ोसनबोली के तेरापतीबडाकपटीहै सो ऽस्त्रितककों-
भीभेदनहिंदेता तब वह ऽस्त्रिबोली बाईकैसेंकरूँ जबवहपड़ोसनबोली
अयनेकबखत तूँ एकदिन इस्केपीछेजायकर देखतोसही के वहक-
हाँतोजाताहै और क्याकामकर कमाताहै खबरतोले बस यह कहतेहीव-
हस्त्रि मूर्ख अविवेकताधारणकर भ्रमातुरहोय यहीकार्यकरणा उचितस-
मझा बस तकदीरकाफूटना और कमाखानेसेंछूटना क्याइलाजहै जबउ-
सऽस्त्रिनें दुसरेदिन अपनेंखावंदका पीछालिया और चलते २ वतो
वहांपहुँचा के जहाँसालवी और कोष्टी बुणकरोंका मोहोलाथा जाके बे-
जाबुणनेंलगा और नलीयेंचलानेंलगा अब ऽस्त्रिनें यहदसाआंखोंसेंदेख
आहभरतीहुई पीछी अपनेंघरआके रोनें पीटनें लगी और अपनें माता
पितावोंकोंगालियेंदेनेंलगी और बडी मुसीबतसे दिनव्यतीता सांझ
हुवी और वहहुन्नरीजी भी आये तोदेखतेक्याहैं के घरमें दीवानबातीहै
रोटियेंतोकहाँ पर पानीभीनहीं जबतो वहहुन्नरीजीनें बडे अपसोसके
साथ अपनीऽस्त्रिकोंपूछाके आजयेक्याहै घरमें दीवाहै न बाती और
आहभरक्यूँ कूटतेहोछातीखेरतोहै क्या आपको कुछभूतबातादिबीमारी
तो नहीं है यहक्यादुर्दशाहोरहीहै तबतोवहऽस्त्रिमाहाभयंकरक्रोधितहो
अपनेपतिको अनुचितवाक्य अतिनिठुर गारियाँ देनेंलगी और कहने
लगी के तू दूरखडारह अरे ढेढ तूँतोबुणकर बेजाबणनेंवालाहै तेने मेरा
धर्मनेष्टकरादिया और दोनोंलोकों (अयलोकपलोक) सें बिगाडकर

बिटालई तब उसनेंजानाकि भेदखुलगया औरतकीजातबेहया औ-
मूर्खेहौतीहै अब साचकहूं तौ कबमानती है किसमतफूटगयाकमाना
छूटगया घरानाँटूटगया दिनघौलेलूटगया अबसाचकहेंतौकबमाने और
व इमानआताहै अबतोजोकहैसोहीमाननाचाहिये नहींतौयहक्रोधकर
प्रानकीहानीकरबैठेगी यहबिचार रुखुतासेवहअपनीऽस्त्रिकों समझाके
रकहनेलगा अबआपखुपरहो मैंजौकुछहूँसौहूँ अबआपकीक्यासलाहहै
सोकहो तबवोऽस्त्रिबोलीके नर अबमेरेकौंतोमेरेपीहर मेरे मांबापकेपा
सपहुंचादोतबवहबोलाके चलौ परउसकेमाबापभी कालमें लूट खुसके
गुजरातके गावोंमें नटविद्याका हुन्नरकरके अपनें कुटुंबकापालनकरते
थे चंदरौजमें वहभीचले २ उसहीगावोंमेंआनिकले आके एकसरामें
उतरे और बहुहुन्नरीजीकुछसामानखानेपीनेंकालानेंकौबजारमेंगये तहां
आगेउनकेससुरारवालेढोलतौबजारहेहैं औरबांसरोपरक्खाहै नाचकूदके
च्यारछव आनेंकेतौपैसे और दुसेरनाजभी पैदाकरलियाथा तब बहु
हुन्नरीदेखकर तुरतहीसराहमेंपीछागया और अपनीऽस्त्रिसेंकहाके एक
एसातमासा देखकर आयाहूं सो मेंनेमेरी सबउम्मरमेंभीनहींदेखा और
नकानोंसुनाजबवहस्त्रिबोलीकेकहांहै तबउस्कौंसंगलेजाकर वह अजबत
मासानटविद्याकादिखाया वहाँजाके देखेतौक्याहै के उसऔरतकाबाप
तौकुरकट (कूकडा) बनके नाजचुनताहै और अपनीपरें सँवारताहै और
उस्के भाईगुलाचाखाखाकर नाचते और भावजेंबांसपरबरतलके नृत्य
करतीहैं और छोटे छौकरे छौकरियें तालीयें पीटर के भले भले करतेहैं
जबतो इसऽस्त्रिनेभीअपनेंमातापिताभाइयोंकौं पहचानके और बिलबि-
लातीहुई उनके कदमोंमें जागिरी तब उन्होंनेंभी अपनी बेटीकौं पहचान
कर कंठलगाली अबतौ सबमिले मिलाये और डेरेपेगये जहाँ सबौंनें
स्नान ध्यान करिके रसोईजीमणेंकौंबैठे तब वह बहुहुन्नरीजीकी आस्त्रि
कहनेंलगीके मेरेकौं तौ दूर और ऊपरसेंहीं रोटीपरूसदो म्हेंतो इसबुनक

रसें चिटलगईहूं तब वह महाहुन्नरी नटजीबोले के यह हालकैसें क्याहै सो कहो तबतो वह बहुहुन्नरीजीनें हकीकतकहीके हमनेतो फकत कालकाटनेंकोनिमित्त रेसमी और जरीकाकाम बणनेंका हुन्नरसीखकर दिनतेरकीयेहै तबतोवह महाहुन्नरी नृत्यकारीजी प्रसन्नहोकर कहनेंलगे हमतों बांस चढ और नाचकूदके पेटसा गुजाराहै और आपनेंतो अच्छाहुन्नरसीखलीयाहै सो ठंढीछाँयेंबैठके दोरुपयेरोज इसकालमेंभीकमाये हमसेंतो तुमअच्छाहुन्नरसीखे आवो सबमिलके एक पंगत और-एक थालमें भोजनकरें कमायखाया और पड़चाहुवापाया जब अपनीं बेटीकोंसमुझाईके बेटीनतोयह बुनकर और न हमनट हैं येतो बखत निकालनेंकी सबहीखटपटहै ॥ सेंदेसचौरी पर देसभीक ॥ एसेंबेटीको समझाकर सबमिलपरस्पर भोजनकीया पीछे केईदिनोंकेबाद देशमें सु-कालहुवा सब लोग अपनें२स्वस्थानोंपें जाकर आनंदपूर्वकरहनेंलेगे ॥ (पुन्ह) एक बादस्याहके हुन्नरसीखनेका इतिहास इस हुन्नरसे बादस्या हकीग्यानवचीहै हुन्नरअजबचीजहै (कहानीबादस्याहकी) एक चंद्रप्रस्थनामनग्र बडारमणीकथा वहाँ सोभनसुरेंद्रराजा राज्यकरताथा तहाँ दैवयोग्ययवनोंकाप्रचार हो यवनोंकीगादीस्थापनहुई ताकावंशमें एकगुलवस्ता फिरोजस्याह बादस्याहहुवावोबडारूप गुण राज्यनीतीमें प्रवीणथा और रयतकों अपणें पूत्र पौत्रवत जाणकर न्यायनीतीमें वर-तता और उस्केराज्यमें सबरयत आनंदकरतीथी और उसीनग्रमें एक नीलगर अतिविद्या व हुन्नरीबसताथा जिसके एकबेटीथी सो बडीही रूप सील गुण गंभीरथी॥ उस्केरूपकोंदेखकर स्वरराजभीचक्रितहो-ताथा परयवनजातीजानकर दिलमेंधीर्यधरलेता और मनुष्यतो देख-तेही भूमीपरलौटजाते और कामबसहोकर चितवनहीकरते एकदि-नवहलड़की अपनीअटारीपे न्हायकेबालसुखारहीथीतासमय बादस्या-हकी सवारी आनिकली और बादस्याह व उसलड़कीकीच्यारनिजरहुई

देखतेहीमोहितहो हुदाकाशुकरकर कहनेलगा या अल्लाबखसीसकर यहकहकर पीछाबादस्याहीमेंजाकरउसनीलगरकोबुलाया और बहोत- आदरपूर्वकबिठाया बादस्याहने च्यारबातें इधर उधरकी करके आखर कहीनम्रतासें बेटीमाँगी तब नीलगरने ज्वाबदियाथाके हुजूरमेरीबेटीतो कोईहुन्नरीहोगा इसकोंबिवाहीजायगी बिगरहुन्नरी किसीहीबडे आदमी और धनवानकों नहिं दूँगा तबबादस्याहबोला हमारा हजारों कोसोंतक तोराज्यहै और अरबों खरबोंकी पैदासहै व खासखजानेंजगेंरभरेपड़े हैं लखोंहुन्नरीहमारेपासनाकरियतेरहतेहैं और छोटेमोटेहुन्नरीतोमिलनेकी आसाहीआसामें बुढ्ढे होगयेपरऐसामिलापहकिहाँ यह मेरीबादस्याहीके अगाड़ी हुन्नर क्याचीजहै जब वह नीलगरबोला के अय बादस्याह जब बंदेकेसिरपर मुसीबत और तबाही आपडतीहै तब धन माल और खा- सखजानेंक्याकामआवै वहाँतोफगत आपही आप दमौदमरहजातेहैंनो करचाकर हजूरियोंमें हाजर अपनेहातऔरपाँव जब एकही सच्चासा हुन्न रकिसीकोयादहोय तो सबजिहान उसके ताबे होसकताहै यह हुन्नरअ- जबचीजहै यहसुन बादस्याहनें जाना के बगेरहुन्नरतो यह अपनीं लड कीकोंनहिंदेगा अब कोई एसाहुन्नरसीखना जिस्मेंकहींबाहरनजानापडे और बजनभीनउठानापडे अपनेंघरबेठें च्यारआनेकीउपाय कोईबी हुन्नरसें करके इसकोंबतलादेवें जब बादस्याहनें सबहुन्नरियोंको बुलवाकर हुन्नरतजबीजा तोसीना और कसीदानिकालना पसंदआया क्योंके ठंढी छाँय बेठकरतोसीना औरजाजमकाबिछोनाँ पुन्ह वजनहीं उठानासोडढरत्तीकीसूंई जब बादस्याहनें थोडे ही दीनोंमें सीना और कसीदा निकालना सीखकर च्यारछवआनेरोजकेपैदाकरके नीलगरकोंबतलादिये जबनीलगरराजीहोकर अपनीबेटीब्याहदी अब बादस्याहउसस्त्रिसेंआनंदकियेकरे ॥ बादएकवर्षके एकादिन बाद स्याह अर्द्धरात्रीकोगिस्त देनें अकेलाहीजानिकला तो आगे बजारमें

क्यादेखताहैके सबबेपारीतो अपनी २ दुकानेंबंदकर घरकौंगये और एकवडीहीदुकानआके रातकोंखुली जिस्कीरोशनी और दरेसीदेखकर बादस्याहबहोतप्रसन्नहुवा और सेठभीएसा,आनके बैठाके,उस्के पहनने केकपडे औरगहनें दागिने (जर जेवरकपडा) एसे अमोलथे कि बाद स्याहनेभीनकभीदेखा और नपहना और मुखउस्का चंद्रमाकेतुल्यचम-कताथा और उस्केखदमतगारहजूरियेभी एसेथे,के जिनके साम्हने बाद स्यासकीउमीरायतभी हमालोंकेजैसी दिखाईदेरहीथी जब बादस्याहने विचारकीया के देखो मेरेसहरमेंभी कैसे २ साहूकारबस्तेहैं जिनको म्हें पहचानताभीनहीं अबतोसेठजीगरीबों व फकीरोंकों खैरातबाँटनाश रूकीया तो अनापसनापरुपये और असरफियेंफेंकनेंलगे जबतोबाद स्याहनेंसोचा के यहकोई गूपतमायाधारीहै अबकलसवारीकरके मिल नाचाहिये खैर मिलेंगें तोकल परइसबखतफकीरीभेषमें इस्सेंकुछसवाल तोकरचलें तब बादस्याहनेंजाकर सेठसेंदुवाकरी तब सेठभीइस्कीतरफ देखकरबहोतखुसहुवा के देखोक्यापचहत्ताजवान औरक्याअंगरंगमेंभ रपूरहै और अलबत्ते इसआदमींकेबदनमें लोहूभी एकमनसवामनजरू-रहोगा क्योंके वहसेठतोममाई गिराथा वोतोआदमीयोंकेसरीरमें चकू और नस्तर मार चीरके गरममसालेभरकर ऊँधा टाँगता और नीचेभ-टीजलाकर बादामके तेलमें वह खूनटपकाकर भजियेतललताइसीतरह लखोंआदमीयोंकीज्यानतोवोलेईचुकाथा पुन्ह इसीफिकरमें रात दिन व लखोंकीतल्लासमेंथा,कोईभी चंगा आदमीं चढते लोहूका देखे पीछे हरतरहकेपेचकरके उसकीज्यानपरजाल डालहीदेताथा इसी आशयसें वह बहोतसे रुपये और असरफियें बाँटकर धरमातमाँपणेकाबाना रखताथा वह बहोतप्यारसें बादस्याहसेंपूछनेंलगाकेक्यों फकीरसाहब किधरसें आपआये और क्याआपकोंचाहिये,बादस्याहबोलाकि सेठजी काबुलकीतरफसेंआयाहूं और बाबालालस्याहपीरकी जारतके वास्ते

अकेलानिकला बडेघरानेंकाहूँके पर मैं बेखरचभूखाहूँ सौ ताजाभोजन चाहताहूँ तबतौसेठजीनेंदेखीमसखरीकै कहनेलगे हाँ फकीरसाब ताजेसे ताजाभोजन अभीमेरे वास्तेबनताहै सो आपमेरेघरकौंपधारिये एक मेरी बेटी रसोईबनानेंमेंबडीहीचतुरहै जिसनें अनेकप्रकारके ब्याकपाकादितय्यारकीयेहोंगे जबबादस्याहनें बिचारा के इसकाघरबीदेखलेना चाहिये औरयहसेठऐसाखूबसूरतहै तौ इसकीबेटीभीजादारूपवंतहोगी क्यौंकिआदमीसेंऔरतजादारूपवानहोतीहैऐसी विचारके बादस्याहउससेठकेमकान जानेका इरादाकर संगहोलिया और घरको जापहुंचे तब सेठनेंबादस्याहकौं अगाडीकरलिया और आपपीछे २ खिडकियेंमें दूकरकेबडीहीखुलफेलगाताचला अब बादस्याहपहलिकेदरवज्जेपरजाय देखेतौबडाहिवापता पलटन और तौपें पडीहुईहैं और चौकीपहरेछबीने रहेस २ नंगीतलवारें और चढीहुईकबाने हातौमें तौलेहुये भाले तकते हुयेखडेहैं सौऐसेजवानथेके जानेजमराजकेसेदूत और भामडाभूत जैसे विफरेहुयेरजपूत ॥ खडेथे ऐसे २ सातदरवजे और सातहीपरकोटेआये जबबादस्याहनेंपूंछाक्यौं बाबूयहइतनाक्याजापताहै जबसेठकहनेंलगा अयफकीरसाब क्या पूछतेहौ यहरहकामकानहै एकमेरेबेटीहै और मेरी औरत और म्हेंहूँ न कोईबेटाहैनपोताहै मेरे पासअठारहअरबकातो धनहै और एकपारसका बडामोटा डला है अबकोई अच्छासाघराने- का स्याणाँआदमी ढूँढताहूं सौ उसे बेटीब्याहदूँ और सबधनउसकौंसौंप के म्हेंएकांतबैठ मालाजप अपनाजन्मसुधारूँ इसवास्ते जापतारखा करताहूँ नजानेंकौनसीवखतक्याहै खैर बातें करते २ बादस्याहको तो महलकेअंदर लेजायके एककमरेमेंजाबिठाया और आपसाढेतीनमन- की कुलफबाहरलगाकर चलागया जातेवखतबहोतसीखातरकरगया व कहताचला कि आजमेराकारजसिद्धहुवा घरबैठे जवाई आगये अबमें रीबेटीका आपसें ब्याह करदूंगा और अभी आपकौ भोजनकरानेकौं

वोंही आवेगी कहके चलदिया इधरबादस्याह उस्कीबेटीकोदेखनेकी उम्मेदमें वैठाहुवा अपनीआँखोंकीपलकें गिण २ के उसीकासुञ्जण व ध्यानघर यादगिरीमेंथा कि किसबखतआवे और उसें देखूँ इतनेमें हींतो उसलड़कीकी पैंजुन व गुघरोंकी रमक झमक और एडियाकी धमक बादस्याहके श्रवणमें आवाजआई देखीतोनहीं पर उसगजगमनी और हंसाचलनीके रुनकझुनककी आवाजसेहीं बादस्याहका तो मनो-जउत्पन्नहोगया इतनेमेंहीतोवो आके हाजरहुई औरबहोतनम्रताकेसाथ तसलीमबजाई व हातजोड़करबोली के आपभोजनकीजिये एकछोटी सीखिड़की उनकीकुरसीकेपासखुलीहुईथी उसीमेंसे भोजनकेतासकें और कटोरे प्याले सौंपनेशरूकिये जबबादस्याहनेंकहाके आपअंदर क्योंनहिंआतीहो तबउसनेंजबाबदीया के मेरेबापकहुकमनहीं और अभीमेंकुँवारीहूँ बादस्याहसनेंकहाके हमकों बाहरभीतरपायखानेंजानें और न्हानेंकीजरूरतहे सो इधरकादरवज्जाखोलदो उसनेकहा साढेली नमनपक्केकाताला उसदरवज्जेकेलगाहुवाहे तबबादस्याहनेंपूछायेक्या अबबाहरभीतरकहाँजाना और कहाँन्हानाँजबवोबोलीकेभीतरहीतारत और पानीकेहोद फँवारेनजरबागमोजुदहे बाहस्याहनेंपूछा के ताला क्योंलगाहे तबउसनें मधुरता और बडेप्यारसेंजबाबदीया के हुजुर में मंदभागन इनकेघरमें एसेबखतकीजनमीहूँ सो मेरेवास्तेकोईआदमी व्याहकरनेकोंलातेहें और वहमहिने दोमहिनेंसे खापीके भागकरचले जातेहें बहोतसेआदमी तजवीज २ रहगये म्हें इतनीबडीहोगई अबआप कोमेरीस्यादीवास्तेलयायेहें सोएसानहो आपभीधोकादेजावेइसवास्ते आपकोतालेमेंऔरबहोतजापतेकेसाथरखनाचाहतेहें बसमेरेकों आप-केपल्लेलगाके चंदरोजपीछेमेरेमाँ बाप तो बद्रीनारायणजीकेपाहाड़ोमें तपस्याकरनेंकोंचलेजायँगेफिरपीछे तुम और हम बादस्याहनेंकहाके बहोतअच्छीबात परअबअपनाव्याहकबहोगा ज्वाबदियाके आतेमहि-

नेमें जबतोबादस्याहकों बहोतखुसीहुई और उसभोजनकोंदेखकर खुसीहो पलके उसके रंग रूप सुगंधीसेंही मनतृप्तहोगया जीमती बकत हरएक ज्याक पाकादि मुखमेंलेतेथे जबउनको वहा वहा हीकहनापड़ताथा पेटतोभरगयाथा पर मन और मनसातो नेधापी खैर सरमांसस्मीसें चढूँभरी और मोहन पान सुपारीखाई तो वोभी एसीपाचनथी के खायापीयासबहजम दिनमें तीन च्यार वखत तासकें आतीथी जिसमेंएसेमसालेपूरितथे केजिसकेखानेपीनेंसे नितहमेसे लोहूदूनाहो और उसकीखुसबोईसें बदनफूलता और कुवतबढताजावै उसममईगिराकेतो लोहूसेहीकामथीजिसतरहगवलीगायें और भेसियोंको मालखिलातेहें सोफगतदूधकेवास्ते अबतोदिनपरदिनबादस्याहके तनबदनमें मस्तीछागईऔरइसलड़कीसेंदीदारबाजी व दिलराजीकीयाँकरै और मारकुवतके कूदने फाँदनें कुस्ती व दंडपेलकेसिवा जकनपड़ता और दिनभीनहिंगुजरताथा इधर यहलड़कीभीजोबनमें भरपूर और रंगमेंज हूरथी इसकोंभीबादस्याहको देखनें और नजरमिलानेका शौखपडगयाथापरवोतोजाणतीथीके यहकितनेंदिनकापाँवणाहें इसकीदोस्तीमें क्यालाभहोगाआखरतोयहभीउसभट्टीपेंचढनेवालाहे परभला दोदिन नजरमिलापतोकरलें इसीतरहएकादिनोंके दीदारबाजीहोकर दिल मिलीहोरहीथीजबबादस्याहनेंपूछाअबअपनीश्यादीकबहोगी यहसुनके ममईगिरेकीबेटी दिलगीरहोकर हातजमीनरपटकादिये और निसासा डालकेकहनेलगीकी कहाँकीश्यादी औरकहाँकाव्याहव्यानदरगुजरने वालीहैबादस्याहनेपूछाकेयहकैसीबात वह बोलीके कुछकहने सुणनेकी बातनहीं वोमिलासहे (कहूँतोमामारीजाय ॥ नाकहूँतोबापकुत्ताखाय) सेर (क्याकहूँ कहानहिं जाताहियाउथलकेछातीभरआता) जबबादस्याहनेंपूछाआपएसेदिलगिरक्योंहो तब वहलड़की निष्कपटहोकेकहनेलगीअयभलेआदमीतुमयहाँकहाँआफसेहो यह मेरा बापतोममईगि-

राहै सो छवोंआदमियेंकालोहूनिकलाके भजियेतलडाले और ममई बनार कर मुलकोंमेंबेचडाली आपकीभीस्यादी उसभट्टीपरहोनेवालीहै अब इसका कुछभीजतननहीं और अबमेरीभीमौतआगई बादस्याहनेपूछाके तुमारीमौतक्यूँ जबजबाबदिया के मेरेबापनेइसमकानमें आपजैसे सेकड़ों आदिमी कैदकररक्खेहैं उनकीहाजरी रोजलीयकरताहै मैं और मेरी तीनबहनें और हैं वहसब अपनें२जुम्मेंके कैदियोंकों भोजनकराके आँखेंमिलाकरउनकोंखुसरखाकरतीहैं ताजेभोजनसेंतोलोहूबढताजाता हैऔरहमारीदिलीदलासोंसेलोहूछीजनेंनहिंपाताहैम्हेंतोसबबंदवानोंकों नजरमिलाकेखुसीहीकरतीफिरतीहूँ नाराजहोनेंसें लोहूसूखजायअबमेंनेआपकों यहथासोहालसबकहदिया औरआपनेसुनासुनतहीआपकेचेहरेकीगुलाबीरंगत फीकीनजरआनेलगगई उसरंगतकों मेराबापपरखनेंवालाहै जब वहबातसुनकर बादस्याह उस्कोंखातरतसल्लीदेके बिदाकी और आप अपनेंदिलकों मजबूतकरकेबैठाजातीबखतकहगईके अबमेरेकोंभी मारडालेगा म्हेंतोमौलकीलीहुईलौंडीहूँ इससेठने दाइयोंसे सरत करलीहकेकोईभी खफसूरत छोकरी कहींभीहोयतौउड़ायल्यावोयामोलमिलजायतोसुखकेमाँगेरुपयेदेके लेआवो तुमको मुखमाँगीकिंमतदूँगा एसेकरदूँगा के फेर तुमकों उम्मरभरभी कमानाँनपडे परजनमतेहील्यानाचाहिये फेरकुछकामकी नहीं इसीतरह इसनें पांचसात छोटी २ छोकरियें औरभी पालरक्वी हैं यहसुनबादस्याहनेंकहा खेर देखेंगेघबराणाँनहीं जिंदगी होगी तो जीयेंगे ऐसी सुनकर वोतो चलीगई बादस्याहनें अपनेंदिलकोंरोकके औरखुसीकीखुसबोईउडाईचहरापानसें छाँट पाँच पानकावीड़ाचाबा और स्वचित्तहोकर बैठा इतनेंमें तो वह ममाईगिरा आया और आपसमें तसलीमातसलीम बडीहीखुसीसेंसलामी आदाबी हुई बादस्याहनें पूछा अब हमारी श्यादी कबतकहोगी तबठगसेठबोला हालदसदिनकी देरी है बादस्याहनेकहा कि बहुतदिनहोगये जबठगसेठ

तौभी मौलासाहब बस्सरिश्योंका काम है और एकाएकही मेरे बेटी है जिसके ब्याहकीतय्यारीकरनाहै भाईबंदोंसे बराबरीका व्यवहार है खाने पीनेकी तयारी कपडेंलेसीयेजातेहैं सब भाइयोंसें हमेसः येही सल्लाह मिलतें होतीहै कुछतयारीहुई कुछहोंगी फिरब्याहहीब्याह जबबादस्या हनें पूछा कि कितनाक खरचहोगा ठगसेठबोला अलबतें दशपाँच ला खकातोसमझो बादस्याहनेंकहायहतोबहौतखरचेहैहमारेयहांके सेठोंसा हूकारोंके एक लाखरुपयेंमी कोई सेठलगाताहोगा ठगसेठबोला अजी फकीरसाहब यहकायके सेठ और कायकेसाहूकार वोतौ सब हमारे हाजिरह आसामियेंहैं हमारे यहाँ लाखरुपयोंका तो रोसनी वास्ते तेल और नजानें आतसबाजीमें तोय च्यारलाखका बारूदउडजाताहोगा जबमेराब्याहहुवाथा तबवीसलाखरूपये तो हमारी तरफके लगेथे और बतीसलाखरुपये रानीनें लगायेथेजबबादस्याहनें कहाकेआपकीतरफके तौ दसपांचलाख और कुछहमारी तरफसे भीतो चाहिये जब ठगसे ठबोलाके यहसब आपहीकातौ हैं मेरेबालकनहोताथाजबमेनेमानताकरी थी के बेटाहोगातो आधाधन खैरात करूँगा और बेटी हुई तौ सब घर बार धन दौलत छस्कौंदेके बद्रीनारायणके पाहाड़ोंमेंजाके तपस्याक रूँगा इसवास्ते यहमाल सब आपहीकाहै मेनेतौ आपकौं आंखसेदेखते ही आपके नामसें सबधन संकल्प करदिया है और आपके पास क्याहै आपतौ अतीतफकीरहो और म्हेंतौ गिरस्थहूँ बादस्याहने कहाके क्या फकीरोंकेपास कुछभी गुरुकेनामका लटकानहोगातौ उसनें फकीरीले कभी क्याकिया क्याहमारेपास ऐसाभी लटकानहोगा जिस्मेंहमारेब्या- हकाभी पूरान पडे ठगसेठबोला आपकेपास क्यूँनहिंहोगा आपतो बडे बली औरकरामातीहो जबबादस्याहने अपनें हकपरदवामांगऔरउस नीलगरकौं यादकर अपनें कानको खैंचके आदाबबजाईके और वहसीनें औ कसीदेका हुन्नर यादकीयाथा जोकुछ इसबखतमें काम आवेतो यह

आवै बादस्याहबौलाके आजजराछाकलावतू और रेसमतौं मेरेकौंलादौ
और अच्छादरियाइका साढेतीनहात लंबाचौड़ा कपड़ा चाहियेगाठगसे
ठबोलाके इसका क्या हौगा। बादस्याहनेंकहा के मैं मेरे गुरूके साथ
भैस्तमें जायाकरताथा सौ मैंनें वहाँ कुछ कसीदा सीखलीयाथा और
वहाँकेअगवाइयें व पिछवाइये परदे चंद्रवौकी सिफतसबदेखके ध्या-
नमेंले आयाहूं ठगबौला एसे कसीदेसें क्या हौना। यहाँतौ लखौंकाख-
रचहै बादस्याहनेंकहा फकीरौंके लटके भीतौ देखौ खैर ठगनें देखाके
इसकौं नाराज न करणाँ हाँ भरके चला बेटीके संग सबचीजें भेजदी
वह लेकरआकेहाजरहुई और पूछनेंलगी के आपइसकाक्याकरौगे ज्वाब
दियाके दिलकौंतौरमावेंगे और दिनकोंटंग लोहूबनारहेगा तौ हमारीतौ
मौतहौनाँहीहै पर तुमतोबचजावौगेवहबोलीकेकोईभीउपायसेंआपका
प्रानबचजायतौ मेरीज्यानतौआपकेकुरबानहै परक्याकरूँइससाढेतीन
मनकेतालेके कुंजीबीतोनहींहै ॥ जबयहताला कारीगरकेपासघडाजा-
ताहै तब इसके कुँजीनहिंआतीहै जबबंदीवानकौं बाहरनीकालकर भटी
दिखाईजातीहै उसदिनयहताला मेराबाप अपनेहातसेंतौड़ताहै और
बंदीवानकौं बाहरनिकालकेताहै नहींतोम्हेंआपकीज्यानकबीनहिंजाने-
देती पर बेवसहूं बादस्याहने अपनेंदिलकीबात कुछनकही और दिल-
मेंसोचा के औरतकीजातहैऽस्त्रिकेपेटमें बात ठहरतीनहीं हरतरहसें को-
ईबीसखस फुसलायके पूछसकते हैं और अबलाकीजात मारखुसी व
धमकीसेंकहदेतीहै खैर अबतौ बादस्याहनें नीलगरकौं यादकिया फिर
आपनेंउस्तादकानामलेकर कसीदानीकालनाशुरूकिया और उसनें
अपनेंवजीरकेनामसें (अंकपट्टीअपनींअपनीदोनोंकीइबारतकाइसारा
लिखके सबअहवाल ममाइगिरेकेमकानका और जापतेंका व गलीकौं-
चेकापत्ता ठिकाना व अपनेतनकीविवस्था सबरूबरूमिलनेंजैसी लि-
खदी और बीसहजाररुपयौंतक इसचंद्रवेकौं तौ खरीदो पुन्ह अगवाई

पिछवाई पड़े बिछायत बनवानेकाइस्कौंहुकमदौ सौइसलालचसैं यह बनवादेगा जिस्सैं आपनें आपसमें चिट्ठिमिलापरहेगा और छुडानेका इलाजकरो परजलदसतकिरनेसें मेरीजानकाखोफहै और आपकौं आपका हातमल २ के रोनापीटनाहोगा अबतो सबहकीकत उसचंद्र-वेमें अंकशारतलिखकर उसठगठेठमसईगिरेकौं बीसहजाररुपयेमें बे-चनेकाहुकमदीया और कहदियाके बीसहजारसेंकमएककोडीभीनहिं लेनौंसेठबोला फकीरसाहब इसकेबीसहजाररुपयेकौनदेवेगाज्वाबदिया के तुमकौं फकीरोंकेलटकौंकी क्यामालूम इस्कौंतोवहखरीदेगा कि जोकोइभेस्तकेदर्यांनकी किताबौंबाचापढावाजानताहौगाबससेठबजार-मेंलेजाकर बेचनेकौं खड़ाहुवा तबउसचंदरवेकारंगढंगदेखकेसेकड़ौंआद-मींआतेथे परमोलउसकाबीसहजाररुपयासुनकेचुपचापहोकेरअपनेंका नमूँद चले जातेथेपरबादस्याहके जानेंकेपीछे बजीरनें एसा बंदोबस्तकी याथाके जगाँह २ हलकारे व जासूदगौरंदेखड़ेकरादिये थे औरकहरक्खा था के सहरमें कोईभी नवीजूनीबात व नवीजूनी चीज आश्चर्यकीदेखौ सुनौं उस्की मेरेकौं खबरदौ किसनेंकिस्कोकहीऔरकिसनेंकिनसेसुनी फेरं उनके घरठिकानेंकाभीपत्ता यादरक्खौ हरएक जगाँह हरठौड़ डाकें बिठारक्खीथी जब वहनवीबात गौरंदौंनेंसुनी औरदेखीकेदसपाँचरुपया काचंदरवा औरबीसहजारमोलके यहबातभीतो नईसेंनईहै जायकरवजी रसें अर्जगुदराई सुनतेहीवजीरनें चंद्रवाबुलवाकरदेखा औरदेखतेही अपनेंप्यारे मालिककेहातकी निसानीखतबाचकरमगनहौगयाऔरउठ केआदाबबजाय सिरपेचढाय छातीसें लगाय मुखसे चूम आँखौकीपल कौंकेलगाया व आँखेंमूँदमालिकसेदुवामांगी और उस सेठसें पूछा के से ठजी सच २ कहौ इस्काक्याहादियाहै यह चीजआपकहाँसेखरीदला येहौ यहतौभेस्तकी निशानीहैं यातो कोई परस्तौंकेहातकाकामहै और याकोईपरीजातके हातकानिसानहै या कोई वली औलियौंने भेस्तदेखी

होगी जिस्केहातलगेहोंगे यहचीज इसजमीनकेपरदेपर मिलनाँ कहाँ है यहतोकोईउसमालिककेघरकीसिफतजाणेंनवालेंकोलहरमहरका सौदा हुवाहै हमारीकितावोंमें लिखाहुवाहै वह सवसिफइस्मेंहै ॥ यह बातें पहलेवादस्याने ममईगिरेकोंकहीथी सोसब हकीकत, अपनें वजीरकों उस चंद्रवेमेंलिखके वाकिफकरदियाथा वोहीबातें सब वजीरकितावोंमेंलिखी मतलाके उसकी तारीफकरनेंलगा जबसेठनें इस्केवीसहजार रुपयेकहे तब वजीरनेंकहा क्या जादाहै ले पधारें पर यहकामतो सेठजी अधूराहीरहा इस्की अगवाई पिछवाई परदेभी और होनांचाहिये यह तो फगतचंद्रवाहीहै जब ममाई गिरा बोला के मेरोविलायतोंसेमालआताहीरहताहै औरभी आडतियोंकों इसकी तलासमें रहनेंको लिखदूँगा सो आपको जहाँहोगा जहाँसें मंगवा दूँगा वजीरबोलाके आपकी महरवानीहोगातो आपमँगवाहीदोगेअगाडीकिसमतहमारेहैं सेठकहेंनेलगा के इतनींक्यादिलगीरीहै यहतोमँगवाहीदेऊँगा वजीरनवेंहोतलाचारी व आजीजीकेसाथ उसकोंरुपयेदे रवानेंकीया और चलती वखत वजीर बोलाके अगाड़ीके कामवास्ते कुछरूपये पेसगी लेपधारें॥सेठनेंजबावदीयाके वहाँक्याकमीहै वजीरनेंनामठिकानाँ भी पूछा तो उसने कुछसच्चा और कुछझूठा लिखवादिया वजीरनेंकहा सेठजी यादरखना एसानहो के आपभूलजावे ममईगिराबोला हुजूरनभूलूँगा यहकहके चला अपनें घर आया सेठनेंविचारकीया के इसआदमीके लोहूनिकालनेंसें रुपये आते उस्सेंतोदुगनेंतिगनें एकचंदरवेमेंहीमिलगये तो फेरक्याजानेंकितनेरुपये पैदाकरवादेगा देखाजायगाहालइस्सेंयहकामतोबनवालेवें लोभ केथोभकहाँ लोभहीगलाकटाताहै जबठगसेठनें तुरतही अच्छा रंगीन बारीकरेशम व रेसमींदरियाईकपड़ा और सोनेरी रूपेरी बहोत उमंदासें उमंदा चमकदार जरी हररंगत और हरतरहके लेजाके बादस्याहके साँमनेंरखदी और बडे पियारसें बोलने लगे और वहवीसहजाररुपये

श्री सौरूहोनेरूरूसादिये केफकीरसाहब आपनेंजोकेहाथा वैसाहीहुवा पहं लेतो मेरादिलबजारमें बहोतनाराजरहा पर अखीरमें एकगिरायकएसा मिलगयाहै के वहतोनजानेंक्याक्याचीजेंबनवायगाअबआपएकतोअ-गवाई और एकपिछवाई व परदेयहजलदीसेंतैयारकरोगेतो आपकीतर-फसेंभी ब्याहके काममेंसबमालअसबाबखरीदाजायगा और यहवीसहजा ररुपये उसचंदरवाके आप रक्खो बादस्याहनें कहा के आपहीरक्खोक्या बीससें औरक्याहोताहैतीससेंयहाँतोलखौंकाखरचहैसेठ बोला क्या मुजा काहै आपके पास एसेरलटकेहैं बादशाहनेंकहा के और इससेंभी अच्छे कसीदेनिकालनाजानतहूँ सो लखौंरुपयौंकेगंजलगजाँगे सेठजीयहाँ तो क्याहै पर आपऔरहीविलायतौंमें भेजकर बिकवातेजावोगे तौ लखौंतोक्याहै परकिरोडौंरुपये परबैठेहीचलेआवेंगे भेस्तनसूनेंकीबातें अगाडीके पैगंबर कितावोंमें लिखतोगयेथे पर देखनेंकोकहाँ यहबातें सुनकरबस समईगिरातोदंगहोगया और कहनेंलगाके अब आपइस्कों जलदीसेंहीतैयारकरकेदो हाल आपकाभ्याबहोजाय ॥ जब बादस्या-हने जाजम बिछौनाँ बिछवाई बनानाशरूकीया और सबकौफियतमुह ल्ला ठिकाना गली कौंचा व जापतेकासबहालकोट किल्ला दरवज्जा ताला सिफाई फौज तौपें कुलकैफियत परदे पिछवाईमें अकपल्लीलिखदी और अपना हालभीलिखसमझाया और लाखरुपयेदेनेका हुकमदीया बस तैयार करके सेठसमईगिरेकोदीया और कहदियाके इस्कोकोईभी खरीदकरे एकलाखरुपयोंसे कमतीमेंनहिंदेना वहाँ और कौनखरीदताथा वजीरकेही खजमतदार आकरदुकानपे ताकीद किया करतेथे उस रोज तय्यारहोनेसें ठगसेठ वजीरकेहीनजरजागुदराई वजीरनें उठके ताजी मदी और वह अंकपल्लीके खत बाचपढकर औरनिहायतखुसीमनाके बोले क्योंसेठजीहमारेतोंइसहूकेनमूनेकाकसीदाहै पर इस्कावाजबीहादि-याकहोहमकोंकहाँतकमिलसकेगाउसनेकहा इस्केंलाखरुपयेदिलवावो वजीरबोलाकेवाहवासेठजीतुमतौबडेहीईमानदा रहोहमनें भीयहीसुम्मा

एकडेढलाखदोलाखकेठगबग गिनरक्खाथा झटपटही खजानचीपेस
कालिखदिया और सेठसेंकहाजावोखजानचीसें अच्छेआकरीआँटके खु
खके माँगेहुये और पचीसहजारहमारी खुसीकेआपकोइनामकेबखसीसहैं
सवालाखरुपेलीजिये तबजातेही खजानचीने रुपयोंकीथेलियेंनिकालदी
इतनेमेंतो वजीरने एसातौफानउठायाके एकदोदुकानबजारमेंलुटवाके
हल्ला बजादिया तब ठगसेठवजीरपासआकर अर्जकी के हजूरबजारतो
लुटताहै अब मेरीरौकड़काक्याहालकरूँ वजीरनें कहाकि मैं बजारका
अभीबंदोबस्तकरताहूँ आपतो अपनीरोकड़ ले पधारें म्हेंजापतादेकर
पहुँचादेताहूं तबवजीरनें एक २ थेलीकेसाथ च्यारच्यारसिपाई नंगी
तलवारोंवाले संगकरदिये जबसेठजी खुसीहोकर बादस्याहीफौजसंगही
लेचले और उसकेपीछेही वजीर सहरकाबंदोबस्तकेवास्ते वहोतसेसि-
पाइयोंकोलेचला और सबतोपें व रिसालोंपर हुकमदे चला बस सब
फौज सिपाई मंमईगिरके घरजापहुँचे लुहार सुथार और बेलदारोंकों
तोपेहीहुकमथाके इसठगसेठकेमकानकों फोड़ फाड़ और तोड़ ताड़
खोद खाद मेदानही दिखलादो इधर रोकड़केसाथ सिपाईगयेथे उन्होंने
तो जातेही सेठके सिपाइयोंकोंगरफतारकीया और सब शस्त्रोंसहित
तोपखानेको घेरलिया और ठगसेठकों पकड़जेरकिया व कामेतकपहुँचे
बादस्याहकों बाहारनिकालडीयाइतनेमेंवजीरभीसहरकालेकेजापहुँचा
और ममईगिरकोंकतलकाहुकमदीया और वहलड़कियें वा बादस्याहकी
खैरख्वाहलड़कीथी उसकों बादस्याहीजनानेंदाखलकीऔरसबकोंदियों
कोंरिहाईदी अबबादस्याहको सवारीकराके हाथियोंके हलके व चवँरोंके
फटकारेनकीबनोंकरदोम २ पुकारेनिसाण नोपत नगारेलइसकरासिपाई
कारेबडीधामधूमसें सवारीबजारतकपधारेआगेलोगरकामकानआया
तब बादस्याफौजकों खडीरहनेंका हुकमदे आपनीचेउतर नीलगरके
घरकोंगया और बुजर्ग उस्तादके पाँवोपड़कहनेलगाके आपकेहुन्नरने

नेकीव्यानबनाईहै जोमें सीना और कसीदानिकालना नहिं सीखता तो इसमारेजाते मेरेखोहूकेम जिये तो औरही खाते अब सबलोग सरकारसे खबरलौ और हुन्नरसीखो यहहुकमदिया और देशदेशांतरोंसें हुन्नरि-योंकों बुलवायकर अपनें शहरमें बसायबडामानदिया ॥ इसीतरहसें हस्तनापुरके राजा पांडवहुन्नरीथे देखो उन्होंनेंराजाहोकर कैसाहुन्नरसी-खलीनाथा जैसे राजायुधिष्ठिर व्याकर्णविद्यामेंप्रवीण और पौराणविद्या हस्तामलकीकररखीथी भीमसेन सूपग्रंथानुसार रसोईपाकादिवना नेमेंचतुरथा और अरजुन नाट्यविद्यामेंनिपुणथा नकुल सहदेवजोतिषी व अश्वविद्यामें श्रेष्ठथे जब आपतकालआकर चूतकर्म (चौपड़) से आरकेराज्यछोड वनोवासधारणकीया सोभी १२ वर्षजूतरहना तो एसी दुर्दशामेंभी हुन्नरकेजोरसें राजाविराटकेह अपना २ कार्यप्रगटकर दिन-तेरकीये पुन्ह युद्धादिकरके अपनाराज्यभीपीछालेलिया और दूसरे २ व-होतसेलोगोंने हुन्नरसीखके द्रव्यभीपैदाकीया और अपनानामभी अछीतरहसें मुलकोंमेंजाहरकीया और हुन्नरकेसाथ अपनेंमुसीबतके दिनकाटे औरइसभरतखंडके राजावोंने आगेबहोतसें हुन्नरियोंकों बुलवाकरआ-दरपूर्वक अपनेंराज्यमेंबसाये उनहुन्नरियोंकी बनाईहुईचीजें और लोगों-को सिखाईहुई अभीतककामदेती है और जमीनमेंसें सतधातू व उप-धातू यहसबहुन्नरियोंनेंनिकालीहैं (पुन्ह) इनधातूवोंका फेरफेरभी कईहुन्नरियोंनेंकरके बस्तुवेंबनाई जैसें पचीससेरतांबा और पनरासेर जस्त मिलाके पीतलबनाया व पचीससेरतांबा और पनरासेरकथील मिलाके कांशाकरलियाबहबरतन जगतकेउपयोगी और प्रसिद्धहैं एसे हीं सोनां व चांदीके बरतन व गहना दागीना बने वोजाहरहीहै और पथ्थर पहाड़ जमीन ढूंढके चमकदारपथ्थर भी हुन्नरियोंने निकाले व सुधारे (माणकहीरापन्नापुखराजइत्यादि) और इसहुन्नरकेजाणनेंवाले अबभी अपनीइज्जतसें ठंडीछाँहबैठे अपनागुजर अछीतरहसें चलाकरते

चिकनीरौटियेंखातेहैं और खरीददारोंसें कुसामंदीयेभीकरातेहैं । हुन्नरि-
योंका दरजा अच्छासमझकर राजावोंनेभी मान्यदेवसाये जैसेंजोधपुरके
राजासाहेब वखतसिंघजी नागोरथे जब एसे २ कारीगरबुलवारके नागो-
रमेंवसाये उनकारगिरोंके बनायेहुए औजार संचे व सतारके तारहैतोंको
का पर सौनेसेंद्विगुणामौलपातेहैंइनतारों बगेरसतार वीन इकतारा सारं-
गी चिकारादियाजोंका काम नहिंचलताइनकायहीजीवहै और दांत लाख
काँच नारेली बंगडी चूडी रंग रोशनाई बारूद इत्यादी औरभी सैक-
ड़ोंचीजोंके बनानेवालेकों वसाये उनकी बनाई चीजें सब जगतकेउपका-
रार्थहै एसे सचे हुन्नर सीखेहुवे हरवखत व हरजगँहै काम आते हैं.

एसेंहीं जैपुरके राजा सवाईजेसिंहजीनें जैपुरमें अच्छे २ हुन्नरी बुल-
वा २ के वसाये सो उनहुन्नरियोंकी बनाई हुईचीजें सेकडोंकोसोंतक
जाहर और उपकारार्थ है और हुन्नरी जहाँचाहेवहां मिलसके और
आदरपाकर द्रव्यपेदाकरे और नामभीप्रसिद्धकरे उस्तादवजे व हुन्नर
से जो चाहेसोकरसके य हुन्नर अजबचीजहै (देखो) मेनेंबी एक छो-
टासा हुन्नर छापखानेका सीखलियाहै जिस्से हमारे दिनभी अच्छी
तरहसेंगुजरतेहैं और थोड़ानामभी जाहरकिया सो आपलोगोंके श्रवण
में आयाहीहोगा नहींतो मेरेको कौन जानता और कौन पहचानता
इसवास्ते हमारी राहमें तो सचाहुन्नर और सद्यविद्या सीखना अच्छान-
जरआया इस्में नामवरी व द्रव्य संग्रह होना दोनोंहीकी वृद्धीहै.
हे सुज्जनविद्वज्जन प्रियमित्रो हुन्नरभीसीखो तो ऐसासीखो जिस्में आप-
केतोपेटभरो और सुखसें अपनी नींदसोवो और ऊठो किसीकातगादा
ओलभा मतसहो एसा ओलभाबी बुरा के जिस्के सुनतेही अपना
शरीरतपजाय और खूनतक गरमीपहुँचे और प्रसंशा सद्यविद्या व हुन्नर
सचेकामोंमें हमेसा वाहवाईही मिले और नगद दाम हातमें आवे
ऐंड और उधारमें न फँसे साहुकारकी रकम हातमें रक्खे

हजारों हुन्नरका हुन्नर एकयहीहै जो हुन्नरतोसीखजाय और पूँजी लेकरवैठे तो दिनमुशकिलसे कटे प्रथमतो अपणेलोग हुन्नर व हस्तकारी सीखनेकी इच्छाभीनकरे जोकदापि हुन्नर व हस्तकारी सीखेंहेलोगतो ऐसीसीखेंगे के जिस्में झूठ और कपट खोट प्रपंच ठगाई दगाबाजी इत्यादि और विद्याभीपढेंगे तो ऐसीपढेंगे जैसी पहलेवर्णन करचुकेहैं और हुन्नरभीसीखेंगे तोऐसा जैसें (हींग किस्तूरी केसर इत्यादिनकलीवनालीं) वे अमरकपूर अतर इत्यादिमें भेलकर नक- लीवनाना व खोटेनकलीवनाके वेचना जिसके खानें लगानेंसे शरीर बिगडकर अनेकरोगउत्पन्नहोजाय जैसें अच्छीहिंगमेंमिलावट लहसुन गूंदइत्यादि० व अतरमेंतेलचरवी इत्यादि० व केसरमें कँवलमयाग वाहिदलअंकूर० और किस्तूरीमें लहूमांसादि० अमरमें सुगंधीमसाले मोम अफीममें गुड एलिया लिंगदराज रब्बा इत्यादि ऐसे २ हुन्नरसें नकलीचीजें वनाय २ और कपटसें वेच २ कर अपणें कुटम्बका पोष, णकरतेहैं वह आजकलह वडेहुन्नरियोंमें जम्माहै और हुन्नरीकहलाये जातेहैं और इससेंभीवडेहुन्नरीवहहैं के जैसें वहुतसी कपटविद्या वह हात- कीकारीगरी यहाँतककरते है केनकलीमोती और नकली माँणक पन्ना इत्यादि वनाके व ऐसी२ कपटहुन्नरकी जिनसें जिनकोवना२ कर और छिपा २ केचोरीसेंवदूसरोंकेहातसें व कपटकर गिरिवीरखदे वह बडेहुन्नरी कहलायेजातेहैं और इससेंभीवडे हुन्नरीऐसे२कपट खोट विद्या करनेंवाले होते हैं वह वडहुन्नरी खोटे नोट हुंडियें दस्तावेज रुपिये असरफियें इत्यादि बनाकर चोरी छिपीसें छाने ओले गली कूँचोंमें व दुसरोंके हातसें कपटकर चलातेहैं और आखिरको पकडीजाकर दुरदशाको भी पहुँचतेहैं पर सहूकारी हुन्नर नहीं सीखेगें जो हस्तकारी कारीगरीके सदव्यवहारके होते हैं जिस्से अपना नामप्रसिद्धहो व अगाडी सब लोगोंको फायदापहुँचे किसीका बिगाडा नहिं होय और आप हुन्नरीनि

कपट होके देश देशांतरोंमें वैद्य व भेजके अपना नाम अच्छीतरहसें प्रसिद्धकरे एसाहुन्नर नहिंकरेकेबतावेतो तंत्र और कहे मंत्र और कपट रसाणादिक दिखाके ठगे व सोने चांदीके जोडे बनाकर ठगविद्याकर बेचे व बदलकर गिरवीधरे तथा जूवे और गंजफे काफदानोंसें ठगखानेका हुन्नरकरे ऐसे हुन्नर तो फक्त चोरी छुपी कपटविद्याकेहैं हुन्नर ऐसा सीखनाचाहिये कि जिस्से अच्छी तरहसें तो अपने कुटम्बका पालन पोषन करे और अपना नाम ठामगाम मोहोल्ला बाजार व बाप दादा प्रदादाके नाम व उस्तादकानाम आसाधीस (राजा) का नाम इत्यादि अनेक प्रसिद्ध होते हैं ऐसी सदविद्या व सच्चा हुन्नर सीखना उचितहै लुच्चे गुंडे चोर हन्याई जुवारी जाली फासीगिरे पेटी गलकटे जेवकटे उठाईगिरे खोटीचीजें बनानेवाले ठग कुबुद्धिइत्यादिकी संगत नहिं करना संगतकाफल अवश्यकरलगताहै जैसे (कोयलोंकी दलालीमें काला मुँह (एसासमझके सुमार्गमें चलना योग्य है ॥

इति वैश्यकुलभूषण व इतिहास कल्पद्रुम माहेश्वरी कुलशुद्धदर्पण सहा शिवकरण रामरतन दरक माहेश्वरी मारवाडी मूंडवेवाला इन्दोर निवासी कृत प्र. भा. संपूर्ण शुभम्.

[अथ तारीखचक्रम्]

. सन १८८८ से १९९९ पर्यंत.

तारीखदेखनेंकीरीती जिसवारको तारीखदेखनाहो तब प्रथमइस्वीसनके सन्मुख वर्गअक्षरदेखो पुन्ह इंग्रेजीमासके सन्मुखवहीवर्गाक्षरपेउँगलीधरनीचेचलकर दिनकेवारपेआवे फिर उसीवारकेडावेबाजू (बामभाग) चक्रमें तारीखदेखो उसीबारको वहीतारीखहोगा वर्गकोष्टक नम्बर २ में वर्गकेदोयअक्षर है सोप्रथम अक्षर जानेवारी फरवरीकाजानों शेषाक्षर स्वेमासकागिनों ॥ यहदोयअक्षर फरवरीचौथेवर्ष २९ तारीखकाहोताहै इसवास्तेहै इस्वीसनके च्यारकाभागदेनेसें पूर्ण०बचे उसवर्षमें फरवरी २९ तारीखकाहोगा शेषवर्ष २८ तारीखको जानो.

तारीखचक्र.

इसवी सनंमें. वर्गादि मासांत् वर्ग. वार प्रमुख. तारीख आगमनचक्र

सन इसवी.			वर्ग. २
१८८८	०	१९२८	क छ
८९	१९०१	२९	च
९०	२	३०	ङ
९१	३	३१	घ
९२	४	३२	ग ख
९३	५	३३	क
९४	६	३४	छ
९५	७	३५	च
९६	८	३६	ङ घ
९७	९	३७	ग
९८	१०	३८	ख
१८९९	११	३९	क
०	१२	४०	छ च
०	१३	४१	ङ
०	१४	४२	घ
०	१५	४३	ग
०	१६	४४	ख क
१९००	१७	४५	छ
०	१८	४६	च
०	१९	४७	ङ
०	२०	४८	घ ग
०	२१	४९	ख
०	२२	५०	क
०	२३	५१	छ
०	२४	५२	च ङ
०	२५	५३	घ
०	२६	५४	ग
०	२७	५५	ख

मास. ३	वर्ग. ४						
जनवरी. अक्टंबर. १ १०	क	ख	ग	घ	ङ	च	छ
मई. ५	ख	ग	घ	ङ	च	छ	क
अगष्ट.८	ग	घ	ङ	च	छ	क	ख
फरवरी. २ मार्च. ३ नवंबर ११	घ	ङ	च	छ	क	ख	ग
जून. ६	ङ	च	छ	क	ख	ग	घ
सप्तंबर. डिसंबर. ९ १२	च	छ	क	ख	ग	घ	ङ
अप्रेल. जुलई. ४ ७	छ	क	ख	ग	घ	ङ	च

तारीख. ६					(वार) ५						
१	८	१५	२२	२९	र	श	शु	गु	बु	मं	चं
२	९	१६	२३	३०	चं	र	श	शु	गु	बु	मं
३	१०	१७	२४	३१	मं	चं	र	श	शु	गु	बु
४	११	१८	२५	....	बु	मं	चं	र	श	शु	गु
५	१२	१९	२६	....	गु	बु	मं	चं	र	श	शु
६	१३	२०	२७	....	शु	गु	बु	मं	चं	र	श
७	१४	२१	२८	....	श	शु	गु	बु	मं	चं	र

श्रीः

अथ रमल प्रस्नावली।

सहा शिवकरणरामरतन दरक माहेश्वरीमूंडवेवालाकृत लिख्यंत

(वार्ता)

जोप्रछकप्रश्नपूछनेकोआवेउसकेमुखसेंचारशब्दकाउच्चारकरवानांएकतो फलकानामपूछना दूसरासातवारोंमेंसेंवारकानांमपूछना तिसरे कोई नक्ष त्रकानांमपूछनां चोथाकोईपक्षीकानामपूछनाँ येचारशब्दचारवारबुलवाके एकएकशब्दकाअक्षरगिनतेजानाँ जोदोकीआवेतोदोकाअंकधरतेजानाँ एकीआवेतोएककाअंकधरतेजाना ऐसेंचारबारकेचारअंकोंकीपंगतीर- चना पीछेवोहीचिन्हकेअंकप्रश्नावलीमें देखके फल कहनाँ

२१२१ हे प्रच्छकयहप्रश्नआनंदकारीहैचिंताभयखेददूरहोगीमित्रमिला प धनलाभ स्त्रीलाभ व्यापारलाभ गईवस्तुमिले एकमलीन पुरुष तेरे सिर कलंकधरताहै तूंनिकलंकहै एकतेरामित्रहै उसकी सलासे कारज करेगा तो मनकी इच्छापूर्णहोकारजसिद्धहोगा ॥ १ ॥

११२२ हेप्रछक यहप्रश्नमध्य हैं येकारजकलेसकेसाथहोगा पीडाका सनमंधहै कुछदेवदोषपितृपीडा चोरभय व्यापारमें नुकसानहोयतीनदि नपीछे एकअभ्यागतकूँ भोजनदे कारजकर लाभहोगा कुछअच्छीबातसु नेगा मनकूंविश्रामआवेगा ॥ २ ॥

२२२२ हेप्रमकयहप्रश्नउत्तमहै जोतेरीइच्छाहोयसोपूरणहोगी मनोरथ सिद्ध रोगभयनाश धनलाभ राज्यसन्मान कृषीव्यापारलाभ विदेशग- गमनेआनंदसों आवे एकतेरको पिछलेदिनोंमेंस्वप्नआयाथा क्या कहा यादकरवोवस्तुपावेगा ॥ ३ ॥

२११२ हेप्रछकयहप्रश्नचितदेकेसुनतेरेदिलकासंसातत्कालनिवृतहोगा जोवस्तुचाहताहैसोशीघ्रहीमिलेगी राजसन्मानरोगनास्तीगतवस्तुप्राप्ति

मित्रलाभशत्रुक्षय एकदुगलतेरीचुगलीचिंतवताहैं मुखसूंमीठारहताहै ठिगणेकदमकाहै भरोसामतकर इष्टदेवकासुमरनकरभलाहोगा ॥ ४ ॥

२२१२ हेप्रछकयहप्रश्नभलाहैं धनधनप्राप्तहोगा निरुद्यमनरहो बुद्धि बलचलनेंदो आलसअरुकायरताछोडो धीरजपकडो एकपुरुषतेराविश्वासराखताहै भलाचाहताहै कारजपूरणकरेगा गइवस्तु मिले एकपूरब पुन्यप्रगटेगा कुछपुन्यकरभलाहोगा ॥ ५ ॥

१२११ हेप्रछकयेप्रश्नअधमहै येकारजमतकर पीडाप्रा प्तहोगी एकदुसपापसतावताहै तैनेबहोतउपावकी मिला सो हाथनरहा उछलकरफेर पावेगा बंधमोक्षरोगनाशशत्रुनाशहोगा कुछपुन्यकरभलाहोगा ॥ ६ ॥

१२२२ हे प्रछक तेरा चित्तबडाउदारहै परंतु कुछप्रारब्धऐसाजोरनहींकरती धनपावताहैजातारहताहै मित्रकपटाईहोजातीहै विश्वासकिसीकामतकर एकबडीबातसेबचेहो दुखदूरहुवा सुखप्राप्तहोगा लाभहोगा गइवस्तुपावे राजसनमान सद्गुरुकाध्यानकरभलाहोगा ॥ ७ ॥

२२११ हेप्रछक तेरेकूंवस्तुप्राप्तहुइथीवहगईकरताहैसोकारजविपरीतहोताहै बडेकष्टसेमिलेतोभोगनहीं कुछअपितदोषहै अबतेरामनलुभायाहैवस्तुप्राप्तहोकेहानहोगीकुछमंदभाहदेवदोषपितृशांतिकरभलाहोगा ८

२१२२ हेप्रछक तुमबडेबुधवानहोपरंतुबुधचलतीनहीं पासा उलटा पडताहैअबजोकारजपरअमलकरतेहोसोकाठिनहै धीरजकरो जिसेकारज चाहतेहोवोस्वार्थीहै विस्वासनकरो मित्राइमेंलाभनहीं मित्रमीठेबोलते हैं विसवासदेतेहैं परंतु कपटरखतेहैं पुण्यकरभलाहोगा ॥ ९ ॥

१२१२ हेपृछक यहप्रश्नचित्तदेसुनोदिलसफाकरो संकलपविकलप क्यों करतेहोयहकारजआतुरहोगा एकपुरुषसतेरेमुखमीठाबोलताहै पिछाडी बदीकरताहै तेरामनोरथसिद्धकरनेंकोएकउपावसुनछटाकभरअन्नघृतमिष्टान्नमिलायकरचींटियोंकोनितप्रतिडालदियाकर लाभहोगा दुसमन नाशहोगा फतेपावेगा ॥ १० ॥

११२१ हेप्रछक यहप्रश्नपुंसकहै कारजआधाहोगा कुछधीरजकर एक-पुरुषतुमसंमित्राइकरकेसलाहदेताहै सोकुटिलहै तेराधनहराचाहताहै वि-श्वासनकर अबएकसुजनमिलेगा थोडेदिनकरूरहै दिनपंदरापीछे आनंदहोगा अभ्यागतसेवाकरभलाहोगा ॥ ११ ॥

२१११ हे प्रछक तुमबडेचतुर धीरजवंत प्रतिष्ठितहो येकारजवि-चारासो अफलहै कपटाइकेसाथ हैरानहोगे अर्थनमिलेगा लाभछोडो पनग न करो १० दिनकठोरहै तुम घरसेचले जब अपसगुणहुवा खेती अफल वाणिजहान चोरभय रोगप्रती संकाहैतो दोपडीठहरकर प्रश्नके-रपूछ संसयदूरहोगा कुछपुण्यकरभलाहोगा ॥ १२ ॥

(१२२१) हेप्रछकतेराचिततृष्णाकरकेडोलताहै औरबहोतमनसू-बेकरमनलड्डूखाताहै धनकाउपाय बहोतजानता है॥लोकोमेंतेरीप्रशंसाहै परंतु उद्यमफुरतानहींकारजविघ्नजयहोजाहै कुछहातसेगयाएकतेरे मन-सापापलगाहै जिसकाआतापहै सांतीकरभलाहोगा ॥ १३ ॥

(२२२१) हे प्रछक ये प्रश्नउत्तमहै गईवस्तुमिले बंधमोक्षराज-सेनमानव्यापारलाभबिछुटेमिले गुप्तपदार्थप्राप्ती शत्रुनाश रोगक्षय कारजआतुरसेकर ढीलनकन रातकोंस्वप्नआताहै आलसरहताहै कल्प नासतावतीहै कुछपुन्यकर अभ्यागतसेवाकर मलीनदेवकीछायाटलेगी पितृदोषनिवर्त्त होगा॥ १४ ॥

(१११२)हेप्रछक यहप्रश्नलाभकारीहै व्योपारकर स्यामऔरसुपेदव-स्तुचतुष्पदअन्नघृततेलसंग्रहकरलाभहोगा गईवस्तुपावेरोगनास भयनास देवकाकुपबोलबोल्यासोभूलगया राज्यसनमानजसप्राप्तीकोईअच्छीवात-सुनेगा इष्टकोंयादकर दिलसफारख भलाहोगा॥ १५॥

(११११) हेप्रछक येप्रश्ननेष्टहै कार्यनास्तचोरभयराजभय रोग-पीडा क्लेश उद्वेग गर्भपातदूरगमनपंथचलावे बंधप्राप्तमंदग्रहक्रूरहै ग्रह शांतीकर सुखप्राप्तहोगाआठसनीवारपीपलवृक्षपूजप्रदक्षिणादेमंत्रजप ॥

ॐ नमः शिवायममग्रहेशांतिकुरुकुरुस्वाहाः ॥ ये मंत्रजपके नमस्कार करसिधुळधनपावेगा ॥ १६ ॥ इति श्रीरमलप्रश्नावली सहाशिवकर णरामरतन दरक माहेश्वरी मूंडवेवाला कृत सम्पूर्ण.

अथ दंतबत्तीसीप्रश्नावली

दोहा ॥ जेतेअक्षरनरकहै तेत्रिगुणाकरलेह ॥ भागसातकादीजिये जो तिसकहाकरेह ॥ १ ॥ थिरयेकी तुरतेमिहुंतिहुंतिहुंचलणकरेह ॥ च्याहुं मारगपांचैंघरेछेआंवेकुसलेह ॥२ ॥ जो भागेभागेमिले कौरेकलाहकुटेव॥ दंतबत्तिसोकाप्रश्नभाखतैहसहदेव॥ ३ ॥ इतिदंतबत्तीसी प्रश्नसंपूर्ण ॥

अथ रामरावण प्रश्न.

कवितछपै ॥ रामनामसिद्धकाज सीताडुषशोकवि- षाद स्याप्रश्नमहनुमंत फतेलछमनकरवादं ॥ला- भबभीक्षणहेप्रितसुग्रीवसुहासं अंगदज्यावजरूर- जीतनलगी लहुलासं ॥ क्षयरावसभयसूमका मेघ- नाददुषदानिये शिवकर्णसुपारीकरधरो कोष्टकअं- कापिछानिये ॥१ ॥ इति ॥
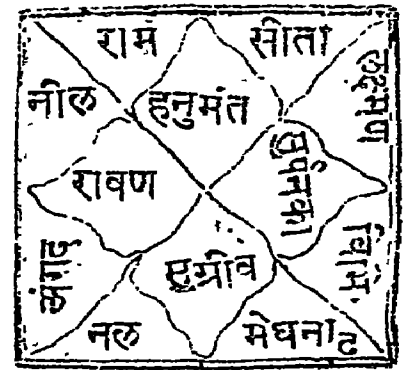
(अथचोरीमेंवस्तुगईहोयाजिस्कप्रश्न) ॥ जिसनक्षत्रकोंगईहोय सोनक्षत्र देखिकेफलकहो ॥ मिले तथा मिले तथा कितनेदिनमें मिल तथा कौणदिसागई कौणलेगया ॥ (ताका चक्रमें खुलासा देखो)

कोष्टक.

अंध	रो.	पु	उ फा	वि	पू या	ध	रे	अंधा नक्षत्रमें गई वस्तु तुरत मिले पूरबदिसा गई. उत्तम जातिका ले गया.
मंद	मृ	श्ले	ह	अ	उ षा	श	अ	मद नक्षत्रमें गई वस्तु दिन ३ में आवे दक्षिण दिसामें गई. वैस्य जातिका ले गया.
मध्य	आ	म	चि	ज्ये	अ	पू भा	भ	मध्यम नक्षत्रमें गई दिन ६४ में मिले पश्चिम दिसा गई. मध्यम जातीका ले गया.
सुलोचन	पु	पू फा	स्वा	मू	श्र	उ भा	कृ	नहीं मिले उत्तर दिसा गई शूद्र जातीका ले गया.

निवेदन।

ईश्वरनें यासंसारमें मनुष्ययोनी कैसीउत्तमपैदाकीहै के संपूर्णशुभ कार्य इसीजन्ममें बनसके या योनी पश्चात् पशुपक्षी योनीमें कुछकार्य धर्ममर्यादाका नहीं होसक्ता याकारनतें किसीनें मंदिरबनाया किसीनें कूवानिवाण बगीचा पुल धर्मशाला सुखस्थान धर्मपुरा सदाव्रत भोजन शाला अन्नक्षेत्र छवन्यात नवन्यात भंडारा ब्रह्मभोज्य यज्ञादि व किसीनें ब्राह्मणोंकी कन्यावोंका व बहन भाणज्यौंका विवाह इत्यादि बडे २ शुभकार्यकरिके अपना नाम जाहर किया परंतु यह सब काम धनवानलक्ष्मीपात्रोंकाहै मेंदरीद्री क्या ऐसा जगउपयोगी कार्यकरसकूं और मनका वेगएसाहै जैसें(परबिनपरेवा सागरउलंघ्योचहे)पर द्रव्यतो मेरे पासनहीं और चंदरोज दुनियाँमें नामरहनेकी अभिलाषा होती है ईश्वरनें दो अक्षरका ज्ञानभी दिया तब विचाररूपी समुद्रकी तरंग उठी के हे मनुष्य तेनें जिस जातीमें जन्मलीया और उसजातीमें कुछ उपकाराऽर्थफायदानहींकीया तो जीनाँहीं मृतकपशुवत है यह विचार गुरुइष्टमनाय कलमउठाई तो प्रथम ज्ञातीउपकारार्थ श्री इतिहास कल्पद्रुम माहेश्वरी कुलशुद्धदर्पण नामकग्रंथवर्णन कर अपनी जातीका स्वरूप दर्पणवतही दिखादिया पर कुछेक ज्ञातीप्रबंध कायदाभी प्रका-शित हो जानेकी आशाउत्पन्नभई और विचारनेकी बात है के अपनी जातमें कोई प्रकारकाकानूनकायदा बंदोबस्तका कायम नहीं और इसी कारणसे अनेकप्रकारके फंदे झगडेरगडे खडेहो जातेहैं (देखो) बहोत-सेगाँवोंमेंधडापड २ करफंटपड़ रहा हैं व औरभीजगे पडनेका कुछ ता ज्जुबनहीं इस्काकारनक्याहै तोजराजानागयाके जातीमेंकोई प्रकारका प्रबंधनहीं और बगेरप्रबंद्ध मनुष्य मनमुखसे जिधर बहोत आदमीजबर दस्त वा धनवान मिलगये और उन्होंनें जैसाचाहा वैसा मनमुखत्यारी सें भला या बुरा कुछभीकामकरलिया और किसीनें नहिं मानी तो धडापाड लिया वा नहिंमानणेवालेकों जुदाकरदिया इसीतरहसे सबदेश-

इसीतरेसें एकसालहिस्सी(देखो) सबजातोंमें रीवाज और काय-
दाहै और अपनी महेश्वरीज्ञातीमें कुछकायदा रीवाजकायमनहीं केवल
मनरुदस्तौंकाधौंसाहै इसवास्ते मेरीप्रार्थनाहै कि इसका कुछबंदोबस्त-
होकर कायदाकानून (जैसें) सगाई सगपण इत्यादिक वारिसहकदार
हिस्सावंटकुरांकालापा खर्चखातेकाप्रबंध व कन्याकों विवाह कितनेव-
र्षकी कन्यासें कितनेंवर्षतकपूर्वकाकितनेंवर्षसें कितने वर्षतक इत्यादि
प्रबंध बंधजाय तो ज्ञातीमें स्वच्छता प्रीती आनंदयुतबनीरहे और
किसीप्रकारका झगड़ा नहिं पडे इसवारेमें फगत प्रश्न वा कुछेक बातें
जो मेरी बुद्धि व अनुभवमें आई वा धर्मशास्त्रोंसेभीयथोचितवाकुछ
मतोंसे भी शुद्धपाईगई वो वर्णनकीहै पर आप प्रियवर मित्रोंसे यह प्रार्थ-
नाकरताहूं के ऐसाकायदा बँधकर सर्वदेशीमान्य सर्वप्रबंध कायमकर
लिखभेजें तो छापकर प्रकाशितकरूं जिससें अपनीजातमें बंदोबस्त
बनारहेगा तो मैं येही एकबडासाकार्य समझलेऊँगा(क्योंकि)इसकीभी
जातकों फायदारूपी ठंडी हवा प्रकाशितहोगा यहसबबातोंमें देशरीवाज
और कुलमर्यादामुख्यहै पर धर्मशास्त्रादिकोंकाभी जरावाक्यमिश्रितहो-
नाउचितहै और इसग्रंथमें भूलचूकहोय वहभी कृपाकर सूचितकरें
ताके पुनरावृत्तिमें सुधारणाँकीजाय (पत्र) हमकों इसपत्तेसें पोष्टद्वारावे
अपना आशय स्पष्टाक्षरोंमें प्रकाशितकरें.

आपकाअनुचरचर्णरजइच्छिक.

सेठ शिवकरण रामरतनदरक माहेश्वरी मूंडवेवाला.

पुस्तके मिलनेका ठिकाना—

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" स्टीम् प्रेस,
कल्याण-मुंबई.

खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम् प्रेस,
खेतवाडी-मुंबई.